औरतों की हिकायात

عورتوں کی حکایات

मौलाना अबुन्नूर मुहम्मद बशीर

रज़वी किताब घर

425, मटिया महल जामा मस्जिद, देहली-110006

हज़रत हव्वा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हा से लेकर आज कल की माडर्न औरतों तक की हिकायात

बनाम

औरतों की हिकायात

लेखक

'सुलतानुल-वाइज़ीन मौलाना अबुन्नूर मुहम्मद बशीर साहब

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

425, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद देहली-110006 Phone : 011 - 23264524

 ISBN 81-89201-02-(

नाम किताब : **औरतों की हिकायात**

लेखक : मौलाना अबुन्नूर मुहम्मद बशीर साहब

नाशिर : रज़वी किताब घर, दिल्ली–6

बइहतमाम : हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी

प्रूफ़–रीडिंग : मंज़ूरुल हक़ जलाल निज़ामी

हिन्दी एडीशन : पहली बार 2008

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली–6

सफ़हात : 288

तादाद : 1100

क़ीमत : ....

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

उनवानात सफ़ा

पहला बाब

अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम की बीवियाँ

दूसरा बाब

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम की विलादत, आपकी माँ और मुर्ज़िआ (दूध पिलाने वाली)

उनवानात सफ़ा

उनवानात

सफ़ा

पांचवाँ बाब

सहाबियात व वलियात

उनवानात सफ़ा

देवबन्दी हज़रात

के हकीमुल-उम्मत मौलाना अशरफ़ अली साहब की किताब बहिश्ती ज़ेवर और उनके माहनामा प्यामे हक़ में लिखी हुई "तीन हिकायात"

छठाँ बाब
मुतफ़र्रिक़ हिकायतें

सातवाँ बाब
दाना औरतें

نَحْمَدُ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْم

पहला बाब

अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम की बीवियाँ

وَمِنْ اٰیَاتِہٖ اَنْ خَلَقَ لَکُمْ مِنْ اَنْفُسِکُمْ اَزْوَاجاً لِتَسْکُنُوْا اِلَیْھَا

पारा २१ आयत नं० ५

और उसकी निशानियों से है कि तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिंस से जोड़े बनाए कि उनसे आराम पाओ।"

हिकायत नम्बर (१)

हज़रत हव्वा अलैहा अस्सलाम

अल्लाह तआला ने जन्नत को पैदा किया तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को जन्नत में ठहराया। आप जन्नत में अकेले थे। एक दफ़ा अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर नींद ग़ालिब कर दी और वह सो गए। ख़ुदा ने फिर आपकी दाएँ पसली में से एक पसली निकाल कर उससे हव्वा को पैदा फरमाया और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की निकाली हुई पसली की जगह को गोश्त से भर दिया। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जागे तो अपने सर के पास हज़रत हव्वा को बैठा पाया। आपने पूछा तुम कौन हो। अर्ज़ किया। मैं औरत हूँ। फरमाया कि तू क्यूं पैदा की गई? अर्ज़ किया इसलिए कि आप मुझसे सुकून पाएं और मैं आपसे। फ़रिश्तों ने पूछा। ऐ आदम! उसका नाम क्या है? फरमाया कि हव्वा। फ़रिश्तों ने पूछा यह नाम क्यों है। फरमाया कि इसलिए कि यह हैय्य (ज़िन्दा) से पैदा की गई है। (रुहुल-बयान, स:७३,जि.१)

सबक़

औरत को ख़ुदा तआला ने मर्द के सुकून के लिए पैदा फरमाया है और मर्द को औरत के सुकून के लिए। चुनांचे ख़ुदा तआला ने कुरआने पाक में फरमाया है :

وَمِنْ اٰیَاتِہٖ اَنْ خَلَقَ لَکُمْ مِنْ اَنْفُسِکُمْ اَزْوَاجاً لِتَسْکُنُوْا اِلَیْھَا

"और उसकी निशानियों से है कि तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिंस से जोड़े बनाए कि उनसे आराम पाओ।"

मालूम हुआ कि मियाँ बीवी को अल्लाह तआला ने एक दूसरे के लिए सुकून के वास्ते पैदा फरमाया है, और यह सुकून उसी वक़्त हासिल हो सकता है, जब बीवी अपने मियाँ को मियाँ और मियाँ अपनी बीवी को बीवी समझे और अगर बीवी भी मियाँ बनने लगे, और कहने लगे कि मैं भी मर्द के साथ-साथ चलूँगी तो फिर सुकून का मिलना मुश्किल है। मैंने लिखा है–

नई तहज़ीब का नक़्शा अयाँ है
मियाँ बीवी है और बीवी मियाँ है
बराबर मर्द के औरत को समझें
ज़मीं को कह रहे हैं आसमां है

इसी तरह आज कल के बाज़ मर्द भी ऐसे हैं जो देखने में मियाँ नहीं बीवी नज़र आते हैं। चुनांचे एक लतीफ़ा भी सुन लीजिए एक डांसर ने कमाल का डांस किया। कुर्सी पर बैठे हुए एक शख़्स ने दाद देते हुए कहा। वाह! रे लड़की कमाल कर दिया तूने!। दूसरा शख़्स जो उस शख़्स के पास ही बैठा था। बोला अरे वह तो मेरा बेटा है।"..........पहले शख़्स ने माफ़ी मांगते हुए कहा। मिस साहिबा माफ़ कीजिए। दूसरा फिर बोला। अरे मैं तो उसका बाप हूँ।" ....फरमाईए ऐसे जोड़ों में जिनमें मियाँ बीवी का फर्क़ ही कोई न हो सुकून पैदा हो सकता है? मैंने लिखा है।

नई तहज़ीब का दूल्हा भी आता है नज़र दुल्हन
यह गोया हो रहा है अक़्द लड़की ही से लड़की का

यहाँ एक हदीस सुनिए, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है।

أُحِلَّ الذَّهَبُ وَالْحَرِيْرُ لِلْاِنَاثِ مِنْ اُمَّتِیْ وَحُرِّمَ عَلٰی ذُکُوْرِهَا۔

(मिश्कात शरीफ़, स. : ३६७)

"मेरी उम्मत की औरतों पर सोना और रेशम हलाल है। लेकिन मर्दों पर हराम है।"

मालूम हुआ कि सोने का ज़ेवर अंगूठी वग़ैरा औरतें पहनती हैं मर्द नहीं। लेकिन आज कल शादियों में लड़की वाले दूल्हा मियाँ के लिए सोने की अंगूठी तैयार करके दूल्हा मियाँ को पहनाते हैं और दूल्हा खुश हो जाता है। हालांकि दुल्हन वाले दूल्हा को सोने की अंगूठी पहना कर मेरे शे'र के इस मिसरा की ताईद करते हैं कि –

यह गोया हो रहा है अक़्द लड़की ही से लड़की का

यह भी मालूम हुआ कि औरत की पैदाइश पसली से हुई है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि औरत की पैदाइश पसली से हुई है। और पसली टेढ़ी होती है। इससे नर्मी इख़्तियार करो क्योंकि पसली को अगर सख़्ती के साथ सीधा करना चाहोगे तो वह टूट जाएगी और उसका टूटना क्या है? तलाक़। इसलिए हत्तल-इमकान औरत से नर्मी इख़्तियार करो।" (मिश्कात शरीफ़ स. २७४)।

सुब्हानल्लाह! कैसी मुबारक तालीम है अगर इसी एक हदीस पर अमल हो जाए तो यह आए दिन के तलाक़ के झगड़े ख़त्म हो जाएं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जहाँ मर्दों के हुक़ूक़ औरतों पर ब्यान फरमाए हैं। वहाँ यह भी फरमाया है कि तुममें सबसे अच्छा शख़्स वह है जो अपनी बीवी से अच्छा सुलूक करे और मैं अपनी बीवियों से तुम सबसे अच्छा सुलूक करता हूँ। (मिश्कात शरीफ़ स. २७२) मर्द का दरजा अगरचे औरत से बड़ा है लेकिन औरत के हुक़ूक़ भी मर्दों पर बहुत हैं। एक आदमी की बीवी मर गई तो वह कहने लगा। भाईयो! मेरी बीवी ही नहीं मरी। मेरा बावर्ची भी मर गया। मेरे घर का मुहाफ़िज़ भी मर गया। मेरी धोबन भी मर गई। मेरी बावर्चिन भी मर गई और मेरे बच्चों की आया भी मर गई। गोया यह सारे काम एक बीवी किया करती थी। इसीलिए इस्लाम ने औरत से हुस्ने सुलूक का दर्स दिया है –

चाहता है चैन व इत्मीनान गर
चल रसूलुल्लाह की तालीम पर

❖❖❖

हिकायत (२)
अक़लीमा

"अक़लीमा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की साहबज़ादी हैं तसलसुल के लिए यह हिकायत इसी बाब में दर्ज कर दी गई है।"

हज़रत हव्वा के हमल में एक लड़का और एक लड़की पैदा होते थे और एक हमल के लड़के का दूसरे हमल की लड़की के साथ निकाह किया जाता था। और चूंकि आदमी सिर्फ़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद में मुनहसिर थे इसलिए मुनाकिहत की और कोई सूरत ही न थी।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के घर एक हमल में क़ाबील व अक़लीमा पैदा हुए और दूसरे हमल में हाबील व यहूदा पैदा हुए। क़ाबील की बहन अक़लीमा हाबील की बहन यहूदा से ज़्यादा ख़ूबसूरत थी। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने इसी दस्तूर के मुताबिक़ क़ाबील का निकाह यहूदा से जो हाबील के साथ पैदा हुई थी और हाबील का निकाह अक़लीमा से जो क़ाबील के साथ पैदा हुई थी करना चाहा, क़ाबील उस पर राज़ी न हुआ। अक़लीमा चूंकि ज़्यादा ख़ूबसूरत थी इसलिए उसका तलबगार हुआ। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि वह तेरे साथ पैदा हुई है लिहाज़ा तेरी बहन है उसके साथ तेरा निकाह हलाल नहीं। कहने लगा यह आपकी अपनी राय है। अल्लाह का यह हुक्म नहीं है। आपने फरमाया तो तुम दोनों कुरबानियाँ लाओ। जिसकी कुरबानी मक़्बूल हो जाए वही अक़लीमा का हक़दार है उस ज़माना में जो कुरबानी मक़्बूल होती थी आसमान से एक आग उतर कर उसको खा लेती थी। क़ाबील ने एक अंबार गंदुम का और हाबील ने एक बकरी कुरबानी के लिए पेश की। आसमानी आग ने हाबील की कुरबानी को ले लिया और क़ाबील की गंदुम को छोड़ दिया। उस पर क़ाबील के दिल में बुग्ज़ व हसद पैदा हो गया जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हज के लिए मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले गए तो क़ाबील ने हाबील से कहा मैं तुझको क़त्ल कर दूँगा। हाबील ने कहा। क्यों? कहने लगा। इसलिए कि तेरी कुरबानी मक़्बूल हुई मेरी न हुई और अक़लीमा का तू मुस्तहिक़ ठहरा है। उसमें मेरी ज़िल्लत है। हाबील ने कहा। तो अगर मुझे क़त्ल करने को हाथ उठाएगा तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिए हरगिज़ हाथ न उठाऊँगा। मैं तो अल्लाह से डरता हूँ। क़ाबील ने आख़िर हाबील को क़त्ल कर दिया। फिर वह उस क़त्ल को छुपाने के लिए हैरान हुआ कि लाश को क्या करे। क्योंकि उस वक़्त तक कोई इंसान मरा ही न था। मुद्दत तक लाश को अपनी पीठ पर लादे फिरा तो अल्लाह ने उसे दो कव्वे दिखाए। दोनों आपस में लड़ पड़े। उनमें से एक ने दूसरे को मार डाला फिर ज़िन्दा कव्वे ने अपनी चोंच और पंजों से ज़मीन को कुरेद कर गढ़ा खोदा और उसमें मरे हुए कव्वे को डाल कर मिट्टी से दबा दिया यह देखकर क़ाबील को मालूम हुआ कि मुर्दे की लाश को दफन करना चाहिए। चुनांचे उसने ज़मीन खोद कर हाबील को दफन कर दिया। (कुरआन मजीद प.६अ.७ मआ तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल–इरफान स. १२६)

सबक़

सबसे पहला क़त्ल जो हुआ। वह काबील के हाथों हाबील का क़त्ल था। और इस क़त्ल की वजह औरत थी। चुनांचे आज तक यह बात मशहूर है कि ज़र (सोना)। ज़न (औरत)। ज़मीन लड़ाई झगड़े और क़त्ल का कारण है। आजकल भी अकसर क़त्ल औरत ही की वजह से होते हैं और उसकी बुनियादी वजह इन्कारे हदीस है क्योंकि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के हुक्म को काबील ने उनकी राय कहकर न माना। गहरा परवेज़ीयत की बिना उसने डाली। तो नतीजा बुरा निकला। मालूम हुआ कि पैग़म्बर के हुक्म को ख़ुदा का हुक्म समझना चाहिए। वरना नतीजा बुरा निकलता है आज कल भी जो औरतों का इग़वा (अपहरण) और उनकी वजह से क़त्ल व ग़ारत तक नौबत पहुँच जाती है उसका हुक्म इंकारे हदीस है। लोग कुरआन की आड़ लेकर कुरआन की आयात को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ ढाल कर औरतों को उरयानी व बेहिजाबी (कम कपड़े और बिना नक़ाब) के साथ घर से निकाल कर बाज़ारों में फिराने लगते हैं हालांकि कुरआन पाक जिस ज़ाते बाबरकत पर नाज़िल हुआ। उसके हुक्म के मुताबिक़ औरत के लिए उरियानी व बेहिजाबी (बिना कपड़े और बिना नक़ाब) ओर ग़ैरों से मिलना मिलाना ग़ैरों से हाथ मिलाना हरगिज़ जाइज़ नहीं। हुज़ूर ने औरतों को नमाज़ पढ़ने के लिए भी यह दर्स दिया है कि वह अपने घर में पढ़ें और आज कल की मार्डन औरतें दिन भर बाज़ारों में और रात कलब में गुज़ारती हैं और यह सब करिश्मे इंकारे हदीस के हैं। औरत का माना ही यह है। छुपाने वाली चीज़। औरतों को मस्तूरात भी इसीलिए कहते हैं यानी सतर व पर्दे में रहने वाली। लेकिन आजकल? मैंने लिखा है –

यह औरत थी कभी ख़ातून खाना
मगर अब शमा महफ़िल है कलब में
वह औरत जो कि थी सरतापा औरत
नज़र आती है अब सबको सबमें

और अपनी मार्डन मसनवी में मैंने लिखा है –

कह दिया है मार्डन इस्लाम ने
औरत आ सकती है सबके सामने

यह भी मालूम हुआ कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने में बहन

भाई का निकाह जाइज़ था क्योंकि उसके सिवा दूसरी कोई सूरत ही न थी। मगर अब हमारी शरीअत में यह बात हराम है। इस हकीकत को यूं समझए कि बच्चा पैदा होता है तो उसके लिए कपड़ों पर अपने पाजामें में हत्ता की मां-बाप की गोद में पेशाब व पाखाना कर देना जाइज़ है लेकिन बड़ा होकर ऐसा करेगा तो जूते खाएगा बचपन के हुक्म और हैं। जवानी के और बचपन में नंगे फिरना जाइज़ और जवानी में ना जाइज़। बच्चे की क़मीज़ छोटी होती जाती है और जूं जूं बच्चा बढ़ता जाता है। पहली क़मीज़ तंग होती जाती है। और उसकी क़मीज़ का नाप बदलता रहता है हत्ता कि जब वह अपने पूरे शबाब पर पहुँच जाता है तो उस वक़्त उसकी क़मीज़ का जो नाप होगा, आख़िर उम्र तक वही रहेगा। इसी तरह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के वक़्त दीन अभी शुरूआती ज़माने में था गोया बच्चा था। और बच्चे के लिए वह बातें जाइज़ होती हैं जो जवान के लिए जाइज़ नहीं होतीं यह बच्चा जूं जूं जवान होता रहा। उसकी क़मीज़ का नाप यानी शरीअत भी बदलती रही, यहाँ तक कि जब यह अपने आलमे शबाब (पूरी जवान) पर पहुँचा। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए तो ख़ुदा ने फरमाया।

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ-

यानी आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल (पूरा) कर दिया और अपनी नेमत तुम पर मुकम्मल कर दी।"

गोया अब यह दीन अपने शबाब को पहुँच चुका है और अब जो शरीअत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आए हैं जिस तरह आलमे शबाब (जवानी के वक़्त) की क़मीस का नाप आख़िर उम्र तक बाक़ी रहता है इसी तरह अब यह शरीअत क़्यामत तक बाक़ी रहेगी अब इस शरीअत में बदलाव की ज़रूरत नहीं रही और इसीलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद अब कोई नबी भी नहीं आ सकता क्योंकि अब किसी नबी की ज़रूरत ही नहीं रही लिहाज़ा अब जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के बाद नुबुव्वत का दावा करे वह झूठा है हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह शान है कि –

हसीनों में हसीं ऐसे कि महबूबे ख़ुदा ठेहरे
रसूलों में रसूल ऐसे कि ख़त्मुल-अंबिया ठहरे

हिकायत नम्बर (३)

वाहिला और वाइका

वाहिला हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की बीवी का नाम है और वाइका लूत अलैहिस्सलाम की बीवी का नाम है। यह दोनों दो नबियों की बीवियाँ थीं मगर दोनों अपने मुक़द्दस शौहरों के ख़िलाफ़ और काफिरों का साथ देने वाली थीं। वाहिला अपनी क़ौम से हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ कहती थी कि वह दीवाने हो गए हैं (मआज़ल्लाह) और वाइका हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ जासूसी करके काफ़िरों को ख़बरें दिया करती थी। ख़ुदा तआला को उनकी यह हरकतें पसन्द न आईं। और उनके जहन्नमी होने का ऐलान फरमा दिया। चुनांचे क़ुरआन पाक में है।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَأَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَأَتَ لُوْطٍ. كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ من عبادنا صَالِحِيْنَ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّاخِلِيْنَ.

(प.२८,अ.२०)

"अल्लाह काफिरों की मिसाल देता है। नूह अलैहिस्सलाम की औरत और लूत अलैहिस्सलाम की औरत वह हमारे दो नेक बन्दों के निकाह में थीं फिर उन्होंने उन से दग़ा की (यानी कुफ़्र इख़्तियार किया) तो वह अल्लाह के सामने, उन्हें कुछ काम न आए और फरमा दिया गया, कि तुम दोनों औरतें जहन्नम में जाओ, जाने वालों के साथ।"

चुनांचे यह दोनों काफ़िरा औरतें इस दुनिया में काफिरों के साथ हिलाक (मर) हो गईं। नूह अलैहिस्सलाम की बीवी तूफ़ान में डूब गई और लूत अलैहिस्सलाम की बीवी भी इस आफ़त में आकर हिलाक हो गई जो इस क़ौम पर आई। यह तो दुनिया में हुआ। और क़यामत में जहन्नमियों के साथ-साथ जहन्नम में डाल दी गई। (ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान स.७६० और तफ़्सीर हक़्क़ानी स.१२० जि.७)

सबक़

ईमान और नेक काम हर आदमी के लिए ज़रूरी है। चाहे वह किसी पैग़म्बर का कितना बड़ा क़रीबी और चाहेता ही क्यों न हो। कुफ़्र और बुरा काम हर पैग़म्बर की बीवी या कोई दूसरा अज़ीज़ भी इख़्तियार करेगा तो उसकी सज़ा उसे ज़रूर मिलेगी। इसीलिए ख़ुदा तआला ने हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि आलेही व सल्लम से भी फरमाया कि

وانذرعشيرتك الا قربين (प.१६ अ.१५) ऐ महबूब अपने क़रीब तर रिश्तादारों को डराओ।"

मालूम हुआ कि अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम और औलिया-ए-किराम की औलाद और उनके दीगर रिश्तादारों के लिए भी ईमान व अमल सालेह (नेक अमल) ज़रूरी है यह लोग क़राबत क़रीबी के गुरूर में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत (बन्दगी) से ना फरमानी हरगिज़ न करें। ख़ुश अक़ीदा सैय्यद हज़रात हमारे सर का ताज और आंखों का नूर हैं लेकिन यह बात ग़लत है कि जो साहिबे सैय्यद हों वह कुछ भी करते फिरें। नमाज़ न पढ़ें। रोज़ा न रखें दाढ़ी मुंडाऐं। शराब पिएं उन्हें कुछ न कहो। इसलिए कि वह सैय्यद बादशाह है। सैय्यद को अगर बादशाह बनना है तो उसे भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम की इताअत (बन्दगी) करनी पड़ेगी वरना वह कुछ भी नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम की इताअत अगर ग़ैर सैय्यद के लिए लाज़िम है तो सैय्यद के लिए भी लाज़िम, बल्कि बेहद ज़रूरी है। रेल गाड़ी के थर्ड क्लास डब्बे को अगर लाहौर से कराची पहुँचने के लिए इंजन के पीछे लगना और रेलवे लाइन पर चलना ज़रूरी है तो फ़स्ट क्लॉस डब्बे को भी कराची पहुँचने के लिए इंजन के पीछे लगना और रेलवे लाइन पर चलना ज़रूरी है इसी तरह अगर ग़ैर सैय्यद को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे लग कर उनकी इत्तिबा (पैरवी) करना और शरई लाइन पर चलना ज़रूरी है जिस तरह फस्ट क्लॉस का डब्बा अगर इंजन के पीछे न लगेगा तो लाहौर के यार्ड में ही खड़ा रहेगा और कराची हरगिज़ न पहुँच सकेगा। इसी तरह सैय्यद साहब भी अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे न लगेंगे तो गुमराही के यार्ड ही में खड़े रहेंगे। जन्नत में हरगिज़ न पहुँच सकेंगे।

ख़िलाफ़े पयम्बर कसे रह गुज़ीद
कि हरगिज़ बमंज़िल न ख़्वाहद रसीद

और इक़बाल ने लिखा है कि –

यूं तो सैय्यद भी हो मिर्ज़ा भी हो अफ़ग़ान भी हो
तुम सभी कुछ हो बताओ तो मुसलमान भी हो

यहाँ एक और मसला भी समझ लीजिए कि हो सकता है कि किसी पैग़म्बर की बीवी काफ़िरा हो जाए लेकिन यह नहीं हो सकता कि किसी

पैग़म्बर की बीवी बदकार हो। فَخَانَتَاهُمَا में जिस ख़्यानत का ज़िक्र है वह ईमान में ख़्यानत है जो उन दोनों बीवियों ने की। किरदार की ख़्यानत यानी ज़नाकारी मुराद नहीं क्योंकि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि किसी नबी की बीवी बदकार नहीं हुई।
(रुहुल-ब्यान स.४०७ जि.४ और तफ़्सीर हक़्क़ानी १६० जि.७)

❖❖❖

हिकायत नम्बर (४)

हज़रत सारा व हाजरा

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दो बीवियाँ थीं। पहली का नाम सारा और दूसरी का नाम हाजरा था। सरज़मीने शाम में हज़रत हाजरा के बतन (पेट) पाक से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पैदा हुए। हज़रत सारा के कोई औलाद न थी इस वजह से उन्हें रश्क पैदा हुआ और उन्होंने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहा कि आप हाजरा और उनके बेटे को मेरे पास से जुदा कर दीजिए। हिकमते इलाही ने यह एक वजह पैदा किया था चुनांचे वही आई कि हज़रत सारा के कहने के मुताबिक़ आप हाजरा और उनके बेटे इस्माईल को उस सरज़मीन में ले जाएं जहाँ अब मक्का मुकर्रमा आबाद है। वही के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हाजरा और उनके बेटे को बुराक़ पर सवार करके शाम से सर ज़मीने हराम में ले आए और काबा मुक़द्दसा के नज़्दीक उतारा। यहाँ उस वक़्त न कोई आबादी थी। न कोई चश्मा (जहां से पानी निकलता हो) न कोई पानी। काबा मुक़द्दसा भी तूफ़ाने नूह के वक़्त आसमान पर उठा लिया गया था। गोया उस वक़्त वह जगह बिल्कुल वीरान ख़ुश्क (सूखी) और ग़ैर आबाद थी। खाने पीने का दूर दूर तक निशान न था। ऐसे भयानक मुक़ाम पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हाजरा व इस्माईल को एक तोशा दान में कुछ खुजूरें और एक बर्तन पानी उनको देकर उतारा। और आप वहाँ से वापस हुए और मुड़ कर उनकी तरफ न देखा। हज़रत हाजरा ने यह सूरते हाल देखकर अर्ज़ किया कि आप हमें इस वीरान वादी में तन्हा छोड़ कर कहाँ जाते हैं। आपने कुछ जवाब न दिया। हज़रत हाजरा ने फिर पूछा कि क्या अल्लाह ने आपको इसका हुक्म दिया है? आपने फरमाया हाँ। उस

वक़्त आपको इत्मीनान हुआ। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम चले गए। हज़रत हाजरा अपने फ़रज़न्द (बेटा) इस्माईल को दूध पिलाने लगीं। जब वह पानी ख़त्म हो गया और प्यास की शिद्दत ग़ालिब हुई और साहबज़ादे शरीफ़ का हलक़ भी ख़ुश्क हो गया तो आप पानी की तलाश में सफ़ा मरवा की पहाड़ियों के दरम्यान सात मरतबा इधर उधर दौड़ीं। यहाँ तक कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के क़दमे मुबारक मारने से इस ख़ुश्क ज़मीन से पानी निकल आया जो आज तक ज़मज़म के नाम से मश्हूर है। इत्तेफ़ाक़न वहाँ से एक क़बीला जुरहुम का गुज़र हुआ। उन्हों ने दूर से एक परिन्दा देखा। वह हैरान हुए कि इस ख़ुश्क वादी में परिन्दा कैसा? शायद कहीं पानी का चश्मा नमूदार हुआ है चुनांचे वह इस तरफ़ आए तो देखा एक पानी का चश्मा जारी है। और एक नूरानी शक्ल की औरत अपनी गोद में बच्चा लिए तन्हा बैठी है। यह मंज़र देखकर वह हैरान रह गए यहाँ शाहनामा इस्लाम के दो शे'र भी सुन लीजिए।

निदा आई कि ऐ जुरहुम के बच्चो बादिया गरदो
ऐ बूढ़ो और जवानो और ऐ बच्चो औरतो मर्दो
यह औरत और उकसी गोद में बच्चा जो लेटा है
यह पैग़म्बर की बीवी है यह पैग़म्बर का बेटा है

यह देख सुनकर क़बीला वालों ने हज़रत हाजरा से वहाँ बसने की इजाज़त चाही। आपने इजाज़त दे दी। वह लोग वहाँ बसे और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जवान हुए तो उन लोगों ने आपके सलाह व तक़्वा को देखकर अपने खानदान में उनकी शादी कर दी। यही वह जगह है जहाँ अब काबा शरीफ़ और मक्का मुकर्रमा का शहर है और अतराफ़े आलम से लोग खचे खचे वहाँ हाज़िर होते हैं। (तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल–इरफ़ान स.३६८)

सबक़

ख़ुदा तआला के हर काम में हिकमत छुपी होती है। हज़रत हाजरा के यहाँ फ़रज़न्द (बेटा) पैदा फरमा कर हज़रत सारा के ज़रिआ मां-बेटे को एक ऐसी जगह पहुँचाया जहाँ खाने पीने का कोई सामान न था और फिर उनकी बरकत से उस वीरान जगह को मरकज़े आलम बना दिया मालूम हुआ कि अल्लाह के मक़्बूल बन्दे किसी वीरान जगह भी तशरीफ़ फरमा हो जाएं तो वह जगह आबाद हो जाती है और लोग हज़ारों तकालीफ़ भी बर्दाश्त करके वहाँ पहुँचने लग जाते हैं। चुनांचे मक्का मुकर्रमा का मुक़द्दस

शहर हज़रत हाजरा और उनके साहबज़ादे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के क़दमाने मुबारक की बरकत से आबाद हुआ और यह भी मालूम हुआ कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के क़दम बचपन के आलम में भी ऐसे बाबरकत थे कि उन की बदौलत जो चश्मा (पानी का सोत्र) जारी हुआ। आज तक वह ख़ुश्क नहीं हुआ और करोड़ों। अरबों, खरबों लोगों की प्यास बुझा चुका है। बुझा रहा है और बुझाता रहेगा। हमारे खुदे हुए कुएँ दिन रात मुसलसल इस्तेमाल होने पर ख़ुश्क हो जाते हैं मगर एक नबी के क़दमे मुबारक की बरकत देखिए कि यह चश्मा हज़ारों साल से बदस्तूर जारी है। अब भी हर साल लाखों की तादाद में हुज्जाज वहाँ पहुँचते हैं। उसी ज़मज़म के कुएं से नहाते भी हैं। वज़ू भी करते हैं। कफन भी भिगो कर लाते हैं और फिर डरमों में भर भर कर उसका पानी अपने वतन में भी लाते हैं। यह कुआं चौबीस घन्टे दिन रात चलता रहता है ट्यूब वेल से और डोलों से हर वक़्त उससे पानी निकाला जाता रहता है। लेकिन अल्लाह रे बरकते क़दमे नबी। कि आज तक इस कुएं से पानी ख़त्म नहीं हुआ और न होगा और क़्यामत तक ऐसा ही रहेगा यह क़दमे नबी ही का सदक़ा है कि दुनिया भर की ज़मीन के सारे पानियों से ज़मज़म का पानी अफ़्ज़ल है। सिर्फ़ एक पानी ज़मज़म के पानी से भी अफ़्ज़ल है और वह पानी है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उंगलियों से जारी हुआ था जिनके मुतअल्लिक़ आला हज़रत ने लिखा है।

उंगलियां हैं फैज़ पर आए हैं प्यासे टूट कर
नदियाँ पंजाबे रहमत की हैं जारी वाह वाह

यह भी मालूम हुआ है कि आज भी जो हाजी सफ़ा मरवा की पहाड़ियों के दरम्यान सात चक्कर लगाते हैं। यह हज़रत हाजरा की सुन्नत पर अमल और उनकी नक़ल करना है। इसी तरह हज के दौरान में काबा शरीफ़ का तवाफ़ और हजरे असवद को चूमना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अदा-ए-मुबारक की नक़ल है। मिना में शैतानों को पत्थर मारने हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अलैहिस्सलाम की नक़ल है। गोया सारा हज ही अल्लाह के मक़्बूलों की अदाओं की नक़ल करना है। मालूम हुआ कि अल्लाह के मक़्बूलों की नक़ल करना ही अल्लाह की इबादत है। बाज़ लोग जो ग़ैरुल्लाह! ग़ैरुल्लाह! की रट लगाए फिरते हैं वह बताएं कि यह क्या बात है? कि हज में नक़ल हो अल्लाह के मक़्बूलों की और इबादत हो

अल्लाह की। देखिए यह पाँच नमाज़ें जो हम पर फर्ज़ हैं यह भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अदाहा-ए-मुबारक की नक़ल है वरना अगर नमाज़ की रकात और रुकू व सुजूद ही असल मक़सूद होते तो कोई शख़्स फज्र की दो रकात के बजाए चार रकात और मग़्रिब की तीन रकात की बजाए छेः रकात पढ़ता तो ख़ुदा को ख़ुश होना चाहिए था कि उसने मेरे लिए रकात और रुकू व सुजूद ज़्यादा कर दिए मगर नहीं ऐसे शख़्स पर ख़ुदा ख़ुश नहीं होगा बल्कि उसकी नमाज़ ही अदा न होगी इसलिए कि उसने अल्लाह के महबूब की सही नक़्ल नहीं उतारी। अल्लाह के महबूब ने फज्र की दो रकात पढ़ी हैं तो ख़ुदा को भी दो ही रकात मंज़ूर हैं। हुज़ूर ने मग़्रिब की तीन रकात पढ़ी हैं तो ख़ुदा को भी तीन ही रकात महबूब है इसलिए कि अल्लाह रकात को नहीं देखता बल्कि अपने महबूब की अदाओं को देखता है। इसी वासते हुज़ूर ने भी फरमा दिया कि صَلُّوْ اكَمَارَ اَيْتُمُوْنِىْ اُصَلّٰى नमाज़ ऐसी पढ़ो जैसी मुझे पढ़ते हुए देखते हो।

साबित हुआ कि जुमला फराइज़ फ़रोग़ हैं
असलुल-उसूल बन्दगी उस ताजवर की है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (५)
हज़रत ज़ुलेखा

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जब क़ैद से रिहा हुए तो आपने उस ख़ुशी में एक महीना लगातार खाने का इन्तिज़ाम किया और लोगों को जमा करके हर छोटे बड़े को दावत दी जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की हुज़ूर! अभी दावत पूरी नहीं हुई फरमाया कौन सी बात रह गई। कहा। वह देखिए। खुजूर की झोपड़ी में एक अंधी बुढ़िया बैठी है उसे खाना नहीं खिलाया गया फरमाया मैं अभी बुलाता हूँ उसे। चुनांचे आपने उसे भी बुलाने के लिए एक आदमी भेजा। बुढ़िया ने क़ासिद की ज़ुबानी कहला भेजा कि यूसुफ़ ख़ुद मेरे पास आएं और फिर फ़िल-बदीह यह शे'र पढ़ा।

لَا تَبْعَثُوْنَ مَعَ النَّسِيْمِ رِسَالَةً　　اِنِّیْ اَغَارُ مِنَ النَّسِيْمِ عَلَيْكُمْ

तुम नसीम को क़ासिद बना कर मेरे पास न भेजो क्योंकि मुझे नसीम से तुम पर रश्क आता है" क़ासिद बुढ़िया का यह जवाब सुनकर पलटा और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बुढ़िया के जवाब को बताया। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उठे और उसके पास जाकर कहने लगे। ऐ बुढ़िया! हमारी दावत क़ुबूल करके मज्लिस की रौनक़ बढ़ा। बुढ़िया ने यूसुफ़ की ज़ुबानी यह कलिमा सुनकर एक ठंडी सांस भर कर कहा हाए एक दिन वह था कि तू मुझे **या सैय्यदती** कहकर अदब से पुकारता था आज वह दिन है कि तू मुझे बुढ़िया कहकर पुकारता है। मैंने अपना बे-गिनत माल तुझ पर निछावर किया और तेरे क़दमों के तले बेश क़ीमत मोती बिछाए। बुढ़िया की इन बातों को सुनकर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने शाहाना सख़्ती से फरमाया कि यह क्या गुस्ताख़ी और ताज़ा करिश्मा है। बुढ़िया ने कहा यूसुफ़ मैं ज़ुलेखा हूँ इस हैरत अंगेज़ इंकिशाफ़ पर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दिल पर बड़ा असर हुआ और आप रोने लगे। ज़ुलेखा वहाँ से उठकर मज्लिसे दावत में आई तो तमाम लोग उठ खड़े हुए हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फिर एक क़ीमती लिबास उसे पहनाया ज़ुलेखा ने कहा मेरे क़ब्ज़ा में इससे बहुत कुछ बढ़कर था। अगर मेरा दिली मक़्सद इस वक़्त बर लाएं तो बेहतर वरना मैं फिर अपनी झोंपड़ी में चली जाऊँगी फरमाया वह क्या मक़्सद है बोली मेरी गई हुई जवानी और आंखों की रोशनी वापस आ जाए और आप मुझे अपने निकाह में लाकर मुझे इज़्ज़त बख़्शें। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कुछ सोचने लगे कि जिब्राईले अमीन ने आकर अर्ज़ की ख़ुदा तआला फरमाता है। हमने तेरे लिए उसकी जवानी और बीनाई वापस करके उसे अज़्मत बख़्शी सो अब तू निकाह के साथ उसके सर पर इज़्ज़त का ताज रख। आपने देखा ज़ुलेखा जवान और बीना हो गई और आपने उससे निकाह कर लिया।

(नुज़सतुल-मजालिस बाबुल-अमानत स. ३ जि. २)

सबक़

मालूम हुआ कि ज़ुलेखा को अल्लाह के पैग़म्बर से सच्ची मुहब्बत थी और वह आपके हिज्र व फिराक़ में बूढ़ी और नाबीना हो गई थी अल्लाह के पैग़म्बर के साथ इस सच्ची मुहब्बत की बदौलत वह जवानी व बीनाई जो जाकर कभी वापस नहीं आती। अल्लाह तआला ने वापस कर दीं और उन्हें फिर से नई जवानी अता फरमा दिया और वह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम

के निकाह में आकर पैग़म्बर की बीवी बन गईं। यह भी मालूम हुआ कि जिन सच्चे मुसलमानों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत होती है। उनके चेहरों पर नूर बरसता नज़र आता है और उनकी शान यह होती है कि اذا راو ذكر الله जब उन्हें देखा जाए तो ख़ुदा याद आ जाता है और वह लोग हुज़ूर का नाम सुनकर चूम कर आंखों से लगा लेते हैं।

और उसके बरअक्स जिन्हें हुज़ूर से मुहब्बत नहीं होती उनके दिल भी सियाह और चेहरे भी बेनूर और हुज़ूर के फ़ज़ाइल देखने में आंखों के अंधे नज़र आते हैं।

एक आजकल का माडर्न इश्क़ व मुहब्बत भी है कि यूरोप की फैंसी खुजूर की मार्डन झोंपड़ी में रहकर बुढ़िया मैक अप करके बनावटी जवान बनती है और कमज़ोरी नज़र को छुपाने के लिए काली ऐनक पहन कर निकलती है और सिविल मैरेज के ज़रिया शादी करके थोड़ी देर के बाद ही पसीना आ जाने पर फिर बुढ़िया की बुढ़िया और ऐनक उतारने पर फिर वह अंधी की अंधी नज़र आने लगती है।

यहाँ एक लतीफा सुन लीजिए। एक दोस्त ने अपने दोस्त से कहा। मैंने आराइशे हुस्न की चीज़ें बनाने वालों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दायर करने का इरादा कर लिया है। दोस्त ने पूछा। मगर क्यों? वह बोला कि उन चीज़ों को इस्तेमाल करके एक औरत ने जो बुढ़िया थी जवान बन कर मुझे धोखा दिया है।" मैंने लिखा है।

काली चिमनी पे यह पौडर की सफ़ेदी मल कर
बुते अय्यार तू धोखा न दे परवाने को

❖❖❖

हिकायत नम्बर (६)
मलिकए-सबा बिल्क़ीस

मुल्क यमन के इलाक़ा सबा की मलिका बिल्क़ीस बहुत बड़ी हुक्मरान थी और उसे सलतनत के सब साज़ व सामान हासिल थे और उसका जो तख़्त था बहुत बड़ा था सोने और चाँदी का बना हुआ था और बड़े-बड़े क़ीमती जवाहरात से जड़ा था। यह तख़्त अस्सी गज़ लम्बा चालीस गज़ चौड़ा और तीस गज़ ऊँचा था। यह ज़माना हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का था। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने एक रोज़ अपने दरबार में

हुद-हुद परिन्दे को मौजूद न पाकर फरमाया कि हुद-हुद की ग़ैर हाज़री पर मैं उसे सज़ा दूँगा। वरना कोई माक़ूल उज़्र ब्यान करे थोड़ी देर के बाद हुद-हुद भी आ गया और उसने मलिक-ए-सबा बिल्क़ीस का हाल ब्यान किया कि वह बहुत बड़ी हुक्मरान है। उसके पास एक बड़ा उम्दा और बड़ा भारी तख़्त भी है जिस पर वह बैठती है मगर है वह बुत परस्त वह और उसकी रिआया के लोग सूरज की पूजा करते हैं और अल्लाह को सजदा नहीं करते। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने हुद-हुद की बात सुनकर मलिक-ए-सबा बिल्क़ीस के नाम एक ख़त लिखा जिसका उनवान यह था।

إِنَّهُ مِن سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ أَلَّا تَعْلُوا عَلَيَّ وَأْتُونِي مُسْلِمِينَ

(प.१६, अ.१७)

बेशक वह सुलेमान की तरफ से है और बेशक वह अल्लाह के नाम से है जो निहायत मेहरबान रहम वाला है। तुम मेरे पास मुसलमान बनकर हाज़िर हो जाओ। और घमंड न करो।

हुद-हुद यह ख़त लेकर सबा में जा पहुँचा और मलिका-ए-सबा बिल्क़ीस के तख़्त पर जा डाला। बिल्क़ीस ने पढ़ा तो घबरा गई और अपने अरकाने दौलत से जिक्र किया कि लो यह ख़त पढ़ो और अपनी राय ब्यान करो और बताओ कि मैं सुलेमान के पास जाऊँ या ना जाऊँ। उन्होंने कहा हम तो बड़े क़वी लड़ने वाले लोग हैं। सुलेमान से हमें कोई ख़तरा नहीं ताहम आपकी जो राय हो वही ठीक है। बिल्क़ीस अक़लमन्द थी उसने कहा। लड़ाई का अंजाम बुरा है। अगर वह ग़ालिब आ गया तो आकर उलट पलट कर देगा। इज़्ज़तदारों को ज़लील कर देगा। क्योंकि बादशाहों का यही दस्तूर है। सुलह कर लेनी बेहतर है। पहली मरतबा तो उसके पास जाना बेहतर नहीं मसलेहत इसमें है कि पहले कुछ तोहफ़े देकर ऐल्चियों को भेजा जाए उससे सुलेमान की पूरी कैफ़ियत मालूम हो जाएगी। यह बात सबको पसन्द आई और बड़े-बड़े बेश-क़ीमत हदिए देकर एल्चियों को भेजा ताकि सुलेमान इस माल को देखकर नरम हो जाएं। बिल्क़ीस की यह भूल थी क्योंकि सुलेमान अलैहिस्सलाम तो अल्लाह के पैग़म्बर थे। उनका मक़सद तो उस सूरज परस्त मलिका को इस्लाम में लाना और बुराई से बचाना था इसलिए उसके ऐल्ची जब बेश-क़ीमत हदिए लेकर सुलेमान अलैहिस्सलाम के पास पहुँचे तो आपने उनको कुछ भी ख़ातिर में ना लाकर यह फरमाया कि अल्लाह का दिया मेरे पास सब कुछ है। ऐसे हदियों से तुम्हीं खुश हो

जाओ जाकर उससे कह दो कि वह मुसलमान बनकर हाज़िर हो वरना मैं ऐसा भारी लश्कर भेजूंगा कि जिसका कोई मुक़ाबला न कर सकेगा। और मैं उनको वहाँ से ज़लील व ख़्वार करके निकाल दूँगा। ऐल्ची तो इधर रवाना हुए और उधर हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने अपने दरबारियों से कहा कि तुममें से है कोई बिल्क़ीस के आने से पहले मेरे पास उसका तख़्त उठा लाए। एक बड़े क़वी जिन्न ने कहा। हुज़ूर मैं वह तख़्त आपके दरबार से रुख़्सत होने से पहले ले आता हूँ एक दूसरे दरबारी ने जो किताब का इल्म रखता था। कहा हुज़ूर! मैं उसका तख़्त आपके पलक झपकने से पहले ले आता हूँ चुनांचे पलक झपकते ही उसने वह तख़्त लाकर सुलेमान अलैहिस्सलाम के सामने लाकर खड़ा कर दिया। उसके बाद बिल्क़ीस जब दरबारे सुलेमान में पहुँची तो अपने से पहले वहाँ अपना तख़्त देखकर हैरान रह गई और कहने लगी। हुज़ूर! हमें तो पहले ही मालूम हो गया था कि आप बड़े ताक़तवर और खुदा के बरगुज़ीदा हैं और फिर कहने लगी।

رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَیْمَانَ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ.

ऐ मेरे रब मैंने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया था और अब मैं सुलेमान के साथ अल्लाह की हुक्म बरदार (मुसलमान) होती हूँ जो सारे जहानों का रब है। (कुरआन मजीद व तफ़्सीरे हक़्क़ानी स.२६० जि.५)

उसके बाद हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने बिल्क़ीस से निकाह फरमा लिया। (नुज़्हतुल-मजालिस स.४४४, जि.२)

सबक़

अल्लाह के पैग़म्बर शिर्क व कुफ़्र से लोगों को बाज़ रखने के लिए तशरीफ़ लाते हैं और गुमराहों को गुमराही से बचा कर अल्लाह के आगे झुका देते हैं। यह भी मालूम हुआ कि कोई कितनी बड़ी सलतनत का मालिक बादशाह व हुक्मरान भी क्यों न हों। अल्लाह के पैग़म्बर के सामने वह कुछ भी नहीं और उसे दुनियवी जाह व जलाल व मता व माल की कुछ परवाह नहीं होती। मुफ़स्सेरीन ने लिखा है कि सुलेमान अलैहिस्सलाम के दरबार और बिल्क़ीस के तख़्त के मक़ाम का दरम्यानी फ़ासला दो महीना की राह का था और तख़्त का तूल व अर्ज़ आप पढ़ ही चुके हैं कि तीस गज़ ऊँचा, चालीस गज़ चौड़ा और अस्सी गज़ लम्बा था। इस लंबी दूरी और इतने वज़नदार होने के बावजूद सुलेमान अलैहिस्सलाम का एक

मुसाहिब (साथी) उसे पल भर में ले आया। तो फिर सैय्यदुल-अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के औलिया-ए-उम्मत दूर दराज़ की दूरी से किसी की मदद व हिमायत को क्यों नहीं पहुँच सकते? इलके अलावा सुलेमान अलैहिस्सलाम का एक सिपाही अगर दो महीने की दूरी पल भर में तय कर सकता है तो सैय्यदुल-अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व अलैहि वसल्लम शबे मेराज में ज़मीन व आसमान की मसाफ़त पल भर में क्यों तय नहीं कर सकते ?

कुरआन पाक में इस आलमे किताब का तख़्त को पल भर में ले आने का वाक़्या इन अल्फ़ाज़ के साथ मज़्कूर है।

وَقَالَ الَّذِىْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ.

उसने अर्ज़ की जिसके पास किताब का इल्म था कि मैं उसे आपके हुज़ूर ले आऊँगा। आपकी आंख झपकने से पहले।

आयते शरीफ़ा में जो "اٰتِيْكَ بِهٖ" का लफ़्ज़ है उसका माना है मैं उसे आपके हुज़ूर ले आऊँगा।" यह "ले आऊँगा" जभी वाक़े हो सकता है जबकि वह पहले जाए भी यानी वह पहले जाएगा फिर लेकर आएगा। आने के लिए पहले जाना ज़रूरी है गोया उसने यूं अर्ज़ की कि मैं जाऊँगा और आंख झपकने से पहले ले आऊँगा चुनांचे वह आंख झपकने से पहले इतनी दूर गया भी और आ भी गया और इतनी तेज़ी के साथ कि दरबार से ग़ायब भी नहीं हुआ। यह है सुलेमान अलैहिस्सलाम के एक सिपाही की करामत कि एक ही वक़्त में यहाँ भी है और वहाँ भी। फिर सैय्यदुल-अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक वक़्त में मुतअद्दिद जगह होना क्यों मुम्किन नहीं ? और यह भी मालूम हुआ कि जंग और लड़ाई अच्छी चीज़ नहीं। इसीलिए जंग की तमन्ना भी गुनाह है। मुसलमान अमन व सलामती का दाई है। इसी वासते मुसलमानों ने जब भी जंग लड़ी हिफ़ाज़त के लिए लड़ी नुक़सान के लिए नहीं। जारिहाना जंग शेव-ए-कुफ़्फ़ार है मुसलमान के लिए यह सबक़ है कि ख़ुद जंग न छेड़ो। पहल न करो और अगर दुश्मन पहल करे तो फिर فلا تولو هم الادبار के मुताबिक़ जंग से पीठ फेरना गुनाह है गोया मुसलमान के लिए यह हुक्म है कि किसी को मत छेड़ो। और अगर कोई छेड़े तो मत छोड़ो।

हिकायत नम्बर (७)

बी-बी रहमत

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीवी का नाम रहमत था। यह आपकी बड़ी फ़रमांबरदार और जांनिसार थी हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम जब बीमार हुए। तमाम जिस्म शरीफ़ पर आबले पड़े। बदने मुबारक सबका सब ज़ख़्मों से भर गया। सब लोगों ने आपको छोड़ दिया मगर आपकी बीवी ने आपको न छोड़ा। वह आपकी ख़िदमत करती रहीं और यह हालत कई साल तक रही। एक रोज़ आप बाज़ार गईं तो रास्ते में शैतान तबीब (हकीम) बन कर लोगों का इलाज कर रहा था और ऐलान कर रहा था कि मेरे पास हर मर्ज़ का इलाज है। बी बी रहमत न जान सकीं कि यह शैतान है अपने मुक़द्दस शौहर के ग़म में उनका इलाज दरयाफ़्त करने को उसके पास चली गईं और कहा कि मेरे शौहर बीमार हैं और यह उन्हें शिकायत है शैतान ने इसी ग़रज़ के लिए तो तबीब (हकीम) का भेस बदला था। बी-बी रहमत से कहने लगा कि मैं उनका इलाज कर सकता हूँ वह बिल्कुल अच्छे हो जाएंगे मगर शर्त यह है कि जब वह अच्छे हो जाएं तो मुझसे इतना कह दें। اَنْتَ شَفَيْتَنِى तूने मुझे शिफ़ा दी है बस मेरी फ़ीस सिर्फ़ यही है और कुछ नहीं। बी-बी रहमत ख़ुशी-ख़ुशी घर आईं और हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को सारा क़िस्सा सुना दिया। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम जान गए कि यह तबीब के भेस में शैतान है। आप ग़ुस्से में आ गए और जलाल में आकर फ़रमाया। तुम उसके पास क्यों गईं? मैं अच्छा हो गया तो बख़ुदा तुम्हें सौ कोड़े मारूँगा तो जिब्रीले अमीन हाज़िर हुए और कहा कि आपकी बीवी ने आपकी बड़ी ख़िदमत की है और आपने उसे सौ कोड़े मारने की क़सम खा रखी है। अब इस क़सम को यूं पूरा कीजिए कि अपने हाथ में एक झाड़ू लीजिए जिसकी सौ शाख़ें हों वह एक दफ़ा मार दीजिए आपकी क़सम पूरी हो जाएगी। चुनांचे ख़ुदा ने फ़रमाया :

خُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِهٖ وَلَا تَحْنَثْ

(प.२३, अ.१३)

अपने हाथ में एक झाड़ू लेकर उस से मार दे और क़सम न तोड़। चुनांचे आपने ऐसा ही किया और आपकी क़सम पूरी हो गई।

(रुहुल-ब्यान स.३५६ जि.३)

सबक़

शौहर की ख़िदमत व फ़रमाबर्दारी से ख़ुदा ख़ुश होता है। औरतों को हज़रत बी-बी रहमत के किरदार से सबक़ हासिल करना चाहिए और अपने शौहर की ख़िदमत व फ़रमाबर्दारी में कमरबस्ता रहना चाहिए यूं न होना चाहिए कि ख़ाविन्द बीमार पड़ जाए तो उसे अस्पताल में दाख़िल कराके उसे नर्सों के हवाले करके ख़ुद सैर सपाटे और सिनेमा देखने में दिन रात गुज़ारने शुरू कर दिए जाएं चुनांचे कहते हैं ऐसी ही एक माडर्न औरत सिनेमा देखने में मसरूफ़ थी उसके दोनों तरफ़ की जगहें खाली थीं। यकायक एक शख़्स आया। और बोला। मोहतरमः! अगर आपको एतराज़ न हो तो आपकी बराबर वाली कुर्सी पर मैं बैठ जाऊँ।

औरत ने जवाब दिया। ज़रूर! दरअसल बात यह है कि उन दोनों जगहों को मैंने अपने दोस्तों के लिए बुक करा लिया था मगर मेरे सारे दोस्त मेरे शौहर के जनाज़े में गए हुए हैं।"

यह है आजकल की माडर्न औरत का किरदार कि शौहर मर कर क़ब्रिस्तान में बीवी सिनेमा हाल में।

यह भी मालूम हुआ कि शैतान दीन के रास्ते से भटकने के लिए सौ-सौ भेस बदल लेता है कभी तबीब बन जाता है कभी आलिम और कभी सूफ़ी और कभी मुबल्लिग़ (पढ़े लिखे लोग) भी बन जाता है। क़ुरआन भी पढ़ने लगता है। हदीसें भी सुनाने लगता है सीधे साधे इंसान तो उसके दाव में आ जाते हैं मगर अह्ले बसीरत (तबलीग़ करने वाले) जान लेते हैं कि यह शैतान है। इसीलिए मौलाना रूमी ने लिखा है कि –

ऐ बसा इब्लीसे आदम रूए हस्त
पस न बायद दादे दर हर दस्त दस्त

यानी बहुत से शैतान इन्सानों के भेस में फिर रहे हैं इसलिए बेग़ैर समझे बूझे हर एक के हाथ में हाथ न दे देना चाहिए। हर चमकदार धात सोना नहीं। हर दवाई फ़रोश (दवा बेचने वाला) तबीब नहीं और हर क़ुरआन ख़्वां और हदीस सुनाने वाला और नमाज़ व रोज़ा की तल्क़ीन करने वाला मुसलमान नहीं मुसलमानों को शैतानों के हर दाव से होशियार रहना चाहिए।

यह भी मालूम हुआ कि शरीअत में हीला करना जाइज़ है जैसे कि सौ कोड़े मारने की क़सम को ख़ुदा तआला ने सौ शाख़ों वाले झाड़ू मार देने

के हीले से पूरा फरमा दिया। साहिबे रूहुल-ब्यान ने लिखा है कि लैस-बिन-सअद ने क़सम खाई कि वह इमाम अबू-हनीफ़ा रज़ि. अल्लाहु अन्हु को तल्वार से मारेगा। फिर वह इस क़सम पर पशीमान (पछताना) हुआ कि यह क़सम मैंने क्यों खाई? और इमाम साहब से दरयाफ़्त करने लगा कि कोई ऐसी सूरत ब्यान फरमाइए जिससे मैं इस क़सम से बरी हो जाऊँ। फरमाया तल्वार पकड़ कर उसकी चौड़ान से मुझे मार लो क़सम पूरी हो जाएगी।

(रुहुल-ब्यान स.३५६ जि.३)

हम पे यह एहसाने हक़ है ला कलाम
बू हनीफ़ा हैं हमारे जो इमाम

❖❖❖

हिकायत नम्बर (८)
हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बीवी

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब फिरऔन की मुख़ालिफ़त शुरू की तो फिरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर देने का हुक्म दिया और लोग आपकी तलाश में निकले तो फिरऔनियों में से एक नेक आदमी ने मूसा अलैहिस्सलाम की ख़ैर ख़्वाही से उन्हें मश्वरा दिया कि वह अपनी जान बचाने को कहीं और तशरीफ़ ले जाएं चुनांचे आप उसी वक़्त निकल पड़े और मदीयन की तरफ़ रुख़ कर लिया। मदीयन वह मक़ाम है जहाँ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम तशरीफ़ रखते थे। यह शहर फिरऔन की हुदूद व सलतनत से बाहर था। हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का रोज़ी का ज़रिआ बकरियाँ थीं। दो आपकी साहबज़ादियाँ थीं। मदीयन में एक कुआं था। मूसा अलैहिस्सलाम पहले उसी कुएं पर पहुँचे। आपने देखा कि बहुत से लोग उस कुएं से पानी खींचते और अपने जानवरों को पानी पिला लेते हैं और हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की दोनों लड़कियाँ भी अपनी बकरियों को अलग रोक कर वहीं खड़ी हैं। मूसा अलैहिस्सलाम ने उन लड़कियों से पूछा कि तुम अपनी बकरियों को पानी क्यों नहीं पिलातीं। उन्होंने कहा कि हमसे डोल खींचा नहीं जाता। यह लोग चले जाएंगे तो जो पानी हौज़ में बचा रहेगा वह हम अपनी बकरियों को पिला लेंगी। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को रहम आ गया और पास ही जो एक दूसरा कुआं था जिस पर एक बहुत

बड़ा पत्थर ढका हुआ था और जिसको बहुत से आदमी मिलकर हटा सकते थे। आपने तन्हा उसको हटा दिया और उसमें से डोल खींच कर उनकी बकरियों को पानी पिला दिया। घर जाकर दोनों साहबज़ादियों ने हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम से मूसा अलैहिस्सलाम का यह वाक़्या ब्यान किया तो हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने अपनी बड़ी साहबज़ादी सफ़ूरा से फरमाया। जाओ उस मर्द को मेरे पास ले आओ।

فَجَاءَتْهُ اِحْدٰهُمَا تَمْشِیْ عَلَی اسْتِحْیَاءٍ۔

तो उन दोनों में से एक उसके पास आई शर्म से चलती हुई।

मुफ़स्सिरीन (तफ़सीर लिखने वाले) ने लिखा है कि अपने चेहरा को आसतीन से ढके हुए और जिस्म को छुपाए हुए बड़ी शर्म व हया से चलती हुई हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आई और कहा कि चलिए मेरे वालिद आपको बुलाते हैं। चुनांचे आप हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की ज़ियारत की नीयत से चल पड़े और सफ़ूरा से फरमाया कि तुम मेरे पीछे रह कर रस्ता बताती जाओ। यह आपने पर्दे के एहतेमाम से फरमाया और इसी तरह तशरीफ़ लाए जब हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के पास पहुँचे तो आपके हालात सुनकर उन्होंने फरमाया। अब कोई फ़िक्र न करो। ज़ालिम फिरऔनियों से बच कर तुम यहाँ चले आए। अब यहीं मेरे पास रहो। चुनांचे आप दस बरस हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के पास रहे और हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने अपनी साहबज़ादी का मूसा अलैहिस्सलाम से निकाह कर दिया।

(क़ुरआन करीम प.२० अ.६। तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान स.५४७)

सबक़

अल्लाह का नाम लेने वालों की मुख़ालिफ़त होती चली आई है और अल्लाह अपने नाम लेवाओं की हिफ़ाज़त फरमाता है और शर्रे आदा (दुश्मन के नुक़सान) से उन्हें बचाता है यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह के पैग़म्बर सारे इन्सानों से मुम्ताज़ व बाला होते हैं जिस वज़नी पत्थर को कई आदमी मिल कर हटा सकते थे मूसा अलैहिस्सलाम ने तन्हा उसे हटा दिया। उस मौक़ा पर हमारे आक़ा व मौला सैय्यदुल-अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम के मुतअल्लिक़ आला हज़रत का यह शे'र पढ़िए।

जिसको बारे दो आलम की परवाह नहीं
ऐसे बाज़ू की हिम्मत पे लाखों सलाम

यह भी मालूम हुआ कि नेक लोगों की नेक लड़कियाँ हज़रत सफूरा की तरह शर्म व हया और पर्दा व हिजाब से चलती हैं। नेक लोग अपनी लड़कियों को शर्म व हया का सबक़ देते हैं और उन्हें खुले बदनों, नंगे सर, नंगे मुंह, बाज़ारों में फिरने की इजाज़त नहीं दे देते और न ही नेक लड़कियाँ ग़ैरों की मज्लिसों में जाकर बेहयाई के साथ ग़ैर मर्दों से हाथ मिलाती हैं लेकिन अफ़सोस आजकल तो कुछ ऐसी रौशन ख़्याली चल पड़ी है कि –

है बुलन्द अख़्लाक़ मिस्टर और बड़ा रौशन ख़्याल
अपनी बीवी को मिला कर ग़ैर से मसरूर है

और इस रौशन ख़्याली का नतीजा यह निकला कि

मर्द हाकिम था कभी औरत पे लेकिन आजकल
बीवी घर की मालिका है और मियाँ मज़्दूर है

यह भी मालूम हुआ कि मूसा अलैहिस्सलाम ने पर्दे के एहतेमाम से हज़रत सफूरा को अपने पीछे रहकर चलने को कहा। इसी तरह आज भी बुरक़ा पोश औरत अपने शौहर के पीछे-पीछे चलती है लेकिन बे-हिजाब माडर्न बीवी आगे और उसका शौहर बीवी के पीछे-पीछे चलता है। उसमें शायद ख़तरे से बचाना मक़्सद होता है कि माडर्न औरत नज़रों में रहे और कहीं ग़ायब न हो जाए और पीछे पीछे चलने में इस हक़ीक़त का इज़्हार भी होता है कि –

बीवी घर की मालिक व मुख़्तार है
और मियाँ बीवी का ताबेदार है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (६)

हज़रत मरयम अलैहस्सलाम

हज़रत मरयम किसी की बीवी नहीं हैं। हां एक पैग़म्बर की मां हैं। आपका ज़िक्र भी इसी बाब में मौज़ूं है।

हज़रत मरयम अलैहस्सलाम के वालिद इमरान और ज़करिया अलैहिस्सलाम दोनों हम ज़ुल्फ़ थे। इमरान की बीवी का नाम हन्ना था और ज़करिया अलैहिस्सलाम की बीवी का नाम ईशान था। इमरान की बीवी हज़रत हन्ना से एक ज़माना तक औलाद न हुई यहाँ तक कि बुढ़ापा आ गया और मायूसी हो गई। यह सालेहीन (नेक लोगों) का खानदान था और

यह सब लोग अल्लाह के मक़्बूल बन्दे थे एक रोज़ हन्ना ने एक दरख़्त के साया तले एक चिड़िया अपने बच्चे समेत देखी तो यह देखकर आपके दिल में औलाद का शौक़ पैदा हुआ और बारगाहे इलाही में दुआ की यारब अगर तू मुझे बच्चा दे तो मैं उसको बैतुल-मुक़द्दस का ख़ादिम बनाऊँ और इस ख़िदमत के लिए हाज़िर कर दूँ चुनांचे ख़ुदा ने दुआ सुन ली और जब वह हामिला हुई और उन्होंने यह नज़र मान ली तो उनके शौहर ने फ़रमाया कि यह तुमने क्या किया अगर लड़की हो गई – तो वह इस क़ाबिल कहाँ है उस ज़माना में लड़कों को ख़िदमते बैतुल-मुक़द्दस के लिए दिया जाता था और लड़कियाँ और मर्दों के साथ न रह सकने के बाइस इस क़ाबिल नहीं समझी जाती थीं वज़ए हमल से पहले इमरान का इन्तिक़ाल हो गया और हज़रत हन्ना के हाँ लड़की पैदा हुई और अल्लाह के फ़ज़्ल से ऐसी लड़की पैदा हुई जो फ़रज़न्द से ज़्यादा फ़ज़ीलत रखने वाली थी। यह साहबज़ादी ही हज़रत मरयम थीं और अपने ज़माना की औरतों में सबसे अजमल व अफ़्ज़ल (हसीन और नेक) थीं। उनका नाम मरयम इसलिए रखा गया कि मरयम का माना है। आबिदा (इबादत करने वाली)।

(कुरआन करीम प.३अ.१२ तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान स. ८० – ८१)

सबक़

अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों की दुआएँ सुनता और कुबूल करता है। हज़रत हन्ना को बुढ़ापे में बच्चा अता फरमा दिया और हज़रत हन्ना की तमन्ना भी हमारे लिए मशअ़ले राह है। नज़र यह मानी कि ख़ुदा मुझे बच्चा दे तो मैं उसे बैतुल-मुक़द्दस की ख़िदमत के लिए वाक़िफ़ छोड़ दूँगी आजकल की माओं की तरह नहीं कि ख़ुदा बच्चा अता करे तो उसे मैं लंदन भेजूँगी उसे डी-सी बनाऊँगी और थानेदार बनाऊँगी वह अलग बात है कि थानेदार साहब अपनी माँ ही को हथकड़ी लगाने आ धमके मालूम हुआ कि अल्लाह से औलाद की तलब की जाए तो तमन्ना यह होनी चाहिए कि मेरा बच्चा दीन का ख़ादिम बने। मस्जिदें आबाद करे और ख़ुदा को याद करे। यह नहीं कि दिन भर हाकी का मैच ही खेलता रहे। मैंने लिखा है।

बनी टी और कभी बनती हैं टीमें
रहे हैं आप तो बस टी ही टी में
नमाज़े अस्र की फ़ुर्सत नहीं है
कि हैं मसरूफ़ टी पार्टी में

हिकायत नम्बर (१०)

हज़रत मरयम मेहराब में

हन्ना ने जो नज़्र मानी थी। ख़ुदा-ए-तआला ने कुबूल फरमा ली। हज़रत हन्ना ने हज़रत मरयम के पैदा होने के बाद एक कपड़े में लपेट कर बैतुल-मुक़द्दस में अहबार के सामने पेश कर दिया। यह अहबार हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में से थे। चूंकि हज़रत मरयम उनके इमाम की बेटी थीं और उनका खानदान बनी-इसराईल में बड़ा ऊँचा खानदान था इसलिए उन सबने जिनकी तादाद सत्ताईस थी हज़रत मरयम को लेने और उनका ज़िम्मेदार बनने की ख़्वाहिश की। हज़रत ज़करिया ने फरमाया मैं चूंकि मरयम का खालू हूँ। इसलिए सबसे ज़्यादा हक़दार मैं हूँ। मामला इस पर ख़त्म हुआ कि कुरआ डाला जाए। कुरआ डाला। तो कुरआ हज़रत ज़करिया के नाम ही निकला और आप हज़रत मरयम के ज़िम्मेदार बने। आपने फिर बैतुल-मुक़द्दस में हज़रत मरयम के लिए मेहराब के पास एक कमरा बनाया उसमें आपको रखा। हज़रत मरयम की यह करामत थी कि आप एक दिन में इतना बढ़तीं जितना दूसरा बच्चा साल भर में बढ़ता है और आपने किसी औरत का दूध भी नहीं पिया बल्कि हज़रत ज़करिया जब कमरा बन्द करके उसे ताला लगाकर बाहर तशरीफ़ ले जाते और वापस वहाँ आते तो उनके पास रंग-रंग के बे-मौसम फल मौजूद पाते। एक रोज़ आपने यह मंज़र देखा तो पूछा। يَامَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذِه

ऐ मरयम! यह मेवे तेरे पास कहाँ से आए आपने जवाब दिया।

هُوَ مِنْ عِنْدِ اللهِ वह अल्लाह के पास से है।

यह भी हज़रत मरयम की करामत थी कि बचपन में आपने बात सुनकर उसका जवाब दिया और फरमाया कि यह बे–मौसम का फल अल्लाह के पास से आया है। हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम ने जब यह देखा कि अल्लाह तआला मरयम के पास बे-मौसम के फसल भेज रहा है तो फरमाया कि जो ज़ाते पाक मरयम को बे-वक़्त बे-फ़स्ल और बेग़ैर सबब के मेवा अता फरमाने पर क़ादिर है। वह बेशक इस पर भी क़ादिर है कि मेरी बांझ बीवी को नई तन्दुरुस्ती दे। और मुझे बुढ़ापे की उम्र में उम्मीद ख़त्म हो जाने के बाद बेटा अता फरमाए।

هُنَالِكَ دعا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ قَالَ رَبِّ هَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً. اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَاءِ

(प.३, अ.१२)

यहाँ पुकारा ज़करिया ने अपने रब को बोला ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद। बेशक तू ही है दुआ सुनने वाला।

चुनांचे वहाँ मांगने का यह असर हुआ कि जिब्रीले अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया।

اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى

आपको मज़्दा (ख़ुशख़बरी) देता है यह्या का।

चुनांचे मुक़द्दस बुढ़ापे में आपको अल्लाह तआला ने यह्या अलैहिस्सलाम अता फरमाए। (कुरआन करीम प.३ अ. १२ रूहुल-ब्यान स.३२३ जि.१, ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान स. ८१)

सबक़

करामाते औलिया हक़ हैं हज़रत मरयम बेग़ैर किसी औरत का दूध पिए दिन में इतना बढ़तीं जितना दूसरा बच्चा साल भर में बढ़ता है और आपके लिए खाने पीने का सामान जन्नत से आता। मालूम हुआ कि अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है यह जो आम क़वानीने कुदरत नज़र आते हैं ख़ुदा तआला उनका पाबन्द नहीं बल्कि यह क़वानीन खुद ख़ुदा की मर्ज़ी के पाबन्द हैं वह अपने क़ानून के ख़िलाफ़ भी जो चाहे कर सकता है यानी उसका एक क़ानून यह भी है कि आम क़वानीन के बरअक्स जो चाहे कर दिखाए जो लोग मोजज़ात व करामात के मुंकिर हैं वह शाने उलूहीयत से बेख़बर हैं वह ख़ुदा को उन क़वानीन का ताबे समझते हैं। मआज़ल्लाह हालांकि सब क़वानीन उसके ताबे हैं। यह भी मालूम हुआ कि ख़ुदा तआला अपने मख़्सूस बन्दों की ख़ास तरबियत फरमाता है और यह भी मालूम हुआ कि जहाँ किसी अल्लाह के नेक बन्दे के क़दम लग जाएं। उस जगह में यह तासीर पैदा हो जाती है कि वहाँ जो भी दुआ मांगी जाए अल्लाह कुबूल फरमा लेता है इसीलिए तो हज़रत ज़करिया ने هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ के मुताबिक़ वहाँ खड़े हो कर दुआ मांगी जहाँ मरयम बैठी थीं गोया हज़रत मरयम के क़दमों की बरकत से वह क़ता ज़मीन ऐसा क़ता बन गया था कि वहाँ जो दुआ मांगो कुबूल हो जाती थी वरना हज़रत ज़करीया ने वही जगह दुआ के लिए क्यों मुंतख़ब की। बेशक सारी ज़मीन अल्लाह ही की ज़मीन है मगर उस ज़मीन के बाज़ हिस्से शोरज़दा और बाज़ क़तए पैदावार के हक़ में मुफ़ीद होते हैं कुसूर की ज़मीन से मेथी ख़ुशबूदार पैदा होती है पसरूर की ज़मीन हांडियों के लिए मशहूर है हमारे सियालकोट का ख़ित्ता इल्म

ख़ेज़ मशहूर है मुल्ला अब्दुल-हकीम सियालकोटी रहमतुल्लाह अलैहि के अलावा यहाँ से बड़े-बड़े अह्ले इल्म पैदा हुए। नज्द की सरज़मीन फ़ितनों की ज़मीन है इंग्लिस्तान की ज़मीन फ़रेब और मक्कारी पैदा करती है। मदीना मुनव्वरा की सरज़मीन रश्के जन्नत और मुहीते मलाइका है। अलग़र्ज़ जहाँ किसी अल्लाह के बन्दे के क़दम लग जाएं। वह क़तआ ज़मीन मुतबर्रक हो जाता है। हज़रत ज़करीया अलैहिस्सलाम ने इसलिए उसी जगह दुआ मांगी जहाँ मरयम बैठी थीं। इसी तरह हम जो दाता साहब के मज़ार पर अजमेर शरीफ़ की हाज़िरी देकर वहाँ दुआ माँगते हैं इसीलिए कि यह क़तआत ज़मीन अल्लाह वालों के क़दमों की बरकत से मुक़द्दस हो चुके हैं जहाँ अल्लाह से जो भी दुआ मांगी जाएगी। ख़ुदा दुआ कुबूल फरमाएगा और मदीना मुनव्वरा की हाज़िरी नसीब हो जाए तो फिर कहने ही किया। वह सरज़मीन तो है ही जन्नत और मुहीते मलाइका। वहाँ जो मांगो पाओ।

मंगते का हाथ उठते ही दाता की देन थी
दूरी कुबूल व अर्ज़ में बस हाथ भर की है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (११)

इब्ने मरयम अलैहस्सलाम

हज़रत मरयम जब जवान हुईं तो एक बार उनको ख़ूबसूरत आदमी की शक्ल में ख़ुदा का फ़रिश्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम नज़र आया। क़ुरआन पाक में है فَاَرْسَلْنَا اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا तो उसकी तरफ हमने रूहानी (जिब्रील) भेजा। वह उसके सामने एक तन्दुरुस्त आदमी बन कर ज़ाहिर हुआ"..........मरयम घबरा गई और कहा। मैं तुझसे अल्लाह की पनाह माँगती हूँ। अगर तुझे ख़ुदा का डर है। जिब्रील ने कहा। मैं इंसान नहीं बल्कि मैं तो तेरे रब का भेजा हुआ हूँ। لِاَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا ताकि तुम्हें मैं एक सुथरा बेटा दूँ बोली यह क्योंकर होगा। मुझे तो किसी आदमी ने हाथ नहीं लगाया न मैं बदकार हूँ फरिश्ते ने कहा। यूंही तेरे रब ने फरमाया है कि यह मुझे आसान है वह अपनी कुदरते कामिला से बेग़ैर बाप के बच्चा पैदा कर सकता है। वह फ़रमाता है कि हम इस तरह बच्चा

पैदा फरमा कर उस बच्चे को लोगों के वास्ते निशानी बनाएंगे। तब जिब्री ने उनके कुर्ते के गिरेबान में दम कर दिया यानी फूंक दिया इसके बा मरयम को हमल हो गया। उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ तेरा साल की श सबसे पहले जिस शख़्स को हज़रत मरयम के हमल का इल्म हुआ व उनका चचा ज़ाद भाई यूसुफ़ नज़ार है जो मस्जिदे बैतुल-मुक़द्दस व ख़ादिम था और बहुत बड़ा आबिद शख़्स था। उसको जब मालूम हुआ कि मरयम हामिला हैं तो निहायत हैरत हुई। जब चाहता था कि उन प तोहमत लगाए तो उनकी इबादत, ज़ुह्द व तक़्वा और हर वक़्त का हाज़ि रहना किसी वक़्त ग़ायब न होना याद करके ख़ामोश हो जाता था और ज हमल का ख़्याल करता था तो उनको बुरी ख़्याल करना मुश्किल नज़ आता था बिला-आख़िर उसने हज़रत मरयम से कहा कि मेरे दिल में एक बात आई है हर चन्द चाहता हूँ कि ज़ुबान पर न लाऊँ मगर अब सब्र नहीं होता। आप इजाज़त दें कि मैं कह गुज़रू ताकि मेरे दिल की परेशानी दू हो जाए। हज़रत मरयम ने कहा अच्छी बात है कहो तो उसने कहा ऐ मरयम मुझे बताओ कि क्या खेती बेग़ैर बीज और दरख़्त बेग़ैर बारिश के और बच्चा बेग़ैर बाप के पैदा हो सकता है ? हज़रत मरयम ने फरमाया कि हाँ तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने जो सबसे पहले खेती पैदा की और दरख़्त अपनी कुदरत से बेग़ैर बारिश के उगाए क्या तू यह कह सकता है कि अल्लाह तआला पानी की मदद के बेग़ैर दरख़्त पैदा करने पर क़ादिर नहीं। यूसुफ़ ने कहा मैं तो यह नहीं कह सकता। बेशक मैं उसका क़ाइल हूँ कि अल्लाह हर शय पर क़ादिर है जिसे कुन फ़रमाए वह हो जाती है। हज़रत मरयम ने कहा क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और उनकी बीबी को बेग़ैर मां-बाप के पैदा किया। हज़रत मरयम के इस कलाम से यूसुफ़ का शुबहा दूर हो गया और हज़रत मरयम हमल के सबब से कमज़ोर हो गई थीं। इसलिए मस्जिद में यूसुफ़ उनकी जगह पर करने लगा। अल्लाह तआला ने हज़रत मरयम को इल्हाम किया कि वह अपनी क़ौम से इलाहिदा चली जाएं इसलिए वह बैतुल-लहम में चली गईं। فَاَجَاءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ फिर उसे दर्दे ज़ेह (बच्चा पैदा होने के वक़्त जो दर्द होता है) एक खुजूर की जड़ में ले आया.........उस खुजूर का दरख़्त बिल्कुल सूख चुका था और यह एक ऐसी दूर उफ़तादा वीरान जगह थी। जहाँ पानी का नाम तक न था न कुछ खाने का सामान

हाँ था ऐसी जगह पहुँच कर आपने खुश्क खुजूर के दरख़्त की जड़ से
टेक लगाई और फ़ज़ीहत (रुसवाई और बदनामी) के ख़्याल से फरमाया।
ाय किसी तरह मैं इससे पहले मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती
ऐसे वक़्त में ख़ुदा तआला ने हज़रत मरयम की मदद फरमाई तो जिब्रील
ने उसी वादी के बीच से आवाज़ दी। اَلَّا تَحْزَنِی قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا तेरे रब
ने तेरे नीचे नहर बहा दी है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते
हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए तो आपने अपनी एड़ी ज़मीन पर मारी
तो आबे शीरीं का (मीठे पानी का) चश्मा जारी हो गया यह तो पीने का
इन्तिज़ाम फरमाया और खाने के लिए फरमाया। وَهُزِّي إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسَاقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا
और खुजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ हिला तुझ पर ताज़ी पक्की
खुजूरें गिरेंगी......... فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا तू खा और पी और आंख
ठंडी रख" ....फिर तू अगर किसी आदमी को देखे और कुछ पूछे तो इशारे
से कह देना कि मैंने आज का दिन चुप रहने का रोज़ा रखा है। इसलिए
आज किसी से बात न करूँगी। इसके बाद जब आप ईसा अलैहिस्सलाम
को गोद में लिए अपनी क़ौम के पास आईं तो वह बोले। ऐ मरयम तूने बहुत
बुरी बात की। ऐ हारून की बहन तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी
मां बदकार थी तुमने यह क्या किया? فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ उस पर मरयम
ने बच्चे की तरफ इशारा किया कि उसी से पूछ लो। बात क्या है? वह
बोले हम क्या पागल हैं जो एक दिन के बच्चे से जो अभी पालने में बच्चा
है बात करें। आपने इशारा किया कि तुम उससे पूछो तो। उन्होंने पूछा तो

قَالَ اِنِّي عَبْدُ اللهِ اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا وَّ جَعَلَنِي مُبٰرَكًا اَيْنَ مَاكُنْتُ
وَاَوْصٰنِي بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَادُمْتُ حَيًّا وَّ بَرًّا ا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي
جَبَّارًا شَقِيًّا. وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पहले रोज़ ही बोल उठे कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया और मुबारक बनाया. ....मैं कहीं हूँ और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फरमाई मैं जब तक जियूँ और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने वाला और मुझे ज़बरदस्त बदबख़्त न किया और सलामती हो मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन विसाल हो और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊं".........जब हज़रत

ईसा अलैहिस्सलाम ने यह कलाम फरमाया तो लोगों को हज़रत मरयम की पाकी और नेक होने का यकीन हो गया और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इतना फरमा कर खामोश हो गए और उसके बाद कलाम न किया जब तक कि उस उम्र को पहुँचे जिसमें बच्चे बोलने लगते हैं।

(कुरआन करीम प.१६ अ. ५ तफ़्सीर खज़ाइनुल-इरफ़ान ४३४-४३५ और तफ़्सीर हक़्क़ानी स.१५० जि.५)

सबक़

अल्लाह तआला ने हज़रत मरयम को बेग़ैर बाप के बच्चा अता फरमाया और यह उसकी कुदरते कामिला की निशानी है आम क़ानून तो यह है कि मां-बाप दोनों के होते हुए बच्चा पैदा होता है मगर खुदा तआला किसी क़ानून का पाबन्द नहीं। क़ानून उसका पाबन्द है। वह चाहे तो बेग़ैर बाप के भी बच्चा पैदा कर सकता है जैसा कि उसने मरयम के यहाँ बच्चा पैदा कर दिखाया। और फरमाया यह बात मेरे लिए आसान है अगर कोई शख़्स यह ख़्याल करे कि ईसा अलैहिस्सलाम बाप के बेग़ैर पैदा हुए लेकिन मां तो उनकी थी यानी मां का होना ज़रूरी है तो अल्लाह तआला ने हज़रत हव्वा को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पसली से पैदा फरमा कर बता दिया कि मैं बेग़ैर मां के भी बच्चा पैदा कर सकता हूँ और अगर कोई यह ख़्याल करे कि मां-बाप में से कम अज़ कम एक का होना ज़रूरी है तो खुदा ताआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बेग़ैर मां-बाप के पैदा फरमा कर बता दिया कि मैं बेग़ैर मां-बाप के भी बच्चा पैदा कर सकता हूँ हज़रत आदम व हव्वा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश ख़वारिक़े आदत और अल्लाह की कुदरते कामिला का नमूना है वैसे आम क़ानून यही है कि मां-बाप के होते हुए बच्चा पैदा होता है।

लतीफ़ा : एक दफ़ा एक साहब वअ़ज़ फरमा रहे थे कि जो देता है अल्लाह ही देता है। ग़ैरुल्लाह के पास हरगिज़ नहीं जाना चाहिए। एक मंचले ने उठकर कहा। मौलवी साहब! अगर कोई औरत दिन रात अल्लाह से बच्चा तलब करती रहे। अल्लाह तआला उसे हरगिज़ बच्चा न देगा जब तक वह ग़ैरुल्लाह यानी अपने शौहर के पास न जाएगी।

अल-ग़र्ज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश अल्लाह की ख़ास निशानी है आप बेग़ैर बाप के पैदा हुए हैं जिस पर कुरआन पाक की मुतअद्दिद आयात शाहिद हैं। खुदा तआला ने कुरआन पाक में जहाँ भी ईसा

अलैहिस्सलाम का ज़िक्र फरमाया है वहाँ ईसा अलैहिस्सलाम इब्ने मरयम ही फरमाया है। अगर आपका बाप होता तो ख़ुदा इब्ने की निस्बत आपके बाप की तरफ करता और सुनिए उसी पारा में जहाँ ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत का ज़िक्र है। हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम का ज़िक्र भी है। ख़ुदा फरमाता है।

يَا يَحْيٰى خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ وَآتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا وَحَنَانًا مِنْ لَدُنَّا وَزَكٰوةً
وَكَانَ تَقِيًّا وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا.

ऐ यह्या! किताब मज़्बूत थाम और हमने उसे बचपन ही से नुबुव्वत दी और अपनी तरफ से मेहरबानी और सुथराई और कमाल डर वाला था और अपने मां-बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था। ज़बरदस्त व नाफरमान न था।"

इस आयते शरीफ़ा में بَرًّا بِوَالِدَيْهِ का जुमला क़ाबिले ग़ौर है अपने मां-बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था।" मगर यही ख़ूबी जब ख़ुदा ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की, ब्यान किया तो फरमाया بَرًّا بِوَالِدَتِهٖ

"और अपनी मां से अच्छा सुलूक करने वाला।" यहाँ सिर्फ़ मां का ज़िक्र है। बाप का नहीं क्योंकि आपका बाप था ही नहीं। अगर होता तो यहाँ भी यह जुमला होता।" अपने मां-बाप से अच्छा सुलूक करने वाला।

लतीफ़ा : हमारे क़स्बे के पोस्ट आफ़िस में एक मरतबा ईसाई पोस्ट मास्टर मुतऐय्यन होकर आया। एक दिन वह दफ़्तर माहे तैबा में आया और कुतुबखाना देखकर कहने लगा। मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ ? मैंने कहा शौक़ से पूछिए। बोला हमारे यसू मसीह के मुतअल्लिक़ आप भी मानते हैं कि उनका बाप न था और उनके बीवी बच्चे भी न थे। मैंने कहा। हां तो कहने लगा। ख़ुदा का भी कोई बाप नहीं और उसके भी बीवी बच्चे नहीं हैं तो यह ख़ुदाई औसाफ़ हमारे यसू मसीह में साबित हो गए। मैंने कहा। बाबू साहब! अगर ख़ुदाई का होना इसी बात में है कि जिसके मां-बाप न हों या जिसके बीवी बच्चे न हों वह ख़ुदा होता है तो फिर भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पूरे ख़ुदा साबित नहीं होते क्योंकि आपकी मां तो थी। हां बक़ौल आपके हज़रत आदम अलैहिस्सलाम (मआज़ल्लाह) पूरे ख़ुदा ठेहरेंगे जिनका बाप था न मां अलावा अज़ीं कई आदमी सारी उम्र शादी नहीं करते और बेग़ैर बीवी बच्चों के गुज़ार देते हैं। अस्पताल की अक्सर नर्सें कुंवारियाँ कहलाती हैं। मियाँ बच्चे नहीं रखतीं तो क्या यह सब भी ख़ुदाई ख़ूबियों से ख़ूबी मानी जाएंगी उसूल यह नहीं कि जिसका मां-बाप न हो वह ख़ुदा

है। उसूल यह है कि जो ख़ुदा है उसका मां-बाप कोई नहीं। अगर आपका उसूल तस्लीम कर लिया जाए तो कई मौसमों में कई जानवर बेग़ैर मां-बाप के पैदा हो जाते हैं। हक़ीक़त यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की क़ुदरत का एक नमूना हैं। और हमारा उन पर ईमान है कि वह अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर थे और हां बाबू साहब! यह जो आपने फरमाया है कि हज़रत यसू मसीह ने शादी नहीं की। ज़रा फरमाइए तो सही कि आपका शादी न करना नेकी है या बुराई ? बुराई तो वह कह ही नहीं सकते थे। हां ख़ामोश हो गए मैंने कहा आपको मानना पड़ेगा कि आपका शादी न करना नेकी था। तो अगर नेकी था। तो पैग़म्बर आता ही इसलिए है कि उम्मत को नेकी की तरफ बुलाएं और अपने रास्ते पर चलने का सबक दे तो आपकी इस नेकी पर अगर ईसाई उम्मत अमल करने लगे यानी शादी करना छोड़ दे तो चन्द सालों ही में यह उम्मत ख़त्म हो जाए तो यह अच्छी नेकी है जो दुनिया ही को ख़त्म कर दे आप हज़रात जो शादी करते हैं और बीवी बच्चे रखतें हैं। अपने पैग़म्बर की सुन्नत के ख़िलाफ़ करते हैं और यह हमारे पैग़म्बर हुज़ूर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर आपको नाचार अमल करना पड़ता है और अपनी बक़ा के लिए ग़ैर इरादी तौर पर दामने मुस्तफ़ा थामना पड़ता है। हमारे हुज़ूर ने शादियाँ कीं और उम्मत को भी शादियाँ करने की तल्क़ीन फरमाई पस जो ईसाई बच्चा भी पैदा होता है वह ज़ुबाने हाल से यह एलान करता है कि ऐ दुनिया वालो! मैं अगर पैदा हुआ हूँ तो नबी आख़िरुज़्ज़मा हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदक़ा में पैदा हुआ हूँ क्योंकि अगर मेरे मां-बाप अपने पैग़म्बर की सुन्नत पर अमल करते और शादी न करते तो मैं पैदा ही न होता और अगर पैदा हो भी जाता तो हलाल ज़ादा न कहलाता। पस ऐ बाबू साहब! शादी करना नेकी है और ज़रूरी है। इसीलिए हमारे हुज़ूर फरमा गए हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम भी आसमान से नाज़िल होने के बाद शादी करेंगे और उनके बच्चे भी पैदा होंगे। मेरी तक़रीर से बाबू साहब काफ़ी मुतअस्सिर हुए और फिर हर रोज़ आने लगे और अक्सर मज़हबी गुफ़्तगू करते रहते और समझते। बिला-आख़िर उनका तबादला हो गया। उनका नाम यूसुफ़ मसीह था। अब ख़ुदा जाने कहाँ हैं।

सबक़ तवील हो गया है और मुझे अभी बहुत कुछ लिखना है विलादते ईसा अलैहिस्सलाम में क़ुरआन पाक की हस्बे ज़ेल आयात क़ाबिले ग़ौर हैं।

(१) فَاَرْسَلْنَا اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا. तो उसकी तरफ हमने रूहानी (जिब्रील) भेजा वह उसके सामने एक तन्दुरुस्त आदमी बनकर ज़ाहिर हुआ।

(२) لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا (जिब्रील) ने कहा मैं इसलिए आया हूँ ताकि तुम्हें मैं एक सुथरा बेटा दूँ।"

(३) فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ. फिर उसे दर्दे ज़ेह एक खुजूर की जड़ में ले आया।"

(४) هُزِّىْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا और खुजूर की जड़ पकड़। अपनी तफर हिला। तुझ पर ताज़ी खुजूरें गिरेंगी।

(५) قَالَ اِنِّىْ عَبْدُ اللّٰهِ. فرمایا میں اللہ کا بندہ ہوں. फरमाया कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ।

(१) इस आयते करीमा से साफ़ ज़ाहिर होता है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मरयम के पास जिब्रील को भेजा। जो नूरी मख़्लूक़ है लेकिन वह मख़्लूक़ मरयम के पास आदमी की शक्ल बनकर आया। अब अगर कोई शख़्स हज़रत जिब्रील को भी अपने जैसा आदमी कहने लगे और उन्हें नूर न माने और दलील में कुरआन की यही आयत पेश करे कि कुरआन में जब उन्हें आदमी कहा गया है तो हम क्यों न कहें तो उसकी अक़ल में फ़ुतूर माना जाएगा या नहीं ? अगर कहा जाए कि मरयम के पास नूरी का बशर बनकर आना हिकमत पर मब्नी था और उनका बशर की शक्ल में आ जाना उनके नूर होने के मनाफ़ी नहीं तो हम कहेंगे कि हमारे पास भी हुज़ूर सरापा नूर का जाम-ए-बशरीयत पहन कर तशरीफ़ लाना हज़ारों हिक्मतों पर मब्नी था और हुज़ूर की बशरीयत के लिबास में तशरीफ़ लाना उनके नूर होने के मनाफ़ी नहीं।

(६) बच्चा अता करने वाला हक़ीक़ी तौर पर ख़ुदा ही है लेकिन जिब्रीले अमीन ने यूं कहा कि मैं इसलिए आया हूँ ताकि मैं तुम्हें एक सुथरा बेटा दूँ मालूम हुआ कि जिसके वसीले से काम हो। काम की निसबत उसकी तरफ करना भी जाइज़ और कुरआन से साबित है जैसे शिफ़ा अल्लाह देता है लेकिन किसी क़ाबिल तबीब (हकीम, डाक्टर) के हाथों शिफ़ा हासिल हो तो कह दिया जाता है कि उस तबीब ने मुझे शिफ़ा दी और यह निसबत मजाज़ी कहलाती है। इसी तरह अगर किसी अल्लाह के मक़्बूल बन्दे और शरीअत पर चलने वाले पीर की दुआ से अल्लाह किसी को बच्चा दे तो हम उसका नाम पीर बख़्श रख सकते हैं। इस निसबते

मजाज़ी के मुताबिक़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जिब्रील बख़्श हैं। तो इसी निसबत से कोई बच्चा नबी बख़्श और पीर बख़्श क्यों नहीं हो सकता ?

(३) बाज़ लोग महफ़िले मीलाद पर एतराज़ किया करते हैं कि भरे मजमा में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत (पैदाईश) का ज़िक्र किया जाता है जो अदब के ख़िलाफ़ है। वह कुरआन पाक की इस आयत को पढ़ें कि खुदा तआला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत का साफ अन्दाज़ में ज़िक्र फरमा रहा है हत्ता कि दर्दे-ज़ेह (पैदाईश के वक़्त होने वाला दर्द) का भी ज़िक्र फरमा रहा है क्या यह लोग खुदा पर भी एतराज़ करेंगे कि विलादते ईसा का ज़िक्र इस अन्दाज़ में क्यों किया गया है।

(४) खुश्क (सूखी) खुजूर की जड़ को अल्लाह की मक़बूल मरयम के हाथ लगने ही से वह दरख़्त फ़ौरन सरसब्ज़ और फलदार हो गया हत्ता कि फ़ौरन ही ऊपर से ताज़ा खुजूरें भी गिरने लगीं यह हैं अल्लाह वालों के हाथ। कि खुश्क खुजूर को भी सरसब्ज़ कर दें और एक आजकल के हाथ भी हैं कि भरी जेब में भी पड़ें तो उसे ख़ाली कर दें यह भी मालूम हुआ कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विलादत की खुशी में खुश्क खुजूर से ताज़ा खुजूरें तक़्सीम हुईं। फिर हम अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत की खुशी में शीरीनी तक़्सीम करें तो वह बिदअत क्यों हुआ।

हम हुए पैदा मुहम्मद की मुहब्बत के लिए
और कोई पैदा हुआ तक़्सीमे बिदअत के लिए

(५) सबसे पहला कलाम आपने यह किया कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ गोया आपको उस वक़्त ही यह इल्म था कि लोग मुझे अल्लाह का बेटा कहेंगे इसलिए सबसे पहले इस ग़लत अक़ीदा की रद फ़रमा दी और यह भी फरमा दिया कि मैं अल्लाह का नबी हूँ। गोया नबी पैदा होते ही नबी होता है। भले ही नुबुव्वत का ऐलान बाद में हो मालूम हुआ कि नबी को आइन्दा बातों का पहले ही इल्म होता है इसीलिए मैंने हुज़ूर के मुतअल्लिक़ लिखा है कि

तू दाना-ए-मा काना और मायकून है
मगर बेख़बर बेख़बर देखते हैं

जो लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इल्मे ग़ैब का इन्कार

करते हैं और यूं कहते हैं कि हुज़ूर को दीवार के पीछे का भी इल्म न था (मआज़ल्लाह) वह किसी ईसाई का मुक़ाबला कैसे कर सकते हैं ? जबकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का बचपन में आइन्दा की बात को जान लेना कुरआन से साबित है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इल्म का मुंकिर किसी ईसाई के इस तअ़न का जवाब कैसे देगा कि हमारे यसू मसीह का आइन्दा की बात का इल्म कुरआन से साबित है और तुम्हारे नबी को दीवार के पीछे का भी इल्म न था।

मक़ामे गौर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इल्म का इन्कार करके कोई मुसलमान किसी ईसाई को मुसलमान होने की तरग़ीब दे ही नहीं सकता क्योंकि ईसाई यह कह देगा कि आइन्दा की बात जान लेने वाले नबी को छोड़ कर हम ऐसे नबी को क्यों मानें जिसे दीवार के पीछे का इल्म भी नहीं पस हर मुसलमान को अपना यह अक़ीदा रखना चाहिए कि या रसूलुल्लाह।

दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र सरे अर्श पर है तेरी नज़र
मलकूत व मुल्क में कोई शय नहीं वह जो तुझ पर अयाँ नहीं

❖❖❖

हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम की

"विलादत"

आपकी माँ

आमिना और

रज़ाई मां हलीमा

रज़ि अल्लाहु अन्हुमा

मुबारक है वह शहे पर्दे से बाहर आने वाला है
गदाई को ज़माना जिसके दर पर आने वाला है
फ़क़ीरों से कहो हाज़िर हों जो मांगेंगे पाएँगे
कि सुलताने जहाँ मुहताज परवर आने वाला है

हिकायत नम्बर (१२)

हज़रत आमिना रज़ि अल्लाहु अन्हा

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े हसीन व जमील थे आपकी पेशानी में नूरे मुहम्मदी की चमक व दमक से कई औरतें आपसे निकाह करना चाहती थीं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु एक मरतबा अपने वालिद हज़रत अब्दुल-मुत्तलिब

के साथ काबा शरीफ़ के पास से गुज़रे तो रास्ते में वरक़ा-बिन-नौफ़ल की बहन बैठी थीं जो कुतुबे साबिक़ा की आलिमा थीं उसने जब हज़रत अब्दुलाह की जबीने अनवर में नूरी मुहम्मदी देखा तो हज़रत अब्दुल्लाह से अर्ज़ किया कि मुझसे निकाह कर लीजिए। आपने फरमाया मैं अपने वालिद की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सकता। हज़रत अब्दुल-मुत्तलिब ने वहब-बिन-मनाफ़ जो अरब में हस्बे नसब में बहुत अशरफ़ थे की बेटी हज़रत आमिना से हज़रत अब्दुल्लाह का निकाह कर दिया। हज़रत आमिना सारे कुरैश में हसब व नसब के लिहाज़ से मुम्ताज़ थीं। फिर जब नूर मुहम्मदी हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु अन्हा के बतने अनवर में मुन्तक़िल हो गया तो एक रोज़ हज़रत अब्दुल्लाह उसी राह से गुज़रे जिस राह में वरक़ा-बिन-नौफ़ल की बहन ने उनसे निकाह कर लेने की दरख़्वास्त की थी तो उस रोज़ उसने हज़रत अब्दुल्लाह की तरफ़ ध्यान न दिया। आपने पूछा किया कि आज क्या बात है तुम मेरी तरफ़ देखती भी नहीं। बोली वह नूर जो आपकी पेशानी में देखा था वह आज मुझे नज़र नहीं आता।

वह जिसके नूर से तेरी चमकती थी यह पेशानी
उसी की थी मैं तालिब और उसी की थी मैं दीवानी
मगर मैं रह गई महरूम क़िसमत मेरी फूटी है
सुना है कि वह नेमत आमिना ने तुझसे लूटी है

(मवाहिबे लुददुनिया स.१६ जि.१। हुज्जतुल्लाहे अलल-आलमीन स.२२०)

सबक़

मुहद्दिसीने किराम अलैहिमुर्रहमाः ने तसरीह फरमा दी है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिदैन हज़रत अब्दुल्लाह व आमिना रज़ियल्लाहु अन्हा तक हुज़ूर के जुमला आबा (दादा व परदारा वग़ैरह) व उम्महात मोमिन और अशरफ़ थे। कुरआन पाक में जहाँ अल्लाह तआला ने وَتَقَلُّبَكَ فِى السَّاجِدِينَ फरमाया है मुफ़स्सेरीने किराम ने उसकी यह तफ़सीर भी फरमाई है कि इस आयत में साजिदीन से मोमिनीन मुराद हैं और मानी यह हैं कि ज़माना हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम से लेकर हज़रत अब्दुल्लाह व आमिना ख़ातून तक मोमिनीन के अस्लाब व अरहाम (नस्लों) में आपके दौरे को अल्लाह मुलाहिज़ा फरमाता है इससे साबित हुआ कि आपके तमाम

उसूल आबा व अजदाद (पुर्खे) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक सबके सब मोमिन हैं। (तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान स. ५३०)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद माजिद का नाम अब्दुल्लाह है इसी से यह बात साबित हो जाती है कि आप मोमिन थे और आपके वालिद अब्दुल-मुत्तलिब भी मुश्रिक न थे वरना वह अपने फ़रज़न्द का नाम अब्दुल्लाह न रखते हुज़ूर की वालिदा माजिदा का नाम आमिना भी इस हक़ीक़त पर साबित है कि आप मोमिना थीं। अब्दुल्लाह हो और मोमिन न हो। आमिना हो और मोमिना न हो कैसी बेतुकी और गुमराही की बात है। अब्दुल्लाह को अल्लाह ने वह फ़रज़न्द (बेटा) अता फ़रमाया जिसने बुतों के बन्दों को इबादुल्लाह बना दिया और आमिना को वह लख़्ते जिगर अता फरमाया जिसने बेईमान को ईमान अता फरमा कर अमान दे दी। अब्दुल्लाह को मोमिन वही न मानेगा जो ख़ुद अब्दुल्लाह न हो और आमिना को वही मोमिना न मानेगा जो ख़ुद मोमिन नहीं। अक़्ले भी इस हुक्म को तस्लीम नहीं करती कि जो ज़ात बाबरकत सारी काइनात (दुनिया) के लिए बाइसे नजात बन कर आई हो। और जिसकी नज़रों ने बुत परस्तों की ख़ुदा परस्त। डाकुओं को मुहाफ़िज़ अन्धों को बीना (रौशनी) और नारियों (जहन्नमियों) को जन्नती बना दिया हो। उस ज़ात वाला सिफ़ात के अपने मां-बाप नाजी (जहन्नमी) न हों। एक हदीस में आता है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं जिसने कुरआन पढ़ा और उस पर अमल किया। اُلْبِسَ وَالِدَاهُ تَاجًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ضَوْءُهٗ اَحْسَنُ مِنْ ضَوْءِ الشَّمْسِ-

(मिश्कात स.१७८)

उसके मां-बाप को क़्यामत के रोज़ एक ऐसा नूरानी ताज पहनाया जाएगा जिसकी रौशनी सूरज की रौशनी से भी ज़्यादा हसीन होगी।

ग़ौर फरमाइए कि जब एक उम्मती जो कुरआन पढ़ता है उसके मां-बाप को क़्यामत के रोज़ नूरानी ताज पहनाया जाएगा तो वह ख़ुद ज़ाते वाला सिफ़ात जिस पर कुरआन उतरा और जो ख़ुद कुरआन नातिक़ (बताने वाले) है उनके वालिदैन करीमैन की बरोज़े क़्यामत कोई ताज़ीम व तकरीम न हो ? क्या यह बात अक़्ल में आ सकती है ?

जिन दिलों के मुस्तफ़ा इक लख़्त हों
क्यों न वह मां-बाप फिर ख़ुश बख़्त हों

हिकायत नम्बर (१३)

हज़रत आमिना के इर्शादात

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदा माजिदा फरमाती हैं कि छे: महीने हमल के गुज़र गए लेकिन मुझे कोई आसारे हमल मालूम न हुए और न ही कोई तक्लीफ़ महसूस हुई। छे: महीने के बाद किसी ने ख़्वाब में मुझसे कहा।

يا آمِنَةُ اِنَّكِ حَمَلْتِ بِخَيْرِ العالَمِيْنَ فَاِذْ وَلَدْتِهِ فَسَمِّيْهِ مُحَمَّدًا.

ऐ आमिना! तेरे हमल में सारे जहानों से अफ़्ज़ल जलवा गर है जब तू उसे जने तो उसका नाम मुहम्मद रखना।"

इसी तरह अंबिया-ए-किराम के मुक़द्दस गरोह आपके ज़ुहूरे क़ुदसी की बशारत (खुशख़बरी) सुनाते रहे। जब विलादते शरीफ़ा का वक़्त आया मैं घर में अकेली थी हज़रत अब्दुल-मुत्तलिब हरमे शरीफ़ में तवाफ़ कर रहे थे। मैंने एक ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनी जिससे मैं काँप गई। फिर एक फ़रिश्ता सफ़ेद मुर्ग़ की शक्ल में आया जिसने अपने पर मेरे सीने पर मले और मेरा ख़ौफ़ जाता रहा और सारी तक्लीफ़ भी दूर हो गई फिर मेरे लिए कोई एक प्याला शर्बत का लाया जिसको मैंने पिया उसके पीने से मुझे एक बुलन्द नूर नज़र आया मैंने देखा कि अब्दुल-मुनाफ़ की बेटियाँ मेरे गिर्द खड़ी हैं मैं हैरान रह गई इतने में उनमें से एक ने कहा मैं फिरऔन की बीवी आसिया हूँ और दूसरी बोली मैं ईसा अलैहिस्सलाम की मां मरयम हूँ और यह दूसरी औरतें जन्नत की हूरें हैं। हम सब बहुक्मे ख़ुदा तुम्हारी ख़िदमत के लिए जन्नत से आई हैं। फिर फरमाया कि –

كَشَفَ اللهُ عَنْ بَصَرِيْ فَرَاَيْتُ مَشَارِقَهَا وَمَغَارِبَهَا وَرَاَيْتُ ثَلٰثَةَ اَعْلَامٍ

مَضْرُوْبَاتٍ عَلَمًا بِالْمَشْرِقِ وَعَلَمًا بِالْمَغْرِبِ وَعَلَمًا عَلٰى ظَهْرِ الْكَعْبَةِ

अल्लाह ने मेरी आंखों से पर्दा हटा दिया पस मैंने दुनिया के मश्रिक़ (पूरब) व मग़्रिब (पश्मिी) देख लिए और तीन झण्डे भी देखे एक झण्डा मश्रिक़ में गड़ा था। दूसरा मग़्रिब (पश्चिम) में। और तीसरा काबा की छत पर। उसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा हुए और मैंनें देखा तो आप सजदे में पड़े हुए थे। (मवाहिलुद्दुनिया स.२१, जि.१)

सबक़

हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु अन्हा सारी माओं से ज़्यादा खुशनसीब माँ हैं। इतनी खुशनसीब कि आपकी खिदमत के लिए जन्नत से आसिया और ईसा अलैहिस्सलाम की माँ और जन्नत की हूरें खिदमत में हाज़िर हो गई। ऐसी खुशनसीब माँ के खिलाफ़ कोई बेहद बदनसीब शख़्स ही ज़ुबान खोलेगा। मालूम हुआ कि हज़रत आमिना ख़ैरुल-आलमीन सैय्यदुल-आलमीन की माँ हैं। आपको जन्नत के फ़रिश्ते और अंबिया-ए-किराम बशारतें देते रहे। आपके लिए जन्नत से शर्बत भेजा गया फिर जिस मुक़द्दस माँ की इस दुनिया में भी जन्नत की हूरें ख़िदमत करें और इस दुनिया में भी जन्नत का शर्बत जिसे मिले क्या यह मुम्किन है कि उस जहाँ में आपको उस जन्नत से दूर रखा जाए? यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नूर हैं जभी तो हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु अन्हा को तकालीफ़े हमल का सामना नहीं हुआ और आपने शर्बत पीने के बाद एक बुलन्द नूर देख भी लिया और फिर इसी नूर की बरकत से आपकी आंखों से पर्दे जो हटे तो दुनिया के मश्रिक़ व मग़्रिब को आपने देखा और मश्रिक़ व मग़्रिब और काबा की छत पर गड़े हुए झण्डे भी देख लिए। फिर किस क़द्र ज़ुल्म व जह्ल की बात है कि जिस जाते नूर की माँ की बसारत व रूयत का यह आलम हो उस जाते नूर के मुतअल्लिक़ कोई यूं कह लिख दे कि उन्हें तो दीवार के पीछे का भी इल्म न था (मआज़ल्लाह) यह भी मालूम हुआ कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सरापा मोजज़ा हैं कि पैदा होते ही सजदे में गिर गए और यह इस तरफ इशारा था कि मैं दुनिया में दुनिया को अल्लाह के हुज़ूर सजदे में गिराने को आया हूँ और यह भी मालूम हुआ कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस सजदे से सारी रूए ज़मीन हुज़ूर के लिए मस्जिद बन गई चुनांचे हुज़ूर ने फरमाया है।

جُعِلَتْ لِيَ الْاَرْضُ مَسْجِدًا وَّ طَهُوْر मेरे लिए सारी ज़मीन मस्जिद और पाक कर देने वाली बना दी गई। यह जबीने मुस्तफ़ा के ज़मीन पर लगने का सदक़ा है कि सारी ज़मीन मस्जिद और पाक कुनिन्दा बन गई।

मुबारक हो जहाँ में सैय्यदे लौलाक आए हैं!
जो थे नापाक सरकार उनको करने पाक आए हैं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (१४)

नूर ही नूर

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदा माजिदा हज़रत आमिना फरमाती हैं कि जब हुज़ूर पैदा हुए तो मैंने एक नूर देखा। जिससे शाम के महल मैंने देख लिए। हज़रत फ़ातमा बिन्ते अब्दुल्लाह कहती हैं कि विलादते शरीफ़ा के वक़्त मैं हाज़िर हुई तो मैंने सारे घर को रौशनी से भरा देखा और सितारों को देखा कि आसमान पर से नीचे उतर आए हैं। मुझे गुमान हुआ कि शायद मुझ पर आ गिरेंगे और हज़रत आमिना फरमाती हैं कि हुज़ूर सरापा (सर से पैर तक) नूर बनकर पैदा हुए। आपके साथ किसी क़िस्म की आलाइश (गंदगी) न थी। आप बिल्कुल पाक व साफ पैदा हुए। (मवाहि बुलुद्दुनिया स. २२ जि.१। (हुज्जतुल्लाहि अलल-आलमीन स.२२७)

सबक़

हमारे हुज़ूर सरापा नूर बन कर तशरीफ़ लाए और आपके नूर की बरकत से आपकी वालिदा ने शाम के महल देख लिए। फिर खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नज़रों की ताक़त का इन्कार करना क्योंकर गुमराही व तारीकी न होगी। आपका तशरीफ़ लाना गोया इस शे'र का मिस्दाक़ है।

नूर अन्दर नूर बाहर कूचा कूचा नूर है!
बल्कि यूं कहिए कि सब दुनिया की दुनिया नूर है

यह भी मालूम हुआ कि हमारे हुज़ूर की बशरीयते मुक़द्दसा नूरानी बशरीयत है। आप पैदा हुए तो बिल्कुल हर क़िस्म की आलाइश (गंदगी) से पाक साफ और सुथरे। यह जो उनकी मिस्ल बनते फिरते हैं यह होली फैमली अस्पताल में भी पैदा हों तो कई गज़ मुरब्बा ज़मीन गन्दी कर देते हैं। इसीलिए किसी शाइर ने लिखा है कि –

खुदा की शान तो देखो कि कलचड़ी गूंजी!
हुज़ूरे बुलबुले बुस्तान करे नवा संजी

❖❖❖

हिकायत नम्बर (१५)

अबू लहब की लौंडी

अबू-लहब की एक लौंडी (नौकरानी) थी जिसका नाम सुवैबा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब पैदा हुए तो उसने आकर अबू-लहब को बशारत दी और कहा मुबारक हो। आपको खुदा ने भतीजा दिया है। अबू-लहब ने यह बशारत सुनकर कर ख़ुशी में आकर अपनी उंगली उठाकर इशारा किया कि जा तुझे आज़ाद किया। अबू-लहबे के मरने के बाद ख़्वाब में देखा गया और उससे हाल पूछा गया तो उसने बताया कि आग में जल रहा हूँ। हाँ जब पीर का रोज़ जिस रोज़ हुज़ूर पैदा हुए आता है। तो मैं उस उंगली को जिस उंगली के इशारे से मुहम्मद की विलादत की ख़ुशी में मैंने अपनी लौंडी को आज़ाद किया था। अपने मुंह में डाल कर चूसता हूँ तो उससे पानी निकलता है जिसे पीकर मैं आराम पा लेता हूँ।

(मवाहिबे लदनीया स.२७ जि.१)

सबक़

ह[illegible]न इमाम क़स्तलानी जो शारेह बुख़ारी भी हैं। यह वाक़या लिख कर कहते हैं। कि अबू-लहब जिसके मुतअल्लिक़ क़ुरआन पाक में उसके क़तई नारी (जहन्नमी) होने का ज़िक्र आ गया है ऐसे क़तई नारी शख़्स ने हुज़ूर की ख़ुशी में जब उंगली के इशारे से अपनी लौंडी को आज़ाद कर दिया तो खुदा तआला ने उसकी इस ख़ुशी मनाने से उस रोज़ उस उंगली के ज़रिआ उसे अज़ाबे नार (जहन्नम) से नजात दे दी फिर जो मुसलमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादते शरीफ़ा की ख़ुशी मनाएँगे और आपकी मुहब्बत में ख़र्च करेंगे। यक़ीनन उसके बदले में अल्लाह करीम उन्हें अपने फ़ज़्ले से जन्नत में दाख़िल करेगा और फिर फरमाया।

وَلَا زَالَ اَهْلُ الْاِسْلَامِ يَحْتَفِلُوْنَ بِشَهْرِ مَولِدِهٖ عَلَيْهِ السَّلَا مِ وَ يَعْمَلُوْنَ الوَ لَا
يُمَ وَيَتَصَدَّ قُوْ نَ فِىْ لِيَا لِيْهِ با نواعِ الصَّدَ قَاتِ وَيَظْهِرُوْنَ السُّرُوْرَ وَ
يَزِيْدُوْنِ فَىْ الْخَيْرَاتِ وَيُحِبُّوْنَ بِقِد اَةِ مَولِدِ هِ الكَرِيْم وَيَظْهُرُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَرَ
كَاتِهٖ كُلِّ فلضلِ عَمِيْم

(मवाहिबे लदुनीया स.२७ जि.१)

यानी इस महीना रबीउल-अव्वल शरीफ में मुसलमान हमेशा महाफिले मीलाद करते है और खुशी का इज्हार करते हैं और सदका व खैरात कसरत के साथ करते हैं। हुज़ूर की विलादत का जिक्र करते हैं और लोगों पर हुज़ूर की बरकात और फज्ले अमीम जाहिर होता है।"

मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादते तैय्यबा की खुशी मनाना बिलखुसूस माहे रबीउल-अव्वल शरीफ में हुज़ूर की विलादते शरीफा के तज्कारे मुबारक सुनने सुनाने के लिए महाफिले मीलाद करना। और माल खर्च करना कुछ पकाना और खिलाना। खुशी में जुलूस निकालना और सदक़ात व ख़ैरात में करारत करना कोई नई बात नहीं। हमेशा से मुसलमान ऐसा ही करते चले आए हैं। अबू-लहब जैसा नारी जब हुज़ूर की खुशी मना कर अज पा लेता है तो हुज़ूर के गुलाम यह खुशी मना कर क्यों अज्रे अज़ीम न पाएँगे ? यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर की विलादत की खुशी न मनाना बहुत ही बुरी बात है इतनी कि अबू-लहब ने जिस उंगली को उठा कर इशारे से अपनी लौंडी को आज़ाद किया था वह उंगली अपने उठने यानी अपने क़्याम के बाइस अबू-लहब के लिए नजात की वजह बन गई। गोया हुज़ूर की ख़ुशी में क़्याम करना भी बड़ी अच्छी बात है मगर अफ़्सोस कि आज उन उमूरे मुस्तहसना को बिदअत कहा जाने लगा है। मैंने लिखा है।

जो बच्चा हो पैदा तो खुशियाँ मनाएँ
मिठाई बटे और लड्डू भी आएँ
मुबारक की हर सू से आई निदाएँ
ख़ुशी से न जामा में फूले समाएँ
मुहम्मद का जब यौमे मीलाद आए
तो बिदअत के फ़त्वे उन्हें याद आए

❖❖❖

हिकायत नम्बर (१६)
हतीमा काहिना

मदीना मुनव्वरा में एक औरत काहिना (नुजूमिया) रहती थी जिस पर एक जिन्न आशिक़ था और उसका ताबे (कहने मानने वाला) था। एक रोज

वह जिन्न हलीमा के घर आया लेकिन दीवार पर खड़ा रहा। अन्दर न आया। हलीमा ने कहा। आज क्या बात है ? कि तुम अन्दर नहीं आते। अन्दर आओ। आपस में बातें करें। जिन्न बोला। अब ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि मक्का में एक नबी पैदा हुआ है जिसने ज़िना (बलात्कार) को हराम क़रार दे दिया है। हलीमा ने यह बात मदीना मुनव्वरा में मशहूर कर दी। मदीना वाले सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुतआरिफ़ हलीमा के ज़रिआ से हुए।

(हुज्जतुल्लाहि अलल-आलमीन स. १८३)

सबक़

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिन्न व इन्स के रसूल बन कर तशरीफ़ लाए और जो खुशनसीब इन्सान और जिन्न थे। वह हुज़ूर पर ईमान लाकर बुरे कामों से रुक गए। मालूम हुआ कि जिन्न भी एक मख़्लूक़ है और इन्सानों की तरह उनमें भी काफ़िर और मुसलमान हैं। अच्छे बुरे हैं और अक्सर जिन्न हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी भी हैं रज़ियल्लाहु अन्हुम। यह जिन्न हुज़ूर पर ईमान ले आया था और और हुज़ूर की तालीम के मुताबिक़ ज़िना से रुक गया। सच्चा ईमानदार वही है जो हुज़ूर के फरमाए हुए बुरे कामों से रोकने पर रुक जाए और हुज़ूर जिधर झुकाएं उधर झुक जाए।

मुसलमां वह है जो हुक्मे नबी सुनते ही झुक जाए
वह जिस रस्ते से रोकें उस तरफ जाने से रुक जाए

❖❖❖

हिकायत नम्बर (१७)

हज़रत हलीमा सादिया रज़ियल्लाहु अन्हा

अरब वाले का दस्तूर था कि जब उनसे किसी के हाँ बच्चा पैदा होता तो अपने कबीला से बाहर किसी दूसरे कबीला में से किसी दूध पिलाने वाली औरत को जो तन्दुरुस्त और खूबसूरत खुश-गो खुश-रू (अच्छे चाल चलन वाली) होती और जिसमें तमाम खूबियां शरीफ़ाना होते। यह तलाश करके उसके हवाले कर देते। फिर जब मुद्दते रजाअत ख़त्म हो जाती तो एवज़न (मोअवाजा) न देकर वापस ले लेते। हुज़ूर जब पैदा हुए तो हस्बे

दस्तूर खुद दूध पिलाने वालियाँ जो बच्चों को दूध पिलाई पर लेने के लिए मक्का मुअज़्ज़मा आया करती थीं आईं। उनमें से एक बीबी कबीला-बनी-सादिया से हलीमा नाम भी थी उन सबने जो आईं थीं। जिस-जिस घर से किसी को कोई लड़का मिला ले लिया लेकिन हलीमा को कोई लड़का न मिला। वह कहती हैं कि हम जितनी आईं थीं सबने हुज़ूर को देखा मगर यह समझ कर कि यह लड़का यतीम है उसका एवज़ाना कुछ अच्छा नहीं मिलेगा। किसी ने न लिया और ख़ुदा की क़ुदरत मुझे भी कोई बच्चा न मिला। मायूस होकर मुझे खाली हाथ घर जाना ऐसा बुरा मालूम हुआ कि घर जाने को मेरा जी नहीं चाहता था। मेरे साथ वालियाँ बच्चे लेकर वापस होने के लिए एक जगह इकट्ठी हो रही सही का इन्तज़ार कर रही थीं मगर मैं पुर रंज व मलाल किसी बच्चे की तलाश में रह गई लेकिन जब कोई सूरत नज़र न आई तो मैंने अपने शौहर से कहा कि इतनी औरतों में मेरा खाली जाना बाइसे नंग है। बख़ुदा मैं तो उसी बच्चे (हुज़ूर) को ले आती हूँ जो अब्दुल-मुत्तलिब के घर में है और उसे सब छोड़ आई हैं। उसने कहा ले आ। शायद कि ख़ुदा तआला हमें उसी की बरकत से माला माल कर दे। यह सुनकर मैं अब्दुल-मुत्तलिब के घर गई। अब्दुल-मुत्तलिब अपने दरे दौलत पे खड़े थे मुझे देखकर पूछा तू कौन और तेरा नाम क्या है ? मैंने कहा मैं बनी सअद से हूँ और हलीमा मेरा नाम है। अब्दुल-मुत्तलिब ख़ुश होकर बोले। ख़ूब! ख़ूब!! सअद और हिल्म दोनों जमा हो गए। उन दो लफ़्ज़ों में हमेशा की ख़ैर व बरकत है। हलीमा! मेरे पास एक लड़का है जिसका बाप उसके पैदा होने से चन्द रोज़ पहले फ़ौत (इंतक़ाल) हो गया था और मैं ही उसका कफ़ील (जिम्मेदार) हूँ। तुम्हारी क़ौम की औरतें उसे देख कर छोड़ गई थीं। शायद उनके दिलों में यह वसवसा होगा कि उस यतीम का एवजाना रज़ाअत कौन देगा ? तू उसे ले जा। तेरे लिए अच्छा होगा। मैंने कहा। मैं अपने शौहर से मश्वरा कर लूं। मश्वरा करने पर शौहर ने कहा कि ज़रूर ले आ। उम्मीद है हक़ तआला हमें उसकी बरकत से खुशहाल कर देगा। मैं वापस आई और अब्दुल-मुत्तलिब को कह दिया कि बच्चा मुझे दे दीजिए वह बड़ी ख़ुशी से उठकर मुझे आमिना के घर ले गए। उसने मुझे देखा तो बनज़रे इज़्ज़त ख़ुश आमदीद कहकर उस कोठरी में ले गई जहाँ सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गहवारा में पड़े थे मैंने देखा कि बहुत सफ़ेद सूफ़ का कपड़ा आपके

ऊपर सब्ज़ रेशमी पार्चा आपके नीचे और आप रूबा आसमान तशरीफ़ फरमा हैं और कस्तूरी की ख़ुशबू आपसे आ रही है मैं आपका हुस्न व जमाल देख कर दंग रह गई और आपको जगाने से झिझक गई लेकिन अपना हाथ निहायत नर्मी और सुब्की के साथ आपके सीने पर रखा तो आप मुस्कुराए और आंखें खोलीं जिनसे नूरानी शुआएं निकल कर आसमान तक रौशन करती चली गईं। मैंने यह देखकर आपकी दोनों आंखों पर बोसा दिया और आपको उठा लिया। अगर मुझे कोई लड़का मिल जाता तो मैं इस नेमत से महरूम रह जाती। फिर मैंने आपको गोद में लेकर अपना दाहिना दूध दिखाया। आपने जितना चाहा पिया। फिर मैंने आपको अपने बाएं दूध की तरफ फेरा लेकिन आपने उसे न पिया क्योंकि मेरा एक और बच्चा भी दूध पीता था चूंकि आपकी ज़ाते अक़्दस में फ़ितरतन ही अद्ल दियानत, तक़्वा और अमानत मौजूद थी। इसलिए आपने अपने रज़ाई भाई का हिस्सा छोड़ दिया। फिर जब हम अपने डेरे पर वापस आए कि वहाँ से तैयार होकर अपने साथ के साथ घर चलें तो मेरे शौहर ने देखा कि हमारी बकरी जिसे हम अपने बच्चे की ख़ातिर अपने साथ मक्का में लाए थे जो दूध सुखाए और बहुत ही लाग़र थी मगर हम एक दूधार अपने बच्चे के लिए निकाल ही लेते थे दूध भरे थन खड़ी जुगाली कर रही थी उसने उसके थनों को हाथ लगाया तो दूध निकलने लगा। फौरन बर्तन लेकर दूहने बैठ गया। बकरी ने इतना दूध दिया कि हम उससे ख़ूब सैर हुए और रात आराम से सो रहे। सुबह उठे तो मेरे शौहर ने मुझसे मुख़ातब होकर कहा। हलीमा! जिस बच्चे को हमने लिया है। बख़ुदा! यह बहुत मुबारक है मैंने कहा। हाँ सही है और मुझे भी इस बरकत का यक़ीन है और उम्मीद है यह जब तक हमारे पास रहेगा। हमारे लिए बाइसे ख़ैर व बरकत होगा।

(हुज्जतुल्लाहि अलल-आलमीन स.२५४)

सबक़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूध पिलाने की सआदत क़बीला-बनी-सअद की हलीमा ही के नसीब में थी। यह सआदत किसी दूसरे को कैसे हासिल हो सकती थी। दूसरी औरतें हुज़ूर को यतीम समझ कर हुज़ूर को छोड़ कर चली आईं लेकिन वह कौन थीं जो हुज़ूर को छोड़तीं यह तो ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन सबको छोड़ दिया था क्योंकि आपको इल्म था कि मुझे दूध पिलाने वाली दूसरी है वह

जिसका नाम हलीमा है। यह सआदत हलीमा सअदिया ही को मिलेगी। इसीलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब उस सआदत की असल अह्ल को आते देखा तो हुज़ूर मुसकुरा पड़े। कितनी खुशनसीब है। हलीमा सादिया रज़ियल्लाहु अन्हा कि वह जिसके क़दमाने मुबारक के बोसा लेने का अर्श भी ख़्वाहां है। हलीमा उसकी आंखों को बोसा ले रही थी। वह ज़ात बाबरकत कल क़्यामत में जिसके दामाने मुबारक में एक दुनिया पनाह लेगी। आज वह वजूद बा वजूद हलीमा की गोद में नज़र आ रहा है ज़हे नसीब हलीमा।

बड़ी तूने तौक़ीर पाई हलीमा
मुहम्मद को तो लेके आई हलीमा

आजकल के बच्चों को नहला धुला कर और खुश्बूदार पाउडर मल कर रखा जाता है वरना उनसे बू आने लगती है मगर हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाते अक्दस ही खुशबू की ख़ज़ाना थी कि हलीमा क़रीब गई तो कस्तूरी की खुशबू आने लगी। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वजूद बावजूद हमेशा मख़्ज़ने (ख़ज़ाना) खुश्बू व रहमत ही रहा। जिस राह से भी आप गुज़र जाते खुशबुओं के हिल्ले आने लगते।

उनकी महक ने दिल के गुंचे खिला दिए हैं
जिस राह चल दिए हैं कूचे बसा दिए हैं

यह भी मालूम हुआ कि दयानत व तक़्वा और अमानत के भी हुज़ूर शुरू ही से मख़्ज़न थे इसीलिए अपने रज़ाई भाई के हिस्सा का दूध आपने नहीं पिया गोया बचपन ही में यह तब्लीग़ फरमा दी कि किसी की हक़तल्फ़ी करना जाइज़ नहीं। मुसलमानों को अपने आक़ा का मुक़द्दस बचपन भी पेशे नज़र रखना चाहिए और किसी भाई की हक़तल्फ़ी नहीं करनी चाहिए। मगर आह! इस पुर-फ़ितन दौर में भाई-भाई का दुश्मन और चाहता है कि भाई का जो मिले अपना लो। दूसरों के माल पर नज़रें ललचाने लगती हैं। और राम-राम जपना पराया माल अपना। मुताबिक़ आजकल के मुसलमान दूसरों के माल को हज़म कर जाते हैं और दावा यह कि हम उस नबी की उम्मत हैं जिसने बचपन में भी अपने रज़ाई भाई का हिस्सा नहीं अपनाया और अपने भाई के लिए ही रहने दिया यह भी मालूम हुआ कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वजूद जो सरापा बरकत है कि आपके आते ही लाग़र बकरी के सूखे थन दूध से भर गए। अल्हम्दुलिल्लाह हमें

ऐसा बाबरकत आक़ा मिला जिनकी बदौलत हमारे सूखे और बुरे आमाल भी इंशाअल्लाह हरे और अच्छे हो जाएंगे। أُولٰئِكَ.....يُبَدِّلُ اللهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰت की आयत इस हक़ीक़त पर शाहिद है कि जो लोग तौबा करके हुज़ूर के गुलाम बन जाएंगे। अल्लाह तआला उनकी बुराईयों को भी नेकियाँ बना देगा। पस ऐ मुसलमानो! हज़रत हलीमा ने जिस मुहब्बत से हुज़ूर को गोद में लेकर बरकत पाली थी तुम भी मुहब्बत के साथ हुज़ूर का दामन पकड़ कर दोनों जहाँ की बरकतें हासिल कर लो।

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहाँ चीज़ है क्या लौह व क़लम तेरे हैं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (१८)
हज़रत आमिना ने हलीमा से क्या कहा?

हज़रत हलीमा सादिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने जिस वक़्त हुज़ूर को गोद में लिया तो हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत हलीमा से कहा।

اِعْلَمِي اِنَّكِ قَدْ اَخَذْتِ مَوْلُوْدًا لَهٗ شَانٌ فَوَاللهِ لَقَدْ حَمَلْتُ فَمَاكُنْتُ اَجِدُ مَا
تَجِدُ النَّاسُ مِنَ الْحَمْلِ وَلَقَدْ اُتِيْتُ فَقِيْلَ لِيْ اِنَّكِ سَتَلِدِيْنَ غَلَامًا فَسَمِّيْهِ
اَحْمَدُ وَهُوَ سَيِّدُ الْعَالَمِيْنَ

(हुज्जतुल्लाहि अलल-आलमीन स.२५५)

जान ले ऐ हलीमा! तू जिस बच्चे को ले जा रही है। यह बड़ी शान रखता है। मुझे अल्लाह की क़सम! उसके हमल से मुझे कोई ऐसी तक्लीफ़ नहीं हुई जो ऐसे वक़्त में औरतों को होती है और ख़्वाब में किसी आने वाले ने मुझसे कहा था। ऐ आमिना! तू एक ऐसे बच्चे की माँ बनेगी जो सारे जहानों का सरदार होगा उसका नाम अहमद रखना।

सबक़

हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत हलीमा को बता दिया कि तू बड़ी ख़ुशनसीब है यह जो बच्चा तेरे हिस्सा में आया है तुम उस पर जितना फ़ख़्र भी करो थोड़ा है। यह सारे जहानों का सरदार है। तुम्हारी साथी औरतें जो जो बच्चे भी लेकर गई हैं और जिन जिन के भी बच्चे लेकर

गई हैं यह बच्चा उन सबका सरदार है। ख़ुदा ने दुनिया भर की सरदारी को तुम्हारी गोद में डाल दिया है। गोया ऐ हलीमा!

ज़मीं पर अर्शे इलाही के निशान मालूम होते हैं
तेरी तो गोद में दोनों जहाँ मालूम होते हैं

मुसलमानो! हज़रत हलीमा की तरह हम भी बड़े ख़ुशनसीब हैं कि हमें आक़ा वह मिला जो सारे जहानों का सरदार है। आला हज़रत ने ख़ूब लिखा है।

सबसे आला व औला हमारा नबी
सबसे बाला व वाला हमारा नबी
सारे ऊँचों से ऊँचा जिसे कहिए
है उस ऊँचे से ऊँचा हमारा नबी

❖❖❖

हिकायत नम्बर (१६)

हलीमा हुज़ूर को लेकर चलीं

हज़रत हलीमा फरमाती हैं हम जब हुज़ूर को लेकर अपने गाँव चलने को तैयार हो गए और मैं हुज़ूर को अपनी गोद में लेकर अपनी लाग़र गधी पर बैठी तो वह गधी जो भूख और लाग़री के सबब चल न सकती थी और आते वक़्त सबसे पीछे मक्का पहुँची थी। अब साहिबे मेराज की बरकत से इतनी तेज़ रफ़्तार हो गई कि मेरी साथी औरतों की सवारियों से सबसे आगे जा रही थी चुनांचे मेरी साथी औरतें मुझे उसे रोक कर साथ-साथ चलने को कहतीं और हैरान होकर पूछतीं कि यह वही गधी है जिस पर तू आई थी या कोई और ? यह तो ऐसी तेज़ है कि ऊँचा नीचा भी नहीं देखती। यह वह मालूम नहीं होती और मैं क़सम खाकर कहती कि वही है मगर उस बच्चे की बरकत से जो मेरी गोद में है उसका सारा ज़ुअ़फ़ (बुढ़ापा) और नातवानी (कमज़ोरी) जाती रही है। ग़र्ज़ कि हम आराम से सबसे पहले अपने घर में पहुँच गए। (हुज्जतुल्लाहि अलल-आलमीन स.२५५)

सबक़

हलीमा की गोद में साहिबे मेराज था और हलीमा गधी पर सवार

साहिबे मेराज की बरकत से गधी का सारा ज़ुअ़फ़ (बुढ़ापा) और नातवानी (कमज़ोरी) जाती रही और वह तेज़ रफ़्तार बन गई। गोया उस वक़्त ज़ुबाने हाल से वह यह कह रही थी कि –

तेज़ यूं रफ़्तार मेरी आज है
मुझ पे बैठा साहिबे मेराज है

हम जो आज दूसरी अक़्वाम से पीछे रह गए हैं। उसकी असल वजह यही है कि हमने साहिबे मेराज सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दामन छोड़ दिया। यह आजकल की बराए नाम तरक़्क़ी जिस पर नादान मुसलमान खुश होते हैं। सच पूछिए तो यह तरक़्क़ी नहीं। पस्ती है। तरक़्क़ी और आगे बढ़ने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमात को अपनाना ज़रूरी है। हमारा दावा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमात को अपनाने से हम सारी अक़्वाम से आगे निकल सकते हैं। हमारी सारी कमज़ोरियाँ ज़ुअ़फ़ (बुढ़ापा) व नातवानियाँ (कमज़ोरियाँ) दूर होने का एक इलाज यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना लिया जाए। सहाब-ए-किराम अलैहिमुर्रिज़वान जो सारी अक़्वामे जहान पर छा गए और बड़ी-बड़ी जाबिर व क़ाहिर अक़्वाम को रौंद कर आगे निकल गए। उसकी असल वजह यही थी कि उनके सीने में हुज़ूर की मुहब्बत, गोद में हुज़ूर की तालीमात और हाथों में दामने मुसतफ़ा था।

यही जज़्बा था उन मर्दाने ग़ैरतमन्द पे तारी
दिखाई जिनके हाथों हक़ ने बातिल को नगों सारी

यह भी मालूम हुआ कि हम अगरचे आख़िरी उम्मत हैं और आज हम सबसे पीछे हैं मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निसबत की बरकत से जब अपने घर जन्नत में लौटेंगे तो सबसे पहले हम जन्नत में जाएंगे। इंशाअल्लाह। इसीलिए हुज़ूर ने फरमा दिया है।

نَحْنُ الْاٰ خِرُوْنَ وَنَحْنُ السَّابِقُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

यानी हम आए तो आख़िर में हैं लेकिन क़यामत के रोज़ सबसे आगे होंगे। (मिश्कात स.५०६)

देख लेना रोज़े महशर जन्नते फ़िरदौस में
सबसे पहले जाएगी उम्मत रसूलुल्लाह की

❖❖❖

हिकायत नम्बर (२०)
हलीमा के घर बरकत ही बरकत

हज़रत हलीमा फरमाती हैं हम जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घर लेकर आए तो हमारी वह ज़मीन जो सूखा पड़ने की वजह से बंजर पड़ी थी मवेशी बाहर से बिल्कुल भूखे आकर बैठ जाते थे न बाहर ही उनके चरने के लिए कुछ था न घरों में। लेकिन हुज़ूर को हम साथ क्या लाए बरकत व रहमत की बारिश हम पर होने लगी। हमने देखा कि हमारी ज़मीन सरसब्ज़ हो गई। हमारे माल मवेशी ख़ूब पेट भर कर बाहर से आने लगे और हमारी हर एक भेड़ बकरी के थन दूध से भर गए हालांकि हम जब मक्का शरीफ़ गए थे तो उस वक़्त हमारी किसी भेड़ बकरी के थनों में एक क़तरा भी दूध न था। अब हम उन्हें दूहते थे और सब सैर होकर आराम करते थे। हमारी इस आसूदगी और राहत को देखकर बाक़ी दूसरे अपने अपने चरवाहों को ताकीद करते थे कि तुम भी अपनी बकरियाँ उसी तरफ चराने ले जाया करो जिस तरफ हलीमा का चरवाहा बकरियाँ ले जाता है। उन्हें यह मालूम न था कि यह तमाम बरकत हमारे माल व जान में इस मुबारक बच्चे की बदौलत है जिसे हम अपने घर लाए हैं।

(हुज्जतुल्लाहि अलल-आलमीन स.२५५)

सबक़

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहमतुल–लिल–आलमीन बनकर तशरीफ़ लाए हैं यह हुज़ूर की रहमत ही थी कि हज़रत हलीमा आपको लाकर आपकी बरकत से माला माल हो गई। हमें अल्लाह तआला का बेहद शुक्र अदा करना चाहिए कि खुदा तआला ने हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसा आक़ाए रहमत अता फरमाया। हलीमा की बकरियों की तरह अगरचे हम अपने आमाल के लिहाज़ से कुछ भी नहीं। और हमारे आमाल का अगरचे पल्ला खाली है। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बदौलत इंशाअल्लाह क़यामत के रोज़ हम राहत व आसूदगी पाएंगे और हुज़ूर की बदौलत हमारे थोड़े अमल भी ज़्यादा हो जाएंगे। यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुहसिने काइनात हैं। मख़्लूक़ में आप पर किसी का कोई ऐहसान नहीं बल्कि सारी मख़्लूक़ पे आप ही के ऐहसानात हैं। हलीमा ने हुज़ूर को दूध पिला कर आप पर कोई

एहसान नहीं किया बल्कि हुज़ूर ने हलीमा के घर बरकत ही बरकत पैदा करके हलीमा पर ऐहसान फरमाया और हलीमा को ख़ुश हाल व माला माल कर दिया।

मुस्तफ़ा के सारे ज़ेरे बार हैं
मुहसिने हर दो जहाँ सरकार हैं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (२१)
हलीमा ने फरमाया

हज़रत हलीमा फरमाती हैं कि दो साल जब तक कि आप दूध पीते रहे हमने ख़ैर व बरकत से गुज़ारे और इस दरम्यान में हमारे माल में दिन ब दिन तरक़्क़ी होती रही और हुज़ूर का बढ़ना भी हैरत अंगेज़ था कि दो साल की उम्र में अपने से बड़े बड़े दूसरे बच्चों के मुक़ाबले में ताक़तवर व मज़्बूत और क़द व क़ामत में दो-बाला दिखाई देते थे।

आप अभी दो माह के थे तो सहन खाना (आंगन) में हर तरफ फिरने लगे तीन माह के हुए तो पाँव के बल उठ खड़े हुए। चार महीने के हुए तो दीवार के सहारे चलने लगे नौ माह के हुए तो फसीह (फ़र्राटेदार) बोलने लगे ऐसा कि फुसहा (अच्छे बोलने वाले) आपके मुहावर-ए-कलाम पर तअज्जुब करते। दस माह के हुए तो लड़कों के साथ तीर अन्दाज़ी करने लगे। ऐसी कि कोई निशाना ख़ता न जाता।

(हुज्जतुल्लाहि अलल-आलमीन स.२५५)

सबक़

उलमा लिखते हैं कि हुज़ूर का थोड़ी उम्र में यह हैरत अंगेज़ नशो नुमा (बढ़ना) इसलिए था कि वक़्त थोड़ा काम बहुत थे। सारी शरीअ़तों का मंसूख़ (रद) करना, अगली शरीअ़तों की मुश्किलों को खोलना, करोड़हा गुनहगारों को बख़्शवाना, सारे जहान में इस्लाम फैलाना, थोड़े वक़्त में ज़्यादा काम करना था इसलिए आप मोजज़ाना अन्दाज़ में बढ़े। एक आज के बच्चे भी हैं जो गराइप वाटर पी-पी कर नहीं बढ़ते और जब बढ़ते हैं तो फ़सीह (साफ़) बोलने के बजाए क़बीह (गन्दी) गालियाँ देना सीखते हैं।

ऐसी कि शुरफ़ा उन गालियों पर हैरान रह जाते हैं और बढ़ते हैं तो बजाए किसी हुनर के कंकवे उड़ाना। बंटे खेलना। गुल्ली डंडा खेलना वग़ैरा सीखते हैं हालांकि हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बचपन ही में तीर अंदाज़ी इख़्तियार फरमा कर हमें यह सबक़ दिया है कि मुसलमान फन्ने हर्ब (लड़ाई) में माहिर हों। इसलिए कि –

मक़ामी बनके आया तू न राही बनके आया है
यह दुनिया रज़्मगाह है तू सिपाही बनके आया है

मुसलमान को हुज़ूर ने ख़ुदा का सिपाही बनने का सबक़ दिया है और हमें ग़ाज़ी व मुजाहिद बनाया है। मुसलमान के हाथ का ज़ेवर तल्वार है। हाकी व फुटबाल नहीं। शाइर लिखता है।

दो तेग़ जवानों को लो काम जवानों से
कव्वे भी नहीं डरते बेतीर कमानों से

अफ़सोस कि आजकल का मुसलमान बेतेग़ (बिना तल्वार) है। अब उसके हाथ में तल्वार के बजाए कंघी व आईना है। अँग्रेज़ी बाल नन्हीं-नन्हीं कंघी से संवारता है और शे'र गुनगुनाता है तो यह तेग़ों के साए में हम पल कर जवाँ हुए हैं। गोया यह नन्हीं नन्हीं कंघी उसके लिए तेग़ है जिसके साए में पल कर यह जवान हुआ है। मैंने लिखा है। कि –

तऐय्युश के लिए तू है तदैय्युन के लिए मैं हूँ
रुबाब व चंग तेरा मेरा तस्बीह व मुसल्ला है
वह जिन हाथों में ऐ हक़ हक़ कभी तल्वार होती थी
अब उनमें कंघी आईना है या फिर गेंद बल्ला है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (२२)
ला-इला-हा इल्लल्लाह

हज़रत हलीमा फरमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बोलने लगे तो सबसे पहले कलाम जो आपने फरमाया। वह यह था।

لا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ قُدُّوْسًا قُدُّوْسًا نَامَتِ الْعُيُوْنُ وَالرَّحْمٰنُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ

ऐसी कि शुरफ़ा उन गालियों पर हैरान रह जाते हैं और बढ़ते हैं तो बजाए किसी हुनर के कंकवे उड़ाना। बंटे खेलना। गुल्ली डंडा खेलना वग़ैरा सीखते हैं हालांकि हमारे आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बचपन ही में तीर अंदाज़ी इख़्तियार फरमा कर हमें यह सबक़ दिया है कि मुसलमान फन्ने हर्ब (लड़ाई) में माहिर हों। इसलिए कि –

मक़ामी बनके आया तू न राही बनके आया है
यह दुनिया रज़्मगाह है तू सिपाही बनके आया है

मुसलमान को हुज़ूर ने ख़ुदा का सिपाही बनने का सबक़ दिया है और हमें ग़ाज़ी व मुजाहिद बनाया है। मुसलमान के हाथ का ज़ेवर तल्वार है। हाकी व फुटबाल नहीं। शाइर लिखता है।

दो तेग़ जवानों को लो काम जवानों से
कव्वे भी नहीं डरते बेतीर कमानों से

अफ़्सोस कि आजकल का मुसलमान बेतेग़ (बिना तल्वार) है। अब उसके हाथ में तल्वार के बजाए कंघी व आईना है। अँग्रेज़ी बाल नन्हीं-नन्हीं कंघी से संवारता है और शे'र गुनगुनाता है तो यह तेग़ों के साए में हम पल कर जवाँ हुए हैं। गोया यह नन्हीं नन्हीं कंघी उसके लिए तेग़ है जिसके साए में पल कर यह जवान हुआ है। मैंने लिखा है। कि –

तऐय्युश के लिए तू है तदैय्युन के लिए मैं हूँ
रुबाब व चंग तेरा मेरा तस्बीह व मुसल्ला है
वह जिन हाथों में ऐ हक़ हक़ कभी तल्वार होती थी
अब उनमें कंघी आईना है या फिर गेंद बल्ला है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (२२)
ला-इला-हा इल्लल्लाह

हज़रत हलीमा फरमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बोलने लगे तो सबसे पहले कलाम जो आपने फरमाया। वह यह था।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ قُدُّوْسًا قُدُّوْسًا نَامَتِ الْعُيُوْنِ وَالرَّحْمٰنُ لَا تَاءْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْم-

यानी अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह कुद्दूस है। कुद्दूस है। आँखें सो गईं और रहमान को न ओंघ आती है न नींद।"

(हुज्जतुल्लाहि अलल-आलमीन स. २५६)

सबक़

अह्ले दुनिया को तौहीद का सबक़ देने के लिए आने वाले का सबसे पहला कलाम कैसा मुबारक और ईमान अफ़रोज़ कलाम है। मुसलमानों को चाहिए कि वह अपने बच्चों को कलिमा शरीफ़ सिखाएं पढ़ाएं। न कि उसे गालियाँ देना सिखाएं। आजकल का तो यह आलम है कि मिठाई बट रही है। पूछा जाए कि यह मिठाई किस ख़ुशी में बांटी जा रही है तो जवाब मिलता है। आज ख़ैर से नन्हें ने पहली मरतबा अपने डेडी को गाली दी है। यह है हमारा मुआशरा मुसलमानो!

कलिमा अपने बच्चों को सिखलाइए
सुन्नते सरकार को अपनाइए

❖❖❖

हिकायत नम्बर (२३)
दाफ़े-उल-बला

हज़रत हलीमा फरमाती हैं। आपकी बेशुमार बरकतों में से एक यह भी बड़ी बरकत है कि जिस रोज़ हम हुज़ूर को लेकर आए तो हमारी क़ौम का कोई ऐसा घर न था जिस घर से कस्तूरी की ख़ूशबू न आती हो।

मुअ़त्तर हुआ जिसकी ख़ुशबू से हर घर
यह किस बाग़ से फूल लाई हलीमा

और अह्ले देह के दिलों में आपकी बरकत का इस क़द्र यक़ीन हुआ कि अगर किसी को कोई दुख दर्द होता तो आपका हाथ पकड़ कर दर्द की जगह पर रख देता। आपके दस्ते मुबारक की बरकत से फ़ौरन शिफ़ा पाता। इसी तरह अगर किसी के ऊँट बकरी को कोई बीमारी हो जाती तो आपका हाथ मुबारक लगाने से फौरन आराम आ जाता।

(हुज्जतुल्लाहि अलल-आलमीन स. २५६)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सरापा नूर और ख़ुशबू बनकर

तशरीफ लाए। आपने अन्धेरों को रौशनी से बदल दिया और आपकी खुशबू से घर घर खुशबूदार हो गया। एक उनकी मिस्ल बनने वाले भी हैं कि लक्स साबुन से नहाकर भी उनके बदन की बदबू दूर नहीं होती। आपके हाथ मुबारक की यह बरकत थी कि दुख दर्द और किसी बला में मुब्तला होने वाले पर हाथ मुबारक रख देते तो तमाम दुख दर्द और बलाएँ दूर हो जातीं। एक आज कल के लोगों का हाथ भी है कि जिस जेब पर लग जाए वह जेब ही साफ हो जाए।

जो शिफ़ा बनके आया जहाँ के लिए
दाफ़े हर मुसीबत पे लाखों सलाम

❖ ❖ ❖

हिकायत नम्बर (२४)

नूरानी चेहरा

हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं।

مَا كُنَّا مُحْتَاجًا اِلَى السِّرَاجِ مِنْ يَوْمٍ اَخَذْنَاهُ لِاَنَّ نُوْرَ وَجْهِهٖ كَانَ اَنْوَرَ مِنَ السِّرَاجِ۔

(तफ़सीर मज़हरी स. ५२८ जि.६)

यानी जबसे हम आमिना रज़ियल्लाहु अन्हा के लाल को घर लाए हम रात को चिराग़ जलाने के मोहताज न रहे क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहर-ए-अनवर का नूर चिराग़ की रौशनी पर भारी था।

सबक़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सरापा नूर थे जिनके दिलों में नूरे ईमान है उनका यही ईमान है और वह यही पढ़ते हैं।

बाग़े तैबा में सुहाना फूल फूला नूर का
मस्त बू हैं बुलबुलें पढ़ती हैं कलिमा नूर का

❖ ❖ ❖

हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

की अज़्वाजे मुतह्हरात

يَا نِسَاءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَاءِ

ऐ नबी की बीवियो! तुम और औरतों की तरह नहीं हो। (प : २२, अ:१)

हिकायत नम्बर (२५)

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा

रज़ियल्लाहु अन्हा

अज़्वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) में से सबसे पहली हुज़ूर की बीवी उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा हैं। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा बेवा थीं। और मालदार व ताजिरा थीं। दौलत व सरवत के अलावा हुस्न व सूरत व हुस्न सीरत में भी वह मुम्ताज़ दरजा रखती थीं और ताहिरा के लक़ब से मशहूर थीं। उन दिनों कुरैश के तिजारती तअल्लुक़ात शाम से ज़्यादा थे और हज़रत ख़दीजा का माल कसरत से वहाँ फ़रोख़्त होता था चुनांचे हज़रत ख़दीजा लोगों को मुलाज़िम रखती थीं और उनके ज़रिए अपना कारोबार चलाती थीं। ख़ुदा ने रुपया पैसा कसरत से दिया था मगर पय दर पय सदमों की वजह तबीअ़त दुनिया से सैर हो चुकी थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र शरीफ़ २५ साल की हुई उस वक़्त आपके पाकीज़ा अख़्लाक़ और सतूदा सिफ़ात (अच्छी ख़ूबियों) का काफ़ी शोहरा हो चुका था। अरब के हर गोशा में आप अमीन के लक़ब से याद किए जाते थे। हज़रत ख़दीजा जिनकी अक़ीदत नवाज़ आँखें पहले ही ऐसे फ़र्दे मुक़द्दस की जुस्तजू (खोज) में थीं। बड़े इश्तियाक़ से आपकी पज़ीराई के लिए आमादा हुईं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत

में पैग़ाम भेजा कि अगर आप मेरा माले तिजारत शाम तक ले जाया करें तो मैं अपना गुलाम मैसरा आपके साथ कर दूँ और जितना मुआवज़ा और लोगों को देती हूँ उससे दो गुना आपको दिया करूँगी। उधर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने सरपरस्त चचा अबू-तालिब के ज़रिआ से ख़दीजा की तिजारत का हाल मालूम हो चुका था। इसलिए आपने बिला तकल्लुफ़ मंज़ूर फरमा लिया और अशिया-ए-तिजारत (तिजारत का माल) लेकर बसरा का रुख़ किया इत्तिफ़ाक़ की बात आप जितना माल ले गए थे वह सब फ़रोख़्त हो गया और मक्का में आकर जब नफ़ा का हिसाब किया गया तो जितना पहले हुआ करता था। उससे दो गुना था। हज़रत ख़दीजा बहुत ख़ुश हुई और जितनी रक़म आपके लिए नामज़द की थी उससे दो गुनी नज़र की।

इस दौरान हज़रत ख़दीजा को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के काफी हालात मालूम हो चुके थे और आपकी निगाहों में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त बढ़ती जाती थी। चुनांचे उन्होंने अपनी एक सहेली नफ़ीसा पयाम्बर बना कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्यामे निकाह भेजा। हज़रत ख़दीजा के बाप का इन्तिक़ाल हो चुका था। इसलिए उनके चचा अम्र इब्ने असद उनके सरपरस्त थे। आख़िरकार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अबू-तालिब और खानदान के सभी बड़े लोग हज़रत ख़दीजा के घर पर जमा हुए। अबू-तालिब ने निकाह का ख़ुतबा पढ़ा और ५०० दिरहम तिलाई महर क़रार पाया और हज़रत ख़दीजा हुज़ूर के निकाह में आ गईं। उस वक़्त हुज़ूर की उम्र शरीफ़ २५ साल और ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र ४० साल की थी।

(तब्क़ात इब्ने सअ्द स. ६ जि. १ साबा स.५२६)

सबक़

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सदाक़त, दियानत और अमानत का चर्चा शुरू ही से चला आ रहा था। आमिना का लख़्ते जिगर अमीन (ईमानदार) बनकर और हलीमा सादिया का दूध पी कर हलीम व सईद बनकर तशरीफ़ लाया और फिर यह कि आपका वजूद मसऊद और ज़ात बाबरकात सरापा बरकत थी, कि जिस माले तिजारत को आपका दस्ते बरकत लग गया। वह बिक गया और नफ़ा भी दोगुना हुआ इस अमीन व सईद ताहिर व मुतह्हिर महबूब के लिए ख़ुदा ने इन्तिख़ाब (चुनाव) भी

इस मुकद्दस खातून का किया जो ताहिरा के लकब से मश्हूर थीं। मक्का के बड़े-बड़े शुरीफों व रईसों ने आपसे अक्द (शादी) का इरादा किया। प्याम भेजे। मगर आपने सबके प्याम नामंज़ूर कर दिए मगर उम्मुल-मोमिनीन की पाकबाज़ नज़रों ने जो खूबी हुज़ूर में देख लिया। उस पर आपने बख़ुशी खुद ही हुज़ूर को प्याम भेज कर उम्मुल-मोमिनीन का लकब हासिल करके दीन व दुनिया की दौलत पाली। मगर अफ़सोस कि आजकल मर्द में अमानत व दियानत और दीन की चाह नहीं देखी जाती बल्कि उसकी ख़्यानत में महारत और उसकी तंख़्वाह देखी जाती है।

यह भी मालूम हुआ कि आजकल के यूरोप के हट धर्म इतिहासकारों और यूरोप मारका माडर्न मुफ़स्सिर (मआज़ल्लाह) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में कसरते इज़्दवाज के पेशे नज़र यह बक्वास करते हैं कि हुज़ूर का मैलान (रुझान) औरतों की तरफ़ ज़्यादा था। (अस्तग़्फ़िरुल्लाहिल-अज़ीम) सरासर हिमाक़त व जिहालत और अदावत है। बिलफ़र्ज़ अगर ऐसा होता तो आप अपनी पच्चीस साल की उम्र शरीफ़ में किसी ापनी हम-उम्र लड़की से निकाह फरमाते। न कि चालीस साला औरत से। यूरोप कि यह सत्तर-सत्तर साला बूढ़े पापी दाढ़ी मोंछ मुंडवा कर मस्नूई (बनावटी) जवान बन कर कमसिन औरतों से दौलत का लालच देकर निकाह कर लें या उन्हें दाश्ता (जिससे निकाह न हुआ हो) बना लें या बहका ले जाएं। यह सब तहज़ीब और जाइज़। इसी तरह यह यूरोपज़दा माडर्न तब्क़ा भी उन नाशाइस्ता हरकात का मुर्तकिब होकर अपनी नापाक ज़ुबान से हुज़ूरे ताहिर व मुतह्हिर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाकीज़ा ज़िन्दगी पर ऐतराज़ करता है। उन कम इल्म और अंधों को हुज़ूरे की अज़्मत व हिक्मत की क्या ख़बर ? ज़रा ग़ौर कीजिए कि ४० साला औरत से हुज़ूर ने २५ साल की उम्र में निकाह फरमाया और फिर हज़रत ख़दीजा की ज़िन्दगी में दूसरी किसी औरत से निकाह नहीं फरमाया। (मवाहिबे लदुनीया स. २०३ जि.१)

इंसाफ़ पेशे नज़र हो तो यह हुज़ूर की इफ़्फ़त (इज़्ज़त) व बुलन्दी किरदार की दलील है न कि उस बक्वास की जो ऐसे लोग करते हैं।

यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात के मुताबिक़ अगर तिजारत की जाए तो तिजारत में नफ़ा व बरकत पैदा होती है। हुज़ूर ने फरमाया कि तिजारत में झूठ मत बोलो। सच से काम

लो और फरमाया।

اَلتَّاجِرُ الصَّدُوْقُ الْاَمِيْنُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ۔

(मिश्कात शरीफ़ स. २३५)

यानी सच बोलने वाला ताजिर, नबियों, सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ उठेगा।

अफ़सोस कि आजकल ताजिर पेशा हज़रात झूठ बहुत बोलते हैं और गाहक भी फिर झूठ बोलने लगते हैं। ताजिर पाँच रुपये की चीज़ को क़सम खा कर कहता है यह मैंने दस रुपये की ख़रीदी है और गाहक क़सम खा कर कहता है अभी कल इसी बाज़ार से बिल्कुल यही चीज़ तीन रुपये की ले गया हूँ। इस क़िस्म की तिजारत दीन व दुनिया बर्बाद कर देती है हुज़ूर के इर्शादात के मुताबिक़ बात सच्ची करो और एक करो। दुकानदार अपनी घटिया चीज़ को बढ़िया न कहे और गाहक दुकानदार की बढ़िया चीज़ को घटिया न कहे और आज कल के ताजिर मसलन कपड़े की दुकानों में रात को चारों तरफ़ रंग-रंग की बत्तियां (ट्यूब) लगाकर कपड़े को यूँ चमका देते हैं जैसे निहायत ही ख़ूबसूरत और अभी-अभी बनकर आया है। यह नई रौशनी गाहक की आँखों को अंधा कर देती है और वह उस चका चौंद में कपड़ा ख़रीद कर घर ले जाता है और दिन को जब उसे देखता है तो रात-दिन का फ़र्क़ बनज़र आने लगता है। कोई कपड़े का थान बिकता न हो तो किसी सीधे साधे गाहक को अपनी बातों में फाँस लेता है और गाहक थान ख़रीद लेता है। और दुकानदार ख़ुशी-ख़ुशी घर आकर कहता है। लो भई वह थान जो कई दिनों से निकल नहीं रहा था आज मैं उसे निकाल आया हूँ। वज़ीरे चुनां शहर यारे चुनां के मुताबिक़ फिर गाहक भी कुछ इसी क़िस्म का मुज़ाहरा करने लगते हैं। जूतों की एक दुकान पर एक गाहक आया। और कहा बीवी के लिए सिलीपर का जोड़ा ख़रीदने आया था लेकिन इत्तिफ़ाक़न नाप लाना भूल गया हूँ। आप ऐसा करें। दाएं पैर का सिलीपर दे दें। मैं अभी-अभी घर पहना कर देख आता हूँ। पूरा आ गया तो दूसरा भी ले जाऊँगा। दुकानदार ने ज़नाना सिलीपर दाहिने पैर का दे दिया और फिर उसका इन्तिज़ार करने लगा कि अब आया और अब आया। मगर वह शाम तक नहीं आया। रात को घर जाते वक़्त साथ वाले जूते की दुकान के मालिक से यह क़िस्सा ब्यान किया कि आज एक बे-ईमान गाहक आया था जो ज़नाना सिलीपर का दाएं पैर का सिलीपर ले गया है और कह गया था कि घर पहना कर देख आऊँ अगर पूरा आ गया

तो दूसरे पैर का भी ले जाऊँगा दूसरे दुकानदार ने हैरान होकर कहा। अच्छा तो वह बे-ईमान मुझसे यही बात करके बाएं पैर का सिलीपर ले गया है। मैं भी उसी के इंतिज़ार में था। भई बड़ा चालाक निकला वह कि किस तरह उसने अपनी बेगम के लिए सिलीपर का जोड़ा उड़ा लिया। मालूम हुआ कि हमारा मुआशरा (समाज) सारा ही बिगड़ चुका है। दुकानदारों और गाहकों दोनों ही को ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं रहा इस तरह दुनिया तो बन जाती है। लेकिन दीन बर्बाद हो जाता है।

ऐ मुसलमां अपने रब को याद कर
दीन व दुनिया को तू मत बर्बाद कर

❖❖❖

हिकायत नम्बर (२६)
हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का ईसार

हज़रत ख़दीजा का निकाह जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हो गया तो हासिद लोग अंगारों पर लोटने लगे और हज़रत ख़दीजा के मुतअल्लिक़ बड़े नाज़ेबा अल्फ़ाज़ कहने लगे। और कहने लगे मुहम्मद जो एक मुफ़्लिस और ग़रीब आदमी है। ख़दीजा ने इतनी बड़ी मालदार हो कर उससे निकाह कर लिया। हज़रत ख़दीजा ने जब यह तअ़्न सुना तो उन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में ऐसे अल्फ़ाज़ सुनकर बड़ी ग़ैरत आई कि लोग आपको मुफ़्लिस कहते हैं। आपने तमाम अमीरों को बुलाकर उन्हें गवाह किया कि मैं जिस क़द्र माल की मालिक हूँ सब मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दे दिया अब मेरे और मेरे सारे माल के मालिक वह हैं। अब अगर मुफ़्लिस हूँ तो मैं हूँ और यह हुज़ूर का करम होगा। अगर वह मेरी मुफ़्लिसी पर राज़ी हो जाएं। हाज़िरीने मज्लिस यह बात सुनकर बड़े हैरान हुए और अब हासिद यूं कहने लगे कि मुहम्मद सबसे ज़्यादा मालदार हो गया और ख़दीजा मुफ़्लिस हो गई। हज़रत ख़दीजा ने यह बात सुनी तो आपको बहुत भली मालूम हुई और इस आर को अपने लिए फ़ख़्र की बात समझा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत ख़दीजा के इस ईसार पर बड़े ख़ुश हुए और दिल में सोचा कि ख़दीजा के इस ईसार का मैं उसे क्या सिला दूँ। इतने में जिब्रील आए और अर्ज़ किया। या रसूलुल्लाह! अल्लाह फरमाता है कि ख़दीजा के ईसार का सिला

हमारे ज़िम्मा है। हुज़ूर इसका सिला हमेशा इन्तिज़ार करते रहे कि देखिए इस ईसार का सिला कब ज़ुहूर में आता है चुनांचे शबे मेराज जब आप जन्नत में गए तो वहाँ एक अज़ीमुश्शान महल देखा जिसमें इन्तिहाए बस्र तक वह नेमतें मौजूद थीं। जिन्हें न किसी आँख ने देखा न किसी कान ने सुना। आपने जिब्रील से दरयाफ़्त किया कि यह महल किस के लिए है। अर्ज़ किया। ख़दीजा के लिए। हुज़ूर ने ख़दीजा से फ़रमाया मुबारक हो ख़ुदा ने तुम्हारे लिए सिला में बड़ी बेहतरीन चीज़ तैयार की है।

(नुज़्हतुल-मजालिस बाब मनाक़िबे उम्महातुल-मोमिनीन स. १४० जि.२)

सबक़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुफ़्लिस और यह कहना कि जिसका नाम मुहम्मद है किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं। हासिदों का शेवा है चुनांचे क़ुरआन पाक ख़ुद फ़रमाता है।

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَا اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِه (प.५ अ.५)

या लोगों से हसद करते हैं उस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया।

अल्लाह ने इस आयते करीमा में उन मल्ऊनों का ज़िक्र फ़रमाया है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त व अज़्मत और हर क़िस्म की नेमत को देखकर हुज़ूर से हसद किया करते थे। मालूम हुआ कि हुज़ूर के पास सब कुछ था और इसी बात पर काफ़िर हसद करते थे। अल्लामा क़स्तलानी शारेह बुख़ारी अलैहिर्रहमाः लिखते हैं।

لَمْ يَكُنِ النَّبِىُّ ﷺ فَقِيْرًا مِنَ الْمَالِ قَطُّ وَلَا حَالُهٗ حَالُ الْفَقِيْرِ بَلْ كَانَ اَغْنَى النَّاس

(मवाहिबुद्-दुनिया स. ३७२ जि.१)

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हरगिज़ फ़क़ीर न थे। न माल की रू से न हाल की रू से। बल्कि सारे लोगों से ज़्यादा ग़नी व अमीर थे।

ग़ौर फ़रमाइए। ख़ुदा तआला जिसे फ़रमाए कि وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَاَغْنٰى ख़ुदा ने तुम्हें हाजतमन्द पाया और ग़नी कर दिया।" फ़रमाइए जिसे कोई दुनिया का बादशाह ग़नी कर दे। उसको सब कुछ मिल जाता है और जिसे ख़ुदा ग़नी कर दे उसके पास कुछ न हो? अपना ईमान यह रखिए जो आला हज़रत ने फ़रमाया है कि –

मालिके कौनेन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहाँ की नेमतें हैं उनके खाली हाथ में

अल-ग़र्ज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेइज़्ने खुदा-खुदा के सारे ख़ज़ानों के मालिक हैं। यह हासिदों का अक़ीदा है कि आपके पास कुछ नहीं।

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा जो सब मोमिनों की माँ हैं। उन्होंने न सिर्फ़ अपने सारे माल का बल्कि अपनी जान का भी हुज़ूर को मालिक समझा और यह उनकी तवाज़ु थी कि मालिके कौनेन के निकाह में आकर अपने आपको मुफ़्लिस कहा। हज़रत ख़दीजा से ज़्यादा खुशबख़्त अमीर और अज़्मत व दौलत का मालिक कौन हो सकता है जिसके ख़ुद हुज़ूर हो गए।

जिस के हुज़ूर हो गए उसका ज़माना हो गया

मालूम हुआ कि सच्चा मुसलमान और उम्मुल-मोमिनीन का सच्चा बेटा वह है जो अपना तन मन धन सब हुज़ूर पर निछावर कर दे और हुज़ूर को अपनी जान व माल का मालिक समझे बुज़ुर्गों ने तो यहाँ तक लिखा है कि

مَنْ لم يرَ نَفْسَهٗ فِىْ مَلْكِهٖ لَمْ يَذُقْ حَلَاوَةَ الْاِيْمَانِ

जिसने अपनी जान का हुज़ूर को मालिक नहीं समझा। उसने ईमान की हलावत ही नहीं चखी।"

और आजकल तो हुज़ूर को मालिक कहना ही बाज़ लोग शिर्क बताते हैं मगर सच बात वह है जो आला हज़रत ने लिखी है कि –

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब में नहीं मेरा तेरा

यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपके महबूबों और आपकी मजालिस पर ख़र्च करना जन्नत में अपने लिए महल बनाना है मगर बाज़ ऐसे बदनसीब भी हैं। जो यूँ कहते हैं।

لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا

कि उन पर ख़र्च न करो जो रसूलुल्लाह के पास हैं। यहाँ तक कि वह परेशान हो जाएं।" (प.२८ अ.१३)

यानी यह लोग वह हैं जो हुज़ूर की ज़ाते पाक पर तो क्या उनके पास वालों और उनकी तरफ मंसूब महफ़िलों पर भी ख़र्च करने से रोकते हैं और यह आयत सूरः मुनाफ़िक़ून में है जिसमें मुनाफ़िक़ों ही का किरदार ब्यान किया गया है। मुसलमान का किरदार यह है कि –

मुहम्मद है मताए आलमे ईजाद से प्यारा!
पिदर, मादर, बरादर जान व माल औलाद से प्यारा

हिकायत नम्बर (२७)

हज़रत ख़दीजा की सहेलियाँ

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का अक्सर ज़िक्र फरमाते रहते थे। बाज़ औक़ात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बकरी ज़बह फरमाते और फिर उसके गोश्त के टुकड़े करके हज़रत ख़दीजा की सहेलियों के घर भेजते सिर्फ़ इसलिए कि यह ख़दीजा की सहेलियाँ थीं। (मिश्कात शरीफ़ स. ५२५)

सबक़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत ख़दीजा से बड़ा प्यार था और आप अक्सर उनका ज़िक्र फरमाते रहते। मालूम हुआ कि जिससे मुहब्बत हो उसका ज़िक्र करते रहना सुन्नते नब्वी है और फिर यह भी कि ख़दीजा का ज़िक्र भी फरमाते और बकरी ज़बह करके उसका गोश्त ख़दीजा की सहेलियों को भी बाँटते इसी तरह आज मुसलमानों को चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत मुहब्बत है इसलिए यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िक्र की महफ़िलें मुनाक़िद करते रहते हैं। महफ़िले मीलाद हो या महफ़िले ग्यारहवीं मक़्सूद ज़िक्रे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही होता है। उलमा-ए-अह्ले सुन्नत को कोई सा भी मौज़ू दो। वह फिर फिरा कर ज़िक्रे मुस्तफ़ा की तरफ आ जाते हैं। इसलिए बाज़ लोग कहते हैं। उन सुन्नी मोलवियों को तो ज़िक्रे रसूल के सिवा और कुछ आता ही नहीं। अल्हम्दुलिल्लाह कि दुश्मनों के मुँह की यह सनद हमारी नजात के लिए काफ़ी है। यह भी मालूम हुआ कि ज़िक्रे महबूब के साथ फिर महबूब के नाम पर कोई चीज़ तक़्सीम भी करनी चाहिए। चुनांचे महफ़िले मीलाद में मिठाई का तक़्सीम करना। ग्यारहवीं की मज्लिस में देगें पका कर तक़्सीम करना भी सुन्नते नब्वीया है और फिर यह भी कि हुज़ूर ख़दीजा की मुहब्बत में जो बकरी ज़बह करते। हुज़ूर उसे ख़दीजा की सहेलियों में तक़्सीम करते थे चुनांचे हमारी महफ़िल की मिठाई और ग्यारहवीं के चावल भी हुज़ूर से मुहब्बत रखने वालों पर तक़्सीम होते हैं और जिन्हें हुज़ूर से मुहब्बत नहीं। ख़ुदा उन्हें इस तबर्रुक से दूर रखता है।

जो ज़िक्रे मुसतफ़ा से भाग जाए
खुदा क्यों उसका मुँह मीठा कराए

❖ ❖ ❖

हिकायत नम्बर (२८)
उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के विसाल के बाद हुज़ूर अरसा तक मग़मूम (फ़िक्रमन्द) रहे। ख़ौला-बिन्ते-हकीम जो मशहूर सहाबी उसमान-बिन-मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी थीं। उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस आलम में देख कर अक़्दे सानी की तहरीक की। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। कहाँ? ख़ौला ने कहा। आपके लिए कुंवारी भी मौजूद है और बेवह भी। हुज़ूर ने दरयाफ़्त फरमाया। तो ख़ौला ने कहा। कुंवारी तो उस शख़्स की दुख़्तर है जो इस वक़्त अल्लाह की सारी मख़्लूक़ से आपको प्यारा है। यानी सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी आइशा। और बेवह वह है जो आपकी रिसालत और नुबुव्वत को तस्लीम करके ईमान ला चुकी हैं और उसका नाम सौदा-बिन्ते-ज़मआ है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। दोनों से कहो। ख़ौला हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के घर पहुँचीं और उम्मे-रूमान वालिदा आइशा से और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से इज़्हारे मद्दुआ किया। तो दोनों राज़ी और खुश हो गए और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुज़ूर का अक़्द हो गया।

(पाक बीवियाँ और सहाबियात बहवाला अबू-दाऊद किताबुल-अदब)

सबक़

किसी की बीवी का इन्तिक़ाल हो जाए तो उसे अक़्दे सानी कर लेना चाहिए खुदा फरमाता है।

وَاَنْكِحُوا الْاَ يَامٰى مِنْكُمْ وَالصَّالِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ

और निकाह कर दो। अपनों में उनका जो बेनिकाह हों और अपने लाइक़ बन्दों और कनीज़ों का।" (प.१८ अ.१०)

और मुफ़स्सेरीने किराम ने लिखा है कि यह हुक्म सबके लिए आम है कुंवारे हों या ग़ैर कुंवारे यानी जिसकी बीवी फौत हो जाए वह अक़्दे सानी (दूसरा निकाह) करे इसी तरह जिसका ख़ाविन्द (शौहर) मर जाए वह भी अक़्दे सानी करे मगर हमारा अपना मसला जो मश्हूर है वह यह है कि मर्द फ़ौत हो जाए तो औरत कहती है मैं अक़्दे सानी नहीं करूंगी। उन्हीं के हक़ में बैठी रहूँगी। यह बात ज़्यादा तर औरतों में पाई जाती है। मर्दों में यह बात नहीं कि बीवी मर जाए तो वह यूँ कहे कि मैं अपनी बीवी के हक़ में बैठा रहूँगा यह मसाइल हमारे ख़ुद-साख़्ता हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना अक़्दे सानी फरमा कर गोया अक़्दे सानी को सुन्नत क़रार दे दिया।

यह भी मालूम हुआ कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने वक़्त में सारी मख़्लूक़ से ज़्यादा प्यारे थे और सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को सारी मख़्लूक़ से ज़्यादा प्यार हुज़ूर से था। उसी प्यार का यह नतीजा था कि आपने फ़ौरन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी बेटी का अक़्द (निकाह) मंज़ूर कर लिया और अपना माल व ज़र सब कुछ हुज़ूर पर कुरबान कर दिया।

लुटाया राहे हक़ में घर कई बार इस मुहब्बत से
कि लुट लुट कर हसन घर बन गया सिद्दीक़े अकबर का

❖❖❖

हिकायत नम्बर (२६)

ख़्वाब में तस्वीरे आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फरमाया कि तीन रात मुसलसल मुझे एक रेशमी कपड़े पर तुम्हारी तसवीर दिखाई जाती रही। जिसे जिब्रील लेकर आता था और कहता था कि यह है आपकी बीवी। ऐ आइशा! आज जो मैंने तुम्हारे चेहरा से कपड़ा उठाया। तो तुम उसी तस्वीर के मुताबिक़ हो। फरिश्ता जब तुम्हारी तसवीर लेकर आता रहा तो मैंने कहा था कि यह अल्लाह की तरफ से है। इसलिए यह रिश्ता होकर रहेगा।

(मिश्कात शरीफ़ स.५२२)

दूसरी रिवायत में यह लफ़्ज़ भी हैं।

هٰذِهٖ زَوْجَتُكَ فِی الدُّ نْيَا وَ فِی الْاٰخِرَةِ.

यह तुम्हारी बीवी है दुनिया में भी और आख़िरत में भी।"

(मिश्कात शरीफ़ स. ५६६)

सबक़

अल्लाह तआला ने उम्मुल-मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का रिश्ता हुज़ूर के साथ ख़ुद इंतिख़ाब फरमाया। किस क़द्र ख़ुशबख़्त हैं उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा कि किसी लड़की का इंतिख़ाब उसका बाप करता है किसी का चचा और किसी की माँ बहन इंतिख़ाब करती है लेकिन हज़रत आइशा के रिश्ते का इंतिख़ाब ख़ुद अल्लाह तआला ने फरमाया। अब कौन ऐसा बदबख़्त है जो इस रिश्ते में कोई ऐब ब्यान करे और उम्मुल-मोमिनीन के बारे में ज़ुबाने तअ्न खोले मआज़ल्लाह अगर उम्मुल-मोमिनीन में कोई ऐब होता या होने वाला होता तो ख़ुदा जिसे हर अगली पिछली गुज़री और होने वाली सारी बातों का इल्म है। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए यह रिश्ता क्यों तय फरमाता? मालूम हुआ कि उम्मुल-मोमिनीन के मुख़ालिफ़ दरासल अल्लाह तआला पर मोतरिज़ (ऐतराफ़) हैं कि उसने ऐसा क्यों किया। फरमाइए। ऐसे लोगों का अल्लाह तआला के नज़्दीक क्या मक़ाम है। और उनका हश्र के दिन क्या हश्र होगा। लिहाज़ा हर मुसलमान को उम्मुल-मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का दिल से ऐहतराम करना लाज़िम है कि यह रिश्ता ख़ुदा ने किया है। और फरमा दिया है कि यह तुम्हारी बीवी दुनिया में भी है और आख़िरत में भी। पस जो लोग हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर तअ्न करेंगे। उनकी दुनिया भी बर्बाद और आख़िरत भी।

रहा तस्वीर का मसला मुम्किन है कोई माडर्न यह कह दे कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आइशा की तस्वीर बनाई तो हम अगर तस्वीर खिंचवाएं या बनवाएं तो गुनाह क्यों हो ? उसका जवाब यह है कि ख़ुदा तआला की एक सिफ़त मुसव्विर (तस्वीर बनाने वाला) भी है। हज़रत आइशा की तस्वीर भी उसी ने बनाई और उनकी तख़्लीक़ भी उसी ने की। यह सिफ़त किसी बन्दे को इजाज़त नहीं कि अपना ले और तस्वीरें बनाने लगे। मसलन सरकारी नोट करंसी वग़ैरा बनाना गवर्नमेंट का काम है लेकिन अगर कोई रिआया में से जाली नोट और करंसी बनाने लगेगा तो

वह शाही मुजिरम है और उसकी सज़ा सख़्त है जिसे उसे भुगतना पड़ेगी। खुदा ने तसवीर भी बनाई और तख़्लीक़ भी की। आज के तस्वीर बनाने वालों को भी कल क़यामत के दिन खुदा फरमाएगा। मेरी नक़ल उतारने वाले अब इस तस्वीर में जान भी डाल इस मौक़ा पर फिर उन जालसाज़ों को सज़ा मिलेगी जो उन्हें भुगतनी पड़ेगी एक मज्लिसे मुशाइरा में यह तरहे मिसरा पेश किया गया।

इसलिए तसवीर जानां हमने खिंचवाई नहीं

यानी मैंने महबूब की तसवीर नहीं खिंचवाई उसकी वजह क्या है? एक शाइर उठा। और बोला।

मांगता है दाम कातिब पास इक पाई नहीं
इसलिए तसवीरे जानां हमने खिंचवाई नहीं

यानी मुसव्विर तसवीर खिंचवाने के पैसे मांगता है और मेरे पास एक पाई भी नहीं। इसलिए मैंने तसवीर नहीं खिंचवाई। दूसरा शाइर उठा। और कहा।

कातिबे कुदरत से बढ़कर कल्क आराई नहीं
इसलिए तसवीर जानां हमने खिंचवाई नहीं

यानी क़लमे कुदरत से बढ़कर हमारा क़लम नहीं है। तस्वीर बनाना क़लमे कुदरत का काम है। इसलिए मैंने तसवीर नहीं खिंचवाई। तीसरा शाइर उठा। और बोला।

मैं हूँ मुश्ताक़ तकल्लुम और यह गोयाई नहीं
इसलिए तसवीर जानाँ हमने खिंचवाई नहीं

यानी मैं यार से बातें करना चाहता हूँ और तसवीर बोलती नहीं। इसलिए मैंने तसवीर नहीं खिंचवाई। आख़िर में एक दीनदार शाइर उठा। उसने कहा। हज़रात!

बुत परस्ती दीने अहमद में कहीं पाई नहीं
इसलिए तस्वीर जानां हमने खिंचवाई नहीं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (३०)

निकाह और रुख़्सती माहे शव्वाल में

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह माहे

शव्वाल में हुआ और रुख़्सती भी माहे शव्वाल में हुई। इसीलिए हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा उस महीना में शादी की तक़रीब को ज़्यादा पसन्द करतीं थीं और फरमाती थीं कि मेरा निकाह भी और रुख़्सती भी शव्वाल में हुई और मुझसे ज़्यादा खुश क़िस्मत शौहर के नज़्दीक कोई नहीं।

दरासल किसी ज़माना में शव्वाल ही के महीना में ताऊन का दौरा पड़ा था। इसलिए लोग उस महीना को मंहूस समझते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस महीना में निकाह कराना और रुख़्सत कराना गोया अरब की औहाम परस्ती को दूर करना था।

(तब्क़ात इब्ने सअ्द स. ४३ जि. ८ और नुज़्हतुल-मजालिस स. १४३ जि.२)

सबक़

अफ़सोस कि आज कल के मुसलमान भी इसी क़िस्म की औहाम परस्तियों में मुब्तला हो गए हैं चुनांचे हमारे यहाँ यह खुदसाख़्ता मसला आम है कि दो ईदों के दरम्यान निकाह नहीं होता चुनांचे हमारे क़स्बा में एक लड़का कोयत से छुट्टी लेकर अपनी शादी के लिए घर आया। रमज़ान शरीफ़ का महीना था और छुट्टी उसकी थोड़ी थी। उसकी शादी शव्वाल में मुक़र्रर (तय) हुई लेकिन मुहल्ला वालों ने शोर मचा दिया कि दो ईदों के दरम्यान निकाह नहीं होता। लड़के के वालिदैन मेरे पास आए और बड़े परेशान होकर पूछने लगे कि क्या यह मसला है? मैंने कहा बिल्कुल ग़लत है यह कोई मसला नहीं। फिर मैंने कहा कि आप उन खुद साख़्ता मुफ़्तियों से पूछें कि हम शादी कब करें? कहने लगे वह कहते हैं। बक़र-ईद गुज़र जाने के बाद। मैंने कहा उनसे कहो कि बक़र-ईद गुज़र जाने पर शादी की गई तो अगली ईदुल-फ़ित्र भी तो आने वाली है। इस बक़रा-ईद के बाद शादी की गई। आने वाली ईदुल-फ़ित्र के पेशे नज़र शादी तो फिर भी दोनों ईदों के दरम्यान ही हो गई। उनसे पूछो अब तुम ही बताओ कि वह कौनसा महीना है जो दो ईदों के दरम्यान न हो उस पर वह बेचारे मुत्मइन हो गए। नुज़हतुल-मजालिस के उसी सफ़ा पर यह रिवायत मज़्कूर (लिखी) है कि शव्वाल में निकाह करना मुस्तहब है मगर यार लोग कहते हैं कि दो ईदों के दरम्यान निकाह जाइज़ नहीं। इसी तरह जो लोग मुहर्रम शरीफ़ के महीना में शादी करने को नाजाइज़ समझते हैं यह मसला भी कोई नहीं। यह लोग उधर तो मैदाने करबला में हज़रत सकीना और इमाम क़ासिम रज़ियल्लाहु अन्हुमा का निकाह होना ब्यान करते हैं और मस्नूई (बनावटी)

रिवायात सुना-सुना कर लोगों को रुलाते हैं और इधर हमें कहते हैं कि मुहर्रम शरीफ़ में निकाह न करो और इस तरह तो साल भर में कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रा जिसमें कोई नबी, वली शहीद न हुआ हो या उनका विसाल न हुआ हो। सबसे ज़्यादा रंज और तक्लीफ़ देह वह दिन था जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विसाल हुआ। इस तरह तो फिर रबीउल-अव्वल शरीफ़ में भी निकाह न करना चाहिए।

यूं ही एक ग़लत मसला यह भी मश्हूर है कि जिस छुरी में तीन कील न हों उससे जानवर का ज़बह करना जाइज़ नहीं और यह ग़लत मसला भी आम है कि औरत मुर्ग़ को ज़बह नहीं कर सकती। ख़ाविन्द (शौहर) को चाहिए ज़बह कर दे लेकिन औरत मुर्ग़ को ज़बह नहीं कर सकती। रमज़ान शरीफ़ में आईना देखो तो रोज़ा टूट जाता है सुरमा लगाओ तो रोज़ा टूट जाता है। पुराने ज़माना की औरतों का यह मसला भी है कि ख़ाविन्द का नाम लो तो निकाह टूट जाता है।

चुनांचे एक लतीफ़ा है कि एक औरत के ख़ाविन्द का नाम रहमतुल्लाह था। वह जब नमाज़ पढ़ती तो सलाम फेरते वक़्त यूं कहती। अस्सलामु अलैकुम मुन्ने का अब्बा। यानी रहमतुल्लाह इसलिए न कहती कि यह नाम मेरे ख़ाविन्द का है। अगर अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहा तो कहीं निकाह न टूट जाए।

यह उम्मत थी क्या और क्या हो गई
जिहालत की बातों में क्यों खो गई

❖❖❖

हिकायत नम्बर (३१)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा

हज़रत आइशा फरमाती हैं कि एक दफ़ा हुज़ूर ने मुझसे फरमाया। कि जब कभी तुम मुझसे राज़ी होती हो तो मैं जान लेता हूं और जब तुम मुझसे कुछ ख़फ़ा होती हो तो भी जान लेता हूँ। हज़रत आइशा ने अर्ज़ किया वह किस तरह? फरमाया तुम जब राज़ी और ख़ुश होती हो तो क़सम खाते वक़्त यूं कहती हो। لَا وَرَبِّ مُحَمَّدٍ मुझे मुहम्मद के रब की क़सम! और

जब कभी ख़फ़ा होती हो तो क़सम यूं खाती हो! لَا وَرَبِّ اِبْرَاهِيْمَ मुझे इब्राहीम के रब की क़सम! हज़रत आइशा ने अर्ज़ किया। बेशक या रसूलुल्लाह बात ऐसे ही है। लेकिन

مَا اَهْجُرُ اِلَّا اِسْمَكَ (मिश्कात शरीफ़ स. २७२)

या रसूलुल्लाह! मैं सिर्फ़ आपका नाम ही छोड़ती हूँ ना। मुहब्बत तो आपकी बदस्तूर मेरे दिल में रहती है।

सबक़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर अदा-ए-मुबारक तालीमे उम्मत के लिए है। इस वाक़्या में हमारे लिए यह सबक़ है कि घर में अगर कभी मियाँ बीवी में कुछ इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उसे बढ़ाना नहीं चाहिए। बल्कि नर्मी व प्यार ही से उसका तदारुक (रोक थाम) कर लेना चाहिए और मर्द को तहम्मुल (सब्र) व बर्दाश्त से काम लेकर प्यार ही प्यार में बीवी को खुश कर लेना चाहिए। इस क़िस्म की बातें घर में होती रहती हैं। मर्द हुज़ूर की सुन्नत इख़्तियार करें और औरत हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की सुन्नत अपनाए यानी दिल में मर्द की मुहब्बत व ताज़ीम को बदस्तूर क़ायम रखे। अगर हुज़ूर की इस अदा-ए-मुबारक और हज़रत आइशा के मुहब्बत भरे जवाब को अपना लिया जाए तो किसी घर में नाचाक़ी बाक़ी ही न रहे। आज कल तो यह हाल है कि बीवी मर्द से ज़रा ख़फ़ा हुई तो वह सिर्फ़ यह कि मर्द का नाम लेना छोड़ देती है। उसका घर भी छोड़ कर मैके जा बैठती है। और दिल में खाविन्द का नफ़रत भर कर उसे गालियां देती मां-बाप के घर जा कर मां-बाप को खाविन्द के ख़िलाफ़ भड़का कर तलाक़ लेने पर आमादा हो जाती है।

इस मग़्रिबी तहज़ीब का एक तलीफ़ा भी सुनते चलिए। लंदन की एक औरत एक वकील के पास गई और पूछा क्या मैं अपने शौहर से तलाक़ ले सकती हूँ? वकील ने पूछा आपको शौहर से क्या शिकायत है। औरत बोली। अभी मेरी शादी नहीं हुई। लेकिन सोचती हूँ अगर शादी हो गई और तलाक़ लेने का मौक़ा आ गया जो इंशाअल्लाह ज़रूर आएगा तो ऐसे में मुझे क्या करना होगा। सुना आपने कि शादी से पहले ही तलाक़ लेने का मंसूबा बनाया जा रहा है।

एक दूसरा लतीफ़ा भी सुन लीजिए। एक मेम साहिबा अदालत में पहुँची और जज साहब से कहा। मैं अपने शौहर से तलाक़ लेना चाहती हूँ जज

ने पूछा। क्या बात हुई? बोली। देखिए ना! आज उसने मेरे प्यारे डाग (कुत्ते) का घर आकर मुँह नहीं चूमा।

माडर्न औरत है चालाकी में ताक़
है जिसे महबूब शौहर से तलाक़

❖❖❖

हिकायत नम्बर (३२)
मुश्किल हल फरमा देने वालियाँ

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की किसी हदीस पाक समझने और किसी दूसरे मसला के समझने में अगर कोई मुश्किल पेश आती तो हम उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से हल दरयाफ़्त करते। तो आप इस मुश्किल को हल फरमा देतीं। क्योंकि आप बहुत बड़ी आलिमा थीं। (मिश्कात शरीफ़ स. ५२२)

सबक़

मालूम हुआ कि उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक मईयत (साथ) के बाइस बहुत बड़ी आलिमा मुहद्दिसा और फक़ीहा थीं। कुरआन पाक में सारे मसाइल मौजूद हैं लेकिन बाज़ आयाते मुजमला में जो मुश्किलात थीं वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दूर फरमाए और उन आयात का सही मतलब ब्यान फरमा कर मुश्किलात को हल फरमाया। गोया हदीस हमारे लिए मुश्किल कुशा है। इसी तरह बाज़ अहादीस में भी मुश्किलात पेश आती रहीं। ख़ुदा तआला ने फुक़हा अलैहिमुर्रहमाः की फ़िक़्हः से अहादीस की उन मुश्किलात को दूर फरमाया। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा मुहद्दिसा भी थीं और फक़ीहा भी। कुरआन की मुश्किलात को हदीस से और हदीस की मुश्किलात को अपनी ख़ुदा दाद फ़िक़्हः से हल फरमा देती थीं यह भी मालूम हुआ कि हदीस को समझना हर शख़्स का काम नहीं क्योंकि ख़ुद सहाब-ए-किराम को भी हदीस की असल मुराद समझने के लिए हज़रत आइशा की तरफ रुजू करना पड़ता था। और जो कुछ आप फरमा देती थीं उसे सहाबा कुबूल फरमा लेते थे। आज कल का कोई

ख़ुशकी का मारा अगर वहाँ होता तो वह सहब-ए-किराम पर भी तअन करता। कि तुम कुरआन हदीस के होते हुए हज़रत आइशा के क़ौल पर क्यों अमल करते हो। जिस तरह हमें आज बाज़ लोग कहते हैं कि तुम कुरआन हदीस के होते हुए इमाम आज़म के क़ौल पर क्यों अमल करते हो। हालांकि हम सहाब-ए-किराम के पैरवी में जिस तरह हदीस का असल मक़्सद समझने के लिए वह हज़रत आइशा से हदीस की मुश्किल दूर फरमाने के लिए हाज़िर होते हैं। ख़ुदा तआला ने जिस तरह हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को हदीस की समझ (फ़िक़्हः) अता फरमाई थी। इसी तरह उम्मुल-मोमिनीन के सदक़ा में हज़रत इमाम आज़म को भी हदीस की समझ अता फरमाई थी। मुहद्दिस होना और बात है और मुहद्दिस होने के साथ-साथ फ़क़ीह होना और बात है। मुहद्दिस तो सिर्फ़ हदीसों को जमा फरमाने वाले होते हैं जैसे अंग्रेज़ी दवाई फ़रोश केमिस्ट दवाईयाँ जमा कर रखते हैं लेकिन उन दवाईयों का मस्रफ़ कि इस शीशी की दवाई मलने वाली है और इस शीशी की दवाई पीने वाली है। यह तबीबों और डॉक्टरों का काम है। अगर कोई सिर्फ़ केमिस्ट ही हो और डॉक्टर न हो तो वह दोनों शीशियों की दवाईयों को दवाई समझ कर पीने वाली को मलने के लिए दे दे और मलने वाली को पीने के लिए दे दे तो मरीज़ के मर जाने में शुबह नहीं। यह समझ डॉक्टर को है कि यह दवाई मलने वाली और यह पीने वाली है। इसलिए दवाई ख़रीद कर किसी लायक़ डॉक्टर के पास जाना दवाई का इन्कार नहीं बल्कि उसके इस्तेमाल का मस्रफ़ पूछने के लिए जाना होता है। हदीस पर हमारा ईमान है। लेकिन हम इमामे आज़म के पास जाते हैं तो सिर्फ़ इसलिए कि हुज़ूर की मसलन यह जो हदीस لَا صَلٰوةَ اِلَّا الْكِتَابِ है। उसका मस्रफ़ है? यार लोगों ने तो बेग़ैर तक़्लीद के उसे इमाम मुक़्तदी मुंफ़रिद सबके लिए क़रार दे दिया। मगर इमामे आज़म ने اِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا कुरआन की इस आयत के पेशे नज़र इस हदीस का मस्रफ़ इमाम और मुंफ़रिद के लिए ब्यान फरमाया। मुक़तदी के लिए इसलिए नहीं कि अगर इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा वह भी पढ़ेगा तो इससे कुरआन की मुख़ालिफ़त लाज़िम आएगी लिहाज़ा।

गर समझना है कलामे मुस्तफ़ा
बन मुक़ल्लिद तू इमामे पाक का

हिकायत नम्बर (३३)

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की तद्बीर

एक मरतबा मदीना मुनव्वरा में सख़्त क़हत पड़ा। बारिश होती न थी। लोग परेशान होकर उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया। ऐ उम्मुल-मोमिनीन! बारिश नहीं होती। क़हत पड़ गया है। हम आपके पास हाज़िर हुए हैं। फरमाइए क्या किया जाए उम्मुल-मोमिनीन ने फरमाया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अनवर पर जाओ और क़ब्र शरीफ़ के हुज्‌र-ए-मुबारका का जो छत है उसमें से चन्द एक मक़ामात से मिट्टी निकाल कर रौशनदान बनाओ ताकि क़ब्र शरीफ़ और आसमान के दरम्यान कोई पर्दा न रहे। और आसमान को क़ब्र शरीफ़ नज़र आने लगे। आसमान जब क़ब्रे अनवर को देखेगा तो आसमान रोने लगेगा। और बारिश होने लगेगी। उम्मुल-मोमिनीन की इस तदबीर पर सहाब-ए-किराम ने अमल किया और रौज़ा शरीफ़ की छत में कुछ रौशनदान बनाए तो आसमान को क़ब्र शरीफ़ नज़र आने लगी तो बारिश शुरू हो गई और इतनी बारिश हुई कि घास उग आई। ऊँट मोटे हो गए और उनमें इतनी चर्बी और गोश्त पैदा हो गया। गोया वह मोटापे से फटने लगे। उस साल का नाम साले अर्ज़ानी रखा गया।

(मिश्कात शरीफ़ स. ५३७)

सबक़

क़हत का पड़ जाना एक बहुत बड़ी मुश्किल और मुसीबत है। इस मुश्किल के वक़्त सहाब-ए-किराम उम्मुल-मोमिनीन की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उम्मुल-मोमिनीन ने यह नहीं फरमाया कि मुश्किल के वक़्त मेरे पास क्यों आए हो ख़ुदा से दुआ मांगो। बल्कि आपने जो तदबीर ब्यान फरमाई वह ऐसी ईमान अफ़रोज़ और बातिल सोज़ है कि अह्ले ईमान व मुहब्बत को वज्द आने लगता है। फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अनवर का यह एक ख़ासा है कि संगदिल इंसान को भी क़ब्रे अनवर नज़र आ जाए तो उसकी आंखों से आंसू बहने लगते हैं चुनांचे जिन लोगों को यह सआदत हासिल हुई है। वह जानते हैं कि रौज़-ए-अनवर

की हाज़िरी में हर शख़्स की आँखें आँसू बहाने लगती हैं और बिला इख़्तियार रोना आता है। और जितना ज़्यादा गुनहगार हो उतनी ही ज़्यादा रोना आता है यानी उतनी ही ज़्यादा तवज्जोह हुज़ूर की उसकी तरफ़ होती है। कपड़ा जितना मैला होगा। साबुन उतना ही ज़्यादा उसकी तरफ मुतवज्जेह होगा और फिर इस रोने में जो कैफ़ियत और लज़्ज़त हासिल होती है उसका ब्यान करना मुश्किल है जिन ख़ुश नसीब हज़रात को यह सआदत हासिल हो चुकी है वह ख़ूब जानते हैं और यक़ीनन यह आँसू जो हुज़ूर की हाज़िरी में गिरते हैं। इनसे सब गुनह धुल जाते हैं। यह आँसू गोया रहमत का पानी होते हैं।

हम गुनहगारों पे तेरी मेहरबानी चाहिए
सब गुनह धुल जाएंगे रहमत का पानी चाहिए

जिस तरह आसमान के रोने से मुर्दा ज़मीन ज़िन्दा हो गई इसी तरह हज करने के बाद क़ब्रे अनवर की ज़्यारत ही से हज में जान पैदा होती है। इसीलिए मैंने लिखा है कि

जिस हज में न सैरे मदीना हो वह हज़ तो है लेकिन ऐसा हज
एक लफ़्ज़ है लेकिन बेमानी इक जिस्म है लेकिन बेजान है

बावजूद इसके जो लोग क़बे अनवर की ज़्यारत से घबराते हैं कतराते हैं। उन पर रोना आता है और उन्हें ख़ुद भी बदबख़्ती पर रोना चाहिए।

बरीं अक़्ल व दानिश ब्या बद गिरेस्त

साहिबे मिर्क़ात हज़रत मुल्ला अली क़ारी अलैहिर्रहमः इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि एक माना इस हदीस का यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में जिस तरह आपके वसीला से बारिश तलब की जाती थी। इसी तरह आपके विसाल के बाद हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अनवर के वसीला से बारिश तलब करने की हिदायत फरमाई। (हाशिया मिश्कात स.५३७) इसीलिए आला हज़रत ने लिखा है कि –

बे उनके वास्ता के ख़ुदा कुछ अता करे
हाशा ग़लत ग़लत यह हवस बे बसर की है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (३४)
उम्मुल-मोमिनीन
हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का इम्तियाज़

हज़रत आइशा फरमाती हैं। कि अल्लाह तआला ने मुझे ऐसी नेमतों से नवाज़ा है जो मेरे ही हिस्सा में आई हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विसाले शरीफ़ मेरे घर ही में हुआ। और मेरी ही नौबत में। यानी जिस रोज़ हुज़ूर को मेरे घर रहना था उसी रोज़ आपका विसाले मुबारक हुआ। (हुज़ूर ने अपनी अज़वाजे मुतह्हरात के लिए दिन मुक़र्रर फरमा रखे थे। कि फ़लां दिन फ़लां के घर और फ़लां दिन फ़लां के घर रहूँगा) और हुज़ूर का जब विसाल हुआ तो आप मेरे सीने और गर्दन से तकिया लगाए हुए थे। और सबसे बड़ी नेमत जिससे अल्लाह ने मुझे मख़्सूस फरमाया। वह यह है कि विसाल के वक़्त मेरा लुआबे दहन (थूक) और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लुआबे दहन शरीफ़ जमा फरमा दिया। और वह इस तरह कि मेरे भाई अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र आए तो उनके हाथ में मिस्वाक थी और हुज़ूर ने मेरे जिस्म से तकिया लगाया हुआ था। हुज़ूर ने मिस्वाक की तरफ देखा। मैंने समझा कि हुज़ूर को मिस्वाक पसन्द है चुनांचे मैंने अर्ज़ की क्या आपके लिए मिस्वाक लूँ? हुज़ूर ने सरे अनवर से इशारा फरमाया। हाँ मैंने मिस्वाक लेकर हुज़ूर को दी। हुज़ूर ने मुँह मुबारक में डाली तो वह सख़्त थी। मैंने पूछा क्या मैं उसे नर्म कर दूँ। फरमाया। हाँ! मैंने मिस्वाक को अपने मुँह से चबा कर नर्म करके हुज़ूर को दी और आपने लेकर अपने मुँह में डाल ली। इस तरह मेरी थूक और हुज़ूर का लुआबे दहन शरीफ़ जमा हो गए। (मिश्कात शरीफ़ स. ५३६)

सबक़

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा को सारी अज़वाजे मुतह्हरात में बाज़ ऐसे इम्तियाज़ हासिल हैं जो आपके सिवा किसी में नज़र नहीं आते। आज हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जो रौज़ा शरीफ़ है, यह हज़रत आइशा का घर था। हदीस शरीफ़ में आता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं।

ما قبض الله نبيا إلا في الموضع الذي يحب أن يدفن فيه. मिश्कात शरीफ़ : स. ५३६)

यानी नबी जहां दफन होना चाहे। अल्लाह तआला उसी जगह उसका विसाल फरमाता है।"

मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत आइशा रजि अल्लाहु अन्हा ही के घर दफन होना चाहते थे। हज़रत आइशा से तकिया लगाए हुए हुज़ूर ने हज़रत आइशा ही के घर विसाल फरमाया। और वही आपकी क़ब्र शरीफ़ बनी। जिसकी बदौलत हज़रत आइशा का घर मरजा खलाइक़ बन गया। हर रोज़ सुबह व शाम सत्तर-सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसी घर की ज़ियारत के लिए उतरने लगे। उसी घर के सामने हाज़िर होकर २४ घन्टे में हज़ारों लाखों करोड़ों इंसान और फ़रिश्ते दरूद व सलाम पढ़ते हैं। मआज़ल्लाह! मआज़ल्लाह! अगर आइशा सिद्दीक़ा रजि अल्लाहु अन्हा में बक़ौल मुनाफ़िक़ीन कोई ऐब होता तो खुदा तआला कभी हज़रत आयशा के घर हुज़ूर का विसाल न फरमाता। और उस घर को मरजा खलाइक़ न बनने देता। यह भी मालूम हुआ कि नबी का जहाँ विसाल हो उसकी क़ब्र शरीफ़ भी वहीं बनती है और जो मरे पाकिस्तान में और दफ़न हो हिन्दुस्तान में वह नबी हरगिज़ नहीं हो सकता। और यह भी मालूम हुआ कि जिसका थूक मुबारक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के थूक मुबारक से मिल जाए। उस मुबारक हस्ती पर जिस मुँह से कोई गुस्ताख़ी का लफ़्ज़ निकले। तो वह मुँह इस लाइक़ है कि उस पर थूका जाए।

अल्लाह-अल्लाह आइशा का इतना ऊँचा है मक़ाम
हश्र तक उन ही के घर में है मुहम्मद का क़्याम

❖❖❖

हिकायत नम्बर (३५)
उम्मुल-मोमिनीन
हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में

हज़रत मुजद्दिद अलिफ़े सानी अलैहिर्रहमः फरमाते हैं कि मेरा कुछ साल पहले यह तरीक़ा था कि मैं हर साल कुछ तआम (खाना) पका कर उसका सवाब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत अली, हज़रत फातिमा और हज़रत इमाम हसन व हुसैन अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को पहुँचाता था। एक साल मैंने ऐसा ही किया। तो रात को मैंने ख़्वाब में हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा। मैंने हुज़ूर की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ किया तो हुज़ूर ने मेरी तरफ तवज्जोह न फरमाई और अपना रूए अनवर दूसरी तरफ फेर लिया। मैंने अर्ज़ किया। हुज़ूर! इसकी क्या वजह है? तो फरमाया।

"मन तआमा दर खाना आइशा मैख़ूरम हर कि मरा तआम फरस्तद बखाना आइशा फरस्तद।"

मैं खाना आइशा के घर में खाता हूँ जिसे मुझे खाना भेजना हो। वह आइशा के घर में भेजे।"

उस वक़्त मुझे मालूम हुआ कि हुज़ूर की अदमे तवज्जोह का बाइस यह बात है कि खाने का सवाब पहुँचाने के वक़्त मैंने उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा रजि अल्लाहु अन्हा का नाम नहीं लिया। उसके बाद मैंने यह तरीक़ा इख़्तियार कर लिया कि जब भी खाना पकाता तो सवाब पहुँचाते वक़्त हज़रत आइशा बल्कि सारी अज़वाजे मुतह्हरात का नाम भी लेता क्योंकि यह सब अह्ले बैत में शामिल हैं। (मकतूबात शरीफ़ स. ५६ जि.२)

सबक़

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रजि अल्लाहु अन्हा का बहुत बुलन्द मक़ाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम विसाल शरीफ़ के बाद भी हज़रत आइशा ही के घर में तशरीफ़ फरमा हैं और अब भी आप खाना हज़रत आइशा ही के घर में तनावल फरमाते हैं। इस बात पर अगर किसी को ऐतराज़ हो तो वह मुजद्दिद अल्फ़ सानी अलैहिर्रहम: पर मोतरिज़ है मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत आइशा से बड़ी मुहब्बत थी और है। और यह भी मालूम हुआ कि हर साल कुछ पका कर बुजुर्गाने दीन को ईसाले सवाब करना बिद्अत नहीं। क्योंकि माहिय-ए-बिद्अत हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी अलैहिर्रहमा: का भी यह दस्तूर था। वरना आप कभी ऐसा न करते। और यह भी मालूम हुआ कि खाना पका कर किसी बुजुर्ग़ के नाम उसका सवाब पहुँचाना बेकार बात नहीं। बल्कि सवाब पहुँचता है अगर सवाब न पहुँचता होता तो हुज़ूर यूँ क्यों फरमाते मुझे कुछ भेजना हो तो आइशा के घर में भेजा करो। अगर यह बात नाजायज़ और बिद्अत होती तो हुज़ूर यूँ फरमाते कि तुमने यह क्या नया तरीक़ा इख़्तियार कर लिया है कि हर साल कुछ पका कर हमारे नाम ईसाले सवाब करते हो ऐसा न किया करो। हुज़ूर ने बल्कि यह फरमा कर कि मैं खाना

आइशा के घर में खाता हूँ बता दिया कि खाना पका कर बुज़ुर्गों के नाम उसका सवाब पहुँचाना जायज़ है और सवाब पहुँचता है। मुझे जब भी कुछ भेजो तो आइशा के घर में भेजा करो। हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी अलैहिर्रहमः को देवबन्दी और अह्ले हदीस हज़रात भी माहि-ए-बिद्अत तस्लीम करते हैं। लिहाज़ा सबकी मोतमद अलैह हस्ती के इस इर्शाद से साबित हो गया कि ख़त्म कराना और सवाब पहुँचाना जायज़ और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पसन्दीदा चीज़ है। इसलिए मुसलमानों को हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़ सानी अलैहिर्रहमः के तरीक़ पर क़ायम रहना चाहिए और ऐसा न होना चाहिए कि लोगों को यह कहने का मौक़ा मिले कि –

मर गए मरदूद न फ़ातिहा न दरूद

❖❖❖

हिकायत नम्बर (३६)
अज़ीम बुहतान

५ हिज. में ग़ज़्वा बनी अल-मुस्तलिक़ में उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थीं। चलते वक़्त आप हार भी पहने हुए थीं। वापसी के वक़्त क़ाफ़िला क़रीबे मदीना एक पड़ाव पर ठहरा तो हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा क़ज़ा-ए-हाजत के लिए किसी गोशा में तशरीफ़ ले गईं। वहाँ आपका हार टूट गया। उसकी तलाश में मसरूफ़ हो गईं। इधर क़ाफ़िला ने कूच किया। और आपका मह्मिल (ऊँट का हौदा) शरीफ़ ऊँट पर कस दिया और उन्हें यही ख़्याल रहा कि उम्मुल-मोमिनीन उसमें हैं। क़ाफ़िला चल दिया। आप वापस आईं तो यह देखकर कि क़ाफ़िला तो चल दिया। आप चादर ओढ़ कर क़ाफ़िला की जगह बैठ गईं और आपने ख़्याल किया कि मेरी तलाश में क़ाफ़िला ज़रूर वापस होगा क़ाफ़िला के पीछे गिरी पड़ी चीज़ उठाने के लिए एक साहब रहा करते थे। इस मौक़ा पर हज़रत सफ़्वान उस काम पर मुतऐय्यन थे। जब वह आए और उन्होंने आपको देखा तो बुलन्द आवाज़ से **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन** पुकारा। आपने कपड़े से पर्दा कर लिया। उन्होंने अपनी ऊँटनी बिठाई। आप उस पर सवार होकर लश्कर में पहुँचीं। मुनाफ़िक़ीन सियाह बातिन

(गन्दे लोग) रात दिन इस कोशिश में रहते थे कि कोई मौक़ा मिले तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके असहाब व लवाहिक़ को बदनाम करें चुनांचे इस वाक़या को उन्होंने उछालना शुरू कर दिया और हज़रत उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा की पाक दामनी पर (मआज़ल्लाह!) धब्बा लगाना शुरू कर दिया। मुनाफ़िक़ीन का सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई उस बुहताने अज़ीम में पेश-पेश था मुनाफ़िक़ीन सबने मिलकर इस वाक़या को उछालना शुरू कर दिया। हत्ता कि इस शरारत का असर चन्द मुसलमानों पर भी हो गया। और वह भी मुनाफ़िक़ीन के फ़रेब में आ गए। और उनकी ज़ुबान से भी कोई कलिमा सरज़द हो गया। उम्मुल-मोमिनीन इस शरारत का क़िस्सा सुनकर बीमार हो गईं। और एक माह तक बीमार रहीं। उस ज़माना में आपको इत्तिला न हुई कि आपकी निसबत मुनाफ़िक़ीन क्या बक रहे थे। एक रोज़ उम्मे मिस्तह से उन्हें यह ख़बर आई और उससे आपका मरज़ और बढ़ गया। और इस सदमा में इस तरह रोईं कि आपका आँसू न थमता था। और न एक लम्हा के लिए नींद आती थी। इस हाल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही नाज़िल हुई और सूरः नूर में अकसर आयात में आपकी तहारत व पाकदामनी बयान फरमाई गई। मसलन"

لَو لَا إِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَّ قَالُوْا هٰذَا إِفْكٌ مُّبِيْنٌ (प : १८ अ : ८)

क्यों न हुआ तुमसे जब तुमने सुना था कि मुसलमान मर्दों और औरतों ने अपनों पर नेक गुमान किया होता और कहते यह खुला बुह्तान है।"

यानी जब मुनाफ़िक़ीन की यह शरारत की बात तुमने सुनी तो तुमने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की निसबत नेक गुमान क्यों न किया और क्यों न कहा कि यह एक बुह्ताने अज़ीम और सरीह तोहमत है फिर फरमाया :

وَلَوْ لَا إِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَا يَكُوْنُ لَنَا أَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ (प : १८, अ : ८)

और क्यों न हुआ जब तुमने सुना था। कहा होता कि हमें नहीं पहुँचता। कि हम ऐसी बात कहें। इलाही पाकी है तुझे यह बड़ा बुहतान है।"

यानी यह शरारत की बात तुमने सुनी तो यूँ क्यों न कहा। कि हमारा कोई हक़ नहीं कि हम ऐसी बात कहें। इलाही तू पाक है।" और यह बुह्ताने अज़ीम है। फिर फरमाया।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنَاتِ الْغٰفِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ

बेशक वह जो ऐब लगाते हैं। अंजान पारसा ईमान वालियों को उन पर लानत है। दुनिया और आख़िरत में और उनके लिए बड़ा अज़ाब है।"

(प १८ अ. ८)

यानी जो औरतें बदकारी और फुजूर को जानती भी नहीं और बुरा ख़्याल उनके दिल में गुज़रता भी नहीं। उन पर ऐब लगाना दुनिया व आख़िरत की लानत का मूजिब है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा ने फरमाया कि यह आयत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़वाजे मुतह्हरात के औसाफ़ हैं। हुज़ूर की अज़वाजे मुतह्हरात में से किसी पर ऐब लगाना दुनिया व आख़िरत में मलऊन का काम है। फिर फरमाया।

اَلْخَبِيْثَاتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثَاتِ وَ الطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِيْنَ

وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبَاتِ اُوْلٰئِكَ مُبَرَّاؤُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ. لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ

गन्दियाँ गंदों के लिए और सुथरे सुथरियों के लिए वह पाक हैं। उन बातों से जो यह कह रहे हैं। उनके लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है।"

(प. १८ अ. ६)

यानी गंदी औरत के लिए गंदा मर्द और गंदे मर्द के लिए गंदी औरत लाइक़ है। सुथरे मर्द के लिए सुथरी औरत और सुथरी औरत के लिए सुथरा मर्द लाइक़ है और हज़रत सफ़वान और हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा इन बातों से जो मुनाफ़िक़ीन ने कीं पाक हैं। और उनके लिए अल्लाह के पास बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है।

(कुरआन मजीद सूरः नूर और तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल-इरफान स. ४६७ ता ४६६)

सबक़

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा सब औरतों में इस लिहाज़ से बुलन्द मरतबा हैं कि आपकी इसमत व पाकदामनी के लिए ख़ुद ख़ुदा तआला ने शहादत दी और सिर्फ़ आपकी बरीयत के लिए सूरः नूर नाज़िल फरमाई। फिर जो शख़्स मआज़ल्लाह हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रजि अल्लाहु अन्हा पर किसी क़िस्म का बुहतान लगाए तो वह क्यों मर्दूद व मलऊन न होगा। मुसलमानो! जो लोग झूठी रवायात सुना-सुना कर हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा पर किसी क़िस्म का इल्ज़ाम व ऐतराज़ वारिद करते हैं। तुम उनसे साफ़-साफ़ कह दो कि तुम्हारी झूठी रवायात को देखें या ख़ुदा की सच्ची आयात को। रवायात से आयात

बहरहाल मुक़द्दम हैं। आयात उम्मुल-मोमिनीन की इसमत व पाकदामनी पर शाहिद हैं फिर हमें किसी रवायात की ज़रूरत नहीं। वह लोग जो आज भी उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा पर (**मआज़ल्लाह!**) किसी क़िस्म का बुहतान लगाते हैं या कोई ऐतराज़ करते हैं। जान लीजिए वह इस आयत के मिस्दाक़ हैं।

لُعِنُوْا فِی الدُّنْیَا وَالْاٰ خِرَۃِ وَلَھُمْ عَذَابٌ عَظِیْمٌ

उन पर लानत है दुनिया और आख़िरत में और उनके लिए बड़ा अज़ाब है।"

जो मोमिन हैं वह हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा को उम्मुल-मोमिनीन मानते हैं और जो मुनाफ़िक़ीन हैं। वह आपको उम्मुल-मोमिनीन नहीं मानते और आप पर तरह-तरह के ऐतराज़ करते हैं।

कह रहा है ख़ुद ख़ुदावन्दे अलीम
कि यह है बुहतान बुहताने अज़ीम

❖❖❖

हिकायत नम्बर (३७)

इल्म

हज़रत उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रजि अल्लाहु अन्हा पर मुनाफ़िक़ीन ने जब इलज़ाम लगाया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

فَوَاللهِ مَا عَلِمْتُ مِنْ اَھْلِیْ اِلَّا خَیْرًا (बुख़ारी, स : ६६७, जि. : २)

ख़ुदा की क़सम! मैं अपनी बीवी की पाकदामनी ही जानता हूँ।

हज़रत उमर रजि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की। या रसूलुल्लाह मुनाफ़िक़ीन बिल्कुल झूटे और उम्मुल-मोमिनीन बिल-यक़ीन पाक हैं। क्योंकि अल्लाह तआला ने आपके बदन मुबारक को मख्खी के बैठने से महफ़ूज़ रखा है कि वह नजासतों पर बैठती है तो यह कैसे हो सकता है कि वह आपको बद औरत की सोहबत से महफ़ूज़ न रखे। हज़रत उसमान ग़नी रजि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया। या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला ने ज़मीन पर आपका साया नहीं पड़ने दिया। ताकि उस पर किसी का क़दम न पड़े। तो ख़ुदा आपके साया को महफ़ूज़ रखता है। यह बात किस तरह मुम्किन है कि वह

आपके अहल को महफ़ूज़ न रखे। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया। या रसूलुल्लाह! एक जूँ का ख़ून लगने से परवरदिगारे आलम ने आपको नालैन उतार देने का हुक्म दिया। जो परवरदिगार आपकी नअ़ल मुबारक की इतनी सी आलूदगी को गवारा न फरमाए। मुम्किन नहीं कि वह आपके अहल की आलूदगी गवारा करे इसी तरह बहुत से सहाबा और बहुत सी सहाबियात ने क़समें खाईं। आयात नाज़िल होने से क़ब्ल ही हज़रत उम्मुल-मोमिनीन की तरफ से क़ुलूब मुत्मइन थे। आयात के नुज़ूल ने उनका इज़्ज़ व शर्फ़ और ज़्यादा कर दिया।

(तफ़्सीर रूहुल-ब्यान स. ५५१ जि. २, ख़ज़ाइनुल-इरफ़ान स.४६७)

सबक़

मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इल्म था कि उम्मुल-मोमिनीन पर बुहतान बांधा गया है और आपने सहाब-ए-किराम में क़सम खाकर फरमाया कि मैं अपनी बीवी की पाकदामनी ही जानता हूँ। इसी तरह सहाब-ए-किराम अलैहिमुर्रिज़वान को उम्मुल-मोमिनीन की पाकदामनी का इल्म था मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ुद फ़ैसला फरमा देना और ऐलान कर देना कि लोगो सुन लो यह बुहताने अज़ीम है। मेरी बीवी बिल्कुल पाक दामन है। इसलिए न था ताकि मुनाफ़िक़ीन को यह कहने का मौक़ा न मिले कि अपने घर का मामला था ना ख़ुद ही फ़ैसला फरमा दिया। हुज़ूर कुछ अरसा ख़ामूश रहे और हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा को भी अपने मैके भेज दिया। और इस इंतिज़ार में रहे कि आइशा की बरीयत ख़ुद ख़ुदा करे चुनांचे यह हज़रत आइशा की पाकदामनी की अज़मत है कि ख़ुदा तआला ने आपकी बरीयत के लिए मुतअद्दिद आयात नाज़िल फरमा दीं और क़यामत तक के लिए मुसलमानों को हज़रत आइशा की पाकदामनी का सुबूत मुहैया फरमा दिया। सुबहानल्लाह! क्या शान है उम्मुल-मोमिनीन की कि आपकी तारीफ व तौसीफ़ की आयात क़ुर्आन में दर्ज फरमा दीं ताकि उम्मुल-मोमिनीन की पाक दामनी क़ुर्आन पाक के ज़रिया क़यामत तक बयान होती रहे। आज जो लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत आइशा पर बुहतान के ग़लत होने का इल्म न होना बयान करते हैं। वह ख़ुद बड़े बेइल्म हैं। हुज़ूर तो क़सम फरमा कर फरमा रहे हैं कि अल्लाह की क़सम मैं जानता हूँ कि मेरी बीवी पाकदामन है। मगर इस इल्म के बावजूद ख़ुद फ़ैसला इसलिए न फरमाया

कि लोग यह न कहने लगें कि खुद ही फैसला कर डाला। खुदा की तरफ से नुज़ूले वही के मुंतज़िर रहे ताकि उम्मुल-मोमिनीन की बरीयत भी हो जाए और इस क़िस्म के बुहतान लगाने वालों के मुतअल्लिक़ जो मसाइल हैं वह भी वाज़ेह हो जाएं।

ग़ौर फरमाइए कि सहाब-ए-किराम किस वसूक़ से उम्मुल-मोमिनीन की पाक दामनी का इक़रार कर रहे हैं। हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु का फरमाना कि आपके दामन पर मक्खी नहीं बैठती तो कोई बद औरत आपके बदन से कैसे मस कर सकती है मगर आज जिनके मुँहों में भी मक्खियाँ जा घुसती हैं वह अगर अपने मक्खी मार्का मुँह से यह कहने लगें कि हुज़ूर को इल्म न था कि मेरी बीवी पर बुहतान ग़लत है या सही (मआज़ल्लाह!) तो यह किस क़दर जिहालत की बात है। मुसलमानो! अपना ईमान रखो कि उम्मुल-मोमिनीन हस्बे आयात इफ़्फ़त मआब और पाकदामन हैं और हुज़ूर को इस बात का यक़ीनन इल्म था। जो कहे आपको इल्म न था वह खुद बेइल्म है।

तू दाना-ए-मा काना और मा यकून है
मगर बेख़बर-बेख़बर देखते हैं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (३८)

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ि अल्लाहु अन्हा

हज़रत हफ़्सा हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु की साहबज़ादी हैं। आपका पहला निकाह खनीस बिन हुज़ाफ़ा से हुआ हज़रत खनीस जंगे बदर में शहीद हुए और आप बेवा रह गईं। हज़रत उमर ने हज़रत अबू-बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु से निकाह कर देने का ख़्याल ज़ाहिर किया। वह ख़ामोश रहे और कुछ जवाब न दिया। यह बात हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु को नागवार गुज़री। उस वक़्त हज़रत उसमान रज़ि अल्लाहु तआला

अन्हु की बीवी रुकैया बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो चुका था। इसलिए हज़रत उसमान से कहा। उन्होंने जवाब दिया। मैं अभी निकाह नहीं करना चाहता। हज़रत उमर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए और आपसे सूरते हाल बयान की। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत उमर के खुसूसी तअल्लुक़ात थे। उधर सिद्दीके अकबर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की साहबज़ादी हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा आपके निकाह में आ चुकी थीं।

हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की बेटी को यह भी शरफ़ अता फरमाना मुक़्तज़ाए मशीयत था। इसलिए आपने फरमाया। हफ़सा का निकाह ऐसे शख़्स से हो जाए जो उस्मान से बेहतर है और उस्मान को ऐसी बीवी न दी जाए जो हफ़सा से बेहतर है। फिर आपने हज़रत उमर को हफ़सा का पैग़ामे निकाह देकर हफ़सा से निकाह फरमा लिया।

बाद में हज़रत अबू-बकर उमर से मिले और कहा आप मुझसे खफ़ा न हों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हफ़सा का ज़िक्र किया था। मैं यह बात ज़ाहिर न करना चाहता था। इसलिए ख़ामूश रहा। अगर खुद हुज़ूर का यह ख़्याल न होता तो मैं ही निकाह कर लेता। (तब्क़ात स. ५६ जि.८)

सबक़

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा की भी यह खुसूसियत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद उनके लिए पैग़ामे निकाह देकर उनसे निकाह फरमाया जो शरफ़ सिद्दीके अकबर को अता हुआ। वही शरफ़ हज़रत उमर को भी मिला। इस फरमान में कि "हफ़सा का निकाह ऐसे शख़्स से न हो जाए जो उस्मान से बेहतर है।" हुज़ूर का अपनी ज़ाते गिरामी की तरफ इशारा था और इस फरमान में कि उस्मान को ऐसी बीवी न दी जाए जो हफ़सा से बेहतर है। हुज़ूर का अपनी दूसरी बेटी की तरफ इशारा था।

चुनांचे हज़रत रुकैया के बाद आपने अपने दूसरी साहबज़ादी उम्मे कुलसूम उस्मान के निकाह में दे दी। इसीलिए आप जुन्नूरैन कहलाते हैं चार याराने नबी में से दो तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खुस्र हैं। सिद्दीके अक्बर और उमर फारूक़ और दो हुज़ूर के दामाद हैं।

मौला अली और उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हुम। ज़ाहिर है कि ख़ुस्र बाप की तरह क़ाबिले क़दर होते हैं और दामाद बेटियों की तरह प्यारे। उन चार याराने नबी को सारे सहाब-ए-किराम में यह सबसे बड़ा शर्फ़ हासिल है कि दो हुज़ूर के ख़ुस्र हैं। और दो दामाद। उन चारों में से किसी की अदावत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अदावत के मुतरादिफ़ है।

प्यार तू सरकार के यारों से रख
बिल-ख़ुसूस उनमें से उन चारों से रख

❖❖❖

हिकायत नम्बर (३६)

बाप के ज़माना ख़िलाफ़त में

एक दिन ज़मान-ए-ख़िलाफ़ते उमर में हज़रत हफ़सा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने अपने वालिद हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु से कहा कि आप ख़लीफ़-ए-वक़्त हैं कुछ अच्छे और नर्म व नाज़ुक कपड़े पहना कीजिए। हज़रत उमर ने फ़रमाया। बेटी! बीवी अपने शौहर के हाल से ख़ूब वाक़िफ़ होती है। सच बता। कभी तुम्हारे शौहर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पुर तकल्लुफ़ कपड़े पहने? कभी दो वक़्त पेट भर कर खाना तनावल फ़रमाया? हज़रत हफ़सा रोने लगीं और अर्ज़ किया वाक़ई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी पुर-तकल्लुफ़ लिबास नहीं पहना। और कभी पेट भर खाना तनावल नहीं फ़रमाया। (नुज़हतुल-मजालिस बाब फ़िल-क़नाअत स० २१० जि.१)

सबक़

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लिबासे मुबारक सादा लेकिन इंतिहाई पाकीज़ा। लतीफ़ व नूरानी होता था। मालिके कौनेन होते हुए फ़ाक़ा भी फ़रमाते थे।

कुल जहाँ मुल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
इस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम

और इस बात का ख़्याल तक भीं न कीजिए कि (मआज़ल्लाह) हुज़ूर को लिबास व ग़िज़ा मयस्सर न थी। **अस्तग़फ़िरुल्लाहिल-अज़ीम**। आपका

यह फ़क्र-फ़क्रे इख़्तियारी था। इज्तिरारी न था। जिसने इज्तिरारी समझा। उसका ईमान गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर अदा में सैंकड़ों हिक्मतें मुज़मर होती थीं। आपने अमीर व ग़रीब में मसावात (बराबरी) पैदा करने के लिए यह अदा मुबारक अपनाई। इसलिए की अमीर तो पुर-तकल्लुफ़ लिबास और क़िस्म-क़िस्म की ग़िज़ायें खा सकते हैं। लेकिन ग़रीब ऐसा नहीं कर सकता। उन दोनों में मसावात पैदा करने के लिए यह सूरत तो हो नहीं सकती कि सारे ग़रीब भी पुर-तकल्लुफ़ पहनना और पुर-तकल्लुफ़ खाने खाना शुरू कर दें। हाँ यह सूरत मुम्किन है कि सारे अमीर तकल्लुफ़ को छोड़ कर सादा लिबास पहनना और सादा ग़िज़ा खाना शुरू कर दें गोया दोनों में मसावात पैदा करने का तरीक़ा आपने यह तजवीज़ फरमाया कि उमरा अपनी सतह से नीचे उतर कर ग़रीबों की सतह पर ज़िन्दगी बसर करें। चुनांचे ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो सारे जहान से बड़े और दोनों जहानों के मालिक हैं।

आपने अपने आपको मसाकीन की सतह पर रख कर अपनी उम्मत को यह दर्स दिया कि इस फानी जहान में तकल्लुफ़ को छोड़ कर सादगी इख़्तियार करो। और अगला जहान आबाद करो। आपको इल्म था कि कई मेरे ग़रीब उम्मती ऐसे भी होंगे जिन पर फ़ाक़े भी आएंगे। उनकी तसल्ली के लिए आपने इख़्तियारी तौर पर फ़ाक़ा भी इख़्तियार फरमाया कि मेरे फ़ाक़ाकश उम्मती मेरे फ़ाक़ा को याद करके ख़ुश हो जाएं कि फ़ाक़ा करने की सुन्नते नबवी अदा हो गई हुज़ूर की सादगी महज़ तालीमे उम्मत के लिए थी। वरना हुज़ूर ख़ुद फरमाते हैं।

لَوْ شِئْتُ لَسَارَتْ مَعِیَ جِبَالُ الذَّھَبِ (मिश्कात)

अगर मैं चाहूं तो सारे पहाड़ मेरे लिए सोना बन जाएं और मेरे साथ-साथ रहें।

यह भी मालूम हुआ कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहु अन्हु भी अपने आक़ा की इस सुन्नत सादगी पर आमिल थे। बावजूद इस सादगी के आपका नाम सुनकर शैतान और क़ैसर व किसरा भी काँप उठते थे। आपका नाम सुनकर शैतान तो आज भी काँप उठता है। और तो कुछ कर नहीं सकता। हाँ गालियाँ देने लगता है। यह भी मालूम हुआ कि आजकल के माडर्न दौर में तकल्लुफ़ात बहुत हैं जिनकी बदौलत सब तक्लीफ़ में हैं। दिन का लिबास और रात का और फिर महीने-महीने के बाद लिबास के फैशनों में तब्दीली।

पिछले लिबास मतरूक (छोड़ देना) और नए लिबास शुरू। फिर वह भी मतरूक और दूसरे शुरू ज़्यादा तर औरतें इन तकल्लुफ़ात में मुब्तला हैं। यह कपड़ा ज़रूरत की बिना पर ख़रीदती हैं। टरंकों के टरंक कपड़ों से भरे पड़े हों लेकिन उनकी शॉपिंग ख़त्म नहीं होती। ऐ मुसलमान औरत।

सादगी हर वक़्त रख पेशे नज़र!
हज़रत हफ़सा का रोना याद कर!

हिकायत नम्बर (४०)

उम्मुल-मोमिनीन

हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा

आपका तअल्लुक़ क़ुरैश के क़बीला बनी मख़्ज़ूम से था। आपका पहला निकाह आपके चचेरे भाई हज़रत अबू-सलमा बिन अब्दुल असद से हुआ। यह और उनके शौहर दोनों उन लोगों में से हैं जिनको क़दीमुल-इस्लाम कहा जाता है। जिस तरह इस्लाम में दोश-ब-दोश थे इसी तरह हिजरत में भी एक दूसरे के साथ रहे। पहले हब्शा का रुख़ किया। वहाँ से कुछ दिनों के बाद मदीना की तरफ हिजरत की। हिजरत में हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा को जो अलमनाक (दर्दनाक) वाक़िआत पेश आए वह निहायत सब्र आज़मा और दर्द अंगेज़ हैं। अभी हिजरत के मसाइब ताज़ा थे। और शौहर के पास ज़्यादा रहने का मौक़ा न मिला था। कि हज़रत अबू-सलमा रज़िअल्लाहु अन्हु को जिहाद ग़ज़व-ए-उहुद में शरीक होना पड़ा। मैदाने जंग में उनका बाज़ू ज़ख़्मी हो गया। एक माह के बाद सेहत हुई मगर कुछ सालों के बाद ज़ख़्म शक़ हो गया और आपका विसाल हो गया। हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा उनकी वफ़ात की ख़बर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुनाने आईं। हुज़ूर खुद उनके घर तशरीफ़ लाए। मकान महशरे ग़म बना हुआ था। उम्मे सलमा बार-बार कहतीं। हाए गुर्बत में कैसी मौत हुई। हुज़ूर ने सब्र की तल्क़ीन फरमाई और फरमाया उनकी मग़फ़िरत की दुआ करो और कहो। اَللّٰهُمَّ اخْلُفْنِیْ خَیْرًا مِّنْهَا

ऐ अल्लाह! मुझे उनसे बेहतर उनका जानशीन दे।".........फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़े एहतमाम से अबू-सलमा की खुद नमाज़े

जनाज़ा पड़ाई। बाद इंकिज़ा-ए-इद्दत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ब-हुक्मे इलाही हज़रत अबू-बकर व उमर रज़िअल्लाहु अन्हुमा के ज़रिया से अपने निकाह का प्याम भेजा। उम्मे सलमा राज़ी हो गईं। और ४ हिज. के शव्वाल की आख़िरी तारीख़ों में निकाह हो गया। हज़रत उम्मे सलमा की बे-माइगी और ग़ुर्बत का एहसास ऐसा न था। जो हुज़ूर को मुतअस्सिर न करता। इसी तअस्सुर की बदौलत हज़रत उम्मे सलमा के इस जां गुस्ल सदमा की तलाफ़ी हो गई। जो उनको अबू-सलमा की वफ़ात से पैदा हुआ था बल्कि उनकी आरज़ी मुद्दते हयात अबदी मुसर्रत में तब्दील हो गई।

(तबक़ात स० ६२ जि.८)

सबक़

हज़रत उम्मुल-मोमिनीन सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा ने जिस सब्र व इस्तिक़ामत से दुशमनाने इस्लाम के मसाइब व आलाम (मुसीबत व रंजो ग़म) को बर्दाश्त किया और अपने पा-ए-इस्तिक़लाल (सब्र) में लग़्ज़िश नहीं आने दी। वह हमारे लिए मशअ़ले राह है। इस्लाम की ख़ातिर अपने अज़ीज़ व अक़ारिब (रिश्तेदार) वतन को छोड़ा किस लिए? सिर्फ़ इमान के लिए।

न अपनी जान की ख़ातिर न अपनी आन की ख़ातिर!
वतन को मैंने छोड़ा है फ़क़त ईमान की ख़ातिर

फिर अपने शौहर की वफ़ात के बाद भी सब्र व शुक्र से काम लिया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तलक़ीन सब्र व इस्तिक़्लाल पर और आपकी दुआ पर अमल किया। तो ख़ुदा तआला ने उनकी सुनकर उनके अज़्म व इस्तिक़्लाल का बदला इस दुनिया में भी यह दिया कि उनके पहले शौहर से भी बेहतर शौहर अता फरमा दिया हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा साहिबे औलाद थीं बल्कि जिस वक़्त उनके पहले शौहर का विसाल हुआ। आप हामिला थीं। बावजूद उसके इद्दत गुज़रने के बाद आपने दूसरा निकाह कर लिया। एक आजकल मसला भी है कि कोई औरत बेवा हो जाए तो कहती है। मैं तो अब सारी उमर उन्हीं के हक़ में बैठी रहूँगी। बिल-ख़ुसूस अगर कोई उमर रसीदा औरत या मर्द बेवा या रंड़वह हो जाए तो उनके निकाहे सानी पर अंगुश्त नुमाइयाँ (रुसवाई) होने लगती हैं। देखो जी इस उम्र में आकर दूसरी शादी करते उन्हें शर्म न आई हालाँकि जो शर्म वाली बातें हैं। उन पर अंगुश्त नुमाई करने वालों को ख़ुद भी शर्म नहीं आती। ख़ुदा तआला का साफ इर्शाद है।

و انكحو االايامى منكم والصالحين من عبادكم و امريكم

(प.१८, अ.१०)

और निकाह कर दो। अपनों में उनका जो बे-निकाह हों (मर्द या औरत कुंवारे या ग़ैर कुंवारे) और अपने लाइक़ बन्दों और कनीज़ों का।"

यानी तुममें से जो बे-निकाह हों, मर्द हों या औरतें, कुंवारे हों या ग़ैर कुंवारे, उनका निकाह कर दो। मगर बावजूद इस हुक्म के यार लोगों ने यह मसला गढ़ रखा है कि फ़लां औरत फ़लां मर्द के हक़ में बैठी है और फ़लां मर्द फ़लां औरत के हक़ में बैठा है। ख़ूब है यह हक़ भी कि जीते जी तो न मियां ने बीवी के हक़ का ख़्याल किया और न बीवी ने मियां के हक़ का और अब मर जाने के बाद यह इसके हक़ में और वह उसके हक़ में बैठा हुआ है। और शरीअ़त का हक़ ना हक़ दबाए बैठा है।

यह मसले हैं आपने ख़ुद ही गढ़े हुए
रब्बे जाने आपने हैं कहाँ से पढ़े हुए

❖❖❖

हिकायत नम्बर (४१)

मुआह्दा

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा फरमाती हैं। मैंने एक बार अपने शौहर अबू-सलमा से कहा। मुझे मालूम है अगर किसी का शौहर जन्नत नसीब हो और औरत उसके बाद दूसरा निकाह न करे तो अल्लाह तआला औरत को भी शौहर के साथ जन्नत में जगह देता है। यही सूरत मर्द के लिए है तो आओ हम तुम मुआहदा कर लें। न तुम हमारे बाद निकाह करो न हम तुम्हारे बाद, हज़रत अबू-सलमा ने जवाब दिया। क्या तुम मेरी इताअत करोगी? उम्मे सलमा ने कहा। सिवाए आपकी इताअत के मुझे किस बात में ख़ुशी हो सकती है? अबू-सलमा ने कहा जब मैं मर जाऊँ। तो मेरे बाद तुम निकाह कर लेना। फिर अबू-सलमा ने दुआ मांगी। या अल्लाह! मेरे बाद उम्मे सलमा को मुझसे बेहतर जांनशीन अता फरमाना।" हज़रत उम्मे सलमा फरमाती हैं। जब अबू-सलमा का इंतिक़ाल हो गया तो मैं अपने दिल में कहती थी। अबू-सलमा से बेहतर कौन होगा? उसके कुछ दिनों बाद मेरा निकाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हो गया। जो सारी काइनात से बेहतर हैं। (तबक़ात स० ६१, जि. ८)

सबक़

हज़रत उम्मुल-मोमिनीन उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा बड़ी खुश नसीब हैं कि पहले शौहर की दुआ के मुताबिक़ उन्हें न सिर्फ़ उन्हीं से बेहतर बल्कि सारी काइनात से बेहतर शौहर मिल गया। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व रज़िअल्लाहु अन्हा।

❖❖❖

हिकायत नम्बर (४२)

हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा की सहेली

हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़िअल्लाहु अन्हु की वालिदा उम्मुल-महासिन हज़रत उम्मे सलमा की सहेली थीं। इसलिए अकसर वह मदीना मुनव्वरह ही में रहती थीं। हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी जब पैदा हुए तो हज़रत उम्मे सलमा ने आपको गोद में ले लिया और आपका नाम हसन रखा। क्योंकि आपकी सूरत व शबाहत निहायत दिलकश थी और आप मर्दाना हसन के बेहतरीन नमूना थे।

हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा को आपसे बेहद मुहब्बत थी और वह आपको हर वक़्त अपने पास रखती थीं। यह शफ़क़त व मुहब्बत यहाँ तक बढ़ी हुई थी कि अगर आपकी वालिदा किसी काम में मसरूफ़ होतीं और आप भूख की वजह से बेक़रार हो जाते तो हज़रत उम्मुल-मोमिनीन आपको अपने बच्चों की तरह खिलातीं और अपना पिस्ताने मुबारक आपके मुंह में दे देतीं। क़ुदरते इलाही से दूध निकल आता। और आप खामूश हो जाते। इस दूध का असर बे-शुमार अज़मतों और बरकतों की सूरत में ज़ाहिर हुआ। आप रईसुल-आरिफ़ीन तसलीम किए गए और आपके कलाम में बेहद तासीर हो गई। हज़रत उम्मुल-मोमिनीन ने आपको क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाया और मआरिफ़े क़ुरआनी से आगाह किया। जब आपकी उम्र ग्यारह साल की हुई और अपने ज़ौक़े इल्मी का हाल बयान किया। तो हज़रत अली रज़िअल्लाहु तआला अन्हु ने आपको इंतिहाई मुहब्बत से पढ़ाया और

चन्द रोज़ में आप फ़ाज़िले अजल बन गए।

(तज़किरतुल-वारेलीन बहवाला माहे तैय्यबा जनवरी १९५७ ई०)

सबक़

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा के दूध मुबारक का यह असर था कि हज़रत हसन बसरी इमामुल-आरिफ़ीन और फ़ाज़िले अजल बन गए। माँ नेक हो तो उसके दूध से औलाद पर अच्छा असर पड़ता है। हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हु की शुजाअत। अज़्म व इस्तिक़्लाल में ज़्यादा तर असर हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रज़िअल्लाहु अन्हा के मुबारक दूध का था। और आजकल की स्कूटर चलाने वाली और बन संवर कर बाज़ारों में फिरने वाली और ग़ैरों से हाथ मिलाने वाली माओं का अव्वल तो दूध रहता ही नहीं उनकी औलाद अगर पलती भी है तो बोतल के दूध पर। इसलिए अकबर इलाहाबादी ने लिखा है कि –

तिफ़्ल में ताक़त हो क्या मां-बाप के अत्वार की
दूध तो डब्बे का है तालीम है सरकार की

पुराने ज़माने में माएं अपने बच्चों पर रोब जमाने के लिए कहा करती थीं। बेटा! अगर तुमने मेरी बात न मानी तो मैं तुझे बत्तीस धारें नहीं बख़्शूंगी। आजकल का माडर्न बच्चा इस रोब से भी आज़ाद हो गया है। आजकल माओं का यह रोब भी जाता रहा कि वह यह कह सकें। बेटा अगर तुमने मेरी बात न मानी तो मैं तुम्हें बत्तीस धारें न बख़्शूँगी। क्योंकि बेटा यह जवाब देता है कि अम्मी जान यह रोब कैसा? बत्तीस धारें तो क्या मैंने तुम्हारी एक धार भी नहीं पी, मैंने तो बोतल का दूध पिया है।

यह भी मालूम हुआ कि उम्मुल-मोमिनीन ने हज़रत हसन को क़ुरआन पढ़ाया और उसके मआरिफ़ से शनासा किया। और हज़रत अली ने उन्हें फ़ाज़िले अजल बनाया। और आजकल की माओं की तमन्ना होती है कि मेरा बेटा डी.सी. बने थानेदार बने। अंग्रेज़ नज़र आए और फिर चाहे मां के लिए वह अज़ाब बन कर मूजिबे अजल (मौत) बन जाए। लिहाज़ा ऐ मेरी बहनो! तुम अपने बच्चों को।

जो इंग्लिश पढ़ानी है बेशक पढ़ाओ
मगर पहले तालीम दीं भी दिलाओ!!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (४३)

उम्मुल-मोमिनीन

ज़ैनब बिन्ते जहश रज़िअल्लाहु अन्हा

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफेरी बहन थीं। इस्लाम के लिहाज़ से आप साबिकूनल-अव्वलून में से हैं यानी पहले दौर ही में इस्लाम ले आई थीं। ज़ैद बिन हारिस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद करदा गुलाम थे। हुज़ूर की मर्ज़ी से हज़रत ज़ैनब का निकाह हज़रत ज़ैद रज़ि अल्लाहु अन्हु से हो गया। हज़रत ज़ैद हुज़ूर के मुतबन्ना भी थे। यह निकाह निभ न सका और हज़रत ज़ैद ने हज़रत ज़ैनब को तलाक़ दे दी। जब तलाक़ की इद्दत पूरी हो चुकी तो हुज़ूर ने इस ख़्याल से कि हज़रत ज़ैनब ने मेरे ही कहने पर आज़ाद करदा गुलाम से निकाह कर लिया था। आपकी दिलजोई की खातिर उनसे ख़ुद निकाह करना चाहा। चुनांचे हुज़ूर ने उनके पास प्याम भेजा। हज़रत ज़ैनब ने जवाब में अर्ज़ किया कि मैं इस वक़्त कुछ नहीं कह सकती। जब तक ख़ुदा का हुक्म न हो। फिर मस्जिद का रुख़ किया और नमाज़ की नीयत बांध ली। और दुआ की कि इलाही! तेरे रसूल मुझसे निकाह करना चाहते हैं। अगर मैं इस क़ाबिल हूँ तो मेरा निकाह उनसे कर दे। उधर अल्लाह तआला ने हुज़ूर पर यह आयत नाज़िल फरमा दी।

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا (प. २२, अ. २)

जब ज़ैद की ग़रज़ उससे निकल गई। तो हमने वह तुम्हारे निकाह में दे दी।"

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आयत की ख़ुशख़बरी भेजी। तो आप ख़ुशी से सजदे में गिर गईं और आपको इस बात पर बड़ा फ़ख़्र रहा। कि सब बीबियों का निकाह उनके वलियों ने किया और मेरा निकाह ख़ुद अल्लाह तआला ने किया उसके बाद आपका निकाह हुज़ूर से हो गया।

(असदुल-ग़ाबा स० ६४, जि. ५ और मदारिजुन्नुबूवा स० २७६)

सबक़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जितने निकाह भी फरमाए। उन सबमें कई-कई हिकमतें मुज़मर थीं। ग़ुलामी की निसबत एक ऐसी निसबत थी जिसको उस ज़माना में कोई ऊँचे खानदान वाला गवारा न कर सकता था लेकिन इस्लाम चूंकि इस क़िस्म के फ़ुज़ूल इम्तियाज़ मिटाने के लिए आया था। हज़रत ज़ैद अगरचे ग़ुलाम थे लेकिन उनकी दीनी ख़िदमात ऐसी न थीं कि उनका रुतबा किसी तरह दूसरे आज़ाद मुसलमानों से कम समझा जाता। इसलिए हुज़ूर ने अपने सबसे ऊँचे खानदान की फूफेरी बहन उनके निकाह में देकर एक आला तरीन मिसाल क़ायम फरमा दी और बता दिया कि असल शराफ़त दीन की है। इसके बाद दूसरी हिकमत यह थी कि इस तारीक (अंधेरा) दौर में एक यह ग़लत ख़्याल भी था कि जो मुतबन्ना हो। वह हक़ीक़ी बेटे की तरह हो जाता है। और उसकी बीवी हक़ीक़ी बहू की तरह हो जाती है। जो खुस्र पर हलाल नहीं रहती। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मुतबन्ना ज़ैद की बीवी को तलाक़ मिल जाने के बाद उससे निकाह करके इस ग़लत ख़्याल को भी दूर कर दिया। यह भी मालूम हुआ कि हज़रत ज़ैनब वाक़ई इस बात में मुंफरिद हैं कि आपका निकाह ख़ुद अल्लाह तआला ने किया और यूँ फरमाया **ज़ौव्वजना कहा** इससे तुम्हारा निकाह हमने कर दिया।"

सुबहानल्लाह! क्या शान है। अज़वाजे मुतह्हरात की। जो लोग अज़वाजे मुतह्हरात पर किसी क़िस्म का कोई एतराज़ करते हैं वह सोच लें कि उनके एतराज़ात ख़ुद ख़ुदा तआला पर वारिद होते हैं।

(अल-अयाज़ बिल्लाह!)

और यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद एक ऐसा ख़ुद साख़्ता नबी भी गुज़रा है जो एक औरत को दिल दे बैठा और उससे निकाह करने के शौक़ में ख़ुद साख़्ता इल्हाम शाए कर बैठा। कि ख़ुदा फरमाता है कि इस औरत से हमने तुम्हारा निकाह कर दिया। इस इल्हाम के बावजूद इस औरत से किसी दूसरे शख़्स ने निकाह कर लिया और झूठे नबी साहब अपनी यह महरूमी देखकर यह शे'र पढ़ते रह गए कि।

कि मैं मुंतज़िर विसाल वह आग़ोशे ग़ैर में
कुदरत ख़ुदा की दर्द कहीं और दवा कहीं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (४४)

उम्मुल-मोमिनीन

हज़रत जुवैरिया रज़िअल्लाहु अन्हा

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़िअल्लाहु अन्हा हारिस इब्ने अबी ज़िरार की दुख़्तर थीं जो क़बीला बनी मुस्तलिक़ का सरदार था। हज़रत जुवैरिया पहले मसाफ़ बिन सफवान के अक़्द में आईं जो ग़ज़व-ए-मुरैसी में क़त्ल हुए। इस ग़ज़वा में कसरत से क़ैदी मुसलमानों के क़ब्ज़ा में आए। उन्हीं क़ैदियों में हज़रत जुवैरिया भी थीं। जब माले ग़नीमत तक़सीम हुआ तो हज़रत जुवैरिया साबित बिन क़ैस अन्सारी के हिस्सा में आईं।

इस्लाम इस बात की इजाज़त देता है कि अगर आक़ा राज़ी हो तो क़ैदी मतलूबा रक़म अदा करके आज़ादी हासिल कर सकता है। इस तरीक़ा को इस्तिलाहे फुक़हा में मुकातिब कहते हैं। इस उसूल के मुताबिक़ हज़रत जुवैरिया ने साबित बिन क़ैस से मुकातीबत की दरख़्वास्त की। वह राज़ी हो गए। हज़रत जुवैरिया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया।" हुज़ूर! मैं मुसलमान कलिमा गो औरत और क़बीला बनी मुस्तलिक़ के सरदार की बेटी हूँ अपने आपको आज़ाद कराना चाहती हूँ। मेरी मदद फरमाइए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। क्या तुम्हें यह मंज़ूर नहीं कि मैं यह रक़म ख़ुद अदा करके तुमसे निकाह कर लूँ। हज़रत जुवैरिया ने इस अम्र को ब-ख़ुशी क़ुबूल कर लिया। हुज़ूर ने साबित बिन क़ैस को बुलवाया। उनकी रक़म अदा की और हज़रत जुवैरिया को आज़ादी दिलाकर उनसे निकाह फरमा लिया। और वह उम्मुल-मोमिनीन बन गईं। इस रिश्ता का चर्चा हुआ। तो लोगों ने क़बीला बनी मुस्तलक़ के तमाम क़ैदियों को इस वजह से आज़ाद कर दिया कि हुज़ूर ने इस क़बीला से रिश्ता क़ाइम कर लिया है। इब्ने असीर ने लिखा है। कि इस तक़रीब में बनू मुस्तलिक़ के सौ खानदान आज़ादी की दौलत से बहरा वर हुए। (असदुल-ग़ाबा स० ४२०, जि. ५)

सबक़

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़िअल्लाहु अन्हा बहुत बड़ी ख़ुश नसीब हैं कि पहले तो सिर्फ़ बनी मुस्तलिक़ के क़बीला के सरदार की बेटी थीं और अब सारी काइनात के सरदार की बीवी बन गईं। यह भी मालूम

हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो मुतअद्दिद शादियाँ फरमाईं। उनका एक मक़सद यह भी था कि मुख़्तलिफ़ क़बाइल से रिश्त-ए-उख़ुव्वत (भाई चारा) क़ायम हो जाए और इस तरह वाक़ई इस्लाम के फ़रोग़ में बड़ी मदद मिली। और मुसलमानों को बहुत फायदा पहुंचा। हज़रत जुवैरिया से निकाह फरमाने के बाद एक अज़ीम फायदा यह भी हुआ कि क़बीला बनी मुस्तलिक़ के सौ खानदान आज़ादी की दौलत से बहरावर हुए मुआनदीने इस्लाम यूरोप ज़दा अफराद जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम की मुतअद्दिद शादियों पर एतराज़ करते हैं। उन कोर बातिनों को वह हिक्मतें नज़र नहीं आतीं जो उन शादियों में मुज़्मर थीं। यूरोप के अय्याश लोग हज़ार दाश्ताएं रख कर भी मुहज़्ज़ब कहलाएं और मुसलमान की चार शादियों और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पुर अज़हिक्मत मुतअद्दिद शादियों पर एतराज़ जताएं? यह है इंसाफ़ उन फुस्साक़ व कुफ़्फ़ार का। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर अदा में हज़ारहा हिकमतें मुज़मर थीं जिसे अह्ले इंसाफ़ जानते और मानते हैं।

अह्ले अक़्ल व अद्ल है यह मानता
मबनी बर हिकमत है उनकी हर अदा

❖❖❖

हिकायत नम्बर (45)

दो ऊँट

हज़रत जुवैरिया रज़िअल्लाहु अन्हा के वालिद हारिस इब्ने अबी ज़िरार बग़ैर इस इल्म के कि उनकी बेटी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में आ चुकी हैं बहुत सा अमवाल व असबाब ऊँटों पर लाद कर हज़रत जुवैरिया की रिहाई के लिए मदीना रवाना हुए। रास्ता में मक़ामे अक़ीक़ पर अपने ऊँट चरने के लिए छोड़ दिए। उनमें से दो ऊँट आपको बहुत पसन्द थे इसलिए उनको किसी घाटी में छुपा दिया। मदीना पहुँच कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया। आप मेरी बेटी को क़ैद कर लाए हैं उसका फिदिया मुझसे ले लें और उसे मेरे साथ कर दें। फिर जो माल और ऊँट वग़ैरा फिदिया देने के

लिए लाए थे पेश करने लगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। हारिस! वह दो ऊँट कहाँ हैं जिनको तुम अक़ीक़ की घाटियों में छुपा आए हो? हारिस पर इस बात का बड़ा असर हुआ। और वह फौरन कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया। अब उसको मालूम हुआ कि जिस बेटी को छुड़ाने के लिए उसने इतनी ज़हमत की है वह हरमे नबवी की रौनक़ बनी हुई है। इस ख़बर से वह बहुत ख़ुश हुआ और बड़ी ख़ुशी के साथ अपनी बेटी से मिलकर हंसी ख़ुशी मआ अपनी क़ौम के घर रवाना हुआ।

(असदुल-ग़ाबा स० ४२०, जि. ५)

सबक़

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़िअल्लाहु अन्हा की बदौलत आपके वालिद भी मुशर्रफ़ बा-इस्लाम हो गए। आपने दो ऊँट घाटियों में छुपाए तो आपके सारे घाटे जाते रहे। और इस ग़ैब की ख़बर देने पर हारिस कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गए। मालूम हुआ कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह तआला ने ग़ैब की बातें रौशन फरमा दी हैं और आप अगली पिछली सब बातें जानते हैं।

तू दाना-ए-माकाना और मा यकून है
मगर बे-ख़बर बे-ख़बर देखते हैं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (४६)

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत सफ़ीया रज़िअल्लाहु अन्हा

हज़रत सफीया हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में से हैं। यह पहले किनाना इब्ने अबी अल-हक़ीक़ के निकाह में थीं। ख़ैबर की लड़ाई में किनाना मारा गया। ख़ैबर की लड़ाई यहूदियों के लिए ऐसी तबाह कुन थी कि उनकी सब उम्मीदों पर पानी फिर गया। इस जंग में उनके नामी गिरामी सरदार चुन-चुन कर काम आए। किनाना और हज़रत सफ़ीया के बाप और भाई भी इस जंग में मारे गए। असीराने जंग में हज़रत सफीया भी थीं जिनकी हालत क़ाबिले रहम थी। दहिया कलबी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम से दरख़्वास्त की कि मुझे एक बांदी की ज़रूरत है। हुज़ूर ने उन्हें हज़रत सफीया दे दी। चूंकि मदीना मुनव्वरा में हज़रत सफीया के क़बीला के बहुत से लोग आबाद थे और हज़रत सफीया एक सरदार की बेटी थीं। इसलिए बाज़ सहाबा ने हुज़ूर से अर्ज़ किया कि सफीया हारून अलैहिस्सलाम की औलाद में से और एक सरदार की बेटी है। इसलिए अगर आप उसे निकाह में ले लें तो बहुत से लोगों की दिलदारी होगी। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दहिया को ख़ातिर ख़्वाह मुआवज़ा देकर उनको ले लिया और उन्हें आज़ाद करके उनसे निकाह फरमा लिया और वह उम्मुल-मोमिनीन बन गईं।

(मवाहिबे-लदुनीया स० २०५, जि. १)

सबक़

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत सफीया रज़िअल्लाहु अन्हा इस लिहाज़ से सब अज़वाजे मुतह्हरात में मुमताज़ हैं कि आप नबी (हारून अलैहिस्सलाम) की बेटी। नबी (मूसा अलैहिस्सलाम) की भतीजी और नबी (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बीवी हैं।

उसकी अज़्मत का भला हो क्या बयाँ
जमा जिसमें तीन हों यह ख़ूबियाँ

नोट :– मुहद्दिसीने किराम अलैहिमुर्रहमा का अज़वाजे मुतह्हरात की तादाद में इख़्तिलाफ़ है। ग्यारा होने में तो सबका इत्तिफ़ाक़ है। ग्यारा से ज़्यादा में इख़्तिलाफ़ है। ग्यारा अज़वाजे मुतह्हरात के असमा-ए-गिरामी यह हैं।

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा (१) उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आइशा (२) उम्मुल-मोमिनीन हज़रत हफ़सा (३) उम्मुल-मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (४) उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश (५) उम्मुल-मोमिनीन हज़रत जुवैरिया (६) उम्मुल-मोमिनीन हज़रत सफ़ीया (७) उम्मुल-मोमिनीन हज़रत मैमूना (८) उम्मुल-मोमिनीन हज़रत सौदा (६) उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुज़आ (१०) उम्मुल-मोमिनीन हज़रत हबीबा रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिन्ना (११) मवाहिबे लदुनीया स० २०१, जि.१)

हमने सिर्फ़ सात अज़वाजे मुतह्हरात का ज़िक्र किया है।

❖❖❖

चौथा बाब

हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम

की बनाते तैय्यबात

يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ بَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَا بِيْبِهِنَّ

(प. २२, अ.५)

ऐ नबी! अपनी बीवियों और साहबज़ादियों और मुसलमानों की औरतों से फरमा दो। कि अपनी चादरों का एक हिस्सा मुँह पे डाले रहें।

❖❖❖

हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम

की

चार साहबज़ादियाँ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चार साहबज़ादियाँ थीं। आजकल बाज़ शीआ़ हज़रात इस हक़ीक़त का इंकार करते हैं। हालाँकि यह एक ऐसी हक़ीक़त है जिस पर शीआ़ हज़रात की मुस्तनद किताबें भी शाहिद हैं। सबसे पहले कुरआन पाक को लीजिए ख़ुदा फरमाता है :

يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ بَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَا بِيْبِهِنَّ.

ऐ नबी! अपनी बीवियों और साहबज़ादियों और मुसलमानों की औरतों से फरमा दो। कि अपनी चादरों का एक हिस्सा मुंह पे डाले रहें।"

इस आयते करीमा में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम को मुख़ातब फरमा कर पर्दा करने का हुक्म फरमाया गया है और हुज़ूर से फरमाया है कि आप अपनी बीवियों और साहबज़ादियों से कह दें। जिस तरह अज़वाज जमा का सेग़ा है और ख़ुदा ने फरमाया है قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ अपनी बीवियों से फरमा दो। इसी तरह بَنَاتِكَ भी जमा का सेग़ा है। और ख़ुदा ने फरमाया है कि وَبَنَاتِكَ और अपनी साहबज़ादियों से

फरमा दो। मालूम हुआ कि हुज़ूर की अगर एक साहबज़ादी होती तो खुदा जमा का सेगा न फरमाता। बल्कि यूं फरमाता।

قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبِنْتِكَ अपनी बीवियों से और अपनी साहबज़ादी से फरमा दो।"

आयते शरीफ़ा में بَنَاتِكَ जमा का सेग़ा साफ बता रहा है कि हुज़ूर की एक से ज़्यादा साहबज़ादियाँ थीं और उनकी तादाद चार थी। चुनांचे अह्ले सुन्नत व जमाअत की तो किताबों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चार साहबज़ादियों का ज़िक्र है ही शीआ़ हज़रात की किताबों में भी यही मज़कूर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपनी हक़ीक़ी साहबज़ादियाँ चार थीं। चुनांचे उनकी सिहाह की मुसतनद किताब उसूले काफी में है।

وَتَزَوَّجَ خَدِيْجَةَ وَهُوَ اِبْنُ بِضْعٍ وَعِشْرِيْنَ سَنَةً فَوَلَدَ لَهٗ مِنْهَا قَبْلَ مَبْعَثِهِ الْقَاسِمُ وَرُقَيَّةُ وَزَيْنَبُ وَاُمُّ كُلْثُوْمٍ.وَوَلَدَ لَهٗ بَعْدَ الْمَبْعَثِ الطَّيِّبُ وَالطَّاهِرُ وَالْفَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلَام

(उसूले काफी स. २७८, जि. १ सतर ३)

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़दीजा से निकाह किया जबकि हुज़ूर की उम्र बीस साल से कुछ ऊपर थी। पस बेसत से पहले हज़रत ख़दीजा के बतन से हुज़ूर के लड़के क़ासिम और लड़कियाँ रुक़ैया, ज़ैनब और उम्मे कुल्सूम पैदा हुईं और बेसत के बाद तैय्यब व ताहिर लड़के और लड़की फातिमा पैदा हुईं। और दूसरी उनकी मुस्तनद किताब हयातुल-कुलूब में है।

बसनदे मोतबर अज़ हज़रत सादिक़ रिवायत कर दह अस्त कि अज़ बरा-ए-रसूल ख़ुदा अज़ ख़दीजा मुतवल्लिद शुदन्द ताहिर व क़ासिम व फातिमा व उम्मे कुलसूम व रुक़ैया व ज़ैनब।

(हयातुल-कुलूब स० ५५६, जि.२)

यानी मोतबर सनद से हज़रत सादिक़ से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रत ख़दीजा से जो औलाद हुई वह यह है, ताहिर, क़ासिम और फातिमा, उम्मे कुलसूम, रुक़ैया और ज़ैनब उसके बाद उसी किताब के उसी सफा पर है कि –

फातिमा रा बहज़रत अमीरुल-मोमिनीन तज़वीज नमूद व तज़वीज कर्द ब-अबुल-आस बिन रबईया कि अज़ बनु-उमैया बूद ज़ैनब रा।

ब-उस्मान बिन अफ़्फ़ान उम्मे कुलसूम रा। व पेशे अज़ां कि बख़ाना आं रूद बरहमत इलाही व असल शुद। व बाद अज़ व हज़रत रुक़ैया रा बा तज़वीज नमूद।"

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा का हज़रत अली से निकाह कर दिया। और हज़रत ज़ैनब का अबुल-आस से निकाह कर दिया और उम्मे कुलसूम का हज़रत उस्मान से निकाह कर दिया। लेकिन हज़रत उम्मे कुलसूम का इंतिक़ाल हो गया तो हुज़ूर ने हज़रत रुक़ैया का उनसे निकाह कर दिया।

शीआ़ हज़रात की इन रिवायात से रोज़ रौशन की तरह ज़ाहिर हो रहा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चार साहबज़ादियाँ थीं। एक हज़रत अली के निकाह में दूसरी हज़रत अबुल-आस के निकाह में रहीं। और दो साहबज़ादियाँ हज़रत उस्मान के निकाह में आईं। इस हक़ीक़त का इंकार न सिर्फ़ कुरआन की आयत का इंकार है बल्कि ख़ुद अपनी ही मुस्तनद किताबों का भी इंकार है। (अबुन्नूर मुहम्मद बशीर)

❖❖❖

हिकायत नम्बर (४७)

हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाहु अन्हा

हज़रत ज़ैनब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चारों बेटियों में बड़ी बेटी हैं। आपकी वालिदा उम्मुल-मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़िअल्लाहु अन्हा हैं। आप बेअसत से दस साल क़ब्ल पैदा हुईं। आपकी शादी क़ब्ले नुबुव्वत आपके हक़ीक़ी ख़ालाज़ाद भाई अबुल-आस के साथ हुई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मंसबे नुबुव्वत पर फाइज़ हुए तो हज़रत ज़ैनब भी इस्लाम ले आईं। नुबुव्वत के तेरहवीं साल जब हुज़ूर ने मक्का मुअज़्ज़मा में हिजरत फ़रमाई तो हज़रत ज़ैनब अपने ससुराल में थीं और अबुल-आस मुशरिकीने मक्का के साथ जंगे बदर में शरीक हुए। मुसलमानों को फ़तह हुई तो असीराने (क़ैदी) जंग में अबुल-आस भी थे। असीराने जंग की ख़बर मक्का पहुँची तो अह्ले मक्का ने अपने क़ैदियों की रिहाई के लिए फ़िदिया भेजा। हज़रत ज़ैनब ने भी अपने देवर को वह हार (जो हज़रत ख़दीजा रज़िअल्लाहु अन्हा ने जहेज़ में उनको दिया था) देकर रवाना

किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िद्मत में जब वह हार पेश किया गया तो उसे देखकर मग़मूम हुए और हार देखकर हज़रत ख़दीजा की याद ताज़ा हो गई। फिर आपने लोगों को मुख़ातब फरमा कर फरमाया कि अगर तुम मुनासिब ख़्याल करो तो ज़ैनब के शौहर को आज़ाद कर दो और उसका हार भी वापस कर दो चूंकि सब क़ैदी फिदिया पर छोड़े गए थे और यह शाने नुबुव्वत के ख़िलाफ़ था कि अबुल-आस को सिर्फ़ हुज़ूर का दामाद होने के बाइस बेग़ैर फिदिया के रिहा कर दिया जाता। इसलिए इर्शाद हुआ कि हार वापस कर दो। और अबुल-आस का यह फिदिया क़रार दिया कि वह मक्का पहुँच कर हज़रत ज़ैनब को मदीना मुनव्वरा भेज दें चुनांचे इस शर्त पर अबुल-आस को रिहा कर दिया गया। (तबक़ात स० २००)

सबक़

हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाहु अन्हा का निकाह एक मुश्रिक से होना क़ब्ल अज़ नुबुव्वत की बात है। उस वक़्त हुज़ूर ने हज़रत ज़ैनब का यह निकाह किया जबकि काफिरों को बेटी का रिश्ता न देने का हुक्म नाज़िल नहीं हुआ था चूंकि नुज़ूले वह्य का सिलसिला शुरू होने से पहले यह निकाह हुआ और हलाल हराम की ताईन नुज़ूले वह्य की वजह से हुई। इसलिए यह निकाह कर दिया गया। यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दामाद को कोई रिआयत नहीं दी। और उसे भी फिदिया की शर्त पर रिहा किया और बजाए हज़रत ज़ैनब के हार के ख़ुद हज़रत ज़ैनब को फिदिया में तलब किया। इसमें उम्मत को यह दर्स दिया गया है कि साहिबे इक़्तिदार अफ़राद अक़रबा परवरी और अवाम का ख़्याल न करते हुए ख़्वास को नवाज़ना शुरू न कर दें बल्कि जो क़ानून हो वह अपनों बेगानों और आम व ख़ास सबके लिए बराबर हो।

जो भी हो क़ानून ऐसा हो वह आम!
जिससे सब छोटे बड़े हों शाद काम

❖❖❖

हिकायत नम्बर (४८)

हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाहु अन्हा मक्का से मदीना को

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबुल-आस को रिहा करने के बाद हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाहु अन्हा को मक्का से मदीना लाने के लिए अबुल-आस के हमराह हज़रत ज़ैद बिन हारिसा को भी रवाना किया और हिदायत की कि तुम बतन में ठहर कर इंतिज़ार करना। जब हज़रत ज़ैनब वहाँ आ जाएं तो उनको साथ लेकर मदीना मुनव्वरा आ जाना। अबुल-आस ने मक्का पहुँच कर हस्बे वादा हज़रत ज़ैनब को अपने छोटे भाई किनाना के साथ मदीना मुनव्वरा जाने की इजाज़त दे दी। हज़रत ज़ैनब अपने देवर के साथ जब मक्का से रवाना हुईं तो कुरैशे मक्का में खलबली मच गई। चुनांचे काफिरों की एक जमाअत उनके तआकुब (पीछे) में निकली और मक़ामे तवा में उनको घेर लिया। एक काफिर ने हज़रत ज़ैनब पर नेज़ा से हमला कर दिया। वह ऊँट से ज़मीन पर गिर गईं। आप हामिला थीं। हमल साक़ित हो गया। चोट बहुत ज़्यादा आई। किनाना ने तरकश से तीर निकाला और कहा अब कोई मेरे क़रीब आएगा वह मेरे तीरों का निशाना बनेगा। लोग मुंतशिर (बिखर) हो गए और किनाना हज़रत ज़ैनब को बतन तक ला कर हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के सिपुर्द करके वापस चले आए जो हज़रत ज़ैनब को लेकर मदीना मुनव्वरा पहुँच गए। (ज़रक़ानी स० २२३, जि.३)

सबक़

अबुल-आस ने अपना वादा पूरा कर दिखाया। और हज़रत ज़ैनब को अपने मुक़द्दस बाप के पास मदीना मुनव्वरा भेज दिया। इसका सिला खुदा तआला ने अबुल-आस को यह दिया कि आप दौलते इस्लाम से बहरा वर हुए। जैसा कि आगे बयान आता है। यह भी मालूम हुआ कि कुफ़्फ़ार बड़े ही ज़ालिम और संगदिल होते हैं और औरतों पर भी हाथ उठाने से नहीं चूकते। मुसलमान का किरदार बुलन्द है। वह कभी किसी कमज़ोर पर हाथ नहीं उठाता।

मुसलमान किसी को सताते नहीं!
वह कमज़ोर पर हाथ उठाते नहीं

हिकायत नम्बर (४६)

हज़रत अबुल-आस का इस्लाम लाना

अबुल-आस को हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाहु अन्हा से बहुत मुहब्बत थी और उन दोनों के आपस में बड़े ख़ुशगवार दिन गुज़र रहे थे। इसलिए हज़रत ज़ैनब के मदीना चले जाने के बाद अबुल-आस मग़मूम रहने लगे। अबुल-आस तिजारत अमानतदारी के मामला में बहुत अमीन मशहूर थे। अह्ले कुरैश अपना तिजारती माल उनके साथ फ़रोख़्त करने के लिए भेज दिया करते थे। एक मरतबा वह कुरैश के एक क़ाफ़िला के साथ शाम की तरफ रवाना हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर पहुँची। हुज़ूर ने ज़ैद बिन हारसा को मआ एक सौ सत्तर सवार के तआकुब के लिए भेजा। चुनांचे मक़ामे हीस में दोनों क़ाफ़िले एक दूसरे से दो बदू हुए। सवाराने इस्लाम ने मुश्रिकीन को गिरफ़्तार कर लिया। और जो कुछ माल उनके पास था उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। लेकिन अबुल-आस से किसी क़िस्म की मुज़ाहमत (रोक) न की। अबुल-आस क़ाफ़िले का यह हश्र देखकर मदीना मुनव्वरा पहुँचे और हज़रत ज़ैनब ने उन्हें पनाह दे दी। हज़रत ज़ैनब ने हुज़ूर से सिफ़ारिश की कि उस क़ाफ़िला का सारा माल क़ाफ़िला वालों को वापस कर दिया जाए। हुज़ूर ने मुजाहिदीन के पास कहला भेजा तो सबने उसे ब-ख़ुशी कुबूल कर लिया। उसके बाद अबुल-आस अपना माल असबाब लेकर मक्का मुअज़्ज़मा पहुँचे और जिसका जो कुछ लेना देना था ले दे के हिसाब साफ किया और एक रोज़ कुरैश को मुख़ातब करके कहा कि ऐ अह्ले कुरैश! मेरे ज़िम्मा किसी का मुतालबा तो बाक़ी नहीं? अह्ले कुरैश ने कहा नहीं। अबुल-आस बोले। तो लो अब सुन लो। मैं अब मुसलमान होता हूँ। यह कहकर

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

पढ़ा और फरमाया। ख़ुदा की क़सम मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने के बाद इस्लाम लाने से सिर्फ़ यह अम्र माने था कि तुम लोग यह ख़्याल न करो कि मैं तुम्हारे माल को ग़बन कर

चुका हूँ। इसलिए मुसलमान हो गया हूँ। अब जबकि मैं तुम सबका माल तुमको दे चुका हूँ तो अब कोई वजह नहीं कि मैं बेबाक होकर और बेबाक होकर इस्लाम कुबूल न करूं। (तबक़ात स० २२)

सबक़

हज़रत अबुल-आस रज़िअल्लाहु अन्हु बड़े खुश नसीब साबित हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बड़ी साहबज़ादी के साथ शर्फ़े निकाह से मुशर्रफ़ हुए और फिर उनकी बदौलत नेमते इस्लाम से भी बहरावर हो गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी साहबज़ादी का एक मुश्रिक़ से निकाह कर देना एक तो इस वजह से था कि यह निकाह क़ब्ल अज़ इज़हारे नुबुव्वत हुआ था और काफ़िरों को बेटी न देने का हुक्म नाज़िल नहीं हुआ था। दूसरे यह कि हुज़ूर को **इल्म मा काना व मा यकून** हासिल था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इल्म था कि अबुल-आस आखिर कार हल्क़ा बगोश इस्लाम हो जाएगा। यह भी मालूम हुआ कि इस्लाम लाने वालों पर अव्वल ही से काफ़िरों ने बड़े-बड़े ज़ुल्म व सितम तोड़े हैं हत्ता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बड़ी साहबज़ादी को नेज़ा मार कर ऊँट से ज़मीन पर गिरा दिया जिससे आपको बेहद तक्लीफ पहुँची बल्कि उसी तक्लीफ से बीमार पड़ गईं। और हज़रत अबुल-आस के इस्लाम लाने के बाद तक़रीबन सवा साल तक ज़िन्दा रह कर उसी बीमारी से विसाल फरमा गईं। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

यह शहादत गहे उलफत में क़दम रखना है
लोग आसान समझते हैं मुसलमाँ होना

❖❖❖

हिकायत नम्बर (50)
हज़रत रुक़ैया रज़िअल्लाहु अन्हा

हज़रत रुक़ैया रज़िअल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूसरी बेटी हैं। हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाहु अन्हा से छोटी और उम्मे कुलसूम व फातिमा रज़िअल्लाहु अन्हा से बड़ी। क़ब्ल अज़ इज़हारे नुबुव्वत और नुज़ूले वह्य से पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका

निकाह अबू-लहब के बेटे उतबा से कर दिया था। नुबुव्वत के बाद जब सूरः تَبَّتْ يَدَ اَبِی لَهَبٍ नाज़िल हुई तो अबू-लहब और उसकी बीवी ने कबीदा खातिर होकर अपने बेटे से कहा कि अगर तुमने अपनी बीवी रुक़ैया बिन्ते मुहम्मद को तलाक़ न दी तो हमारी ज़िन्दगी और तुम्हारे साथ उठना बैठना हमारा हराम है। उतबा ने ब-तामीले हुक्मे वालिदैन हज़रत रुक़ैया को तलाक़ दे दी। (मवाहिबे लदुनीया स० १६७, जि.१)

सबक़

खुदा तआला की हर बात मैं हिकमत होती है। खुदा तआला ने न चाहा कि उसके महबूब की बेटी एक काफिर के निकाह में रहे। इसलिए काफिर के वालिदैन से ही कहलवा कर हुज़ूर की साहबज़ादी को उस निकाह से आज़ाद फरमा दिया। और यह बात याद रखनी भी ज़रूरी है कि उतबा से हज़रत रुक़ैया का सिर्फ़ अक़्द ही हुआ था अभी रुख़सती न होने पाई थी कि तलाक़ हो गई। किताब मज़कूरा इसके बाद हज़रत रुक़ैया रज़िअल्लाहु अन्हा का निकाह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़िअल्लाहु से कर दिया। وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِيْنَ के मुताबिक़ हज़रत रुक़ैया रज़िअल्लाहु अन्हा की शान के मुताबिक़ उन्हें शौहर मिल गया।

हज़रत उसमान की क्या शान है
खुस्र उनका शाह इंस व जान है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (५१)

हज़रत उम्मे कुलसूम रज़िअल्लाहु अन्हा

हज़रत उम्मे कुलसूम रज़िअल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तीसरी साहबज़ादी हैं। नुज़ूले वह्य से क़ब्ल उनका निकाह भी हुज़ूर ने अबू-लहब के दूसरे बेटे उतैबा से कर दिया था और उनसे भी यही वाक़या पेश आया जो हज़रत रुक़ैया रज़िअल्लाहु अन्हा से आया था यानी सूरः تَبَّتْ يَدَ اَبِی لَهَبٍ नाज़िल हुई। तो अबू-लहब और उसकी बीवी ने अपने दोनों बेटों से यही कहा कि बिन्ते मुहम्मद को तलाक़ दे दो। वरना हमारे साथ तुम्हारा उठना बैठना हराम है चुनांचे उतैबा ने भी मां-बाप के

हुक्म के मुताबिक़ उम्मे कुलसूम को तलाक़ दे दी और उनका भी अक़्द ही हुआ था रुख़सती से पहले ही तलाक़ मिल गई।(मवाहिबे लदुनीया स० १६७, जि.१)

सबक़

हज़रत रुक़ैया रज़िअल्लाहु अन्हा को काफ़िर से तलाक़ मिली तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपका निकाह हज़रत उसमान रज़िअल्लाहु अन्हु से कर दिया हज़रत रुक़ैया का जब इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत उसमान रज़िअल्लाहु अन्हु बहुत मग़मूम रहने लगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा। उसमान परेशान क्यों रहते हो। अर्ज़ किया। हुज़ूर! मुझ पर बहुत बड़ी मुसीबत पड़ी है हुज़ूर की साहबज़ादी का इंतिक़ाल हो गया है। उनकी वफ़ात से मेरी तो कमर टूट गई है। हुज़ूर से जो रिश्त-ए- क़राबत वाबस्ता था। मुंकते (कट) हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَوْ اَنَّ عِنْدِیْ مِاَئَۃَ بِنْتٍ یمتن وَاحِدَۃٌ بَعْدَ وَاحِدَۃٍ زَوَّجْتُکَ اُخْرٰی بَعْدَ احزی ھذ

اجِبْرِیْلُ اَخْبَرَنِیْ اِنَّ اللہَ یَاْمُرُنِیْ اَنْ اُزَوِّجَکَھَا

(मवाहिबे लदुनीया स० १६७, जि. १)

मुझे क़सम है उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है अगर मेरी सौ बेटियाँ होतीं तो मैं एक के मरने के बाद दूसरी से तुम्हारा निकाह करता जाता। यह जिब्रील खड़े हैं। उन्होंने मुझे ख़बर दी हैकि अल्लाह का मुझे हुक्म है कि उम्मे कुलसूम का निकाह में तुम्हारे साथ कर दूँ।

चुनांचे हज़रत रुक़ैया के इंतिक़ाल के बाद हज़रत उम्मे कुलसूम का भी निकाह हज़रत उसमान से हो गया और वह रिश्ता क़राबत जो हज़रत उसमान को हुज़ूर से हासिल था। हुज़ूर ने मुंक़ते नहीं होने दिया। बल्कि अपनी दूसरी बेटी देकर उसे बरक़रार रखा और क़सम खा कर फरमाया कि अगर मेरी सौ बेटियाँ भी हों तो मैं एक के मरने के बाद दूसरी तुम्हें देता ही चला जाऊँ। सुबहानल्लाह! क्या शाने उसमान है हर मुसलमान इस शान पर कुरबान है। हज़रत उसमान के घर हुज़ूर की दो साहबज़ादियाँ रहीं। इसी वासते आपका लक़ब ज़ुन्नूरैन मशहूर है। यानी दो नूरों वाला इसीलिए आला हज़रत ने हज़रत उसमान रज़िअल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया है कि –

नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का
हो मुबारक तुझको ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

❖❖❖

हिकायत नम्बर (५२)

ख़ातूने जन्नत हज़रत फातमा रज़िअल्लाहु अन्हा

हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु की एक लौंडी थी जिसे हज़रत अली ने आज़ाद कर दिया था। उसने एक रोज़ हज़रत अली से कहा कि क्या हज़रत फातिमा का किसी ने प्याम भेजा है? हज़रत अली ने फरमाया मुझे मालूम नहीं लौंडी ने कहा। आपको कौन-सा अम्र माने है। आप अपना प्याम दीजिए। हज़रत अली बोले मैं किस बिना पर यह जुरअत करूँ मेरे पास कोई चीज़ नहीं जिस पर अक़्द करूं लौंडी ने मुकर्रर फिर कहा। कि नहीं। आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाएं। चुनांचे हज़रत अली उसके इसरार पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। लेकिन हुज़ूर की हैबत, जलालत का उन पर इस क़द्र असर हुआ कि उन्हें कुछ कहने की जुरअत न हुई। और ख़ामूश बैठे रहे। गुफ़्तगू करने की उनमें ताक़त ही न रही लेकिन हुज़ूर ने ख़ुद ही हज़रत अली की तरफ तवज्जोह फरमा कर फरमाया। क्या फातिमा के पैग़ाम के लिए आए हो? हज़रत अली ने अर्ज़ किया। हां हुज़ूर! हुज़ूर ने फरमाया। तुम्हारे पास क्या महर अदा करने की कोई चीज़ है? हज़रत अली ने अर्ज़ किया नहीं। हुज़ूर ने फरमाया। वह हतमी ज़िरह कहां है? जो मैंने तुमको दी थी। वही महर में दे दो। उस ज़िरह की क़ीमत चार सौ दिरहम थी। चुनांचे उसी ज़िरह के महर पर हज़रत फातिमा का निकाह हज़रत अली से हो गया। (असदुल-ग़ाबा स० ५२०)

सबक़

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दिलों की बातें भी जान लेते हैं हज़रत अली जिस इरादा से बारगाहे नबवी में हाज़िर हुए। वह बात ख़ुद तो बयान न कर सके और हुज़ूर ने ख़ुद ही बता दिया कि अली तुम

फातिमा के प्याम के लिए आए हो। मालूम हुआ कि यह रिश्ता खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मरग़ूब व महबूब था और आपने हज़रत फातिमा के लिए हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु का रिश्ता पसन्द फरमाया। और खातूने जन्नत का निकाह हज़रत अली से कर दिया। हज़रत फातिमा रज़िअल्लाहु अन्हा खातूने जन्नत हैं और हज़रत अली ख़ातूने जन्नत के शौहर हैं। इससे हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु की बुलन्द व बाला शान का पता चलता है। अह्ले सुन्नत के दिलों में जिस तरह हज़रत सिद्दीक़े अकबर। फ़ारूक़े आज़म और उसमान ज़ुन्नूरैन रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की मुहब्बत है इसी तरह हज़रत मौला अली रज़िअल्लाहु अन्हु की भी मुहब्बत है और उन चार याराने नबी के वह दिल से फिदाई और शैदाई हैं और यह हक़ीक़त है कि यह चार याराने नबी शम-ए-रिसालत के परवाने और क़मरे नुबुव्वत के सितारे हैं :

मुहम्मद माह व गर्दिश चार अख़्तर
अबू-बकर व उमर उसमान व हैदर

रिज़वानुल्लाहे अलैहिम अजमईन।

पाँचवां बाब

सहाबियात व वलिय्यात

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِيْنَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِيْنَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِيْنَ وَالصَّابِرَاتِ وَالصَّائِمِيْنَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذَّاكِرَاتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا

(प.२२, अ.२)

बेशक! मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमान वाले और ईमान वालियाँ और फरमांबरदार और फरमांबरदारें और सच्चे और सच्चियाँ और सब्र वाले और सब्र वालियाँ और आजिज़ी करने वाले और आजिज़ी करने वालियाँ और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियाँ और रोज़े वाले और रोज़े वालियाँ और अपनी पारसाई पर निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियाँ और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियाँ इन सबके लिए अल्लाह ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तैयार कर रखा है।

(प. २२, अ. २)

❖❖❖

हिकायत नम्बर (५३)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफ़ी

सफ़ीया

रज़िअल्लाहु अन्हा

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफ़ी हज़रत सफीया रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हुआ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी क़ब्र पर खड़े हुए और फरमाने लगे। قُوْلِيْ نَبِيِّيْ مُحَمَّدٌ اِبْنُ اَخِيْ

यानी ऐ फूफ़ी! कह दीजिए। कि मेरा नबी मुहम्मद मेरा भतीजा है।" लोगों ने कहा। या रसूलुल्लाह यह क्या बात है ? फरमाया इस वक़्त मुनकर नकीर सफीया से सवाल कर रहे हैं कि तेरा दीन क्या है ? और वह बिल्कुल हैरान व परेशान है। मैंने उनसे कह दिया है कि आप उनसे जवाब में यह कह दें। कि نَبِيِّيْ مُحَمَّدٌ اِبْنُ اَخِيْ मेरा नबी मुहम्मद मेरा भतीजा है। हाज़िरीन ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अपनी फूफ़ी को तो आपने तल्क़ीन कर दी। हमें कौन तलक़ीन करेगा ? उस पर ख़ुदा तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई।

يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ.

इमाम राज़ी अलैहिर्रहमा ने फरमाया कि क़ौले साबित से मुराद बन्दा का यह कहना है कि ख़ुदा मेरा रब है। मुहम्मद मेरा नबी। और दीन मेरा इस्लाम है। "क्योंकि यह आयत मुंकर नकीर के सवाल के बारे में नाज़िल हुई है।" (नुज़हतुल-मजालिस स० ५४, जि. १)

सबक़

क़ब्र में हर मैयत के पास मुंकर नकीर आते हैं और पहला सवाल यह करते हैं कि तेरा रब कौन है। दूसरा यह कि तेरा दीन क्या है? और तीसरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतअल्लिक़ कि उनके हक़ में तू क्या कहता है ? पहले दो सवाल का सही जवाब देने के बावजूद नजात का इंहिसार (दारोमदार) तीसरे सवाल के सही जवाब देने पर है। इसीलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी फूफ़ी को जामे जवाब देने की तलक़ीन फरमाई कि यूं कह दीजिए मेरा नबी मुहम्मद मेरा भतीजा है। गोया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिसने अपना नबी मान लिया। उसने अल्लाह को अपना रब भी मान लिया और इस्लाम को अपना दीन भी मान लिया। और जिसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी न माना। वह लाख अल्लाह को रब माने और इस्लाम को अपना दीन कहता फिरे वह नाजी हरगिज़ नहीं बल्कि पाजी है। यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फूफ़ी को जो यह तलक़ीन फरमाई कि वह जवाब में मुझे अपना भतीजा बताए। तो गोया हुज़ूर ने इस नसबी तअल्लुक़ को भी मूजिबे नजात क़रार दिया। फिर जिस मुक़द्दस माँ का यह नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बेटा हो। उसकी नजात में कौन

शक कर सकता है ? और यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नज़र में न सिर्फ़ यह आलम ही है बल्कि आलमे बरज़ुख़ भी है। जभी तो आपने फरमाया। कि क़ब्र में मेरी फूफ़ी से दीन से मुतअल्लिक़ सवाल हो रहा है। और यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नज़र में न सिर्फ़ यह आलम ही है बल्कि आलमे बरज़ख़ भी है। जभी तो आपने फरमाया। कि क़ब्र में मेरी फूफ़ी से दीन के मुतअल्लिक़ सवाल हो रहा है। और यह भी मालूम हुआ कि मुर्दे सुनते भी हैं वरना हुज़ूर का अपनी फूफ़ी से यह ख़िताब फरमाना बेकार था। (मआज़ल्लाह) क्योंकि न फूफ़ी सुनती और न हुज़ूर तलक़ीन फरमूदा जवाब देती और यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदक़ा में अल्लाह तआला हम गुनहगारों को भी **"क़ौले साबित"** पर साबित क़दम रखकर मुंकर नकीर के सवालात के जवाबात हम पर आसान फरमा देगा। मैंने अपनी एक नात में लिखा है।

क़ब्र में सरकार आएं तो मैं क़दमों पर गिरूं
और फरिश्ते गर उठाएं तो मैं उनसे यूं कहूं
कि मैं पाए नाज़ से अब ऐ फरिश्तो क्यों उठूं
मर के पहुंचा हूं यहां इस दिल-रुबा के वास्ते

❖❖❖

हिकायत नम्बर (५४)

एक काफ़िरा औरत का ईमान लाना

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का फतह किया। तो एक रोज़ एक काफिरा औरत की दीवार से अपनी पीठ मुबारक लगा कर खड़े हो गए और अपने असहाब (साथियों) से बातें फरमाने लगे। मैंने इस वाक़या को मंज़ूम किया है। इसके बाद जो कुछ हुआ शे'रों में सुनिए।

लगाया तकिया जब सरकार ने वाँ
तो औरत हो गई बेहद परीशाँ

मुहम्मद की अगर आवाज़ सुन ली
तो फौरन दीन से अपने फिरूंगी

लगी औरत निदा-ए-हक़ से डरने
उठी दरवाज़ा घर का बन्द करने

यही सूरत जो इस औरत की भाई
तो हातिफ़ से उसे आवाज़ आई!

यह घर तेरा मुहम्मद है हमारा
चुकाते यूं हैं हम बदला तुम्हारा

करेंगे हम नहीं नाशाद तुझको
जहन्नम से किया आबाद तुझको

लगे पुश्ते मुहम्मद तेरे घर से
तो फिर तू क्यों जले नारे सक़र से

जो की अल्लाह ने यूं उसकी यारी
तो आंसू हो गए आंखों से जारी

निकल आई वह फौरन अपने घर से
लगी कहने वह फिर ख़ैरुल-बशर से!

कि ताले दिल के भी अब खोल डाले
मेरे दिल में तू आ जा कमली वाले

यह कहकर फौरन कलिमा पढ़कर ईमान ले आई। (नुज़हतुल-मजालिस बाब मनाकिब सैय्यदुल-अव्वलीन वल-आख़िरीन स० ७८, जि. २)

सबक़

यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पुश्ते मुबारक की बरकत है कि एक काफ़िरा औरत के मकान की दीवार को लग गई तो मकान वाली पर दोज़ख़ की आग हराम हो गई और वह मुसलमान हो गई। फिर सहाब-ए-किराम अलैहिमु-रिंजवान की अज़मत शान और उनके ईमान का कौन ब्यान कर सकता है जो हर वक़्त हुज़ूर के साथ रहते थे सिद्दीक़े अक्बर रज़िअल्लाहु अन्हु ने शबे हिजरत हुज़ूर को अपने कंधों पर उठाया

और हुज़ूर का जिस्मे अनवर सिद्दीक़े अकबर के जिस्म से लगा। दिन-रात हुज़ूर अपने सहाबा से मुसाफहा फरमाते और अपने हाथ उनके हाथों से मिलाते एक सहाबी ज़ाहिर किसी गाँवों के रहने वाले थे। मदीना मुनव्वरा में सब्ज़ी बेचने के लिए लाया करते थे। एक रोज़ बाज़ार में वह सब्ज़ी बेच रहे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहाँ से गुज़रे। तो आपने उनके पीछे खड़े होकर अपने दोनों हाथ उनकी आँखों पर रख दिए। हज़रत ज़ाहिर को इल्म न हुआ कि यह कौन हैं ? और कहने लगे कौन है ? हटाओ अपने हाथ मेरी आँखों से। फिर जो पीछे मुड़ कर देखा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नज़र आए। अब तो हज़रत ज़ाहिर अपनी पीठ हुज़ूर के सीने मुबारक से लगा-लगा कर मलने लगे और खुश होकर कहने लगे। हुज़ूर के सीना से अपनी पीठ लगाकर बरकत हासिल करने का ख़ूब मौक़ा मिल गया है। हज़रत ज़ाहिर बज़ाहिर ख़ूबसूरत न थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मज़ाहन फरमाया। مَنْ يَشْتَرِىْ عَبْدًا। कौन है इस गुलाम का ख़रीदार ? हज़रत ज़ाहिर ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! मुझे कौन ख़रीदेगा मैं तो एक नाकारा शख़्स हूँ। हुज़ूर ने फरमाया अल्लाह के नज़्दीक तुम हरगिज़ नाकारह नहीं। (मिश्कात शरीफ़ स० ४०६)

इसी तरह दीगर सहाब-ए-किराम भी हुज़ूर की सोहबत व मुसाफहा और कुर्बत से मुशर्रफ़ होते रहे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़्वाजे मुतह्हरात को तो हुज़ूर से इंतिहाई कुर्बत हासिल थी। फिर उन नुफूसे कुदसीया के ईमान में वही शक कर सकता है जो खुद ईमान से महरूम है।

यह भी मालूम हुआ कि जिस काफिर औरत के मकान की दीवार से लमहा भर के लिए हुज़ूर की पीठ लग गई। वह नजात पा गई और जन्नत की मालिक बन गई तो जिस खुश नसीब माँ के शिकमे अनवर में हुज़ूर नौ माह तशरीफ़ फरमा रहे हों वह क्यों न जन्नत की मालिका और दोज़ख़ की आग से **"आमिना"** होगी? और यह भी मालूम हुआ कि अगर काफिर औरत के मकान की दीवार में हुज़ूर की पीठ की बरकत पैदा हो सकती है तो ज़मीन के जिस हिस्सा में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जिस्मे अनवर मौजूद है यानी क़ब्रे अनवर इस ज़मीन की चार दीवारी में हुज़ूर की बरकत क्यों पैदा न होगी ? और रोज़ा मुनव्वरा की मुबारक जालियों से मस करने वाले मुँह और हाथ क्यों न जहन्नम की आग से आज़ाद होंगे?

यह भी मालूम हुआ कि इस मोमिना औरत ने तो दिल के ताले खोल कर हुज़ूर से अर्ज़ किया था।

मेरे दिल में तू आ जा कमली वाले

लेकिन आजकल की माडर्न औरत मुँह से हिजाब खोल कर किसी से कहती है।

आ जा मोरे बालमा

❖❖❖

हिकायत नम्बर (55)

बा-हया औरत

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माना में एक जाहिल औरत बड़ी बद-ज़ुबान थी। मर्दों से लड़ती झगड़ती रहती और बहुत बे-हयाई की बातें किया करती थी। एक रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से गुज़री जबकि हुज़ूर खाना तनावल फरमा रहे थे। उसने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह! मुझे भी अपने खाने से कुछ अता फरमाइए ताकि मैं आपका तबर्रुक खाऊं। लेकिन या रसूलुल्लाह! आपके खाने का जो लुक़्मा आपके मुंह में हो वह मुझे दीजिए। चुनांचे हुज़ूर ने अपने मुंह से लुक़्मा निकाल कर उसे दिया जिसे वह खा गई। जिसका असर यह हुआ कि उस औरत में इतनी शर्म व हया पैदा हो गई कि मरते दम तक फिर से किसी से लड़ते झगड़ते यां बद-ज़ुबानी करते नहीं देखा गया।

(हुज्जतुल्लाहि अलल-आलमीन स० ४३६)

सबक़

यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लुआबे दहन शरीफ़ की बरकत है कि आपके लुआब आमेज़ लुक़्मा खाने से बे-हया औरत बा-हया औरत बन गई। और उसकी सारी जिहालत व बद-ज़ुबानी दूर हो गई। एक

आजकल के बाज़ मंहूरा लोग ऐसे भी हैं कि नौ-मौलूद बच्चे को सिर्फ़ अपनी उंगली से शहद की घुट्टी भी दें तो वह बच्चा बड़ा होकर बद-ज़ुबान और बे-हया बन जाता है। यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सरापा नफ़ासत व तहारत थे। हुज़ूर के खुद्दाम आपके मुँह मुबारक की चीज़ को इंतिहाई शौक़ से खा लेते थे। आजकल का कोई बड़े से बड़ा साफ सुथरा शख़्स भी क्यों न हो। उसके मुँह की चीज़ खाने से घिन आती है।

जिससे खारी कुएं शीरा जां बनें
उस ज़लाल हलावत पे लाखों सलाम

हिकायत नम्बरं (56)

माँ

एक शख़्स की जांकनी के वक़्त कलिम-ए-शहादत पढ़ने से ज़ुबान बन्द हो गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके पास तशरीफ़ ले गए और लोगों से दरयाफ़्त किया कि क्या यह शख़्स नमाज़ पढ़ता था? रोज़े रखता था? कहा गया हाँ ऐ रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह नमाज़ भी पढ़ता था। रोज़े भी रखता था। फरमाया क्या उसने अपनी मां की नाफरमानी भी की थी? अर्ज़ की हां या रसूलुल्लाह! वाक़ई यह एक मां की नाफरमानी करता था। आपने उसकी मां को बुला कर फरमाया। तू अपने बच्चे की ख़ता माफ़ कर दे आख़िर है तो तुम्हारा ही लख़्ते जिगर। मां ने इंकार कर दिया क्योंकि उसने एक मौक़ा पर मां की आंख फोड़ दी थी और सख़्त दिल दुखाया था आपने फरमाया। अच्छा जब यह माफ़ नहीं करती तो मां के गुस्ताख़ का हश्र देखो। बहुत सी लकड़ियां जमा करो और उन्हें आग लगा दो। और उसे दहकती हुई आग में डाल दो। मां ने जब यह बात सुनी तो बेताबाना लेहजा में कहा। या रसूलुल्लाह! यह मेरे पेट में नौ महीने रहा है दो साल उसने मेरा दूध पिया है। उसे मैं आग में जलते कैसे देख सकूंगी? लीजिए मैंने उसकी ख़ता माफ़ की। उधर ने मां माफ किया। इधर उसके बच्चे की ज़ुबान से निकला।

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

(नुज़हतुल-मजालिस किताबु—ज़िक्र स० ५२, जि.१)

सबक़

मालूम हुआ कि मां का बहुत बड़ा दर्जा है। मां के बे-अदब व गुस्ताख़ का अंजाम अच्छा नहीं होता। हां अगर मां माफ कर दे तो उसकी नजात मुम्किन है और आज कल की तहज़ीब का तो यह आलम है कि –

हम ऐसी सब किताबें क़ाबिले ज़ब्ती समझते हैं
कि जिनको पढ़ के बेटे बाप को ख़ब्ती समझते हैं

इस तहज़ीब में तो मां-बाप का अदब है ही नहीं। यह इस्लामी तहज़ीब है जो मां के क़दमों के नीचे जन्नत बताती है और मग़रबी तहज़ीब तो बीवी के क़दमों में गिराती और मां से दूर हटाती है। कहते हैं एक मिस्टर की वाइफ़ मिस्टर से लड़ झगड़ रही थी। और वह बेचारा सर झुकाए खामोश सुन रहा था। वाइफ ने जो और जली कटी सुनाई तो मिस्टर बोला।

"क्या करूं रिश्ता ही बड़ा नाज़ुक है। तुम्हारी जगह मेरी मां होती तो हड्डी पस्ली एक कर देता।" यह है मग़रेबी तहज़ीब का फरज़न्द। बीवी का नौकर और मां का अफ़सर। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले ही फरमा दिया है कि

اَنْ تَلِدَالْاَمَةُ رَبَّهَا (मिशकात)

क़यामत के क़रीब मां अपना बेटा नहीं अफसर जनेगी।"

और ऐसी माओं का जो अपने बच्चों को इस्लामी तालीम नहीं देतीं और शुरू ही में अंग्रेज़ी स्कूलों में दाख़िल करा देती हैं। अपना क़ुसूर भी है जो यह चाहती हैं कि हमारा बेटा माडर्न हो। जन्टिलमैन हो अंग्रेज़ नज़र आए। फिर ऐसा बेटा जब साहिबे बहादुर बनेगा तो वह अपनी मेम के लिए तो साहब होगा और मां के लिए बहादुर। इसलिए माओं का भी यह फ़र्ज़ है कि वह अपनी औलाद को पहले दीनी तालीम दें। फिर कुछ और पढ़ाएं।

यह भी मालूम हुआ कि आदमी नमाज़ रोज़े का पाबन्द हो जाने के बावजूद माँ की बे-अदबी करने से भी जला देने के क़ाबिल हो जाता है तो जो शख़्स कुरआन का दर्स भी दे, नमाज़ भी पढ़े, रोज़ा भी रखे, दाढ़ी भी रखे, तबलीग़ भी करे लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बे-अदब हो, वह क्यों न जहन्नम की आग में जलने के क़ाबिल होगा।

नमाज़ रोज़ा हुकूकुल्लाह हैं और माँ का अदब हुकूकुल-इबाद में से है।

वह शख़्स हुकूकुल्लाह तो पूरे करता रहा। मगर मरते वक़्त उसका अंजाम ख़तरे में इसलिए पड़ गया क्योंकि उसने मां का हक़ अदा नहीं किया था। मां अगर माफ़ न करती। यानी न छुड़ाती। तो वह आग से कभी न बचता। इसी तरह नमाज़ व रोज़ा हज व ज़कात हुकूकुल्लाह पूरे अदा करने वाला जो शख़्स हुज़ूर का गुस्ताख़ होगा क़यामत के रोज़ उसका अंजाम ख़तरे में पड़ जाएगा। क्योंकि उसने अपने रसूल का हक़ अदा नहीं किया था। जब तक हुज़ूर उसे खुद माफ़ न फरमाएंगे ख़ुदा उसे हरगिज़ न छोड़ेगा। यही माना है इस शे'र का कि –

ख़ुदा जो पकड़ ले छुड़ा ले मुहम्मद
मुहम्मद जो पकड़े छुड़ा कोई नहीं सकता

यानी हुकूकुल्लाह अदा न करने पर ख़ुदा जिसे पकड़ेगा हुज़ूर अपने शफ़ाअत से उसे छुड़ालेंगे और जिसने हुज़ूर की हक़ तलफ़ी यानी बे-अदबी की होगी उसे अगर हुज़ूर ने पकड़ लिया। तो उसे ख़ुदा भी नहीं छोड़ेगा।

❖❖❖

हिकायत नम्बर (57)

नमरूद की लड़की

नमरूद की एक कमसिन लड़की ने अपने बाप से कहा। अब्बा जान! मुझे इजाज़त दें कि में इब्राहीम को आग में जलता हुआ देखूं। नमरूद ने इजाज़त दे दी और उसने आग के क़रीब पहुँच इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखा कि आपके इर्द गिर्द आग भड़क रही है। उसने किसी ऊँची जगह पर चढ़ कर देखा तो आग के शोले आसमान से बातें कर रहे थे मगर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बिल्कुल सही सालिम तशरीफ़ फरमा रहे थे। हैरत में आकर पूछने लगी। इब्राहीम इतनी बड़ी आग तुम्हें जलाती क्यों नहीं फरमाया। जिसकी ज़ुबान पर بسم الله الرحمن الرحيم जारी हो और दिल में ख़ुदा की मारिफ़त का नूर हो, उस पर आग का असर नहीं होता। लड़की बोली। इब्राहीम! मैं भी तुम्हारे पास आना चाहती हूँ। मगर चारों तरफ तो आग के शोले भड़क रहे हैं। आऊँ कैसे फरमाया। لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ اِبْرَاهِيْمُ رَسُوْلُ اللهِ कहकर बे-ख़ौफ़ चली आओ। लड़की ने इस पाक कलिमे को पढ़ा। और फौरन आग में कूद पड़ी। ख़ुदा की

कुदरत आग उस पर सर्द हो गई। और वह उसमें सही सालिम ज़िन्दा रही। जब इब्राहीम के पास से अपने घर वापस आई और बाप को सारी सर-गुज़श्त सुनाई तो नमरूद ने कहा देख मैं तेरे भले की कहता हूँ। दीने इब्राहीम से बाज़ आ। और बुतों की पूजा से मुंह न फेर वरना अच्छा न होगा। नमरूद ने अगरचे लड़की को बहुत डराया धमकाया मगर उसने एक न मानी आख़िर मलऊन नमरूद ने उस ख़ुदा की प्यारी पर बड़ी सख़्तियाँ कीं। जब उसकी सख़्तियाँ हद से बढ़ गईं तो ख़ुदा के हुक्म से जिब्रील आए और उस ख़ुदा की प्यारी को वहाँ से उठा कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास पहुँचा दिया। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसे अपने लड़के के निकाह में दे दिया। जिससे ऊलुल-अज़्म पैग़म्बर पैदा हुए।

(नुज़हतुल-मजालिस किताबुज़्ज़िक्र स०५४, जि.१)

सबक़

ख़ुदा की एक शान यह भी है। يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ मुर्दे से ज़िन्दा को पैदा कर देता है। नमरूद जैसे काफ़िर से अल्लाह ने ऐसी मोमिना लड़की पैदा की जो पैग़म्बरों की मां बनी। मालूम हुआ कि जिसकी ज़ुबान पर कलिम-ए-तौहीद जारी और दिल में इरफ़ान बारी हो वह आग से बरी है। दीन से प्यार की बदौलत नमरूद की बेटी पर भी आग गुलज़ार हो गई। बाप को छोड़ा मगर दीन से मुँह न मोड़ा। यह है पाकबाज़ मोमिना औरत का किरदार। और आजकल की माडर्न औरतों का किरदार यह है कि यूरोप ने जो दीने हक़ के जलाने को आतिशकद-ए-फ़ैशन तैयार कर रखा है।

यह माडर्न औरतें बड़े शौक़ से उसमें कूद रही हैं। दहकती आग में कोयला डालिए तो वह भी काला नहीं रहता सुर्ख़ हो जाता है। ऐसी माडर्न औरतें काली रंगत के साथ आतिशकद-ए-फ़ैशन में कूद कर सुर्ख़ी पौडर की बदौलत काली से सुर्ख़ हो कर निकलती हैं। हालांकि कोयला थोड़ी मुद्दत के बाद ठंडा हो जाने पर फिर वही काले का काला नज़र आने लगता है। इसी तरह ऐसी औरतें भी थोड़ी देर के लिए सुर ख़ुरू नज़र आएंगी। मेकअप उड़ जाने पर फिर वही काली की काली। मैंने लिखा है।

लाख पौडर अपने चेहरे पर मलें
फिर वही काले का काला रंग है

एक दूसरी नज़्म में लिखा है :

काली चिमनी पे यह पौडर की सफेदी मल कर
बुत अय्यार तू धोखा न दे परवाने को

नमरूद की लड़की की खुश क़िस्मती देखिए कि काफ़िर की बेटी होकर पैग़म्बरों की माँ बन गई और आज मुसलमान की बेटियाँ होकर हिप्पियों और टिड्डियों की माएं बन गईं। ऐ मेरी माँ बहनो! नमरूद की बेटी की तरह ज़ुबानों पर कलमा जारी रखो और दिल में इरफ़ाने बारी पैदा करो। मुसलमान ज़ादियाँ बनो और मुजाहिद व ग़ाज़ी जनो।

करो पैदा मुसलमां और नमाज़ी!
धनी तल्वार के मैदां के ग़ाज़ी

❖❖❖

हिकायत नम्बर (58)

फिरऔन की बेटी की कंघी करने वाली

फिरऔन की बेटी की कंघी करने वाली हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ला चुकी थी। एक दिन वह कंघी कर रही थी कि कंघी हाथ से नीचे गिर पड़ी। उसके मुँह से बे-साख़्ता निकला। ख़ुदा के काफ़िर का बुरा हो।"

फिरऔन की बेटी ने पूछा। कौन से ख़ुदा का तुमने ज़िक्र किया है। बोली जिस ख़ुदा का पता मूसा अलैहिस्सलाम ने दिया है। फिरऔन की बेटी तैश में आकर बोली। क्या तुम भी मूसा अलैहिस्सलाम को मानती हो और मेरे अब्बा के ख़ुदा होने का इंकार करती हो? बोली बेशक तुम्हारा बाप झूठा है ख़ुदा वही एक ख़ुदा है। जिसने मुझे तुझे और तुम्हारे बाप को भी पैदा किया और मूसा अलैहिस्सलाम को अपना पैग़म्बर बनाकर भेजा। फिरऔन की बेटी ग़ुस्सा में आकर अपने बाप के पास पहुंची और सारा क़िस्सा उसे सुना दिया। फिरऔन ने उस मोमिना लड़की को बुला कर पूछा कि क्या यह बात सच्ची है जो मैंने अपनी बेटी से सुनी है। बोली बिल्कुल सच है। मैं तुझे ख़ुदा हरगिज़ नहीं मानती। और मूसा अलैहिस्सलाम

का कलमा पढ़ती हों। फिरऔन ने जल्लाद को बुला कर उसे लिटा कर उसके हाथ और पैरों में मेंखें ठुकवा कर उसे सख़्त ईज़ा दी। फिर उसकी एक दूध पीती बच्ची को मंगा कर उसके सामने लिटा कर हुक्म दिया कि मां के सामने इस बच्ची को ज़बह कर दो। यह मंज़र देखकर मोमिना बे-इख़्तियार चीख़ उठी उसी वक़्त दूध पीती बच्ची को ख़ुदा ने ज़ुबान अता फरमाई। और कहने लगी ऐ माँ।

मत परीशां हो तू सब्र व शुक्र कर
मैंने देखा है तेरा जन्नत में घर

ऐ माँ! ख़बरदार अपना ईमान न छोड़ना। सब्र व शुक्र से मेरी और अपनी तक्लीफ़ बर्दाश्त कर। ख़ुदा ने तुम्हारे लिए जन्नत में घर बना रखा है। थोड़ी देर के बाद हम दोनों वहाँ पहुंच कर अबदी राहत पा लेंगी। चुनांचे ज़ालिम ने दोनों को शहीद कर दिया।

(नुज़हतुल-मजालिस स० १६२, जि. १ बाबुल-जिहाद)

सबक़

सबसे बड़ी अल्लाह की एक नेमत इस्तिक़ामत भी है सैंकड़ों ज़ोर व ज़ुल्म होने के बावजूद अपने मसलके हक़ पर डटे रहना बहुत बड़ा जिहाद है। ख़ुदा फरमाता है।

اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰہُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَیْہِمُ الْمَلٰٓئِکَۃُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّۃِ الَّتِیْ کُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ۔

(प.२४, अ.१८)

वह जिन्होंने कहा। रब हमारा अल्लाह है। फिर उस पे क़ायम रहे उन पर फरिश्ते उतरते हैं कि न डरो। और न ग़म करो। और ख़ुश हो। उस जन्नत पर जिसका तुम्हें वादा दिया जाता था।"

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा और सहाबियात अह्ले बैते इज़ाम और उनके सदक़ा में औलिया-ए-किराम और सच्चे मुसलमानों में भी इस्तिक़ामत पाई जाती है। सहाब-ए-किराम दुशमनों के इंतिहाई मज़ालिम होते मगर उनका यही नारा होता था कि –

जान जाए माल व दौलत घर लुटे
दामने अहमद न हाथों से छुटे

लेकिन अफसोस आज कल बेरादरी की ख़ुशी हासिल करने के लिए

शरीअ़त को छोड़ दिया जाता है। मुसलमान का शेवा यह होना चाहिए कि या रसूलुल्लाह! मेरे अमल से न भाई खुश हैं न अपने खुश हैं न बाप खुश हैं, मगर मैं समझता हूं कि उसकी दलील यह है कि आप खुश हैं।

❖❖❖

हिकायत नम्बर (59)

राबिआ बसरिया

हज़रत शाह ग़ौस अलैहिर्रहमा तज़किरा ग़ौसिया में लिखते हैं कि हज़रत राबिआ बसरिया को किसी शख़्स ने रंडी के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। चूंकि आप बड़ी हसीना व जमीला थीं। रंडी ने उन्हें ज़ेवर व लिबास से आरास्ता करके बालाखाना पर बिठा दिया। मुश्ताक़ों का हुजूम होने लगा मगर ब-वक़्ते शब जो शख़्स रंडी की इजाज़त से अन्दर आता। आप उससे कहतीं कि अव्वल वज़ू करके दो रकाअत नफ़िल पढ़ ले। वह वज़ू करके नफ़िल पढ़ता तो आप अपनी हिम्मत बातनी से उसकी तरफ तवज्जोह देतीं तो वह कांपने लगता और आपके हाथ पर तौबा करके बिल्कुल निकल जाता। साल भर तक ऐसा ही होता रहा और सैंकड़ों बदमआश नेक और पार्सा बन गये। रंडी ने ख़्याल किया कि यह क्या बात है जो शख़्स एक बार आता है फिर आने का नाम तक नहीं लेता। हालांकि उसके हुस्न व जमाल में कोई कसर नहीं। एक रात उसने छुप कर देखा और उनका मामला देखकर सुबह हज़रत राबिआ के क़दमों में गिर पड़ी और कहने लगी। मेरा कुसूर माफ करो। मुझको आपकी शान का पता न था। मैंने आपको आज़ाद किया। आपने फरमाया। अरी अहमक़ तुमने मुझे आज़ाद क्या किया। यह फ़ैज़ जो जारी था उसे बर्बाद किया।

(तज़किरा ग़ौसिया स० २०५)

सबक़

राबिआ बसरिया यह अल्लाह की सच्ची लौंडी थी मगर अल्लाह वालों की शान से बे-ख़बर रंडी मार्का कि किसी शख़्स ने उन्हें आम लौंडी समझ कर रंडी के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। रंडी ने भी हज़रत राबिआ बसरी को

अपना मिसल समझ लिया और अपनी तरह उन्हें भी बालाखाना पर बिठा दिया। गोया रंडी ने बाला शान को अपनी मिसल बालाखाना के लाइक़ समझ लिया। हज़रत राबिआ ने बालाखाना पर बैठ कर पस्ती में गिरे हुवों को बालाशान बनाना शुरू कर दिया। रंडी हज़रत राबिआ की अज़्मत व शान को न समझ सकी लेकिन कुछ दिनों के बाद हज़रत राबिआ के फैज़ान ने उस रंडी को भी नवाज़ दिया और उस पर भी अल्लाह वालों की शान ज़ाहिर कर दी और वह बालाखाना वाली रंडी भी राबिआ के क़दमों पर गिर कर बालाशान हो गई। मालूम हुआ कि आजकल के बाला नशीन लोग उन अल्लाह वालों को हक़ीर व पस्त ख़्याल करते हैं हालाँकि यह लोग बरा-ए-नाम बाला नशीन होते हैं और अल्लाह वाले सच-मुच बालाशान होते हैं और उन अल्लाह वालों के फैज़ का यह आलम होता है कि –

न किताबों से न कालेज के है दर से पैदा
दीन होता है बुजुर्गों की नज़र से पैदा

यह भी मालूम हुआ कि यह बाला नशीन लोग लोगों को गुनाहों पर उभारते हैं और बालाशान हज़रात लोगों को गुनाहों की पटरी से उतारते हैं। यह भी मालूम हुआ कि ज़ेवर व लिबास से मुज़ैय्यन हो के औरत का बालाखाना पर बैठना या ख़ाविन्द के साथ बाहर जाना रंडी का किरदार अदा करना है। चुनांचे एक लतीफा सुन लीजिए। एक साहिबे बहादुर की बीवी बन ठन कर साहब के साथ बाहर निकली तो रास्ते में एक शख़्स ने साहिबे बहादुर से पूछा। क्यों साहब! यह कोई तवाइफ है? साहब गुस्से में आकर बोला। डीम फूल यह तो हमारी वाइफ़ है मेरी नसीहत सुनिए।

तू जो औरत है तो औरत बन के रह
अपने घर वालों की इज़्ज़त बन के रह
बे-हिजाबी पर कभी मायल न हो!
घर पे रह और रौनक़े महफिल न हो

❖❖❖

हिकायत नम्बर (60)

राबिआ अदविया

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ईसा एक रोज़ हज़रत राबिआ अदविया की ख़िदमत में हाजिर हुए। उनके चेहरे पर एक नूरानी कैफ़ियत तारी थी ख़ौफ़े ख़ुदा से आँखें पुरनम थीं और एक बोसीदा से बोरिए पर बैठी हुई थीं। एक शख़्स ने उनके सामने कुरआन पाक की ऐसी आयात की जिसमें अज़ाबे क़ब्र का तज़किरा था तिलावत की तो आँसू टप-टप उनकी आँखों से गिरने लगे। फिर एक चीख़ बलन्द हुई और बे-होश हो गईं। मसमा इब्ने आसिम कहते हैं। एक दफा एक शख़्स ने उनकी ख़िदमत में चालीस दीनार पेश किए। और कहा कि आप उससे अपनी ज़रूरियात पूरी कीजिए। यह सुनते ही वह रोने लगीं। फिर आसमान की तरफ मुँह करके फरमाया। वह ख़ूब जानता है कि दुनिया मांगते हुए मैं उससे भी शरमाती हूँ हालांकि सब चीज़ें उसके क़ब्ज़ा में हैं। फिर ऐसे शख़्स से कैसे लूं जिसकी कोई हैसियत नहीं।

(बहवाला ताज कराची शुमारा जनवरी ६३)

सबक़

कुरआन पाक बड़ा ही मुअस्सिर कलाम (असरदार) है। कोई उसे समझने वाला हो तो ख़ौफ़े ख़ुदा से आँखें आँसू बहाने लगती हैं। हमारी बे-समझी और दुनियवी ख़्वाहिशात की वजह से हम पर कुरआन का असर अगर नहीं होता तो यह इसलिए कि कुरआन और हमारे दिलों के दरम्यान दुनियवी ख़्वाहिशात हायल हैं। बिजली तार के ज़रिए बल्ब को रोशन कर देती है लेकिन अगर तार और बलब के दरम्यान रबड़ या लकड़ी हायल हो जाए तो बिजली का असर बलब पर कुछ नहीं होता और यह बिजली का नक़्स नहीं। उसकी वजह मुअस्सिर और मुतअस्सिर के दरम्यान रबड़ या लकड़ी का हायल हो जाना है। कुरआन में तो वही तासीर है जो पहले थी। मगर कुरआन और हमारे दिलों के दरम्यान दुनियवी ख़्वाहिशात का रबड़ और जिहालत की लकड़ी हायल है जिसकी वजह से हमारे दिलों पर कुरआन का असर नहीं होता। वरना कुरआन का असर तो इतना यक़ीनी है कि बड़े-बड़े सहाब-ए-किराम उसे सुनकर बेहोश हो जाया करते थे। हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु जैसा दिलेर व शुजा अमीरुल-मोमिनीन घोड़े

पर सवार है। किसी क़ारी की यह आयत कानों में पड़ी।

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ مَالَهٗ مِنْ دَافِعٍ۔

यानी रब का अज़ाब आ जाए तो उसे कोई रोक नहीं सकता।"

हज़रत उमर इस आयत की हैबत से बे-होश होकर घोड़े से गिर पड़े। पहले ज़माना की औरतों पर भी उसका असर होता था। मगर अफ़सोस कि आजकल मर्दों का भी यह आलम है कि –

इसका कुछ ग़म नहीं कुरआन की तिलावत से गए
ग़म है गर मेज़ न हो मेज़ पे अख़बार न हो

यह भी मालूम हुआ कि पहले ज़माना की नेक औरतें दिरहम व दीनार से प्यार न रखती थीं और वह ख़ुदा से भी मांगते हुए शरमाती थीं और आजकल की औरतें तो यह चाहती हैं कि ख़ाविन्द चाहे कैसा हो लेकिन उसके पास पैसा हो। हुज़ूर ने फरमाया कि रिश्ता करते वक़्त माल व जमाल को न देखो क्योंकि इ़ज़्ज़त दीन से मिलती है मगर आजकल? मैंने अपनी माडर्न मसनवी में लिखा है।

पहले तो इ़ज़्ज़त थी नेक आमाल से
और अब बनती है इ़ज़्ज़त माल से

यहाँ एक लतीफ़ा भी सुन लीजिए आशिक़ ने अपनी महबूबा से कहा अगर मैं दौलतमन्द हो जाऊं तो तुम मुझसे मुहब्बत करोगी? महबूबा बोली। मुहब्बत की बात रहने दो। शादी ज़रूर करूंगी।" मालूम हुआ कि नेक औरत को प्यार होता है रब्बे क़दीर से और माडर्न औरत को शौहरे अमीर से।

कोई महवे यादे ख़ुदा हो गई
कोई माल व ज़र पर फिदा हो गई

❖❖❖

हिकायत नम्बर (61)

बुरदा आबिदा

हज़रत अत्तार बिन मुबारक फरमाते हैं। बसरे में एक इबादत गुज़ार औरत रहती थी। जिसका नाम बुरदा था। जब रात ढलने लगती और पूरी दुनिया नींद की आग़ोश में पहुंच जाती तो बिस्तर छोड़ कर उठ जातीं और फरमातीं "सितारे ढलने लगे। एक दूसरे के चाहने वाले आपस में मिल रहे हैं। लेकिन ऐ मेरे महबूब! मैं तेरी राह में बैठी हूँ। तेरी मुहब्बत की रोशनी मेरे दिल में फैल रही है क्या इस पर भी तू मुझे अज़ाब देगा। हालाँकि तेरी मुहब्बत मेरे दिल में है। नहीं! नहीं! ऐ ख़ुदा! ऐ मेरे महबूब! ऐसा न करना अत्तार कहते हैं। उनकी आवाज़ में बला का दर्द होता था।

(ब-हवाला ताज कराची शुमारा जनवरी ७३ ई०)

सबक़

पाकबाज़ और सच्ची मुसलमान औरतों का यही किरदार होता है कि वह अपने बिस्तर से उठकर अल्लाह का ज़िक्र करने लगती हैं। जब सारा आलम सोता है इस क़िस्म की पाकबाज़ औरतों का दिल ख़ुदा की मुहब्बत से मुनव्वर होता है लेकिन आजकल की माडर्न औरतें अपने बिस्तर छोड़ कर कलब में पहुंच जाती हैं और किसी की इंतिज़ार में कहने लगती हैं। एक दूसरे के चाहने वाले आपस में मिल रहे हैं।

लेकिन डार्लिंग! मैं तेरी राह तक रही हूँ। क्या मुझे इंतिज़ार के अज़ाब में मुब्तला करेगा। पहली औरतों की दुआ में दर्द पैदा हो जाता था। और आजकल माडर्न औरतों के दिल में दर्द पैदा हो जाता है और उनकी दुआ यह होती है।

या इलाही मिट न जाए दर्दे दिल

और यह भी मालूम हुआ कि नेक औरत का दिल ख़ुदा की मुहब्बत की रौशनी से चमक उठता है और माडर्न औरत का दिल ग़ैर के इश्क़ से भड़क उठता है। उन औरतों के दिलों में हुब्बे ख़ुदा से रौशनी और सवेरा होता था और इनके दिलों में फ़ैशन की बदौलत सियाही और अंधेरा होता है।

मुनव्वर है वह दिल जिसमें इलाही! ज़िक्र तेरा है
नहीं जिस दिल में तेरी याद उस दिल में अंधेरा है

हिकायत नम्बर (62)

रफ़ीक़-ए-जन्नात

हज़रत अब्दुल-वाहिद रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं। मैंने अल्लाह तआला से तीन रात यह सवाल किया ऐ अल्लाह! मुझे उस शख़्स को दिखा दीजिए जो जन्नत में मेरा रफ़ीक़ हो। इर्शाद हुआ कि ऐ अब्दुल-वाहिद! जन्नत में तेरा रफ़ीक़ मैमूना सौदा है। मैंने अर्ज़ किया। वह कहाँ है? इर्शाद हुआ कि वह कूफ़ा में फलां क़बीला में है। मैं क़बीला में उसी पता पर गया और लोगों से उस नाम की औरत का पता पूछा। लोगों ने बताया कि वह तो एक मजनूना औरत है। बकरियाँ चराया करती है। मैंने कहा। मैं उसे देखना चाहता हूँ। कहा कि फलां जंगल में चले जाओ। वह वहां मिलेगी। मैं उस मक़ाम पर गया। देखा तो वह खड़ी नमाज़ पढ़ रही है और उसके सामने एक असा है और एक ऊन का कपड़ा पहने हुए है और उसके कपड़े पर लिखा हुआ है। "कि यह न बेची जा सकती है न खरीदी।" और एक अजीब वाक़िया देखा। कि बकरियाँ और भेड़िए एक ही जगह चर रहे हैं। न तो भेड़िए बकरियों को खाते हैं और न बकरियाँ भेड़ियों से डरती हैं। जब उसने मुझे देखा तो नमाज़ को मुख़्तसर किया और सलाम फेर कर कहा ऐ इब्ने ज़ैद! इस वक़्त जाओ। यह वक़्त वादा का नहीं है। कल आना। मैंने पूछा तुझे किसने बताया कि मैं इब्ने ज़ैद हूँ। कहा क्या यह ख़बर नहीं कि हदीस में आया है कि अरवाह लशकर की तरह एक जगह हैं। जिन अरवाह में वहाँ तआरुफ़ हो गया वह यहाँ भी एक दूसरे से उलफ़त करते हैं और जो वहाँ एक दूसरे से अंजान रहे, उनका यहाँ भी इख़्तिलाफ़ है। मैंने फिर पूछा कि भेड्रियों और बकरियों ने आपस में सुलह कब से कर ली है। बोली जबसे मैंने अपने मौला से सुलह कर ली है। (नुज़हतुल-बसातीन स० ७६)

सबक़

नेक, पाकबाज़, और आबिदा औरत गोया जन्नत की हूर है। और वह हर वक़्त अल्लाह की याद में रहती है और नेक, पाकबाज़, और अब्दे मर्द की जन्नत में रफ़ीक़-ए-हयात बनेगी और उन पाकबाज़ अरवाह का रोज़े अज़ल ही में तआरुफ़ हो चुका होता है। यह भी मालूम हुआ कि नेक औरत की नेकी की बरकत से भेड़िए और बकरियाँ की अज़ली दुश्मनी भी दूर हो

जाती है और उनकी आपस में मेल मिलाप हो जाती है और आजकल की बाज औरतें तो ऐसी होती हैं कि जिस घर में गईं रिश्तादारों में भी दुश्मनी पैदा कर देती हैं। भाई को भाई से, बेटे को माँ से लड़ा देती हैं। और जिनका अज़ली रिश्ता मुहब्बत होता है, उसे भी तोड़ डालती हैं। गोया ऐसी औरत जन्नत की हूर नहीं दोज़ख़ की डाइन होती है।

❖❖❖

हिकायत नम्बर (63)

एक शहज़ादी

हज़रत ख़्वास फरमाते हैं। मेरे दिल में रूम के शहरों में जाने और वहाँ की सैर करने का ख़्याल पैदा हुआ और मैं रूम को चल पड़ा जब मैं रूम पहुंचा तो वहाँ के आदमियों को एक जगह जमा पाया और देखा कि वह किसी गहरी फिक्र में डूबे हुए हैं और एक अजीब उलझन में गिरफ़्तार हैं। यह देखकर मुझसे न रहा गया और मैंने उनसे पूछा कि तुम किस फिक्र में मुब्तला हो। उन्होंने बताया कि हमारे बादशाह की बेटी मजनून हो गई है। मैंने कहा कि मैं उसके इलाज के लिए तैयार हूँ। मुझे उसके पास ले चलो। अगर बादशाह मंज़ूर कर ले तो उसका इलाज मैं करूंगा लोगों ने पूछा क्या आप तबीब हैं। मैंने कहा। मैं तबीब तो नहीं। हाँ उसका ग़ुलाम ज़रूर हूँ। यह सुनकर उन्होंने मुझे बादशाह के पास पहुंचा दिया। बादशाह मुझे अपनी बेटी के पास ले गया। शहज़ादी ने मुझे देखते ही कहा। ऐ ख़्वास! मुझे उसी तबीब ने जुनून में मुब्तला किया है जिसका तू ग़ुलाम है। मुझे उसकी इस बात से सख़्त तअज्जुब हुआ और हैरत से उसे तकने लगा। उस पर शहज़ादी ने तसल्ली आमेज़ लेहजा में कहा। ख़्वास! तू मेरी इस बात से तअज्जुब न कर। सुन मेरे इस मर्ज़ की इब्तिदा यूँ हुई है कि मैं एक रात अपने ऐश व इशरत में मसरूफ थी कि दफ़अतन जज़्बे इलाही ने मेरे दिल में एक अनोखी कशिश पैदा की और मुझे अपने कुर्बे ख़ास की तरफ खींच लिया। ज़िक्रे इलाही मेरी ज़ुबान पर जारी हो गया और मैंने दुनिया की तरफ से करवट ले ली। मैंने एक कहने वाले को सुना वह इंतिहाई सुरेले लेहजा में कह रहा था।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ وَالرَّسُوْلُ اَحْمَدُ

कह खुदा एक है और उसका पैग़म्बर अहमद है।

उस पर मैंने शहज़ादी से कहा। क्या तू चाहती है कि तू हमारे इस्लामी शहरों में सुकूनत इख़्तियार कर ले। बोली ख़्वास में वहाँ जाकर क्या करूंगी। मैंने कहा शहज़ादी! वहाँ बैतुल-मक़्दिस मक्का और मदीना है। कहा। अच्छा ज़रा अपना सर उठा कर ऊपर को देखो। मैंने जो ऊपर मुँह उठा कर देखा। तो देखता हूँ कि मक्का मुअज़्ज़मा मदीना मुनव्वरा और बैतुल-मक़्दिस हवा में मेरे सर के इर्द गिर्द घूम रहे हैं। फिर कहा। ऐ ख़्वास! जो शख़्स इस जंगल में जिस्म के साथ चलता है। वह बजुज़ पत्थरों और दरख़्तों के ऊपर कुछ नहीं देखता और जो उस राह को दिल से तय करता है तो काबा मुअज़्ज़मा खुद उसके तवाफ करने और इर्द गिर्द घूमने को आता है। उसके बाद एक निहायत ही जोश मुसर्रत के लेहजा में कहा। ऐ ख़्वास! अब दोस्त से मिलने का वक़्त क़रीब आ गया है। मैंने कहा अगर यही बात है तो तुम्हारी मौत बिलादे कुफ़्र (कुफ़्र के शहर) में कैसे होगी। कहा। कोई मुज़ायक़ा नहीं हर चन्द कि हड्डियों की निसबत बिलादे रूम की तरफ होगी। मगर रूह की निसबत ख़ास जनाब इलाही की जानिब होगी और उसका कुर्ब मौला ही की तरफ होगा। यह कहकर वह मुस्कुराई और दुनिया से रुख़्सत हुई। मैंने उसी वक़्त एक ग़ैबी आवाज़ सुनी। कोई कहता है।

يَا اَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِيْ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً

ऐ नफ़्से मुतमइन्ना! तू अपने रब की तरफ लौट आ। इस हाल में कि तू उससे खुश वह तुझसे खुश है।"

(ख़ैरुल-मवानिस फ़ज़्लुन फ़िज़्ज़िक्रे स० ३८, जि.१)

सबक़

अल्लाह वालों को अह्ले दुनिया मजनून ही कहते आए हैं। उन सब अल्लाह वालों के आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी काफिरों ने मजनून कहा। (मआज़ल्लाह!) और खुदा ने उसके जवाब में फरमाया। ,

نٓ۔ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ۔ مَا اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ۔

यानी मुझे (या रसूलुल्लाह!) तेरे नूर की क़सम और क़लम और उसके साथ जो लिखते हैं उसकी क़सम तू रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं।"

फिर उसके बाद, फरमाया।

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْن

जल्द ही तुम खुद और यह भी देख लेंगे कि मजनून कौन था।
(गोया यह खुद मजनून हैं)

ऐसे लोगों के नज़दीक दुनिया को अपनाना फरज़ांगी है। और दुनिया के ख़ालिक़ को अपना लेना दीवानगी। यह भी मालूम हुआ कि खुदा तआला ने नेक औरतों को भी बड़े बलन्द दर्जे अता फरमाए हैं और ऐसी औरतें قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ وَالرَّسُوْلُ اَحْمَد का नग़मा सुनकर मसरूर हो जाती हैं और आजकल की माडर्न औरतें इस क़िस्म के शे'र पढ़ के खुश होती हैं।

यार से छेड़ चली जाए असद
न सही वस्ल हसरत ही सही

यह भी मालूम हुआ कि अगर एक अल्लाह की प्यारी बन्दी के दिल में खुदा की मुहब्बत पैदा हो जाए तो काबा शरीफ़ खुद उसके तवाफ करने को आता है तो जो अल्लाह के प्यारों में सबसे ज़्यादा अल्लाह का प्यारा हो। जिससे बढ़कर अल्लाह को और कोई प्यारा ही न हो। तो वह वजूद बा वजूद उस काबे का भी काबा क्यों न होगा? इसीलिए आला हज़रत ने लिखा है।

हाजियो आओ शहनशाह का रौज़ा देखो
काबा तो देख चुके काबे का काबा देखो

यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह वालों को अपने विसाल का पहले ही इल्म हो जाता है और वह दुनिया से रुख़सत इस शान से होते हैं।

निशान मर्दे मोमिन बा तू गोयम!
चू मर्ग आयद तबस्सुम बर लब ओस्त

❖❖❖

हिकायत नम्बर (64)

दीनदार ख़ातून

अबू-जाफर साइज कहते हैं। एक औरत बहुत दीनदार थी और उसके शब व रोज़ यादे ख़ुदा में सर्फ़ होते थे। वह अपने शौहर से कहा करती। उठो कब तक नींद के मज़े लेते रहोगे। ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो जाओ। यह मदहोशी कब तक रहेगी। यह भी कहती आपको ख़ुदा की क़सम है रिज़्क़ हलाल तरीक़े से कमाइए। अपनी माँ की ख़िदमत कीजिए। रिश्तादारों की ख़बरगीरी कीजिए। वरना अल्लाह आपसे नाराज़ हो जाएगा।

(बहवाला ताज कराची जनवरी ७३ ई०)

सबक़

नेक और पारसा औरत के दिन रात यादे ख़ुदा में सर्फ़ होते हैं और वह दूसरों को भी हत्ता कि अपने शौहर को भी यादे ख़ुदा का दर्स देती है। और रिज़्क़े हलाल का सबक़ देती है। मां-बाप की ख़िदमत पर भी उभारती है और रिश्तादारों से भी अच्छा सुलूक करने की हिदायत देती है मगर आह! आजकल की फ़ैशनज़दा औरत का दिन रात लह्व व लइब में दिन को हाकी और रात को टाकी के (काम, पेशा) में गुज़रता है। दिन रात मैक-अप में मश्ग़ूल और यूरोप का कांटा भी इसके लिए फूल है। रात भर कलब में रहकर दोनों मियाँ बीवी ख़्वाबे ग़फ़लत में ऐसा सो जाते हैं कि खुफ़्ता-रा-खुफ़्ता के कुनद (सोये हुए को कब जगा सकता है) बेदार के मुताबिक़ एक दूसरे को जगाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। पहली औरतें मर्दों को रिज़्क़े हलाल कमाने को कहती थीं मगर आजकल यह ख़ाविन्द को इस्मगलर बनने के लिए मजबूर कर देती हैं बल्कि रिज़्क़े हराम कमाने में ख़ुद भी उसका हाथ बटाती हैं। ऐसी ही एक औरत का लतीफ़ा है कि एक औरत ख़ाविन्द (शौहर) से कहने लगी। धोबन ने हमारे दो तौलि-ए-यक़ीनन चुरा लिए हैं। ख़ाविन्द ने कहा। कई लोग बद सरश्त वाक़े हुए हैं मगर वह दो तौलिए कौन से थे।" बीवी ने कहा। वही जो मैंने कराची के होटल से चुराए थे।" आजकल औरत अपने शौहर को मां-बाप की ख़िदमत से भी रोकती है और हत्तल-इमकान कोशिश करती है कि शौहर उनके क़रीब भी न जाए

और मेरी ख़ातिर अपने रिश्तादारों से भी कनाराकशी करे। शौहर अगर ऐसा न करे तो बीवी नाराज़ हो जाएगी चुनांचे ऐसी ही एक औरत जिसकी सिर्फ़ एक बूढ़ी सास घर में थी अपने शौहर से कहने लगी। मैंने आपकी ख़ातिर अपने मां-बाप छोड़े। अपने चार भाई छोड़े तीन बहनें छोड़ीं। दो फूफ़ियाँ और दो चचे छोड़े गोया सारा कुंबा मैंने सिर्फ़ आपकी ख़ातिर छोड़ा। तो क्या आप मेरी ख़ातिर अपने बूढ़े मां-बाप को भी नहीं छोड़ सकते? मेरी इतनी कुरबानियों के बदले आप एक कुरबानी करें और अपनी माँ को इस घर से निकाल दें। बर-ख़ुरदार शौहर ने बीवी के हुक्म की तामील की और माँ को दूसरे रोज़ किसी किराए के मकान में छोड़ आया। मैंने अपनी एक नज़्म में लिखा है।

जो वह नाज़िर हैं सूरत के तो हम हाफ़िज़ हैं सूरत के
उन्हें प्यारे हैं मह पारे हमें सीपारे कुरआं के
नई तहज़ीब को घर ला के रुख़ फेरा शरीअ़त से
मुरीदे ज़न हुए ऐसे कि बाग़ी बन गए मां के!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (65)

एक सख़ी औरत

एक सालेह शख़्स (नेक आदमी) पर तंगदस्ती के दिन आ गए और उनके पास एक बकरी के सिवा और कुछ न रहा। उनकी बीवी बड़ी नेक पाकबाज़ और सख़ी थी। बक़रईद का दिन आया तो उसके शौहर ने बकरी ज़बह करने का इरादा किया। बीवी ने कहा। हमको कुरबानी न करने की रुख़सत है यानी हम पर कुरबानी वाजिब नहीं। शौहर बाज़ रहा। उसके बाद चन्द रोज़ के बाद उनके घर एक मेहमान आया। बीवी ने शौहर से कहा कि मेहमान के लिए बकरी ज़बह कर डालो। शौहर इस ख़्याल से कि बच्चों को ना-गवार न गुज़रे घर से बाहर ले जाकर बकरी ज़बह की। औरत ने घर में बैठे-बैठे जो ऊपर नज़र उठाई तो क्या देखती है कि बकरी दीवार पर फिर रही है। यहाँ तक कि वह नीचे उतर कर उसके पास आ गई औरत को गुमान हुआ कि शायद भाग आई है। बाहर झांक कर देखा तो बकरी

मज़बूहा शौहर के सामने पड़ी पाई उसको निहायत खुशी हुई। और उसी खुशी में कहने लगी सुबहानल्लाह! अल्लाह ने हमें उस बकरी के एवज़ और अच्छी बकरी दे दी। उस बकरी की ख़ासियत यह थी कि एक थन से शहद और दूसरे थन से दूध देती थी। (ख़ैरुल-मवानिस बाबुल-करम स० ३६१, जि.१)

सबक़

मेहमान नवाज़ी बड़ी अच्छी चीज़ और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है। उस सख़ी औरत ने उस पर अमल किया और तंग दस्ती के आलम में भी अपनी बकरी मेहमान के लिए ज़बह करवा डाली। खुदा तआला ने दुनिया में भी उसे यह अज्र दिया कि उसके एवज एक ऐसी बकरी दे दी जिसमें जन्नत की मानिन्द शहद और दूध की नहरें जारी थीं और आजकल तो मेहमान आए तो औरतें यह देखती हैं कि हमारे लिए क्या लेकर आया है। फुरूट की टोकरी भी उसके साथ है या नहीं। अगर नहीं तो इर्शाद होता है। जनाब रोटी भी तैयार है और गाड़ी भी तैयार है।

मेहमान नवाज़ी : मेहमान नवाज़ी से मुतअल्लिक़ मौलाना रूम ने मसनवी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हिकायत लिखी है कि एक रोज़ हुज़ूर के पास मस्जिद में चन्द काफिर मेहमान आ गए। हुज़ूर ने सहाबा से फरमाया कि हर शख़्स उनमें से एक एक मेहमान अपने घर ले जाए चुनांचे सहाबा एक एक मेहमान को ले गए। उन मेहमानों में एक बहुत बड़ा पेटू भी था। उसे कोई भी साथ न ले गया। हुज़ूर ने उसे देखकर फरमाया कि तुझे कोई नहीं ले गया? बोला! नहीं। फरमाया जिसका कोई नहीं उसका मैं हूँ तू मेरे साथ चल। हुज़ूर उसे घर ले आए और उसके आगे रोटियां और बकरी का दूध रखा। वह सब कुछ खा गया हत्ता कि अह्ले बैत के हिस्से का खाना भी खा गया। हुज़ूर ने रात को उसे एक हुजरा में सुलाया।

अह्ले बैत की एक लौंडी ने उस हुजरा का दरवाज़ा बन्द करके बाहर से कुंडी लगा दी। आधी रात का वक़्त हुआ तो उसके पेट में दर्द उठा और उसे हाजत हुई। उसने बाहर निकलना चाहा। तो देखा कि दरवाज़ा बन्द है। रफ-ए-हाजत का ज़ोर और दरवाज़ा बन्द। इत्तिफ़ाक़न उसकी आँख लग गई। ख़्वाब में देखा कि एक वीराना जंगल है। जंगल देखकर वहाँ बैठ कर उसने पाखाना कर दिया। जब जागा तो बिस्तर पाखाना से गंदा हो चुका था। बड़ा घबराया और सुबह का इंतिज़ार करने लगा। सुबह हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए तो आपने दरवाज़ा खोला और खुद दरवाज़े की ओट में छुप गए ताकि वह शर्मिन्दा न हो चुनांचे काफिर दरवाज़ा खुलते ही वहाँ से भागा। उसका गन्दा बिस्तर देखा तो हुज़ूर ने फरमाया। लाओ उसका बिस्तर मैं खुद धोऊं। गुलामों से अर्ज़ किया हुज़ूर! हमें धोने दीजिए फरमाया मेरे धोने में कोई हिकमत है। सहाबा मुंतज़िर रहे कि देखें उसमें क्या हिकमत है चुनांचे काफिर दूर निकल गया तो उसे याद आया कि उसका एक हैकल व नक़्श हुजरे ही में रह गया है। वह अपने नक़्श के लिए वापस आया तो यह अजब नज़्ज़ारा देखा कि हुज़ुर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने मुबारक हाथों से उसकी नापाकी को धो रहे हैं। यह देख कर वह नक़्श भूल गया और एक नारा मार कर बोला। या रसूलुल्लाह! पहले मुझे कलिमा पढ़ा कर मेरा दिल धोइए और वह कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया।

सहाबा ने अर्ज़ किया अब हम समझे कि आप उसका बिस्तर नहीं उसका दिल धो रहे थे।

मालूम हुआ कि मेहमान नवाज़ी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है और इस्लाम की एक पसन्दीदा चीज़ है। लिहाज़ा हमें उसे अपनाना चाहिए।

जो मुसलमां नेक हैं और पाकबाज़
वह नज़र आए हमें मेहमां नवाज़

❖❖❖

हिकायत नम्बर (66)

गुनाहों की पाकिट बुक

बग़दाद शरीफ़ में एक बड़ा ही बदकार शख़्स था। उसका यह क़ायदा था कि जो गुनाह करता था उसे एक पाकिट बुक में लिख लिया करता था। इत्तिफ़ाक़न एक रात किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। उसने दरवाज़ा खोला तो देखा एक निहायत ख़ूबसूरत औरत खड़ी है उसने पूछा। क्या काम है बोली मेरे चन्द यतीम बच्चे हैं। जिन्हें तीन दिन से खाना नहीं मिला। कुछ उनके खाने को मुझे दो उसने कहा। अन्दर आओ। ताकि तुम्हें कुछ दूं औरत अन्दर आई तो उस बदकार की नीयत बिगड़ी और उस पर दस्तदराज़ी करना चाही। औरत ने चौंक कर कहा। मैं तुझसे पनाह माँगती

हूं। उस बदकार पर शैतान सवार था। वह बाज़ न आया। और उसे अपनी तरफ खींचा औरत ने आसमान की तरफ मुँह करके कहा। ऐ हर सख़्ती व शिद्दत के खोलने वाले! तू मुझे इस शख़्स से महफ़ूज़ रख। फिर उस बदकार से कहने लगी। पहले मेरी बात ज़रा तवज्जुह के साथ सुन ले। फिर उसने अरबी में निहायत दर्दनाक लेहजा में चन्द शे'र पढ़े जिनका तरजमा यह है।

अपनी फानी इस जवानी पर न फूल
ऐ जवां तू मौत को हरगिज़ न भूल
जो गुनाहों में रहे हर दम फंसे
आखिर इक दिन वह भी यां से चल बसे
ले गए साथ अपने क्या? बस इक कफन
डर ख़ुदा से उसका तू बाग़ी न बन
तूने भी तो एक दिन जाना है मर!
मत सता मरने को रख पेशे नज़र!

उसके बाद वह ज़ार व क़ितार रोने लगी और सर उठा कर कहने लगी।

इलाही! मेरी फरयाद को पहुँच। और इस शख़्स से मुझे नजात दे उस बाइसमत (इज़्ज़तदार) औरत के उन पुर दर्द लेहजा में पढ़े हुए शेअरों से उस शख़्स का सारा बदन लरज़ उठा। और दहाड़ें मार मार कर रोने लगा। उस पर औरत ने कहा। मैं तुझसे ख़ुदा की क़सम देकर कहती हूँ कि अब जबकि तुझमें और तेरे मौला में सुलह हो गई है तू बीच वाली को यानी मुझे न भूलियो। यह शख़्स उसी हालत में अन्दर गया और उसे कुछ देकर कहने लगा। ऐ नेक बख़्त बीबी यह लेजा और अपने यतीम बच्चों को खिला। मगर उनसे मेरे हक़ में यह दुआ कराइयो कि मेरी पाकिट बुक में जितने गुनाह लिखे हैं वह सब मिट जाएं। यह उससे वादा करके अपने घर आई और जब बच्चों के आगे खाना पका कर रखा तो उस शख़्स के लिए दुआ की दरख़्वास्त की। बच्चों ने कहा। ऐ मां! ख़ुदा की क़सम! जब तक हम उसके लिए दुआ न कर लेंगे खाना न खाएंगे क्योंकि मज़दूर उजरत का मुस्तहिक़ (हक़दार) उसी वक़्त होता है जब काम को अंजाम पर पहुंचा दे। बच्चों ने दुआ की। खाना खाया और उस शख़्स ने अपनी पाकिट बुक देखी तो सारे गुनाह मिट चुके थे। सारी पाकिट बुक साफ व सफेद थी। किसी एक गुनाह का भी उसमें निशान न था। (नुज़हतुल-मजालिस बाबुत्तौबा स० ४१, जि.२)

सबक़

ख़ुदा बड़ा ग़फ़ूर व रहीम है। सारी उमर गुनाह कर कर के अपने नाम-ए-आमाल सियाह (काला) कर लो और अगर एक बार भी सच्चे दिल से उससे डर कर रोने लगो तो यह नदामत (शर्मिन्दगी) के आँसू सारी उमर के सियाह नाम-ए-आमाल को धो डालते हैं और गुनाहों का नाम व् निशान बाक़ी नहीं रहता। यह भी मालूम हुआ कि पाकबाज़ और बा-इसमत औरत किसी क़ीमत पर भी अपनी इज़्ज़त व इसमत पर धब्बा नहीं आने देती और वह इस शेअर का मिसदाक़ होती है कि ऐ ख़ुदा!

दिल से हम बन्दे तुम्हारे हो चुके
गोया हम प्यारे के प्यारे हो चुके

और आजकल की माडर्न औरत के विर्द ज़ुबान यह शेअर होता है।

दोनों जानिब से इशारे हो चुकें
तुम हमारे हम तुम्हारे हो चुके

वह पहले ज़माना की औरत थी जो एक मर्द के साथ तख़लिया (अकेले) में ख़ुदा से ख़ुद भी डरने लगी और बदकार मर्द को भी डराने लगी और आजकल तो इस शे'र पर अमल होता है कि –

तीर पर तीर चलाओ तुझे डर किसका है
सीना किसका है मेरी जान जिगर किसका है

इस पाकबाज़ औरत के पेशे नज़र रहा तो मरना और आजकल पेशे नज़र रहता है कुछ न कुछ करना। यह भी मालूम हुआ कि यतीमों की दुआ ख़ुदा तआला ज़रूर क़ुबूल फ़रमाता है क्योंकि उसके महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी यतीम रह चुके हैं।

महबूब की इस एक हालत का जलवा जिन पर भी पड़ जाए। वह भी मुस्तजाबुद्-दावात हो जाते हैं। फिर हुज़ूर की अपनी दुआ की यह शान क्यों न हो जो आला हज़रत ने लिखी है कि –

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया
बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद (स०)

❖❖❖

हिकायत नम्बर (67)

एक नेक औरत की आँखें

मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं कि मैंने मक्का मुअज़्ज़मा में एक खातून को देखा। जिनकी आँखें निहायत ख़ूबसूरत थीं। मक्का शरीफ़ की औरतें उन्हें देखने के लिए आती थीं। यह हाल देखकर वह नेक दिल खातून रोने लगीं। उनसे कहा गया कि आप इस क़दर रायेंगीं तो आँखें खराब हो जायेंगी। फरमाने लगीं। अगर मेरा शुमार अह्ले जन्नत में है तो अल्लाह उससे बेहतर आँखें अता फरमा देगा। और ख़ुदा नख़्वास्ता जन्नत के लाइक़ न हुई तो आँखों को भी सख़्त अज़ाब होगा। इतना कहकर वह खातून फिर रोने लगी और ज़िन्दगी भर यही कैफ़ियत तारी रही और ख़ौफ़े ख़ुदा से रो-रो कर उनकी आँखें बेकार हो गईं।

(ताज कराची, जनवरी ७३ ई०)

सबक़

अपने ज़ाहरी हुस्न व जमाल पर नाज़ न करना चाहिए। बल्कि हुस्न व जमाल अता फरमाने वाले की याद में रहना चाहिए और अपनी आक़िबत को पेशे नज़र रख कर ख़ुदा की रहमत की उम्मीद के साथ-साथ उसके ग़ज़ब व जलाल से डरते भी रहना चाहिए। ख़ुदा के ख़ौफ से अगर आँखों से आँसू बहने लगें तो बक़ौल मौलाना रूमी।

हर कजा आब रवां ग़ुंचा बुवद
हर कजा अश्क रवां रहमत शुवद

"जहाँ पानी जारी हो वहाँ फूल खिलते हैं। और जहाँ ख़ौफ़े ख़ुदा से आँखों से आंसुओं का पानी जारी हो वहाँ रहमत के फूल खिलते हैं।"...... मगर अफसोस कि आजकल उन आंखों से सीनमा टेलीवीज़न और ग़ैर मुहरिम औरतों को देखने का काम लिया जा रहा है। ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने का काम उनसे नहीं लिया जाता। एक शायर लिखता है।

चश्मे रा गुफ़्तम नज़र अज़ ख़ूब रूयां दूर दार
चश्म गुफ़्ता कार मा ऐन अस्त तो माज़ूर दार

यानी मैंने आँख से कहा कि ख़ूबसूरत औरतों को देखना छोड़ दे।

आँख ने जवाब दिया। मेरा तो काम ही यही है। मुझे माज़ूर समझो आजकल के माडर्न मर्द औरतों ने इसी शेअर पर अमल करना शुरू कर रखा है नेक औरत की आँखों में तो ख़ौफ़े ख़ुदा का पानी भरा था। और माडर्न औरत की आँखें? मीर लिखता है।

मीर उन नीम बाज़ आँखों में
सारी मस्ती शराब की सी है

पहली औरतों की आंखों में शर्म व हया थी और आजकल ?

बसी हुई है जिन आँखों में शोख़ियों की बहार
अदा-ए-शर्म उन्हें क्यों सिखाई जाती है

अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में मुसलमान मर्दों औरतों को अपनी नज़रें नीची रखने का हुक्म दिया है। न औरत की आँखें ग़ैर मर्द को देखें न मर्द की आँखें किसी ग़ैर औरत को देखें मगर आजकल?

जीने न देंगी आँखें तेरी दिलरुबा मुझे!
उन खिड़कियों से झांक रही है क़ज़ा मुझे

पहली औरतें ख़ुदा के ख़ौफ़ से आँखों से आँसू बहा कर ख़ुदा को अपना लेती थीं और आजकल ?

दोनों जानिब से इशारे हो चुके
तुम हमारे हम तुम्हारे हो चुके

❖❖❖

हिकायत नम्बर (68)

एक पर्दानशीन औरत के सर के बाल

हारून रशीद के ज़माना में रूमियों ने हमला किया। और मुसलमान औरतों को कैद कर लिया। मंसूर बिन अम्मार ने लोगों को रूमियों के ख़िलाफ़ जिहाद पर आमादा करने की जद्दो जहद शुरू कर दी। एक रोज़ वह एक बहुत बड़े मजमा में तक़रीर कर रहे थे कि एक शख़्स ने एक लिफ़ाफ़ा ला कर दिया। लिफ़ाफ़ा खोला गया तो उसमें बालों का एक बहुत बड़ा सा गुच्छा था। साथ ही एक ख़त भी लिखा था। मैं एक पर्दा नशीन औरत हूँ। रूमियों ने जो कुछ मुसलमान औरतों के साथ सुलूक किया है। मैं उससे वाक़िफ़ हूँ। मैं और तो कुछ नहीं कर सकती अपने सर के बाल

आपकी ख़िदमत में भेज रही हूँ शायद कोई ग़ाज़ी अपना घोड़ा बांधने के काम लाए और इसी वजह से अल्लाह तआला मेरी मग़फ़िरत कर दे।" अब्दुल्लाह बिन खालिक़ कहते हैं। जब यह ख़त पढ़कर सुनाया जा रहा था मजमा ज़ार व क़ितार रो रहा था। (ताज कराची, जनवरी ७३ ई०)

सबक़

काफिर हमेशा से मुसलमानों के दुशमन चले आए हैं। इसलिए उनकी शरारतों के सद्दे बाब (रोकने) के लिए मुसलमानों को हर वक़्त तैयार रहना चाहिए और जिहाद के वक़्त मर्द और औरतों सबको अपने-अपने मंसब पर क़ायम रह कर उसमें हिस्सा लेना चाहिए।

यह तो बात थी पर्दानशीन औरत की लेकिन आजकल की माडर्न औरत अपने सर के बाल कटा कर मग़रेबी तहज़ीब की नज़र कर देती हैं। शायद कोई साहब बहादुर उन बालों से अपने बूटों के तसमे बनाने के काम लाए और उसकी इसी वजह से यूरोप से मुशारिकत हो जाए।

यह भी मालूम हुआ कि पहले दौर की मुसलमान औरतें पर्दा नशीन होती थीं और उनके सरों पर लम्बे-लम्बे बाल होते थे। और आजकल की बाला नशीन औरतों के कटे हुए छोटे बालों से तो एक चूहा भी नहीं बांधा जा सकता। हां उन बालों को सैलून वाले गन्दी नालियों में बहा देते हैं। उनके बैठने के लिए तो मक़ाम बाला (ऊँची जगह) और उनके बालों के बहने के लिए गन्दा नाला।

हैं मुसलमान औरतें पर्दा नशीन
ग़ैर उनको देख ले? मुम्किन नहीं

लेकिन आजकल? मैंने लिखा है।

हैं ज़माने की अजब नीरंगियाँ
थीं जो मस्तूरात अब हैं नंगियाँ

❖❖❖

हिकायत नम्बर (69)

गूंगी लौंडी

वहब बिन मंबा कहते हैं। मैंने एक गूंगी लौंडी खरीदी। इत्तिफ़ाक़ से कुछ अरसा के बाद वह बिल्कुल साफ बोलने लगी। जब मैंने उसका सबब पूछा। तो कहने लगी। मैंने रात को ख़्वाब देखा कि तमाम दुनिया आग का एक अंगारा बन गई है जिसमें से होकर जन्नत का रास्ता जाता था इतने में देखती हूँ कि हज़रत मूसा अलैहिस्सला उस रास्ते से गुज़र रहे हैं और आपके पीछे-पीछे यहूदी चले जा रहे हैं। जब आप थोड़ी दूर पहुंचे तो पीछे मुड़ कर यहूदियों को देखा और फरमाया मैंने तुमसे कब कहा था कि तुम यहूदी हो जाओ। यह सुनकर वह सब दाएँ बाएँ गिर पड़े। फिर ईसा अलैहिस्सलाम तशरीफ लाए और आपके पीछे नसारा का ग़ोल था। आपने भी इस मौक़ा पर पहुंच कर पीछे मुड़ कर फरमाया मैंने तुम्हें कब हुक्म किया था कि तुम नसरानी बन जाओ? यह भी इसी तरह दाएँ बाएँ गिर पड़े। उसके बाद सैय्यदुल-अंबिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम तशरीफ़ लाए और आपके साथ आपकी उम्मत भी थी। आपने उनकी तरफ मुतवज्जेह होकर फरमाया। मैंने हुक्म किया था कि तुम खुदा पर ईमान लाओ। सो तुमने मेरे हुक्म की तकमील की और ईमान ले आए। अब तुम कुछ ख़ौफ न करो बल्कि जन्नत में पहुँच कर खुशियाँ मनाओ जिसका दुनिया में तुमसे वादा किया गया था। चुनाँचे यह लोग आपके पीछे-पीछे गुज़र गए। यहाँ तक कि जन्नत में दाख़िल हो हुए लेकिन मैं दो औरतों के साथ दोज़ख़ के किनारे पर खड़ी बाक़ी रह गई इतने में दोज़ख़ के दारोग़ा को खुदा का हुक्म पहुँचा कि दोनों औरतों से दरयाफ़्त करो कि कभी उन्होंने कुरआन भी पढ़ा था। एक फरिश्ते ने उनसे पूछा तो दोनों ने कहा कि हमने सूरः फातेहा पड़ी है। हुक्म हुआ तुम दोनों जन्नत में चली जाओ पस मैं यह मंज़र देखकर जाग उठी तो मेरी ज़ुबान साफ-साफ बोलती थी। अब मैं ठीक हूँ। मेरे आक़ा मुझे भी सूरः फातेहा पढ़ा दीजिए। (नुज़हतुल-मजालिस स० १६८, जि.२)

सबक़

जन्नत का रास्ता जहन्नम के ऊपर से है और इन मिनकुम इल्ला

वारिदुहा। के मुताबिक़ सबको इस रास्ता से गुज़रना है काफिर तो इस रास्ता से गुज़रते हुए दाएँ बाएँ गिर जाएंगे मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुलाम जब इस रास्ते से गुज़रेंगे तो हमारे हुज़ूर की मुहब्बत व दुआ हमारे साथ होगी और हुज़ूर अपने गुलामों के सलामती से गुज़र जाने की दुआ फ़रमाते हूँगे चुनांचे आला हज़रत फ़रमाते हैं।

रज़ा पुल से अब वज्द करते गुज़रिए
कि है रब्बे सल्लिम दुआए मुहम्मद
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

और हदीस में आता है कि मोमिन जब जहन्नम के ऊपर से गुज़रेगा तो जहन्नम कहेगा। ऐ मोमिन जल्दी गुज़र क्योंकि तेरे नूर ने मेरे शोले बुझा दिए हैं। (ख़ज़ाइनुल-इरफान स० ४३६)

मोमिन का यह नूर नूरे ईमान है यानी हुज़ूर की मुहब्बत हमारे हुज़ूर नूर हैं। और उनकी बदौलत हम नूरी हैं जैसे लाहौर का रहने वाला लाहौरी पिशावर का रहने वाला पिशावरी सियालकोट का रहने वाला सियालकोटी इसी तरह हुज़ूर को नूर मानने वाला नूरी। तो नूरी को जहन्नम यह कहेगा कि ऐ नूरी जल्दी गुज़र क्योंकि तेरे नूर ने मेरे शोले बुझा दिए हैं लिहाज़ा जहन्नम की नार से बचने के लिए नूरी बनो। काफिरों की तरह उन्हें अपनी मिसल बता कर नारी न बनो।

यह भी मालूम हुआ कि कुरआन की तिलावत भी जहन्नम से बचाती है हत्ता कि सिर्फ़ सूरः फातिहा ही में इतनी बरकत है कि जहन्नम से बचा लेती है। मगर आह! आज।

इसका कुछ ग़म नहीं कुरआन की तिलावत से गए
ग़म है गर मेज़ न हो मेज़ पे अख़बार न हो

यह भी मालूम हुआ कि पहली औरतों को कुरआन की सूरतें याद थीं और उनको पढ़ कर नजात पाना चाहती थीं और आजकल की माडर्न औरतों को एकटर्सों की सूरतें याद हैं और यह उनको अपना कर उन जैसी हरकात अपनाना चाहती है वह चाहती थीं कि हम महफ़ूज़ अज़ जहन्नम हो जाएं और यह चाहती हैं। हम मलिका तरन्नुम हो जाएं।

ऐ मेरी बहनो! जहन्नम से डरो!
उससे बचने के लिए कुरआन पढ़ो

❖❖❖

हिकायत नम्बर (70)

हब्शिन लौंडी

एक दिन हारून रशीद ने अपने ख़िदमतगारों पर अशर्फ़ियाँ निछावर कीं। तमाम लौंडी ग़ुलामों ने तो लूटीं मगर एक हब्शिन लौंडी ने उनकी तरफ इल्तिफ़ात (ध्यान) भी न किया। हारून रशीद ने उससे उसका सबब पूछा तो उसने जवाब दिया ऐ बादशाह! मैं दिरहम व दीनार की परवाह नहीं करती। मैं तो दिरहम व दीनार वाले को चाहती हूँ। जिसके आप हो गए सब कुछ उसी का है। हारून रशीद इस जवाब से इतना ख़ुश हुआ कि उसे अपने निकाह में ले लिया। (नुज़हतुल-मजालिस, बाबुल-मुहब्बत, स० ११६, जि.१)

सबक़

अल्लाह का नेक और बा-वफ़ा बन्दा वह है जो दुनियवी दौलत व माल की तरफ़ इल्तिफात (ध्यान) न करे। दौलत व माल के ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह को चाहे। ऐसे बन्दे को ख़ुदा अपनी पनाह में ले लेता है और ख़ुदा का हो जाने के बाइस सारी ख़ुदाई उसकी हो जाती है।

यह किरदार था एक हब्शिन औरत का और आजकल की माडर्न औरत का किरदार? उसे क्या ग़रज़ शौहर की चाह से उसे अगर प्यार है तो उसकी तनख़्वाह से।

एक लतीफ़ा भी सुन लीजिए। एक शोबदा बाज़ (जादूगर) मजमा लगाए शोबदे (जादू) दिखा रहा था। हाथ में सौ का नोट पकड़ कर सबके सामने उसे अपनी जेब में डाला और फिर सबसे कहने लगा। साहिबान! नोट मेरी जेब से खाली हो गया है। जिसे शुबह हो आए और मेरी कोट की जेब तलाशी ले ले। नोट हरगिज़ न मिलेगा। एक साहब बोले छोड़ो मियाँ। यह शोबदा (जादू) तो मेरी बीवी भी मुझे कई दफा दिखा चुकी है।" वह था हब्शिन औरत का किरदार। और यह है माडर्न औरत का किरदार। वह माइल हारून थी। यह माइल क़ारून है मैंने अपनी एक नज़म में लिखा है।

बोली अप टू डेट बीवी शौहरे मिसकीन से!
इख़्तियार औरत का है सब मर्द अब मज़्दूर है
मर्द हाकिम था कभी औरत पे लेकिन आजकल
बीवी घर की मालिका है और मियाँ मज़्दूर है

और माडर्न मसनवी में लिखा है।

औरतें मर्दों पे हैं अब हाकिमां
फाइलातुन फाइलातुन फाइलातुन
थी जो बीवी अब वह शौहर बन गई
जनवरी गोया दिसम्बर बन गई!!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (71)

शब बेदार लौंडी

हज़रत हसन बिन सालेह ने अपनी एक लौंडी दूसरे किसी शख़्स के हाथ फ़रोख़्त (बेच) कर दी जब रात हुई और घर के सारे अफ़राद सो गए तो लौंडी ने पुकार-पुकार कर कहना शुरू कर दिया अस्सलातु अस्सलातु नमाज़ नमाज़ उठो और नमाज़े तहज्जुद पढ़ो मगर किसी को ख़्याल पैदा न हुआ। सुबह हुई तो कहने लगी। क्या आप लोग फर्ज़ नमाज़ों के अलावा और कोई नमाज़ नहीं पढ़ते। यह कहकर उसने कहा मुझ पर करम करो और फ़िस्ख़े बय करके मुझे हसन बिन सालेह ही के हां भेज दो। चुनांचे उसने लौंडी हसन बिन सालेह को वापस कर दी।

(नुज़हतुल-मजालिस, बाब फ़ज़्लुस्सलात स० १०१, जि.१)

सबक़

पहले ज़माना की लौंडियाँ भी पाँच नमाज़ों की पाबन्द और उनके अलावा तहज्जुद व नवाफ़िल भी पढ़ती थीं और आजकल की आज़ाद लेडियां भी तहज्जुद व नवाफिल तो क्या फ़र्ज़ नमाज़ भी नहीं पढ़तीं। पहली औरतों की रातें यादे रब में गुज़रती थीं और अब माडर्न औरतों की रातें कलब में गुज़रती हैं। उन्हें नाचना व गाना पसन्द है। वह नमाज़ पढ़ कर रोती थीं। यह सीनमा देखकर सोती हैं। इनकी ज़ुबानों पर रहता है तो ज़िक्र ख़ुदा और रसूल और इनकी ज़ुबानों पर रहता है तो डीम फूल। इस शब बेदार (रात जागना) लौंडी पर ऐसी हज़ारों बेकार लेडियाँ क़ुर्बान।

बन गईं अल्लाह की जो लौंडियाँ
उन पे क़ुर्बान मग़रेबी यह लेडियाँ

❖❖❖

हिकायत नम्बर (72)

एक बख़ील मर्द की औरत

एक बख़ील (कंजूस) आदमी ने अपनी औरत को क़सम दी कि ख़बरदार! घर में से किसी को ख़ैरात न देना। एक दिन उस औरत ने शौहर की तंबीह की परवाह किए बग़ैर किसी मुहताज को कुछ ख़ैरात दे दी। और इत्तिफ़ाक़न शौहर ने देख लिया गुस्सा में आकर कहने लगा। तूने मेरी हुक्म अदूली (नाफ़रमानी) क्यों की? कहा मैंने ख़ास ख़ुदा के लिए थोड़ा सा दिया है शौहर ने ग़ज़ब में आकर आग का ढेर लगा कर कहा। अगर तूने यह काम ख़ुदा के लिए किया है तो इस आग में ख़ुदा के लिए कूद पड़ा। ख़ुदा की मतवाली औरत ने अपने बदन को ज़ेवर और उमदा कपड़ों से आरास्ता किया। खाविन्द (शौहर) ने पूछा कि यह आरास्तगी का क्या मौक़ा है? कहा जब दोस्त अपने दोस्त से मिलता है तो उसके लिए कुछ बनाव सिंगार भी करता है। यह कह कर आग में गिर पड़ी। शौहर यह देखकर हैरान रह गया कि बावजूद आग की तेज़ी के औरत आग में बिल्कुल महफ़ूज़ रही। और आग ने उसका बाल तक न जलाया और वह सही सलामत रही। उसी वक़्त हातिफ़ से उसे आवाज़ आई कि ऐ शख़्स तू तअज्जुब न कर। आग हमारे अहबाब (दोस्तों) को नहीं जलाया करती। यह सुनकर उस शख़्स ने सच्चे दिल से बुख़्ल (कंजूसी) से तौबा कर ली। और अपनी नेक बीवी को इज़्ज़त व ताज़ीम से रखा। (नुज़हतुल-मजालिस स० ४६, जि.१)

सबक़

सख़ावत सदक़ा व ख़ैरात से ख़ुदा के ग़ज़ब की आग भी बुझ गई है। फिर जहन्नम की या इस दुनिया की आग से क्यों न बुझे? साहिबे नुज़हतुल-मजालिस ने यह हिकायत लिखने के बाद हजरत बायज़ीद बुसतामी अलैहिर्रहमा का यह इर्शाद नक़ल फरमाया है कि –

مَنْ عَرَفَ اللّٰهَ كَانَ علےٰ النّارِ عَذَابًا و مَنْ جَهِلَهٗ كَانَتْ عَلَيْهِ عَذَابًا

यानी जो शख़्स अल्लाह का आरिफ बन जाता है। वह ख़ुद आग के लिए अज़ाब बन जाता है और आग उससे पनाह मांगने लगती है और जो शख़्स ख़ुदा से ग़ाफ़िल हो जाता है। आग उसके लिए अज़ाब बन जाती है।

फिर फरमाया : लौ राअतनी जहन्नमु लख़मरत। अगर जहन्नम मुझे देख ले तो बिल्कुल ठंडी पड़ जाए। और हदीस में भी आता है कि मोमिन जब पुल सिरात से गुज़रेगा तो जहन्नम उससे कहेगा। मुझ पर से जल्दी गुज़र जा क्योंकि तेरे नूरे ईमान ने मेरे शोले बुझा दिए हैं। एक शायर ने भी ख़ूब लिखा है कि –

दोज़ख़ ने मुझको देख के अल्लाह से कहा
मुझसे तो यह ग़रीब जलाया न जाएगा

मालूम हुआ कि जहन्नम भरने के लिए शैतान का एक दाव यह भी है कि वह लोगों को सदका व ख़ैरात देने से रोकता है और अगर किसी को सदका व ख़ैरात देते देख ले तो अपने ही गुस्सा की आग में जल भुन जाता है। यह भी मालूम हुआ कि आज भी जो शख़्स सदका व ख़ैरात देने से रोकता है वह शैतान का किरदार अदा करता है। और यह भी मालूम हुआ कि बाज़ मर्द तो बद-अकीदा होते हैं लेकिन उनकी बीवियाँ ख़ुश अकीदा होती हैं चुनांचे हमने देखा है कि बाज़ मर्द ग्यारहवीं के ख़िलाफ़ होते हैं लेकिन उनकी बीवियाँ ग्यारहवीं का ख़त्म दिलाती हैं और यह भी मालूम हुआ कि आजकल के माडर्न शौहर अल्लाह की राह में तो ख़र्च करने के मुख़ालिफ़ होते हैं लेकिन उनकी माडर्न बीवियाँ दिन रात "शांपिंग" में मसरूफ़ रह कर अल्लाह की राह में न देने वाले शौहर का दीवाला निकाल कर रख देती हैं और बनाव सिंगार यानी मेक-अप करके अपने शौहर के साथ जाकर शौहर के सामने ही अपने फ्रेंड्ज़ से मिलती हैं। गोया अपने शौहर को रक़ाबत की आग में जलने के लिए डाल देती हैं मैंने लिखा है।

सर के ऊपर वह बांध कर जाली
मुर्ग़ दिल का शिकार करते हैं!
बीवी है हम कलाम ग़ैरों से
और मियां इंतिज़ार करते हैं!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (73)

एक ख़ूबसूरत औरत और हज़रत जुनैद

एक औरत हजरत जुनैद बग़दादी अलैहिर्रहमा के पास आकर कहने लगी। मेरा शौहर दूसरा निकाह करना चाहता है। फरमाया अगर इस वक़्त उसके निकाह में चार औरतें नहीं हैं तो उसे दूसरा निकाह जायज़ है। औरत ने कहा। ऐ जुनैद! अगर ग़ैर मर्द को औरतों की तरफ देखना जायज़ होता तो मैं अपना चेहरा खोल कर आपको दिखाती ताकि आप मुझे देखकर कहते कि जिसके निकाह में मेरे जैसी ख़ूबसूरत औरत हो उसे मेरे सिवा दूसरी औरत की तरफ रग़बत करना लायक़ है कि नहीं? हज़रत जुनैद औरत की यह गुफ़्तगू सुनकर बेहोश हो गए। जब होश में आए तो किसी ने उसका सबब पूछा। तो फरमाया मेरे ज़हन में इस वक़्त यह ख़्याल आया कि हक़ तआला फरमाता है। अगर दुनिया में किसी को मुझे देखना जायज़ होता तो मैं अपना हिजाब उठा कर उस पर ज़ाहिर हो जाता कि वह मुझे देखता फिर उस वक़्त मालूम होता कि जिसका मुझ जैसा रब हो उसके दिल में मेरे ग़ैर की मुहब्बत होनी चाहिए कि नहीं?

(नुज़हतुल-मजालिस, स० ४५, जि.१)

सबक़

सच्चा मुसलमान वह है जो अपने दिल में ख़ुदा ही की मुहब्बत रखे और उसके ग़ैर यानी बुत वग़ैरा दुनिया की मुहब्बत दिल में न आने दे। उसी के रसूल की इताअत करे। उसी के निज़ाम को अपनाए और उसी के अहकाम पर चले। जो लोग ख़ुदा के रसूल और उसके आईन (क़ानून) व निज़ाम से मुँह मोड़ कर किसी दूसरे मुल्क के लीडर व निज़ाम को अपनाते हैं। वह अपने ख़ुदा की जलालत उसके रसूल की अज़मत और उसके आईन व निज़ाम की बरकत से ना आशना हैं। ऐ काश! उन पर अपने रब की शान ज़ाहिर हो जाती तो वह कभी किसी ग़ैर के निज़ाम की तरफ मायल न होते। मौलाना रूमी अलैहिर्रहमा ने लिखा है कि एक आवारा आदमी एक औरत के पीछे पीछे चलने लगा। औरत ने जो देखा कि कोई आवारा

उसका पीछा कर रहा है तो मुड़ कर उससे पूछने लगी। क्या बात है? जो तुम मेरा पीछा कर रहे हो? वह बोला मुझे तुमसे मुहब्बत है। इसलिए तुम्हारे पीछे-पीछे आ रहा हूँ। औरत बोली अगर मुहब्बत करनी है तो मेरी छोटी बहन जो मुझसे ज़्यादा ख़ूबसूरत है और वह देखो मेरे पीछे आ रही है उससे मुहब्बत करो। आवारा आदमी ने पीछे मुड़ कर जो देखा तो औरत ने ज़ोर से उसे लात मारी और कहा झूठे आशिक़ दावा मेरी मुहब्बत का और देखो दूसरी तरफ़? जाओ तुम्हें आज़मा लिया। तुम आवारा आदमी हो। सच्चे आशिक़ नहीं! इसी तरह जो शख़्स पढ़ता तो हुवा ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह और फिर देखता हो किसी और लीडर व निज़ाम की तरफ.......तो जान लीजिए। वह नाकारा आदमी है और झूठा मुसलमान।

दावा इस्लाम में सच्चे हो गर
ग़ैर की जानिब उठे फिर क्यों नज़र

❖❖❖

हिकायत नम्बर (74)

एक फ़ाहिशा औरत

हज़रत बायज़ीद बुसतामी रहमतुल्लाह अलैह के मुबारक ज़माना में एक फाहिशा औरत एक सजे हुए बालाखाना पर रहती थी और अय्याश लोग उसके पास आकर रातें गुज़ारते और अपना दीन व दुनिया बर्बाद करते। एक रोज़ शाम के वक़्त हज़रत बायज़ीद ख़ुद उसके दरवाज़े पर जा बैठे। जो शख़्स भी ऊपर जाने के लिए आता आपको देखकर वापस चला जाता। जिसकी वजह से उस रात उसके पास कोई न आया। उसने लौंडी से उसकी वजह पूछी तो उसने बताया कि आज तुम्हारे दरवाज़ा पर बायज़ीद बैठे हैं जो भी आता है उन्हें देख कर पलट जाता है। फाहिशा ने कहा। उन्हें ऊपर बुला लो। वह उन्हें ऊपर ले आई। फाहिशा ने कहा। जनाब! कहाँ आप? और कहाँ मैं? आपका मुझसे क्या काम है? फरमाया आज की रात में यहाँ रहूंगा। बोली मेरी फीस दो सौ अशर्फ़ियाँ हैं आपने दो सौ अशर्फ़ियाँ जेब से निकाल कर दे दीं। और फरमाया। अब जो मैं चाहूँ तुझे करना होगा। उसने कहा मंज़ूर है। आप अपने कपड़ों का जोड़ा साथ लाए थे।

फरमाया अपने कपड़े उतार कर यह कपड़े पहन लो उसने पहन लिए। फरमाया अब दो क़दम आगे बढ़ो। आगे बढ़ी। तो आपने आसमान की तरफ मुंह उठा कर कहा। इलाही मैंने इस औरत का ज़ाहिर बदल कर नेक कर दिया है। अब उसका बातिन तू बदल कर नेक कर दे फिर आपने फरमाया। मेरे यह कपड़े उतार दे। बोली। मआज़ल्लाह! अब मेरी तबीअत वह नहीं रही। मैंने बारगाहे इलाही में सच्चे दिल से तौबा कर ली है। मुझे फिराक़ के बाद, विसाले ग़ज़ब के बाद रज़ा मिल गई है मेरे लिए दुआ करते रहिए। खुदा मुझे इस्तिक़ामत (मज़बूती) दे। हज़रत बायज़ीद उसे छोड़ कर चले गए और अगले साल उसे काबा शरीफ़ का तवाफ करते पाया।

(नुज़हतुल-मजालिस, बाबुत्तौबा, स० ११, जि.२)

सबक़

औरत का माना है क़ाबिले हिजाब और छुपाने की चीज़। औरत अगर उरियानी (नंगापन) पसन्द और अय्याशी का बाइस बन जाए तो ऐसी औरत क़ौम के लिए नंग व आर है। यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह वालों के वजूद से लोग बुराइयों से बच जाते हैं जिस रात बायज़ीद उस फाहिशा औरत के दरवाज़े पर जा बैठे। उस रात कई लोग बुराइयों से बच गए और उन अल्लाह वालों की निगाहे करम से इंसान की काया पलट जाती है चुनांचे फाहिशा औरत पर जो निगाहे करम फरमाई तो अपने कपड़े उसे पहना कर उसका ज़ाहिर बदल कर उसका बातिन भी बदल डाला और जिसके गिर्द (पास) अय्याश लोग तवाफ करते थे उसे काबा शरीफ का तवाफ करने में मश्गूल कर दिया। इसीलिए शायर ने लिखा है कि –

निगाहे वली में यह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

❖ ❖ ❖

हिकायत नम्बर (75)

एक रंडी

हज़रत शैख़ कबीर ईसा यमनी रहमतुल्लाह अलैह का एक दिन एक रंडी पर गुज़र हुआ। आपने फरमाया। हम बाद इशा के तेरे पास आएंगे।

वह सुनकर बहुत खुश हुई और खूब बनाव सिंगार करके हज़रत शैख़ कबीर के इंतिज़ार में बैठी। जिन लोगों ने सुना बहुत तअज्जुब हुआ। बाद इशा के हस्बे वादा आप उसके हां तशरीफ लाए और दो रकाअत नमाज़ उसके मकान में पढ़ कर निकल खड़े हुए। रंडी पर उन दो रकाअत का ऐसा असर हुआ कि फौरन उठी और कहने लगी आप तो जा रहे हैं। फरमाया मेरा मक्सूद हासिल हो गया। चुनांचे उसी वक़्त उस रंडी पर रिक़्क़त तारी (खुदा की तरफ मायल होकर रोना) हुई और शैख़ के हाथ पर तौबा की और कुल माल असबाब अपना छोड़ दिया। हज़रत ने अपने मुरीद से उसका निकाह कर दिया। और फरमाया वलीमा में सिर्फ़ रोटियाँ पकवा लो सालन की ज़रूरत नहीं। उन्होंने हसबुल-इर्शाद रोटियाँ पकवाईं। उस रंडी का एक आशना (जानने वाला) बड़ा अमीर था। उसको जब यह मालूम हुआ कि रंडी ने तौबा करके शैख़ कबीर के एक मुरीद से निकाह कर लिया है और उसका आज वलीमा है जिसमें सिर्फ़ रोटियां पकवाई गई हैं। सालन नहीं है उस अमीर ने चन्द बोतलें शराब की भेज कर शैख़ कबीर को पैग़ाम भेजा कि मैंने सुना है आपने रंडी का निकाह अपने एक मुरीद से कर दिया है और आज वलीमा में सिर्फ़ रोटियाँ पकवाई हैं। सालन का इंतिज़ाम नहीं है। इसलिए मैं यह बोतलें भेज रहा हूँ उनमें जो कुछ है उसका सालन बना लीजिए। मक़सद उसका फुक़रा से मज़ाक़ और उन्हें शर्मिन्दा करना था। वह क़ासिद बोतलें लेकर जब पहुंचा। तो आपने फरमाया तूने बहुत देर कर दी फिर उनमें से एक बोतल को ख़ूब हिलाया और उसे प्याला में डाला। इसी तरह दूसरी बोतल को भी हिलाया प्यालों में डाला फिर उस क़ासिद से कहा। बैठ जा! वलीमा तू भी खा ले। वह क़ासिद कहता है कि मैंने भी बैठकर खाया। तो शराब एक उमदा और लज़ीज़ घी बन चुका था कि मैंने ऐसा लज़ीज़ घी कभी न खाया था। यह सारा क़िस्सा उसने अमीर को आकर सुनाया तो वह भी बड़ा हैरान हुआ और उसी वक़्त उठकर हज़रत शैख़ की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसने तौबा कर ली।

(नुज़हतुल-बसातीन, स० ३१८)

सबक़

अल्लाह वालों के जहाँ क़दम पड़ जाएं वहाँ की काया पलट जाती है आपके क़दमों की बरकत से एक रंडी ताइबा और आबिदा (नमाज़ी) बन गई और आपके हाथों की बरकत से शराब घी बन गया और आपकी इस

करामत की बदौलत एक शरीर (बुरा) अमीर शरीफ़ इंसान बन गया और एक आजकल का मुआशरा भी है कि शरीफ़ घराने की औरतें भी बे-हिजाब व बे-नक़ाब नंगे मुँह, नंगे बदन बाज़ारों में फिरती हैं। वह रंडी तो हज़रत शैख़ कबीर के मुरीद की बीवी बन गई और आजकल माडर्न अफ़राद अपनी बीवियों के मुरीद बन गए। मालूम हुआ कि अल्लाह! वालों की नज़रों, क़दमों और हाथों में हज़ारहा बरकतें होती हैं। उनकी नज़र मिट्टी को सोना उनके क़दम रंडी को आबिदा और उनके हाथ शराब को घी बना देते हैं और आजकल की नज़र बा-हया को बे-हया आजकल के क़दम वाइफ़ को तवायफ़ और आजकल के हाथ हलाल के बदले हराम और सवाब के बदले अज़ाब अपना लेते हैं।

औलिया के पड़ गए जिस जा क़दम
हो गया अल्लाह का फ़ज़्ल व करम

हिकायत नम्बर (76)

माँ की दुआ का असर

सलीम इब्ने अय्यूब फरमाते हैं। मैं दस बरस का था। और मुझसे सूरः फातिहा तक नहीं पढ़ी जाती थी। तो बाज़ मशाइख़ ने मुझसे फरमाया कि तू अपनी माँ से इल्तिजा कर कि वह तेरे लिए कुरआन और इल्म के लिए दुआ करे। मैंने अपने इल्म के लिंए दुआ कराई। इब्ने सुब्की फरमाते हैं। माँ की दुआ का असर ऐसा हुआ कि हज़रत सलीम इब्ने अय्यूब ऐसे जैय्यद आलिम हुए कि कोई आलिम उनका लगा न खाता था और वह गोया ऐसे सवार थे कि कोई उनकी गर्द न पाता और निशाने क़दम तक न पहुँच सकता था। (नुज़हतुल-मजालिस, बाबुल-वालिदैन, स० १६६, जि.१)

सबक़

माँ का बहुत बड़ा दर्जा है। माँ की दुआ अपने बच्चों के लिए दिल से निकलती है। इसीलिए बक़ौल। शाइर।

"बात जो दिल से निकलती है असर रखती है।"

माँ की दुआ मक़बूल होती है सूरः फातिहा तक न पढ़ सकने वाला माँ की दुआ से जलीलुल-क़द्र और बे-नज़ीर आलिम बन गया लेकिन यह माँ

पहले ज़माना की माँ थी और आजकल की माडर्न माएँ तो दुआएँ माँगती हैं कि मेरा मुन्ना बड़ा होकर कोई बड़ा अफसर बने, डी सी बने, थानेदार बने और अंग्रेज़ नज़र आए अंग्रेज़ी बोले। गोया मेरा यह फूल बड़ा होकर मुझे फूल समझे मुसलमान माँ और माडर्न माँ का फ़र्क़ मुलाहिज़ा फरमाइए।

वह माँ थी घर की दीवारों की रौनक़
यह माँ बनती है बाज़ारों की रौनक़
वह माँ तो पैदा करती थी नमाज़ी
धनी तल्वार का मैदान का ग़ाज़ी
यह माँ जिसको कहा जाता है लेडी
यह माँ गर पैदा करती है तो टैडी

❖❖❖

हिकायत नम्बर (77)

माँ के क़दम

एक रोज़ एक शख़्स ने हज़रत अबू-इसहाक़ से ज़िक्र किया कि रात को ख़्वाब में मैंने आपकी दाढ़ी याकूत व जवाहिर से मुरस्सा (जड़ी हुई) देखी है। अबू-इसहाक़ फरमाने लगे। तूने सच कहा रात मैंने अपनी माँ के क़दम चूमे थे। यह उसकी बरकत है और फिर एक हदीस सुनाई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं। खुदा तआला ने लौहे महफ़ूज़ पर यह लिखा दिया है कि –

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ إِنِّیٓ اَنَا اللهُ لَآاِلٰهَ إِلَّآ اَنَا مَنْ رَضِیَ عَنْهُ وَالِدُهٗ فَاَنَا عَنْهُ رَاضٍ

(नुज़हतुल-मजालिस, बाब बिर्रुल-वालिदैन, स० १६८, जि.१)

यानी मैं खुदा हूँ मेरे सिवा कोई पूजने के लायक़ नहीं जिस शख़्स के वालिदैन उस पर राज़ी होंगे मैं भी उससे राज़ी हूँ।

सबक़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आख़िर ज़माना में अक़्क़ा उम्मुहू व अताआ ज़ौजतहू। (मिश्कात)

आदमी माँ का नाफरमान और बीवी का ताबेदार बन जाएगा। इस क़िस्म के लोगों से माँ के क़दम चूमने की तवक़्क़ु अबस है। हाँ ऐसे लोग

बीवियों के क़दम ज़रूर चूमते हैं। माँ के क़दम चूमने की बरकत से हज़रत इसहाक़ की दाढ़ी याकूत व जवाहिर से मुरस्सा हो गई और आजकल माँ के क़दमों से दूर रहने की बदौलत दाढ़ी ही ग़ायब हो गई। वह एक बुज़ुर्ग इंसान की नेक माँ के क़दमों की बरकत थी कि दाढ़ी के बालों से याक़ूत व जवाहिर जुड़ गए और यह माडर्न शौहर की माडर्न बीवी के क़दमों की नुहूसत (मनहूसियत) है कि दाढ़ी के बाल भी उड़ गए मैंने माडर्न मसनवी में लिखा है कि –

मर्द हो कर मर्द का चेहरा नहीं
क्योंकि रुख़ पे रेश का सेहरा नहीं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (78)

एक सुनार की औरत

एक नेक फितरत और पाकबाज़ औरत का ख़ाविन्द (शौहर) सुनार था। उसके घर में पानी भरने के लिए एक सुक़्क़ा मुक़र्रर था। जो तीस बरस से उसके घर आकर पानी भरा करता था मगर कभी उस बाइफ़्फ़त औरत की तरफ आँख उठा कर भी न देखा था। एक दिन का ज़िक्र है कि सुक़्क़ा पानी लेकर घर आया तो उस बाइफ़्फ़त की कलाइयाँ पकड़ कर अपनी तरफ खींचा। औरत ने कलाइयाँ छुड़ाईं और अन्दर भाग कर दरवाज़ा बन्द कर लिया। सुक़्क़ा चला गया तो उसका ख़ाविन्द (शौहर) घर आया तो उसने कहा। आज यक़ीनन आपसे कोई गुनाह सरज़द हुआ है शौहर ने कहा और तो कोई गुनाह नहीं हुआ। अलबत्ता एक औरत आज मुझसे कंगन ख़रीदने आई थी। मैं उसकी नाज़ुक और ख़ूबसरत कलाइयाँ पकड़ कर बेसब्र हो गया और उसकी कलाइयाँ पकड़ कर अपनी तरफ उसे खींचा वह अपनी कलाइयाँ छुड़ा कर वहां से भागी। नेक औरत ने खाविन्द (शौहर) की यह गुफ़्तगू सुन कर कहा। ठीक है। ऐ मेरे शौहर इस तुम्हारी ज़्यादती का बदला तुम्हारी बीवी से लिया गया जैसा कि तूने अपने भाई मुसलमान की बीवी से ना-शाइस्ता सुलूक किया। इसी तरह तेरी बीबी के साथ सुलूक हुआ। सुबह हुई तो वही सुक़्क़ा उस औरत के पास आकर अपनी ना-शाइस्ता हरकत पर नादिम होकर माफी मांगने लगा। बा-लियाक़त

औरत ने कहा। उसमें तेरा कुसूर नहीं। मेरे ही ख़ाविन्द (शौहर) की नीयत बिगड़ गई थी। (नुज़हतुल-मजालिस, बाबुत्तक़वा, स० ८२, जि.१)

सबक़

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है। عِفُّوْا عَنْ نِسَاءِ النَّاسِ تَعِفَّ النَّاسُ عَنْ نِسَاءِ كُمْ यानी तुम लोगों की औरतों की पाकदामनी महफ़ूज़ रखो। लोग तुम्हारी औरतों की इफ़्फ़त (पारसाई) महफ़ूज़ रखेंगे आजकल हुज़ूर के इस इर्शाद पर अमल न करने के बाइस औरतों की इस्मतें (इज़्ज़त) महफ़ूज़ नहीं। माडर्न अफराद की आँखें बे-हिजाब और माडर्न औरतों के चेहरे बे-नक़ाब। ऐसी सूरत में हर शख़्स एक दूसरे की इज़्ज़त व इसमत पर हमला आवर क्यों न हो? यूरोप ने यह देवसी सिखाई है कि अपनी औरत का खुद ही दूसरे मर्द से तआरुफ़ कराओ।

बल्कि ग़ैर मुहरिमों से अपनी औरतों का आप ही हाथ मिलाओ और अगर वह भाग जाए तो हाथ मलो। कलब में जाओ। तो उसकी वाइफ़ इस साहब से और उस साहब की वाइफ़ उस साहब से हम आग़ोश होकर नाचें। गोया हुज़ूर के इर्शाद के बिल्कुल बरअक्स आजकल एक दूसरे भाई की इज़्ज़त व नामूस को लूटा जा रहा है। न औरतों में नेक नीयती रही और न मर्दों में। एक शौहर ने अपनी बीवी से कहा। भई! हमारे मुलाज़िम रशीद की बीवी तो तुमसे भी ज़्यादा हसीन व दिलकश है। बीवी ने कहा और क्या रशीद आपसे ज़्यादा दिलकश व हसीन नहीं? इस बद निगाही और ग़ैर शरई मिलाप की सज़ा क़यामत में तो मिले ही गी। ग़ौर किया जाए तो यह बे-ग़ैरती और देवसी इस दुनिया में भी एक अज़ाब ही है और इस अज़ाब का नाम लोगों ने तरक़्क़ी रख लिया है जैसे कुत्ते का नाम मोती रख लिया जाए।

मालूम हुआ कि ग़ैर मुहरिम के सामने औरत का अपने जिस्म का कोई हिस्सा नंगा करना गुनाह पर उभारना है और यह भी मालूम हुआ कि जो लोग दूसरे की मां बहनों को बद-निगाही से देखते हैं वह दरासल अपनी मां बहनों को बद निगाही का निशाना बनाते हैं। लंदन का एक लतीफ़ा भी सुन लीजिए। एक अय्याश आफीसर तीन महीने के दौरे पर घर से निकला। एक महीना वह अय्याशी करता रहा। दूसरे महीने उसने अपना काम सर अंजाम दिया। घर आया तो आते ही बीवी से पूछा। कहो प्यारी क्या हाल है?

बीवी ने जल भुन कर कहा। जी रही हूँ।"

आफीसर ने हैरत से पूछा। क्यों किया हुआ।

बीवी ने उसी लेहजा में जवाब दिया। होना क्या है तुम्हारे जाने के बाद एक महीने तक तो तुम्हारा दोस्त आता रहा। बाक़ी दो महीने बड़े बे-कैफ़ तंहाई में गुज़रे।

पस ऐ मुसलमानो! मुसलमान बनो। नेक और पार्सा बनो। और दूसरों की मां बहनों को बद-निगाही का निशाना न बनाओ।

❖❖❖

हिकायत नम्बर (79)

दाना औरत

यह पुराने ज़माना की बात है कि एक बुज़ुर्ग का गुज़र एक दाना (अक़्लमन्द) बुढ़िया के पास से हुआ। देखा कि वह औरत चरख़ा कातने में मसरूफ है। उस बुज़ुर्ग ने सलाम किया और पूछा। क्यों बड़ी बी! सारी उमर चरख़ा कातने ही में गुज़ार दी। या कोई दीन की बात भी सीखी? बुढ़िया ने जवाब दिया। ख़ुदा का शुक्र है कि दीन की बातें भी सीखी हैं। आपको अगर कुछ पूछना हो तो पूछो।

उन्होंने पूछा। अच्छा बतओ। "ख़ुदा है"?........बुढ़िया बोली। यक़ीनन है। पूछा उस पर कोई दलील? बोली उस पर दलील यह मेरा चरख़ा है। पूछा यह कैसे? बोली यह ऐसे कि यह मेरा छोटा सा चरख़ा बग़ैर चलाने वाले के नहीं चलता तो ज़मीन व आसमान का इतना बड़ा चरख़ा क्या बग़ैर किसी चलाने वाले ही के चल रहा है। यक़ीनन उसका चलाने वाला भी है और वही ख़ुदा है।

वह बुज़ुर्ग इस सादा सी मगर ठोस दलील से बड़े ख़ुश हुए। और फिर पूछा। अच्छा अब यह बताओ कि ख़ुदा एक है कि दो? बोली एक। पूछा उस पर कोई दलील? बोली उस पर भी दलील यही मेरा चरख़ा पूछा यह कैसे? बोली ऐसे कि अगर उसे चलाने वाली दो हों तो अगर दोनों उसे एक ही तरफ चलाना शुरू कर दें तो चरख़ा तेज़ घूमने लगेगा और अगर एक इस तरफ और दूसरी-दूसरी तरफ चलाएगी तो चरख़ा चलेगा नहीं बल्कि टूट जाएगा। पस मैंने यह समझा है कि अगर ख़ुदा दो होते तो अगर वह ज़मीन व आसमान के चरख़े को एक ही तरफ चलाते तो ज़माना की रफ़्तार

इस क़दर तेज़ हो जाती कि १२ घन्टा का दिन ६ घन्टा का रह जाता और इसी तरह रात भी घट जाती और दिन के बाद रात। रात के बाद दिन जल्दी-जल्दी आने लगते और ज़माना जल्द-अज़-जल्द ख़त्म होने लगता और अगर एक ख़ुदा उस तरफ और दूसरा दूसरी तरफ चलाता तो यह ज़मीन व आसमान का चरख़ा टूट जाता इसीलिए ख़ुदा फरमाता है। लौ काना फ़ीहिमा आलिहतुन इल्लल्लाहु लफ़सदता। अगर ज़मीन व आसमान में दूसरा ख़ुदा भी होता तो ज़मीन व आसमान तबाह व बर्बाद हो जाते और निज़ामे आलम दरहम बरहम हो जाता मगर आज तक जो यह निज़ामे आलम का चरख़ा एक ही जानिब और एक ही रफ़्तार पर चल रहा है। इससे साबित हुआ कि ख़ुदा एक ही है। (मुग़नियल-वाइज़ीन, स० ४१५)

सबक़

पुराने ज़माना की औरतें घर का काम काज भी करती थीं और दीन से भी आशना (जानकारं) थीं। बक़ौल आजकल के पढ़े लिखे हुवों के कि पहले ज़माना की औरतें जाहिल थीं। पहले ज़माना की इस दीन आशना बुढ़िया के इस जूद व तौहीद बारी पर एक ही ठोस दलील पर आजकल की यूनिवर्सिटियों की ग्रेजुऐट औरतों की हज़ार दानिशवरियाँ और इल्मी मू-शगाफ़ियाँ कुर्बान। कहाँ वह घर में बैठकर चरख़ा कातने वालियाँ और अल्लाह को याद करने वाली पाकबाज़ बुढ़िया और कहाँ यह सीनमा हाउस और कल्बों में चक्कर लगा लगा कर यूरोप का चरख़ा बन जाने वाली लेडियाँ। जिन्हें यूरोप जिस तरह घुमाए यह घूम जाएँ। वह घर में रह कर चरख़ा कातें और यह कलबों में रातें काटें। उन्हें क़ुरआनी आयात पसन्द। इन्हें फिल्मी नग़मात पसन्द। उन्हें इल्म दीनी से प्यार। इन्हें फिल्म बीनी से प्यार। वह ख़ुदा की क़ाइल और यह इल्हाद और कुफ़्र पर माइल। पुरानी बुढ़िया और आजकल की माडर्न बुढ़िया के मुतअल्लिक़ मेरे दो शे'र सुन लीजिए।

तहज़ीबे नौ के बुत का सरापा है डैंजरस
लब हाथ और तल्वे हर इक अज़्व लाल है
निकली है घर से बुढ़िया भी बन ठन के नाज़ से
बासी कढ़ी में देखिए आया उबाल है!!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (80)

कुरआन से जवाब देने वाली औरत

हज़रत अब्दुल्लाह वासती फरमाते हैं कि मैंने अय्यामे हज (हज के दिनों में) में अरफ़ात में एक औरत को देखा जो तन्हा खड़ी थी और यह आयत पढ़ रही थी। مَن يَهْدِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَه ٗ وَمَنْ يُضْلِلْه ٗ فَلَا هَادِىَ لَه

यानी जिसे ख़ुदा राह दिखा दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह राह भुला दे उसे कोई राह दिखा नहीं सकता।" हज़रत अब्दुल्लाह फरमाते हैं। मैं समझ गया कि यह औरत रास्ता भूल गई है। इसलिए मैंने उसके पास जाकर कहा। कि ऐ नेक औरत! तू कहाँ से आई है? तो उसने जवाब में यह आयत पढ़ी।

سُبْحَانَ الَّذِىْ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصٰى

मैंने समझ लिया कि यह बैतुल-मक़्दिस से आई है।

मैंने पूछा। तुम यहाँ क्यों आई हो? तो उसने यह आयत पढ़ी।

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ

मुझे मालूम हो गया कि यह हज के लिए आई है। मैंने पूछा कि आप मेरे ऊँट पर सवार हूँगी? तो उसने यह आयत पढ़ी।

وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللهُ यानी तुम जो नेक काम करो। अल्लाह उसे जानता है।"

मैंने समझ लिया कि यह ऊँट पर सवार होने को आमादा है चुनांचे मैंने ऊँट पर बिठा लिया और वह सवार होने लगी तो फिर यह आयत पढ़ी। قُلْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ यानी मोमिन अपनी नज़रें नीची रखें।"

चुनांचे मैंने अपनी नज़रें दूसरी तरफ फेर लीं और वह सवार हो गई। फिर मैंने पूछा। आपका नाम क्या है? तो बोली।

وَاذْكُرْ فِى الْكِتَابِ مَرْيَمَ "मुझे पता चल गया। कि उसका नाम मरयम है।"

मैंने पूछा। आपकी औलाद? तो बोली।

وَكَلَّمَ اللهُ مُوسٰى تَكْلِيْمًا۔ وَاتَّخَذَ اللهُ اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلًا۔ يَا دَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً

मतलब यह कि मेरे तीन बेटे हैं जिनके नाम मूसा इब्राहीम और दाऊद हैं। मैंने पूछा। अगर भूख हो। तो खाना मौजूद है। तो बोली।

اِنِّیْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا "यानी मैं रोज़े से हूँ।"

फिर हम ढूँढते ढूँढते उसके बेटों के पास पहुँच गए। तो माँ-बेटे मिल कर बड़े खुश हुए। फिर वह अपने बेटों से कहने लगी।

فَابْعَثُوْا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖ اِلَى الْمَدِيْنَةِ

यानी उसने अपने बेटों को मेरे लिए बाज़ार से कुछ मंगवाने का हुक्म दिया। मैं बड़ा खुश हुआ। और उस औरत के इस कमाल पर हैरान रह गया। कि उसने कोई ऐसी बात नहीं की जो कुरआन से बाहर हो। हर बात का जवाब उसने कुरआन ही से दिया। (नुज़हतुल-मजालिस, स० ३७, जि.१)

सबक़

सुबहानल्लाह! एक यह औरत थी जिसका कुरआन पाक से इस क़दर शग़फ़ था कि हर बात का जवाब कुरआन ही से देती है। और एक आजकल का शग़फ़ (शौक़) भी है कि जो अपने कलाम में दाग़ और ग़ालिब वग़ैरा के शे'र पढ़े फिल्मी मकालमे अदा करे वह तरक़्क़ी पसन्द और बड़ा क़ाबिल। और जो कुरआन पढ़े वह दक़यानूसी और रजअत पसन्द मुल्ला और पुराने ख़्याल का। आजकल जो मुसलमान औरतें ढोलक पर फुज़ूल गीत गाती और विवाह शादियों में वाहियात शे'र पढ़ती हैं उनको इस नेक औरत के किरदार से सबक़ हासिल करना चाहिए और अपनी ज़ुबानों को गन्दे गानों से मुलव्वस नहीं करना चाहिए बल्कि कुरआन याद करके कुरआन की आयात के साथ अपनी ज़ुबानों को मुबारक और तैय्यब व ताहिर बना लेना चाहिए।

ऐ मुसलमाँ औरतो कुरआन पढ़ो
और गन्दे गानों गीतों से बचो

❖ ❖ ❖

हिकायत नम्बर (81)

दो सोकनें

बग़दाद में एक ताजिर था जिसकी शादी हो चुकी थी। कुछ दिनों बाद उसने दूसरी शादी कर ली। पहली बीवी को उस शादी का कोई इल्म न था। ता हम यह भेद कब तक छुपा रह सकता था। उसे पता चल गया लेकिन उसने अपने शौहर से इस बारे में कुछ भी न कहा। कुछ मुद्दत के बाद शौहर का इंतिक़ाल हो गया। उसने तरका में आठ हज़ार दीनार छोड़े। इस ख़ातून ने सात हज़ार दीनार तो लड़के को दे दिए। बक़िया एक हज़ार में से निस्फ़ तो ख़ुद ले लिया और बक़िया निस्फ़ दूसरी बीवी को भेज दिया और कहलवाया तुम्हारी शादी मेरे शौहर के साथ हो चुकी थी। अब उनका इंतिक़ाल हो गया। उनके तरके में पाँच-पाँच सौ दीनार की थैली मिली तो उसने लेने से इंकार कर दिया और कहला भेजा। यह सही है कि मेरी शादी उनके साथ हुई थी लेकिन कुछ दिन हुए उन्होंने मुझे तलाक़ दे दी थी और उसका काग़ज़ मौजूद है। लिहाज़ा मैं अब इस रक़म की हक़दार नहीं।

(बहवाला-ए-ताज, कराची शुमारा जनवरी, ७३ ई०)

सबक़

पहले दौर की ऐसी नेक दिल और सच्ची मुसलमान औरतें क़ाबिले रश्क हैं हालाँकि सौकनों का रिश्ता एक ऐसा रिश्ता है जिसकी बदौलत उनकी आपस में लड़ाई उरूज पर होती है और ख़ाविन्द (शौहर) के लिए जीना हराम हो जाता है। एक दूसरे की ऐसी दुशमन होती हैं कि उनका नाम लेना भी उन्हें गवारा नहीं होता मगर उन दो सौकनों का किरदार देखिए कि पहली किस फराख़दिली के साथ उसका हिस्सा उसे भेजवाती है और दूसरी किस सच्चाई के साथ पाँच सौ दीनार वापस कर देती है कि अब मैं उसकी हक़्दार नहीं और आजकल की एक ही माडर्न औरत ख़ाविन्द (शौहर) का जीना हराम कर देती है। ख़ाविन्द (शौहर) का सारा असासा अपनी शापिंग ही में ख़र्च कर डालती है चुनांचे ऐसा ही एक माडर्न जोड़ा आराइश की दुकान पर पहुँचा। बीवी अपनी मतलूबा अशिया की फ़ेहरिस्त सुनाने लगी। नाख़ुन पालिश २ अदद। टालकम पौडर एक अदद। कटी केवड़ा पौडर एक अदद। इविनिंग इन पेरिस हियर ऑयल एक अदद।

लिपिस्टक दो अदद एक हल्की सुर्ख़ और एक गहरी सुर्ख़। अतर हिना सोला रुपया तोला वाला एक तोला। सुर्ख़ी मुख़्तलिफ़ शैड दो अदद। रूमाल एक दर्जन। हियरपेन चार अदद रेशमी जुराबें छे अदद। सुर्ख़ परस बड़ा एक अदद। तिब्बत इस्नो दो अदद। सुर्मा एक तोला।

मियाँ ने हैरान होकर पीछे मुड़ते कहा। तुम बकिया फ़ेहरिस्त बताओ मैं ज़रा अपनी घड़ी बेच आऊँ। आजकल के माडर्न मुसलमान एक से ज़्यादा दूसरी और चौथी औरत से शादी करने की मुख़ालिफ़त करते हैं और कहते हैं एक से ज़्यादा बीवियों का रखना मोलवियों की ईजाद है। कुदरत ने उन्हें इस अपने माडर्न इज्तिहाद का मज़ा यहाँ ही चखा दिया कि बीवी एक ही रखो। यह एक बीवी ही तुम्हारे नाक में दम कर देगी और तुम्हें यह शे'र पढ़ना पड़ेगा।

वह भी क्या दिन थे कि बीवी घर में जब आई न थी
रंज से वाकिफ़ न थे ग़म से शनासाई न थी

मालूम हुआ कि इस्लामी अहकाम अगर मर्द और औरतों के पेशे नज़र रहें तो एक मर्द की चार बीवियां भी हों तो वह ख़ुश रहेगा। और अगर इस्लामी अहकाम पेशे नज़र न होंगे तो एक "वाइफ़" भी ख़ाविन्द के लिए बोझ बन जाएगी। ऐसी ही एक बीवी ने शौहर से कहा। मुझे कांटे ज़रूर बनवा कर दो। ख़ाविन्द (शौहर) ने कहा। ज़ेवर पहनने से क्या होगा? यह बेजा ख़र्च है। बीवी ने कहा। ख़ुदा ने हमें कान इसलिए दिए हैं कि हमारी सुनो और न सुनो तो गोशमाली। यह तो था पुरानी दो सौकनों (सौतन) का क़िस्सा अब इस ज़माने की दो सौकनों (सौतन) का लतीफ़ा भी सुन लीजिए। दो सौकनें रात को अपने खाविन्द (शौहर) की टांगें दबाया करती थीं। एक दाईं टांग दबाया करती थी और दूसरी बाईं टांग। इत्तिफ़ाकन दाईं टांग दबाने वाली बीवी एक दिन के लिए मैके गई तो उस रात शौहर ने अपनी दूसरी बीवी से कहा। बाईं टांग दबा कर मेरी दाईं टांग भी दबा देना। क्योंकि वह आज मैके चली गई है। उसने कहा। उसकी ऐसी तीसी मैं अपनी सौकन (सौतन) वाली टांग दबाऊं? कपड़े धोने वाला सोटा लाकर ग़ुस्सा में आकर उसकी दाईं टांग पर यह कह कर कि यह मेरी सौकन (सौतन) वाली टांग है इस ज़ोर से मारा कि बेचारे शौहर की दाईं टांग टूट गई। दूसरे दिन पहली बीवी मैके से आई तो रात को जो उसने शौहर की टांग टूटी हुई देखी तो पूछा यह कैसे टूटी। तो शौहर ने बताया यह तुम्हारी

सौकन (सौतन) का कारनामा है। उसने मेरी इस टांग को तुम्हारे हिस्सा की टांग समझ कर सोटा मार कर तोड़ दिया है यह सुनकर वह भी ग़ुस्सा में उठी और सोटा ला कर कहने लगी। चुड़ैल कहीं की। उसने मेरी वाली टांग तोड़ी है तो मैं उसके हिस्सा वाली टांग क्यों न तोड़ूँ? यह कहकर उसने उसकी बाईं टांग पर ज़ोर से सोटा मार कर उसकी बाईं टांग भी तोड़ डाली और शौहर बेचारा दोनों टांगें तुड़वा बैठा। आजकल की एक ही मार्डन औरत का अपने शौहर को यह चेलंज है।

मुझ से मत कहना मैं फ़ैशन छोड़ दूँ
एक हूँ पर दोनों टांगें तोड़ दूँ

❖❖❖

हिकायत नम्बर (82)

शराफ़त व इसमत

फरहंग आसफ़ीया उर्दू के ज़ख़ीम मोटी लुग़त के नाम से उर्दू का कौन पढ़ा लिखा ना-वाक़िफ़ है? उसके मुसन्निफ़ उसके दीबाचा में अपने घर की आतिशज़दगी का हाले ज़ार लिखते हैं कि ज़िक्र ८ फरवरी १६१२ ई० की शब का है और मुसन्निफ़ की अह्ल खाना (घर वाले) उस वक़्त ज़च्चाखाना (वह जगह जहाँ बच्चा पैदा होता है) में थीं।

"जब आधे घर के क़रीब जल चुका तो उसके धुएँ और आग की लिपटों ने झिंझोड़ कर जगाया..........इतने में घर वाली को ख़बर हुई। वह पहले तो तन्हा सहन तक आई फिर अपने बच्चा को लेने अन्दर चली गई। उसे गोद में उठा के ग़ुस्लखाना में आ खड़ी हुई। उस वक़्त आग लग जाने का शोर मच गया। दो चार पास पड़ोस के आदमी आ गए। हमने अपनी घर वाली से हर चन्द कहा कि दरवाज़े में आ जाओ। मगर यही जवाब मिला कि ग़ैर मर्दों की आवाज़ आ रही है। हम क्योंकर आएं। इस हट से हमें उस वक़्त बहुत बड़ा रंज हुआ।" (स०३, तबा दोम)

ख़ैर वह आग बिला-आख़िर क्योंकर बुझी और ज़च्चा और बच्चा की जान बचने की क्या सूरत निकली। इस सारे क़िस्सा से इस वक़्त बहस नहीं। हमारे और आपके काम की चीज़ इबारत के आख़िरी फ़िक़रे हैं। ख़तरा कोई मामूली

या दूर का नहीं। बिल्कुल जान पर बनी हुई है। अपनी जान पर भी और अपने बच्चा की जान पर भी। शौहर खुद आवाज़ देकर मर्दाना हिस्सा में बुला रहे हैं। उस पर भी पर्दानशीन खातून की इसमत परस्ती का यह आलम है कि अपनी और अपने बच्चा की जान जल जाना मंज़ूर, दोनों का आग के शोलों में भसम हो जाना मंज़ूर। लेकिन यह गवारा नहीं कि इसमत के इंतिहाई और आला मेयार पर कोई ख़फ़ीफ़ (ज़रा सी) सी भी आँच आने पाए।

सबक़

इस्लामी शराफ़त व इसमत और शर्म व हया का यह वाक़्या सच्ची मुसलमान औरतों का किरदार है। जल जाना मंज़ूर मगर ग़ैर मर्दों की आवाज़ सुनना ना मंज़ूर। इस वाक़्या के पेशे नज़र आजकल की माडर्न औरतों का किरदार देख कर एक सच्चे मुसलमान का दिल जल जाता है। उन्हें इ़ज़्ज़त व शराफ़त की ख़ातिर जल जाना मंज़ूर था और इन्हें मैक-अप करके बन ठन कर बाहर नंगे मुँह फिर कर जलाना मंज़ूर है।

पहली औरतें जल जाने के ख़तरा के बावजूद ग़ैर मर्दों की आवाज़ नहीं सुनना चाहती थीं और यह माडर्न औरतें पार्टियों में जाकर ग़ैर मर्दों की आवाज़ें सुनती और उन्हें अपनी आवाज़ सुनाती भी हैं और यह नहीं तो टेलीवीज़न पर पराए मर्दों की आवाज़ें सुनकर खुश होती हैं। वह शरीअत की इजाज़त के बावजूद बाहर नहीं निकलती थीं। यह शरीअत की मुमानिअत (मना) के बावजूद घर नहीं बैठतीं। इस मकान को इत्तिफ़ाक़न आग लग गई जो बुझ भी गई मगर इस आज़ादी की आग ने घर घर आग लगा रखी है जो हर दम फैल ही रही है। बुझने का नाम ही नहीं लेती और यह आग ऐसी ख़तरनाक है जिससे जान भी जाती है और ईमान भी बाक़ी नहीं रहता।

यह जो आज़ादी है इससे भाग तू
अपने घर में मत लगा यह आग तू!!

देवबन्दी हज़रात के

हकीमुल-उम्मत मौलाना अशरफ़ अली की किताब बहिश्ती ज़ेवर, हिकायाते औलिया और उनके एक माहनामा प्यामे हक़ कराची में लिखी हुई।

औरतों की तीन हिकायात

हकीमुल-उम्मत साहब की मश्हूर किताब बहिशती ज़ेवर का आठवाँ हिस्सा। "नेक बीवियों के माल में" के उनवान से शुरू किया गया है। इस

सिलसिला में एक हिकायत दर्ज है जिसका उनवान है "हज़रत सिर्री सक़ती की एक मुरीदनी का ज़िक्र"।

"हिकायाते औलिया"

भी हकीमुल-उम्मत साहब की तालीफ़ है जिसमें एक हिकायात दर्ज है जिसका उनवान है। "बुज़ुर्गों की अक़ीदतमन्द औरत"

"प्यामे हक़"

एक माहनामा है जो मसलके देवबन्द का तरजुमान है। उसका शुमारा अक्तूबर १९४५ ई० हमारे सामने है। इसमें एक हिकायत दर्ज है जिसका उनवान है.............."गोजरी"............

लीजिए यह तीनों हिकायात भी पढ़िए :

हिकायत नम्बर (83)

हज़रत सिर्री सक़ती की एक मुरीदनी का ज़िक्र

इन बुज़ुर्ग के एक मुरीद ब्यान करते हैं कि हमारे पीर की एक मुरीदनी थी। उनका लड़का मकतब में पढ़ता था। उस्ताद ने किसी काम को भेजा वह कहीं पानी में जा गिरा और डूब कर मर गया। उस्ताद को ख़बर हुई। उसने हज़रत सिर्री सक़ती के पास जाकर ख़बर की। आप उठ कर इस मुरीदनी के घर गए और सब्र की नसीहत की। वह मुरीदनी कहने लगी कि हज़रत आप यह सब्र का मज़मून क्यों फरमा रहे हैं। उन्होंने फरमाया कि तेरा बेटा डूब कर मर गया। तअज्जुब से कहने लगी कि मेरा बेटा? उन्होंने फरमाया हां, तेरा बेटा कहने लगीं कि मेरा बेटा कभी नहीं डूबा और यह कहकर उठ कर उस जगह पर पहुंचीं और जाकर बेटे का नाम लेकर पुकारा। ऐ मुहम्मद! उसने जवाब दिया कि क्यों अम्मां। और पानी से ज़िन्दा निकल कर चला आया। हज़रत सिर्री सक़ती ने जुनैद से पूछा कि यह क्या बात है? उन्होंने फरमाया कि इस औरत को एक ख़ास मक़ाम हासिल है कि उस पर जो मुसीबत आने वाली होती है। उसको ख़बर कर दी जाती है और उसको ख़बर नहीं हुई थी इसलिए उसने कहा कि कभी ऐसा नहीं हुआ।

फ़ायदा : हर वली को जुदा दर्जा मिलता है। कोई यह न समझे कि यह दरजा ऐसे वली से बड़ा है जिसको पहले से मालूम न हो कि मुझ पर क्या गुज़रने वाला है। अल्लाह तआला को इख़्तियार है जिसके साथ जो बरताव चाहें करें मगर फिर भी बड़ी करामत है और यह बरकत है ख़ुदा और रसूल की ताबेदारी की। इसमें कोशिश करना चाहिए फिर ख़ुदा तआला चाहे तो यही दर्जा दे दें या उससे भी बड़ा दे दें।

(बहिश्ती ज़ेवर, स० ६१, मतबूआ मतबा सईदी १३३८ हि.)

सबक़

हकीमुल-उम्मत साहब की लिखी हुई इस हिकायत से आजकल की बद-अक़ीदगी के जुमला जरासीम हिलाक हो जाते हैं। एक तो यह कि **"पीरी मुरीदी"** के ख़िलाफ़ बोलना एक ख़तरनाक जरसूमा (बीमारी) है। जिसे हकीम साहब ने इस हिकायत से मार डाला। दूसरा यह कि किसी वली में यह ताक़त नहीं। वह मरे हुए इंसान को ज़िन्दा करे। इस मुहलिक (ख़तरनाक) जरसूमा को हकीम साहब ने एक मुरीदनी के पुकारने से डूब कर मरे हुए बेटे को ज़िन्दा बाहर बुला लेने का ज़िक्र करके हिलाक कर डाला। तीसरा यह ख़तरनाक जरसूमा कि ग़ायब और मुर्दे को या कह कर पुकारना शिर्क है। मुरीदनी के अपनी नज़र से ग़ायब बेटे को **"ऐ मुहम्मद"** कहकर पुकारने का ज़िक्र करके इस जरसूमा को भी हिलाक कर दिया गया। गोया हकीम साहब की यह हिकायत बद-अक़ीदगी के जरासीम को हिलाक करने का एक मुफ़ीद नुसख़ा है। यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह के मक़बूल बन्दों को आने वाले हालात का पहले ही इल्म हो जाता है फिर मंब-ए-इल्म व हिकमत और सारे नबियों के उलूम से भी ज़्यादा इल्म रखने वाले आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतअल्लिक़ यह लिखना और कहना कि उन्हें तो कल की भी ख़बर न थी। और दीवार के पीछे का भी इल्म न था फलां चीज़ का उन्हें इल्म न था और फलां बात से वह बे-ख़बर थे गुमराही हुई या नहीं? हकीम साहब ने यह लिखकर कि उस मुरीदनी को एक ख़ास मक़ाम हासिल है उस पर जो मुसीबत आने वाली हो यानी जो आइंदा होने वाला हो उसे ख़बर कर दी जाती है। इस ईमानकश जरसूमा का बेड़ा ही ग़र्क़ कर दिया और साफ लिख दिया है कि यह कमाले ख़ुदा और रसूल की ताबेदारी से हासिल होता है। और आज भी अगर कोई ख़ुदा और रसूल की ताबेदारी करे तो इससे भी ज़्यादा दर्जा

मिल सकता है तो जब ख़ुदा के रसूल की ताबेदारी से आइंदा के हालात का इल्म हो सकता है तो फिर ख़ुदा के ही रसूल के इल्मे ग़ैब से इंकार करना सबसे बड़ी जिहालत हुई या नहीं?

❖❖❖

हिकायत नम्बर (84)

बुज़ुर्गों की अक़ीदतमन्द औरत

हज़रत ख़्वाजा अहमद जाम मुस्तजाबुद्दावात थे। एक अक़ीदतमन्द औरत उनकी ख़िदमत में अपने एक नाबीना बच्चे को लाई और अर्ज़ किया। अपना हाथ उसके मुंह पर फेर दीजिए और उसकी आँखें अच्छी कर दीजिए। उस वक़्त आप पर शाने अब्दीयत ग़ालिब थी। इसलिए निहायत इंकिसार के साथ फरमाया कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ। उसने इसरार किया मगर आपने फिर वही जवाब दिया ग़र्ज़ तीन चार मरतबा यूंही रद्दो बदल जब आपने देखा कि वह मानती ही नहीं तो आपने वहाँ से उठ कर खड़े हुए और यह कहते हुए चल दिए कि यह काम तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का था। थोड़ी दूर चले तो इल्हाम हुआ तू कौन? और ईसा कौन? और मूसा कौन? पीछे लौट। उसके मुंह पर हाथ फेर। तुम अच्छा कर सकते हो। न ईसा "मा कुनेम" यानी हम करते हैं। आप यह सुनकर लौटे और मा मी कुनेम फरमाते जाते थे। और जाकर उसके मुँह पर हाथ फेर दिया और उसकी आँखें अच्छी हो गईं।

(देवबन्दी हज़रात के हकीमुल-उम्मत मौलाना अशरफ़ अली की तालीफ हिकायाते औलिया स० २४६)

सबक़

असल फाइल (काम करने वाला) ख़ुदा है और औलिया-ए-किराम ख़ुदा की मदद के मज़हर हैं और अल्लाह तआला अपने मक़बूलों के हाथों से बीमारों को शिफ़ा देता है। और उनके दस्ते शिफ़ा के फेरने से अंधे भी बीना (देखने वाले) हो जाते हैं। यह है एक अक़ीदतमन्द औरत का ईमान। और बक़ौल हकीमुल-उम्मत औरत ने यूं कहा कि आप इसकी आँखें अच्छी कर दीजिए। हकीमुल-उम्मत साहब के आजकल के मोतक़ेदीन (मानने वाले) में

से अगर उस वक़्त कोई वहाँ होता तो वह झट शिर्क का फतवा लगा देता कि अच्छा कर देना तो ख़ुदा का काम है और तू ख़्वाजा अहमद जाम को कह रही है कि आप अच्छा कर दें। मालूम हुआ कि पहले ज़माना की मुसलमान औरतें भी बुज़ुर्गों से अक़ीदत रखती थीं और उन्हें यक़ीन था कि अल्लाह के मक़बूलों से सब कुछ मिल सकता है।

दर फ़ैज़ हक़ बन्द जब था न अब कुछ
फ़क़ीरों की झोली में अब भी है सब कुछ

और आजकल के बाज़ मर्द भी यूं कहते हैं :

वह क्या है जो नहीं मिलता ख़ुदा से
जिसे तुम मांगते हो औलिया से

हत्ता कि ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतअल्लिक़ भी लिख डालते हैं कि जिसका नाम मुहम्मद है वह किसी चीज़ का मुख़्तार नहीं। इस क़िस्म की बद-अक़ीदगी के हामिल सैंकड़ों मर्दों की बद-अक़ीदगी उस पाकबाज़ औरत की अक़ीदत पर क़ुरबान। कितनी ख़ुश क़िस्मत थी वह औरत जो अपने हुस्ने अक़ीदत से अल्लाह वालों से अपने अंधे बेटे के लिए आंखें लेकर आ गई और कितने बद-बख़्त हैं वह मर्द जो अल्लाह वालों को बुरी नज़र से देख कर दिल की बसीरत (रौशनी) खो कर दिल के अंधे हो गए।

औलिया की है ग़िज़ा बस यादे हक़
जान उनको मज़हरे इमदादे हक़

हकीम साहब की यह दो हिकायात पढ़ने के बाद अब पढ़िए देवबन्दी हज़रात के माहनामा प्यामे हक़ की हिकायत जिसका उनवान है "बू-अली क़लन्दर" मगर हमने "औरतों की हिकायात" की मुनासिबत से उसका उनवान रखा है। गोजरी।

❖❖❖

हिकायत नम्बर (85)

गोजरी

छैल छबीली गोजरी बेद की तरह लचकीली रूप में चन्द्रा को शर्माती सर पर दही का मटका धरे कमर को बल देती हुई जवानी के नशा में झूमते हुए चली आ रही थी। एक ख़स्ता हाल फ़क़ीर सरे राह बैठे हुए थे। गोजरी

के यह ठाठ देखते हुए बोले। क्या बेचती है? गोजरी नाज़ से बोली। दही बेचती हूँ। "हमें न खिलाओगी दही?" फ़क़ीर दरते सवाल बढ़ा कर बोले। गोजरी हंस पड़ी। "बाबा तुम क्या खाओगे दही" उसकी हंसी में बेबाकी थी। गुरूर था। जैसे कहती हो। यह अनमोल है। मेरे हुस्न की तरह अनमोल। फ़क़ीर क़हक़हा लगा कर बोले।" हम उसके दाम देंगे।" गोजरी उनकी जुरअत पर काजल भरी आंखों में डोरे डाल कर बोली। "सोने का एक टका देना होगा।" फ़क़ीर ज़ानो पर हाथ मार कर बोले। "सोने का एक टका" गोजरी ने देखा फ़क़ीर के ख़ुरदुरे हाथ में अशरफी चमक रही थी। उसने मटका सर से उतारा। और लेजा कर बोली "लाओ बर्तन लाओ।" फ़क़ीर फातिहाना अन्दाज़ से बोले हमें दही नहीं चाहिए जाओ ले जाओ टका भी दिया और दही भी छोड़ा। हम जो चाहते थे मिल गया। गोजरी टका लेकर सोच में पड़ गई कैसा ख़रीदार है माल भी छोड़ा और दाम भी। वह मटके को सर पर रख कर सदा लगाती हुई आगे बढ़ गई। "ले लो दही" अब गोजरी का रोज़ का यह मामूल था कि उनके पास आती और सोने का टका पाकर आदाब बजा लाती। हर रोज़ सोने का टका पाने से उसके घर में ख़ुशहाली के दौर दौरे हो गए। फ़क़ीर की एक निगाहे करम ने उसकी ग़ुर्बत को अमारत में बदल दिया उसके बावजूद गोजरी का घर बे-चिराग़ था। एक रोज़ उसे मग़मूम पाकर शौहर बोला। फ़क़ीर जो तुम पर इतना मेहरबान है। उससे लड़का क्यों नहीं माँगती। यह बात गोजरी के दिल में बैठ गई और शौहर से कहने लगी। आज फ़क़ीर से यह बात ज़रूर कहूंगी। मुझे यक़ीन है कि वह मुझे माला माल कर देंगे। दूसरे दिन उसने बन ठन कर दही का मटका सर पर रखा और फ़क़ीर के पास जा पहुंची और बोली आज में सोने का टका नहीं लूंगी। फ़क़ीर ने कहा तो फिर क्या लोगी? गोजरी बोली मेरे औलाद नहीं होती। सुन्दर सा बालक लूंगी। फ़क़ीर मुस्कुरा कर बोले। हम तुम्हें निहाल कर देंगे। कल अपनी तमाम सहेलियों को साथ ले आना जिनकी गोद खाली है हम मुराद से भर देंगे। गोजरी आदाब बजा लाई। झुक कर सलाम किया और मुस्कुराती हुई लौट आई। चुनांचे दूसरे दिन गोजरी अपनी तमाम बे-औलाद सहेलियों को लेकर फ़क़ीर के पास पहुंच गई। फ़क़ीर मुँह से पान का उगाल निकाल कर बोले। यह लो इसमें से थोड़ा-थोड़ा सब खा लो और ख़ुदा की क़ुदरत देखो। सबने थोड़ा-थोड़ा उगाल खा लिया। एक औरत जो बड़ी मग़रूर थी। माथे पर तेवरी चढ़ा कर बोली। हाए मुझे तो इस झूठन से घिन आती है। यह

कहा और उगाल ज़मीन पर फेंक दिया। वक़्ते मुक़र्रह पर गोजरी और उसकी तमाम सहेलियों के यहाँ बच्चे पैदा हो गए और अन्धेरे घरों में उजाला हो गया। मग़रूर नाज़नीन ने यह हाल देखा तो दिल ही दिल में शरमाई और पछताई। सब औरतें ख़ुशी-ख़ुशी बच्चों को गोद में लिए फ़क़ीर के पास आई और ख़ुशख़बरी सुनाई। फ़क़ीर ख़ुश हो गया यकायक फ़क़ीर की नज़र उस मग़मूम औरत पर पड़ी। आप उससे मुख़ातब होकर बोले तू आज क्यों उदास है? वह निदामत से गर्दन झुका कर बोली मैंने आपका उगाल ज़मीन पर डाल दिया था। खा लेती तो आज मेरी गोद भी हरी हो जाती फ़क़ीर मुस्कुरा कर बोले। तू ग़म्गीन न हो। फ़क़ीर किसी को उदास नहीं देख सकता। जा देख कहां डाला था तूने उगाल। वह औरत उठी चट्टान की दूसरी तरफ उसने फ़क़ीर का उगाल हिक़ारत से फेंक दिया था। वह यह देख कर हैरान रह गई कि उसी जगह पर पड़ा हुआ बच्चा अंगूठा चूस रहा था। मां की मामता भरी साकिन (ठहरी) नदी में हलचल मच गई। "मेरा बच्चा" कहकर मुहब्बत के साथ गोद में उठा लिया फिर सहेलियों में आई मुस्कुरा कर बोली। फ़क़ीर ने मेरी भी गोद हरी कर दी। फ़क़ीर को मजरा (सलाम) किया। फ़क़ीर ने दुआ दी।

यह फ़क़ीर हज़रत बू-अली क़लन्दर थे। सब हज़रत बू-अली क़लन्दर के गुन गाती अपने घरों को लौटीं।

देवबन्दी हज़रात का रिसाला "प्यामे हक़" कराची अक्तूबर १९५४ ई०

सबक़

देवबन्दी और ग़ैर मुक़ल्लेदीन हज़रात की मोतमद अलैह (क़ाबिले ऐतबार) सबसे बड़ी मशहूर किताब तक़्वियतुल-ईमान जिसे यह लोग हज़ारों की तादाद में छाप कर मुफ़्त तक़्सीम करते हैं और जो उनके अक़ाइद की मंबा है। उसकी पहले चन्द एक इबारतें पढ़ लीजिए।

(१) अंबिया व औलिया को अल्लाह ने आलम (दुनिया) में तसर्रुफ़ (ताक़त) करने की कुछ क़ुदरत नहीं दी कि जिसको चाहें मार डालें या औलाद दें या मुश्किल खोल दें। (स०१६)

(२) अल्लाह ज़बरदस्त के होते हुए ऐसे आजिज़ लोगों (अंबिया व औलिया) को पुकारना जो कुछ फायदा व नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते महज़ बे-इंसाफी है कि ऐसे बड़े शख़्स (अल्लाह) का मरतबा ऐसे नाकारे लोगों को साबित कीजिए।" (स०१६)

(३) किसी का नाम अब्दुन्नबी पीर बख़्श या इमाम बख़्श रखना शिर्क है। (स०८) इसी तरह की उनकी तक़रीरें और तहरीरें होती हैं कि कोई नबी वली कुछ इख़्तियार नहीं रखता। रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता जो मांगो ख़ुदा ही से मांगो। ग़ैर से कुछ मांगना शिर्क है मगर देवबन्दी रिसाला की इस हिकायत से मालूम हुआ कि अल्लाह के मक़्बूल बन्दे अपने अल्लाह से दीन व दुनिया के ख़ज़ाने लेकर आते हैं। ज़ानों पर हाथ मारा तो अशरफ़ी पैदा कर ली। और फिर एक रोज़ नहीं हर रोज़। यह तसर्रुफ़ नहीं तो और क्या है? फिर अपने मुंह के पान के उगाल से बे-औलादों को औलाद भी दे दी। यह सब अल्लाह ही की देन थी लेकिन ज़ुहूर उसका बू-अली क़लन्दर की ज़ात से हुआ। बावजूद इसके अंबिया व औलिया को नाकारे कहना किस क़दर गुस्ताख़ी व ज़ुल्म है। किसी दवाई को शिफ़ा बख़्श कहना जायज़ है और सब कहते हैं कि फलां दवा बड़ी शिफ़ा बख़्श है। मतलब यह होता है कि उसके ज़रिआ से ख़ुदा शिफ़ा देता है तो इसी तरह अगर किसी इमाम या पीर की दुआ से अल्लाह बच्चा अता करे तो उसका नाम इमाम बख़्श या पीर बख़्श रखना क्यों जाइज़ न हो? और यह जो हिकायत में ब्यान किया गया है कि बहुत सी औरतों को बू-अली क़लन्दर के मुंह के पान के उगाल से ख़ुदा ने बच्चे अता किए। यह सब बच्चे इस मानी में क़लन्दर बख़्श हुए या नहीं? यह भी मालूम हुआ कि इन सब औरतों में से जिस मग़रूर तक़्वियतुल-ईमानी औरत को बू-अली क़लन्दर के मुंह से उगाल से घिन आई और उसने फ़ैज़ रसां उगाल को फेंक दिया ख़ुदा ने उसे भी महरूम न रखा कि वह एक मक़्बूल के दरवाज़ा पर आई तो थी। यह भी मालूम हुआ कि जिस ज़ात पाक व बा बरकात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक गुलाम की यह शान है कि ज़ानों पर हाथ मारा तो अशरफी पैदा कर ली। उस ज़ात पाक के तसर्रुफ़ का अपना क्या आलम होगा? बावजूद उसके अगर कोई उनके लिए यह लिख दे कि जिसका नाम मुहम्मद है वह किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं। (तक़्वियतुल-ईमान) वह किस क़दर गुस्ताख़ और बद-नसीब है। हमारे हुज़ूर तो ज़मीन भर के ख़ज़ानों के मालिक हैं।

मालूम हुआ कि इस क़िस्म के लोगों का हाफ़िज़ा इतना कमज़ोर हो जाता है कि उन्हें पता ही नहीं चलता कि हम क्या लिख चुके और अब क्या

लिख रहे हैं। गोया। "दरोग़ गोरा हाफ़िज़ा न बाशद" के यह मिस्दाक़ होते हैं। पस इस देवबन्दी हिकायत के पेशे नज़र हक़ीक़त यही है कि –

दर फैज़ हक़ बन्द जब था न अब कुछ!
फ़क़ीरों की झोली में अब भी है सब कुछ

छठा बाब

मुतफ़र्रिक़ हिकायात

हिकायत नम्बर (86)

दो औरतें और एक बच्चा

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में दो औरतें अपना-अपना बच्चा लेकर घर से निकलीं। रास्ते में जंगल आया तो एक भेड़िए ने एक बच्चा को उठा लिया और ले गया। अब दोनों औरतों में इस बात पर लड़ाई होने लगी कि भेड़िया किसके बच्चे को उठा कर ले गया है। एक कहती कि तुम्हारे बच्चे को ले गया है। मेरा बच्चा तो यह मौजूद है। आख़िरकार लड़ते-लड़ते यह दोनों औरतें हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के दरबार में पहुंचीं। आपने दोनों का तसफ़िया (फ़ैसला) फरमाया कि लड़का बड़ी औरत को मिल जाना चाहिए। एक औरत बड़ी भी थी और बच्चा भी था उसके पास, इसलिए बच्चा उसी को दे दिया गया। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम उस वक़्त वहां मौजूद थे। फरमाने लगे। एक छुरी लाओ। मैं इस बच्चा को दरम्यान से काट कर दोनों को आधा आध तक़्सीम कर देता हूँ। यह सुनकर छोटी औरत की मादरी शफ़्क़त ने जोश मारा और बे-ताब होकर कहने लगी। या हज़रत! आप ऐसा न कीजिए यह उसी का बेटा है। आप उसी को दे दें। लेकिन ख़ुदा रा इसे काटें नहीं। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फरमाया मेरा फ़ैसला यह है कि बच्चा इसी छोटी औरत का है। जिसके दिल में मादरी मुहब्बत का जोश पैदा हो गया। अगर यह इस बच्चे की माँ न होती तो बड़ी औरत की तरह यह ख़ामोश रहती। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम भी इस फैसला पर ख़ुश हो गए और बच्चा इसी छोटी औरत को दे दिया गया।

(नुज़हतुल-मजालिस, बाबु-बिर्रि-वालिदैन, स०१६६, जि.१)

सबक़

मां का बहुत बड़ा दर्जा है। माँ अपने बच्चे की ज़रा सी तक्लीफ़ भी बर्दाश्त नहीं कर सकती। नौ माह शिकम (पेट) में रख कर बच्चे को तक्लीफ़ के साथ जनती है और फिर दिन-रात उसकी नौकर बनी रहती है। इसीलिए शरीअ़त में माँ का दर्जा बाप से भी तीन गुना ज़्यादा है लेकिन आजकल की माडर्न माओं में निसाइयत नज़रत नहीं आती। मर्दों की तरह नंगे मुँह नंगे सर और मर्दों की तरह पतलून पहन कर बाज़ारों में घूमने वाली माओं के दिलों में शफ़्क़त ज़र्रा भर भी बाक़ी न रही। अस्पताल में बच्चा जन कर किसी आया के सिपुर्द कर देती हैं। वह ज़माना गया। जब मां-बाप और बच्चा यक्जा रहते। मां-बाप बच्चे को बेटा और बेटा बाप को अब्बा जी और मां को अम्मी कहता था। अब माँ कलब में। बाप सीनमा में और बच्चा किसी अंग्रेज़ी स्कूल के होस्टल में। मां-बाप बच्चे को बेबी" और "बेबी" बाप को डैडी और माँ को मम्मी कहता है एक हिन्दू प्रोफ़ेसर ने लिखा था। कि "मौजूदा ज़माने की औरत अब औरत नहीं रही। औरत घर की मालिका थी लेकिन अब यह चलती फिरती गुड़िया बन गई है मग़्रिबज़दा औरत ने घरेलू ज़िन्दगी के ख़िरमन (ख़लिहान) में आग लगा दी है। अब उसमें न कुंबा की मुहब्बत रही है, न बच्चों के साथ दिल्चस्पी। अब यह कुत्तों और बिल्लियों से मुहब्बत करने वाली और फ्रेंड्ज़ व कलब की दिलदादा बन गई है।" (माहे तैबा अक्तूबर १९६२ ई०)। ऐसी औरत को अपने बच्चे से क्या उन्स (मुहब्बत) हो सकता है। बल्कि बाज़ ऐसी औरतें तो बच्चा पैदा होते ही उसका गला घोंट कर कहीं फेंक आती हैं और यूरोप के हस्पताल तो इस क़िस्म की माओं की मेहरबानियों से हरामी बच्चों से भरे रहते हैं। १९६२ ई० ही में किसी बेगम साहिबा ने कराची में ऐलान किया था कि मर्द अगर चार बीवियाँ रख सकते हैं तो हम एक शौहर पर इक्तिफ़ा (सब्र) क्यों करें। मैंने लिखा है।

माडर्न औरत का है तक़ाज़ा कि शौहर चार हों
एक शौहर कम है कोटा अब यह बढ़ना चाहिए

और रिसाला नमकदान में मजीद लाहौरी ने लिखा था :

अब हमारे वास्ते भी यह रिआयत क्यों न हो
चार शौहर की हमें भी तो इजाज़त क्यों न हो!

फरमाइए इस क़िस्म की औरत को अपने बच्चे से प्यार कैसे हो सकता

है और अगर चार शौहरों की बेगम साहिबा से कोई बच्चा पैदा हो तो फरमाइए वह किसका हुआ? क्या सुलेमान अलैहिस्सलाम के फ़ैसला के मुताबिक़ इस बच्चे के चार टुकड़े करके चारों शौहरों में तक़सीम किए जाएंगे?

यह भी मालूम हुआ कि ऐसी माँ की मुहब्बत बच्चे के दिल में भी नहीं रहती और वह मां को अपने डैडी की वाइफ़ समझता है। मैंने अपनी माडर्न मसनवी में लिखा है।

पहली माओं की थी बच्चों पर नज़र
अब है उन माओं की कुत्तों पर
बच्चे भी माँ को समझते माँ नहीं
कहते हैं हम पर तेरा इहसां नहीं

यह भी मालूम हुआ कि बाज़ चालाक औरतें दूसरी औरत के बच्चे को बेटी देकर बच्चा छीन लेती हैं और उसे अपनी मां के पास जाने ही नहीं देतीं मां बेचारी कुढ़ती रहती है और दुआ करती रहती है कि मेरा बच्चा जहाँ रहे खुश रहे। यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत जिसके दिल में हो और हुज़ूर की बे-अदबी व गुस्ताख़ी पर जो लोग बे-चैन और बे-ताब हो जाएँ असल में हुज़ूर उन्हीं के रसूल हैं। और जो लोग ऐसी गुस्ताख़ियों पर ख़ामोश रहें बल्कि ख़ुद भी गुस्ताख़ियाँ करने लगें हुज़ूर से उनका कोई तअल्लुक़ नहीं। आला हज़रत फरमाते हैं।

करें मुस्तफ़ा की इहानतें खुले तौर उस पे यह जुरअतें!
कि मैं क्या नहीं हूं मुहम्मदी अरे हां नहीं अरे हां नहीं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (87)

लौंडी की क़ीमत

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाह अलैहि बसरा के बाज़ार में गए तो एक लौंडी बिकती नज़र आई। आपने उसके मालिक से पूछा कि उसकी क्या क़ीमत है? मालिक ने कहा। मियाँ छोड़ो तुम इस बात को। तुम एक दुर्वेश आदमी हो तुम उसकी क़ीमत न दे सकोगे। फरमाया कि यह बेचारी क्या माल हमीं ने तो बड़ी-बड़ी लौंडियों का बैआना दे रखा है इस तुम्हारी

लौंडी की क़ीमत मुझसे जो पूछो तो खुजूर की दो गुठलियाँ हैं और वह इसलिए कि इसमें कई ऐब हैं दो दिन अतर न लगाए तो कपड़ों से बू आने लगे। नहाए न तो सारा बदन मैला हो जाए। मिसवाक न करे तो गन्दा दहन (मुँह) हो जाए। सर न धोए तो सर के बालों में जुएँ पड़ जाएँ। उम्र ज़्यादा हो जाए तो बुढ़िया कहलाने लगे किसी महीने अय्याम से खाली नहीं। बैतुल-ख़ला जाती है तो अन्दर से गन्दगी निकलती है। भाई जान! मैंने उन लौंडियों का ब्याना दे रखा है जो मुश्क, काफूर और सरासर नूर से पैदा हुई हैं जिनका लुआबे दहन दरिया-ए-शोर (खारा) को मीठा कर दे। जिनका तबस्सुम (मुस्कुराहट) मुर्दे को ज़िन्दा कर दे। जिनकी ख़ुशबू से जहान मुअत्तर हो जाए और जिनकी सिफ़त अल्लाह तआला ने इस तरह ब्यान फरमाई। हूरुन मक़्सूरातुन फ़िल-ख़ियाम। यह जन्नत की हूरें हैं। उस शख़्स ने पूछा कि ऐसी लौंडियों की क्या क़ीमत होगी। फरमाया कि ख़्वाहिशाते नफ़्सानी का तर्क और तहज्जुद की नमाज़ पढ़नी। उस शख़्स के दिल पर कुछ ऐसा असर हुआ कि तमाम लौंडियों गुलामों को आज़ाद करके खुदा के ज़िक्र में मशग़ूल हो गया और वह आबिद व ज़ाहिद बन गया।

(नुज़हतुल-मजालिस, बाबुज़-ज़ुहद, स०२०५, जि०१)

सबक़

इस दुनिया का हुस्न व जमाल महज़ आर्ज़ी (थोड़े दिन) और फानी (ख़त्म) है। यह तो पुराने ज़माने की बात है और आजकल का माडर्न हुस्न तो इस आर्ज़ी व फानी हुस्न से भी ज़्यादा आर्ज़ी व फानी है। माडर्न औरत अगर एक दिन भी सेंट न मले तो उससे बू आने लगे। यह नहाती भी है तो मेम और साहब दानों एक ही टब में नहा रहे थे तो साहब ने कुल्ली की तो कहा यह कि पानी का ज़ायक़ा क्यों बदल गया? मेम बोली। डार्लिंग मैंने थोड़ा सा पेशाब कर दिया है। पहले ज़माना के मियाँ बीवी में मेल बढ़ता था और आजकल के माडर्न जोड़े में मैल बढ़ती है। पहले दौर में कुदरती दाँतों को मिस्वाक से साफ रखा जाता था और आजकल सुना है पैरिस में औरतें कुदरती दाँत ही निकलवा देती हैं ताकि दाँत का सेंट मुँह से निकाल कर साफ कर लिया जाया करे वरना टूथ पेस्ट से दाँत साफ किए जाएँ लेकिन फिर भी कुत्तों का मुंह चूम-चूम कर गन्दा दहन (मुँह) ही रहती हैं जुओं से बचने के लिए सर के बाल ही कटा देती हैं। लेकिन कुत्तों की मक्खियों से उनका बदन नहीं बच सकता। पहले दौर में उम्र ज़्यादा होने

पर बुढ़िया हो जाती थीं। लेकिन अब तो जवान और बूढ़ी औरतें सभी मैक-अप करके जवान बनना चाहती हैं। हालांकि आजकल की जवान औरत भी ग़ैर फितरी माहौल में बुढ़िया नज़र आती है। बाल सफेद रंग ज़र्द और आँख ऐनक की मुहताज और जो बुढ़िया है। उसका मैक-अप भी बुढ़िया होता है। मैंने लिखा है।

है यह बूढ़े की तमन्ना कि जवां नज़र आए
दाढ़ी मुंडवाने की इस वास्ते आदत न गई
सुर्ख़ी पौडर से जवां साल नज़र आती है
उसके पोते से भी पहचानी यह सूरत न गई

एक दूसरी नज़्म में लिखा है कि –

नज़र आती है बुढ़िया भी जवां मैक-अप के सदक़ा में
यह पौडर का करिश्मा है कि खुर्चन भी मलाई है!!
नज़र आई जो टेढ़ी गर्ल तो आशिक़ का दिल बोला!
मुझे आँखों ने बोतल कोको कोला की पिलाई है

अल-ग़रज़ पहले दौर का हुस्न व जमाल अगरचे फानी ही था लेकिन था तो कुदरती मगर आजकल का हुस्न तो है ही खुद-साख़्ता और मसनूई (बनावट)। अगर हज़रत मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाह अलैह इस क़िस्म की लौंडी को देखते तो खुजूर की एक गुठली भी उसकी क़ीमत न बताते मालूम हुआ कि दाना और आक़िबत अंदेश वह शख़्स है जो उन लौंडियों का खरीदार बने। जिनका पता मालिक बिन दीनार ने बताया। लेकिन अफसोस कि हमारे दिन-रात ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया और तर्के नमाज़ में गुज़र रहे हैं और आक़िबत का हमें कोई ख़्याल ही नहीं। आला हज़रत फरमाते हैं।

दिन लहू में खोना तुझे शब रात भर सोना तुझे
शर्मे नबी ख़ौफ़े खुदा यह भी नहीं वह भी नहीं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (88)

एक परी जमाल औरत

हज्जाज ने एक परी जमाल औरत से निकाह किया मगर औरत को उससे नफरत थी। उसने एक रोज़ ख़लीफ़-ए-वक़्त के पास पैग़ाम भेजा कि आप हज्जाज को हुक्म फरमाएं कि वह मुझे तलाक़ दे दे और आप मुझसे निकाह कर लें। ख़लीफ़ा ने ऐसा ही किया। हज्जाज ने खाने के वक़्त शाही दस्तर ख़्वान पर बैठ कर गोश्त का एक लुक़्मा मुँह में डाल कर निकाला। और ख़लीफ़ा के आगे रख दिया। ख़लीफा ने इस अम्र का इंकिशाफ़ चाहा। तो कहा कि आप मेरी जूठी की हुई चीज़ को कैसे खा सकते हैं? ख़लीफ़ा समझ गया और अपने इरादा से बाज़ आ गया।

(नुज़हतुल-मजालिस, बाब ज़िक्रुन्निसा स० १०, जि.२)

सबक़

जमाल की परी से वफ़ा की भरी औरत बेहतर है। इसलिए कि उसे अपने हुस्न पर नाज़ इज़्ज़ व जाह और खाविन्द की तन्ख़्वाह से प्यार होता है और इसे अपने शौहर पर नाज़ और उसकी मुहब्बत भरी निगाह से प्यार होता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि रिश्ता करते वक़्त कोई हुस्न व जमाल और कोई दौलत व माल देखता है। तुम सबसे पहले दीन को देखो। दीन होगा तो ज़ौजैन में एक दूसरे के हुकूक़ मल्हूज़ (लिहाज़ करना) रहेंगे।

यह भी मालूम हुआ कि परी जमाल मग़रबी तहज़ीब ने मुसलमान से कहा है कि तुम इस्लामी तहज़ीब को छोड़ दो और मुझे अपना लो। मगर सच्चा मुसलमान उसे यह जवाब देता है कि तुम सैंकड़ों अय्याशों की जूठी हो मुझे तुझ से क्या ग़रज़? यह भी मालूम हुआ कि मग़रबी तहज़ीब का दिलदादा मुल्हिद भी एक परी जमाल औरत है जो मोलवी से तलाक़ लेकर मादर पिदर आज़ादी का मज़ा लेना चाहता है। मैंने लिखा है।

ख़फ़ा मुल्हिद को होते मोलवी पर देखते जाओ
ज़ने अय्याश को भाया न शौहर देखते जाओ

❖❖❖

हिकायत नम्बर (89)

एक बादशाह की बख़ील बीवी

एक मछेरा इनाम के लालच में एक मछली बादशाह के हुज़ूर लाया और कहने लगा। हुज़ूर! यह एक ख़ास मछली है जो मैं आपके लिए तोहफ़ा लाया हूँ। बादशाह ने उसका यह तोहफ़ा कुबूल करके उसे चार हज़ार दिरहम इनाम में दिए। बादशाह की बीवी ने यह देखकर बादशाह से कहा। आप बड़े फ़ुज़ूल ख़र्च हैं कि एक मामूली मछली पर इतनी रक़म इनाम में दे दी। बादशाह ने कहा। अब यह रक़म मैं उसे दे चुका हूँ। कोई तदबीर बताओ जिससे मैं यह इनाम वापस ले सकूं। बीवी ने कहा। आप उससे पूछिए। यह मछली नर है या मादा? अगर नर बताए तो कहिए मुझे तो मादा चाहिए और अगर मादा बताए तो कहिए मुझ नर चाहे। चुनांचे बादशाह ने मछेरे से पूछा कि यह मछली नर है या मादा।? मछेरे ने कहा। हुज़ूर! यह न नर है और न मादा बल्कि ख़िनसा है बादशाह यह जवाब सुनकर हँस पड़ा और ख़ुश होकर चार हज़ार दिरहम इंनाम में और दे दिए। अब तो बीवी और भी ग़ुस्सा में आ गई। मछेरे से इत्तेफ़ाक़न एक दिरहम ज़मीन पर गिर पड़ा बीवी बोली देखिए यह शख़्स कितना बख़ील व कमीना है कि आठ हज़ार दिरहम पा कर भी एक दिरहम को नहीं छोड़ सका और उसे झट ज़मीन से उठा लिया। आप उसकी इसी बात पर नाराज़ होकर सारे दिरहम वापस ले लें। बादशाह ने मछेरे से पूछा। क्यों मियाँ! आठ हज़ार दिरहम में से तुम एक दिरहम को भी न छोड़ सके। इतनी कमीनगी का इज़हार तुमने क्यों किया? उसने हाथ जोड़ कर कहा। हुज़ूर! दिरहम की बात न थी। दरासल दिरहम पर आपका नाम लिखा था। मैंने चाहा कि दिरहम पर किसी का पाँव पड़ जाए और आपके नाम की तौहीन हो। बादशाह इस जवाब से और भी ज़्याशा ख़ुश हो गया और चार हज़ार दीनार इनाम में उसे और दे दिए और उसकी बख़ील बीवी जल भुन कर रह गई। उसके बाद बदाशाह ने सारे शहर में डोंडी पिटवा दी कि जिसे रुपया बचाना हो। वह अपनी बीवी की राय पर हरगिज़ न चले वरना नुक़सान उठाएगा।

(नुज़हतुल-मजालिस स० १२, जि.२ बाब ज़िक्रुन्निसा)

सबक़

पहले ज़माना के बादशाह बड़े सख़ी और ग़रीबों पर ख़र्च करके खुश हुआ करते थे मगर आजकल दौलत को अपने लिए जमा करना और ग़रीबों पर ख़र्च न करना आम है। इस्लाम ने ज़कात, सदक़ात और ख़ैरात की मदें इसीलिए रखी हैं कि अमीरों के माल से ग़रीबों को भी कुछ मिल चुनांचे खुदा फरमाता है।

وَفِىٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ (प. २६, अ. १८)

और उनके मालों में मंगते और बे-नसीब का हक़ है।

अफ़सोस कि अमीरों ने इस इर्शाद बारी पर अमल न किया जिसके बाइस कई क़िस्म के अज़्म पैदा होने लगे और दुनिया और भी मुश्किलात में पड़ने लगी यह भी मालूम हुआ कि कोई ग़रीब आदमी चाहे कितना मामूली तोहफ़ा भी लाए उसकी दिलजोई करने के लिए उसे क़ुबूल कर लेना चाहिए और यह भी मालूम हुआ कि बाज़ औरतें शहज़ादियाँ ही क्यों न हों ग़रीबों पर माल ख़र्च को फ़ुज़ूल ख़र्ची समझती हैं। अपने लिए शॉपिंग के लिए निकलीं तो चाहे हज़ारों का ख़र्च हो जाए। उसे फ़ुज़ूल ख़र्ची नहीं समझतीं हमारे ही वतने अज़ीज़ में यह जो सुर्ख़ी पौडर लिपिस्टिक और मैक-अप का सामान मस्नूई हुस्न के लिए दर आमद किया जाता है। अगर इसी एक मद को बन्द कर दिया जाए तो मुल्क बहुत बड़ी फ़ुज़ूल ख़र्ची से बच कर काफी ज़रे मुबादला बचा सकता है। मगर नहीं। तईश और फ़ैशन पर जिस तरह रुपया पानी की तरह बहाया जाता है हमारी माडर्न औरतें उसे फ़ुज़ूल ख़र्ची नहीं समझतीं। जायज़ ख़र्च की तो परवाह नहीं लेकिन फ़ुज़ूल ख़र्ची का यह आलम है जिसे मैंने अपनी एक नज़म में लिखा है।

है मियाँ को हुक्म बीवी का कि आटा हो न हो
सुर्ख़ी पौडर की मगर तामील फौरन चाहिए!
देखता है कौन अब सीने पिरोने की तमीज़
आजकल तो लड़कियों में शौक़ फ़ैशन चाहिए

आजकल विवाह शादियों में जिस क़दर फ़ुज़ूल ख़र्ची होती है। यह सब औरतों की राय पर चलने का नतीजा है। वरना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम तो इतनी पाकीज़ा और आरामदेह है कि इस पर अमल करके आदमी दीन भी बचा लेता है और दुनिया भी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बढ़कर अमीर और कौन हो सकता है।

दोनों जहानों के आप मालिक हैं।

दोनों जहाँ हैं आपके क़ब्ज़ा व इख़्तियार में।

बावजूद इसके हुज़ूर ने जब ख़ातूने जन्नत यानी अपनी साहबज़ादी हज़रत फातमा रज़िअल्लाहु अन्हा का निकाह फरमाया तो जहेज़ में क्या दिया? आजकल तो रंगा रंग के मुतअद्दिद जोड़े सोने के गहने सोफ़े सेट और ख़ुदा जाने क्या क्या दिया जाता है और उन सब चीज़ों की पहले नुमाइश की जाती है मगर सुब्हानल्लाह बादशाह कौनेन की साहबज़ादी ख़ातूने जन्नत जब अपने महबूबे काइनात बाप के घर से चली तो जहेज़ में क्या लेकर चली। सुनिए।

चली थी बाप के घर से नबी की लाडली पहने
हया की चादरें इफ़्फ़त का जामा सब्र के गहने

❖❖❖

हिकायत नम्बर (90)

चचाज़ाद बहन बीबी

एक रोज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का गुज़र क़ब्रिस्तान में एक शख़्स पर हुआ जिसका नाम इसहाक़ था। वह एक क़ब्र के पास बैठा ज़ार व क़तार रो रहा था। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उससे रोने का सबब (वजह) पूछा तो बोला यह क़ब्र मेरी चचाज़ाद बहन बीवी की है। मुझे उससे बड़ा प्यार था। अब मैं उसकी क़ब्र से जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकता। हज़रत ईसा ने फरमाया। अगर कहो तो मैं उसे अल्लाह के इज़्न (हुक्म) से ज़िन्दा कर दूँ। उसने कहा। हां ज़रूर ऐसा कर दीजिए। आपने उस क़ब्र पर खड़े होकर कहा हुक्मे इलाही से उठ खड़ा हो। क़ब्र फटी और उस में से एक काले रंग का ग़ुलाम निकल आया। उस पर आग के शोले भड़क रहे थे। उसने ईसा अलैहिस्सलाम को देखकर बुलन्द आवाज़ से कहा। ला इलाहा इल्लल्लाह ईसा रूहुल्लाह।" आग बुझ गई। और वह अज़ाब से बच गया। उस शख़्स ने कहा यह मुझ से ग़लती हुई। मेरी बीवी की क़ब्र यह न थी। वह साथ वाली क़ब्र है। आपने वहाँ पहुँच कर भी यही कहा कि क़ुम बेइज़निल्लाह। क़ब्र वाले उठ खड़ा हो। क़ब्र फटी। और उसमें से एक

ख़ूबसूरत औरत ज़िन्दा होकर निकल आई। उस शख़्स ने उसे देखते ही उसका हाथ पकड़ लिया और कहा यही मेरी बीवी है और बहुत ख़ुश हुआ चूंकि यह देर से जागा हुआ था। लिहाज़ा वहीं सो गया। उसके सोने के बाद वहाँ से एक शहज़ादा गुज़रा। जिस पर यह आशिक़ हो गई और शहज़ादा उस पर आशिक़ हो गया। शहज़ादा ने फ़ौरन उसे अपने घोड़े पर बिठाया और उसे लेकर चला गया इधर ख़ाविन्द (शौहर) की आँख खुली तो अपनी औरत को न पाकर ढूँढते-ढूँढते उसे शहज़ादा के पास मिल गई। उसने शहज़ादा से कहा। यह मेरी बीवी है। शहज़ादा ने कहा। तुम झूठ बोलते हो। यह तो मेरी लौंडी है। वह औरत भी कहने लगी। मैं तो तुम्हें पहचानती भी नहीं। तुम बेजा मुझ पर तोहमत लगाते हो। मैं तो इस शहज़ादे की लौंडी हूँ। होते-होते यहाँ तक नौबत पहुंची कि एक रोज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का वहाँ से गुज़र हुआ। शौहर ने कहा। या रूहुल्लाह! यह मेरी वही औरत है जिसे आपने ज़िन्दा किया था मगर अब शहज़ादा उसे अपनी लौंडी बताता है। और यह खुद भी कहती है कि मैं तो तुम्हें जानती भी नहीं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उस औरत से कहा क्या तू वह औरत नहीं जिसे ख़ुदा के हुक्म से ही मैंने........ज़िन्दा किया वह बोली। नहीं। हज़रत ने फ़रमाया। अच्छा तो हमारी दी हुई चीज़ वापस कर दे इतना कहना था कि वह मुर्दा होकर ज़मीन पर गिर पड़ी। उस पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। जो शख़्स उस मर्द को देखना चाहे जो काफ़िर होकर मरा और फिर ख़ुदा ने उसे ज़िन्दा करके ईमान की हालत में मारा तो उस काले रंग के ग़ुलाम को देखे और जो ऐसी औरत को देखना चाहे जो ईमान की हालत में मरी। फिर ख़ुदा ने उसे ज़िन्दा किया और वह कुफ़्र की हालत में मरी तो इस औरत को देख ले।

(नुज़हतुल-मजालिस बाब ज़िक्रुन्निसा स० ११, जि.२)

सबक़

बदसूरत लेकिन बा-वफ़ा औरत ख़ूबसूरत लेकिन बे-वफ़ा औरत से हज़ार दरजा बेहतर है पहली औरत मर्द के लिए जन्नत और दूसरी मर्द के लिए जहन्नम है। ऐ काश! आजकल की हज़ार जतन करके ख़ूबसूरत बनने वालियाँ अपनी आदत व सीरत को हसीन व जमील बनाने की कोशिश करें। यह जानते हुए भी कि यह हुस्न व जमाल.........ख़ुदा का अता कर्दा है। इसलिए उसे ख़ुदा के इर्शाद के मुताबिक़ सिर्फ़ ख़ाविन्द के लिए ज़ाहिर

किया जाए मगर उसे गैरों के लिए ज़ाहिर किया जाता है और फिर उस अय्याश शहज़ादे की तरह आजकल के अय्याश मर्द भी पराई औरत को अपनी औरत बताने लगते हैं। यहाँ एक लतीफ़ा भी सुन लीजिए। एक मरतबा एक बड़ा अय्याश आदमी चन्द साथियों के साथ मुझसे कोई मसला पूछने आया। तो कहने लगा। मोलवी साहब! मेरे वालिद साहब की दो बीवियाँ हैं एक सगी और एक सौतेली। मैंने हैरान होकर पूछा। भई! सौतेली माँ सौतेली बहन तो सुनते आए हैं। मगर यह सौतेली बीवी एक नई बात सुनने में आई है। बोला बात यह है कि मेरी सगी माँ तो वालिद साहब निकाह करके लाए हैं मगर सौतेली माँ को वालिद भगा कर लाए हैं। उसका ख़ाविन्द (शौहर) मौजूद है लेकिन मेरे वालिद साहब से वह डरता है इसलिए वह मेरे वालिद ही के पास रहती है। मैंने उससे बरजस्ता कहा। मेरे ख़्याल में आप उसी सौतेली माँ के पेट से हैं। उसके साथी कहने लगे। हाँ साहब! ठीक है। यह उसी का लड़का है उसके और उसके दूसरे जायज़ भाइयों से कोई जायदाद का झगड़ा था जिसके मुतअल्लिक़ वह मसला पूछना चाहता था। मैंने कहा। भई शरई मसला पूछोगे तो तुम्हें अपने बाप ही से हाथ धोने पड़ेंगे। ज़ानी की सज़ा बड़ी सख़्त है। होते-होते बात बढ़ गई और लोग भी आ गए और मैंने उस हरामी को अपने कमरा से निकलवाया। फरमाइए। आजकल हमारे मुआशरा में यह ग़ैर शरई हरकत मौजूद है या नहीं? मोलवी बे-चारा लोगों की गालियों का तख़्त-ए-मश्क़ इसीलिए बना हुआ है कि वह इस क़िस्म की हरकतों का मुख़ालिफ़ है। यह भी मालूम हुआ कि यह सारा हुस्न व जमाल ख़ुदा चाहे तो एक दम में फना कर दे। हुस्न व जमाल तो क्या हसीन जमील ही को मिट्टी में मिला दे और यह भी मालूम हुआ कि एक बद-सूरत काले ग़ुलाम ने इस क़द्र अच्छी क़िस्मत पाई कि मरा काफिर और ज़िन्दा होकर ईमान ला कर मरा। और एक ख़ूबसूरत औरत इस क़द्र बद-क़िसमत निकली कि मरी मोमिना और ज़िन्दा होकर काफ़िरा होकर मरी।

यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह के पैग़म्बर ईसा अलैहिस्सलाम में बे-इज़निल्लाह मुर्दे को ज़िन्दा और ज़िन्दे को मार डालने की ताक़त थी। फिर जो अपने किसी अज़ीज़ को भी ज़िन्दा न कर सकें और एक मख्खी भी न मार सकें वह नबियों की मिस्ल बनने लगें तो क्यों न कहा जाए।

ख़ुदा की शान तो देखो कि कलचड़ी गंजी
हुज़ूर बुलबुले बुस्तान करे नवा संजी

और यह भी मालूम हुआ कि मुर्दे सुनते हैं जभी तो ईसा अलैहिस्सलाम जब "कुम बेइज़्निल्लाह" फरमाते थे तो मुर्दा ज़िन्दा हो जाता था। अगर मुर्दा सुनता न हो तो ईसा अलैहिस्सलाम हज़ार बार "कुम बेइज़्निल्लाह" कहते। न मुर्दा सुनता न वह उठता।

छोड़ दे दीवाने तू दीवाना पन
अंबिया की मिस्ल तो हरगिज़ न बन

❖❖❖

हिकायत नम्बर (91)

माडर्न कुत्ता

एक शख़्स हर्स नामी अपने दोस्तों के साथ सैर करता हुआ कहीं दूर निकल गया। उनमें से एक नौजवान का उसकी बीवी से नाजांयज़ तअल्लुक़ था। वह किसी बहाने लौट आया और हर्स के घर पहुँच गया। हर्स का कुत्ता भी घर ही था। उस कुत्ते ने जो उनकी बदमाशी देखी।

तो ग़ुस्सा में आकर उन दोनों पर झपट पड़ा। और दोनों को फाड़ डाला। हर्स जब घर वापस आया। और दोनों को मरा हुआ देखकर हैरान रह गया। और कहने लगा तअज्जुब है कि दोस्त मेरी हतक हुर्मत के दरपे हो और कुत्ता मेरे नामूस (इज़्ज़त) की हिफ़ाज़त करे। (नुज़हतुल-मजालिस)

सबक़

यह कुत्ता पुराने ज़माने का था और तरक़्क़ी याफ़्ता न था। आजकल का माडर्न कुत्ता तो अपने मालिक की मेम साहिबा की गोद में बैठ कर मेम साहब से अपना मुँह चुमवाता और अपनी दुम हिला-हिला कर हेलो करता नज़र आता है और अपने मालिक को कोठी में छोड़ कर मेम साहब के साथ कार में बैठ कर सैर व तफ़रीह को निकल जाता है। मैंने लिखा है।

डार्लिंग कहकर लगे मुंह चूमने वह प्यार से
आशिक़ो तुमसे तो अच्छा यार काबिल डाग है

यह भी मालूम हुआ कि पहले ज़माना का कुत्ता भी बुरी हरकत न देख सका और आजकल का तरक़्क़ी याफ़्ता इंसान ऐसी हरकतों को देखता भी

और दिखाता भी है। पहले ज़माने के कुत्ते को इंसानों से प्यार था और आजकल माडर्न इंसानों को इंसान से आर और कुत्तों से प्यार है। मैंने लिखा है।

क़द्र इंसानियत की क्या जानें
वह जो कुत्तों से प्यार करते हैं
कुत्ता लख़्ते जिगर है साहब का
उससे बोस व किनार करते हैं

मग़रबी तहज़ीब में जितना वक़ार कुत्ते का है। शौहर का भी नहीं। चुनांचे एक मेम साहिबा कुत्ता ख़रीदने बाज़ार गईं तो दुकानदार ने एक कुत्ता दिखा कर कहा। मेम साहिबा! यह कुत्ता आपके लिए बेहद मुनासिब रहेगा मेम साहिबा ने कहा। शायद मेरे शौहर को पसन्द न आए। दुकानदार बोला मेम साहिबा। शौहर तो आपको अच्छे से अच्छे भी मिल जाएंगे। मगर ऐसा कुत्ता हरगिज़ न मिल सकेगा। यह है नई तहज़ीब का दर्स (सबक़) कि।

जो इंसान मिल जाए तो उसको काटो
जो कुत्ता मिले तो उसे चूमो चाटो

❖❖❖

हिकायत नम्बर (92)

एक औरत के पेट में साँप

कराची। एक औरत अमीर जान की शादी १७ साल की उम्र में हुई। उसे औलाद का बहुत शौक़ था। एक दिन एक सपेरा उसके घर आया तो उसने अपने उसी शौक़ के तहत उससे दवा माँगी। सपेरे ने उसे साँप के दो अंडे दिए जो उसने निगल लिए। चार माह के बाद उसने अपने पेट में दर्द महसूस किया तो मारे ख़ुशी के फूली न समाई। उसके ख़्याल में यह दर्द हमल क़रार पाने की अलामत थी उन्हीं दिनों वह सपेरा फिर आया। तो अमीर जान ने अपने ख़ाविन्द (शौहर) को जो किसी दफ़्तर में चपरासी था। मजबूर करके सपेरे को चार सौ रुपये दिला दिए। रफ़्ता-रफ़्ता उसका

यह दर्द बढ़ गया लेकिन कोई बच्चा पैदा न हुआ। जब तक्लीफ़ बहुत बढ़ गई तो उसे सिविल हस्पताल लाया गया। जहाँ की एक्सरे रिपोर्ट में यह ज़ाहिर किया गया कि उसके रहम में ज़िन्दा सांपों का जोड़ा है। जो अमीर जान की जान के लिए ख़तरा हैं।

(अख़बार जंग कराची व माह तैबा शुमारा सितम्बर १६६१ ई०)

सबक़

माडर्न मुसलमान को तरक़्क़ी का शौक़ था। यूरोप के सपेरे ने उसे फ़ैशन के अण्डे दिए। जो उसने निगल लिए। कुछ दिनों के बाद उन अण्डों से इल्हाद के ज़हरीले साँप पैदा हो गए। माडर्न मुसलमान मारे ख़ुशी के जामे से बाहर हो गया और उन्हें तरक़्क़ी के ज़ीने समझता रहा। लेकिन दीन के एक्सरे में यह इल्हाद के सांप नज़र आए। जो माडर्न मुसलमान के ईमान के लिए ख़तरा हैं।

इस तरह जो लोग आज इस्मुगलिंग रिश्वत और सूद के अण्डे निगल रहे हैं। कल क़्यामत के रोज़ उनके पेटों में ख़ुदा ही जाने किस क़दर हौलनाक साँप पैदा हो जाएंगे।

पस! मुसलमानों को शौक़ तरक़्क़ी में यूरोपियन सपेरों से बचते रहना चाहिए वरना ईमान ख़तरे में पड़ जाएगा।

❖❖❖

सातवाँ बाब

दाना औरतें

हिकायत नम्बर (93)

दो लौंडियों का पुर-लुत्फ़ मुनाज़रा

हारून रशीद को एक लौंडी की ज़रूरत थी उसने ऐलान किया कि मुझे एक लौंडी दरकार है। उसका यह ऐलान सुन कर उसके पास दो लौंडियाँ आईं और कहने लगीं हमें ख़रीद लीजिए। उन दोनों में से एक का रंग काला था एक का गोरा। हारून रशीद ने कहा कि मुझे एक लौंडी चाहिए। दो नहीं। गोरी बोली। तो फिर हुज़ूर! मुझे ख़रीदिए कि गोरा रंग अच्छा होता है। काली बोली। हुज़ूर! रंग तो काला ही अच्छा होता है आप मुझे ख़रीदिए। हारून रशीद ने उनकी यह गुफ़्तगू सुनी तो कहा। अच्छा तुम दोनों इस मौज़ू पर मुनाज़रा करो कि रंग गोरा अच्छा है या काला। जो जीत जाएगी मैं उसे ख़रीद लूंगा। दोनों ने कहा। बहुत अच्छा चुनांचे दोनों का मुनाज़रा शुरू हुआ। और कमाल यह कि दोनों ने अपने-अपने रंग के फ़ज़ाइल व दलाइल अरबी ज़ुबान में और फ़िल-बदीह शे'रों में ब्यान किए यह अशआर अरबी ज़ुबान में हैं मगर मैंने उनका उर्दू ज़ुबान में मंज़ूम तरजमा किया है लीजिए आप भी सुन लीजिए और सर धुनिए। और ग़ौर कीजिए कि पहले ज़माना में लौंडियाँ भी किस क़द्र समझ बूझ की मालिक थीं। गोरी बोली।

मोती सफ़ेद है और क़ीमत है उसकी लाखों
और कोइला है काला पैसों में ढेर पाले

बादशाह सलामत! देख लीजिए। मोती सफेद रंग का होता है और किस क़द्र क़ीमती होता है मगर कोइला जो काला होता है। किस क़द्र सस्ता होता है कि चन्द पैसों में ढेरों मिल जाता है और सुनिए।

अल्लाह के नेक बन्दों का मुँह सफेद होगा!
और दोज़खी जो होंगे मुँह उनके होंगे काले

यानी अल्लाह वालों के मुँह कल क़यामत में गोरे और सफेद होंगे और जहन्निमयों के मुँह काले होंगे। बादशाह सलामत! अब आप ही इंसाफ कीजिएगा कि रंग गोरा अच्छा है या नहीं? बादशाह "गोरी" के यह अशआर सुनकर बड़ा खुश हुआ। और फिर काली से मुख़ातब होकर कहने लगा। सुना तुमने भी? अब तुम बताओ क्या कहती हो? काली बोली। हुज़ूर!

है मुश्क नाफा काली क़ीमत में बेश ग़ाली
रूई सफ़ेद है और पैसों में ढेर पाली

क़िब्ला कस्तूरी काली होती है मगर बड़ी गिरां क़द्र और बेश क़ीमत मगर रूई जो सफेद होती है बड़ी सस्ती मिल जाती है। और चन्द पैसों में ढेरों मिल जाती है और सुनिए।

आँखों की पुतली काली है नूर का वह चश्मा
और आँख की सफ़ेदी है नूर से वह खाली

यानी देख लीजिए। आँख की पुतली जिससे नज़र आता है वह काली होती है। सारा नूर उसी में होता है। और उस पुतली के इर्द गिर्द जो सफेदी है। उसमें क़तअन कोई नूर नहीं। बादशाह सलामत! अब आप ही इंसाफ़ कीजिए कि रंग काला अच्छा है या नहीं? काली के यह अशआर सुनकर बादशाह और भी ज़्यादा खुश हुआ। और फिर गोरी की तरफ देखा। तो फौरन बोली।

काग़ज़ सफेद हैं सब कुरआन पाक वाले!

काली ने झट जवाब दिया कि

और उन पे जो लिखे हैं कुरआन के हर्फ़ काले

गोरी ने फिर कहा कि।

मीलाद का जो दिन है रोशन वह बिल-यक़ीं है

काली ने झट जवाब दिया कि

मे'राज की जो शब है काली है या नहीं है?

गोरी बोली कि

इंसाफ कीजिएगा कुछ सोचिएगा प्यारे
सूरज सफेद रौशन, तारे सफेद सारे

काली ने जवाब दिया कि

हां सोचिएगा आक़ा! हैं आप अक़्ल वाले
काला गिलाफ़े काबा हज़रत बिलाल काले!

गोरी कहने लगी कि

रुख़े मुस्तफ़ा है रौशन दाँतों में है उजाला

काली ने जवाब दिया कि

और ज़ुल्फ़ उनकी काली कमली का रंग काला

बादशाह ने उन दोनों के यह इल्मी अशआर सुनकर कहा कि मुझे लौंडी तो एक दरकार थी मगर मैं तुम दोनों ही को ख़रीदता हूँ। (लूलुश्शरा)

सबक़

सुब्हानल्लाह! क्या ही पुर-लुत्फ़ मुनाज़रा है कि उनकी बदीहगोई से ईमान ताज़ा हो गया। एक आजकल की औरतों के आपस में झगड़े भी हैं कि जिन्हें सुनकर शैतान राज़ी होता है। उन लौंडियों के अश्आर से उनकी दानिश व फ़िरासत का इज़हार है और आजकल की औरतों के ढोलक गीतों से उनकी हिमाक़त व जिहालत आशकार है। ऐ मुसलमान औरतों।

क्यों नहीं अल्लाह से शरमाती हो तुम
गीत गन्दे किस लिए गाती हो तुम

❖❖❖

हिकायत नम्बर (94)

दो लौंडियाँ

हारून रशीद को एक मरतबा एक लौंडी की ज़रूरत पेश आई तो उसके पास दो लौंडियाँ आईं। एक का रंग काला था और एक का सफ़ेद। हारून रशीद ने कहा। मुझे तो एक दरकार है। तुम दोनों में से उसे अपनी ख़िदमत के लिए रखूंगा जो अपने रंग की दूसरी के रंग पर तरजीह साबित कर दे चुनांचे सफ़ेद रंग वाली ने अपने सफ़ेद की कुछ ख़ूबियाँ ब्यान कीं तो काली ने कहा। हुज़ूर देखिए। उसका रंग अगर सफ़ेद रंग ज़रा सा भी मेरे मुँह पर आ जाए तो सब मुझे मरीज़ा बरस यानी फुलबहर की मरीज़ समझें। और अगर मेरा सियाह रंग ज़रा सा भी उसके चेहरे पर चला जाए

तो उसका हुस्न दोबाला हो जाए कि मेरा रंग तिल बन कर उसके चेहरे पर चमकने लगे। हारून रशीद ने उनकी हाजिर दिमाग़ी पर खुश होकर दोनों को ख़रीद लिया। (माहे तैबा जुलाई १९५२ ई०)

सबक़

कोई इंसान गोरा हो या काला। दोनों रंग खुदा के पैदा कर्दा हैं और दोनों ही में अलग-अलग ख़ूबियाँ हैं। लिहाज़ा किसी काले रंग के इंसान को हिक़ारत की नज़र से न देखना चाहिए। इस्लाम ने इस क़िस्म की तंग नज़री से रोका है।

कोई गोरा हो या हो कोई काला
है दोनों ही का ख़ालिक़ हक़ तआला
नहीं गोरे को काले पर फ़ज़ीलत
कि हासिल तक़्वे से होती है इज़्ज़त

❖❖❖

हिकायत नम्बर (95)

तीन लौंडियाँ

मामून रशीद को एक मरतबा एक लौंडी की ज़रूरत पेश आई। उसने ऐलान किया तो उसकी ख़िदमत में तीन लौंडियाँ हाज़िर हुईं और तीनों सामने खड़ी हो गईं। बादशाह ने देखा तो कहा। मुझे तो एक दरकार है और तुम तीन हो। अच्छा मैं तुम तीनों से इंतिख़ाब (चुन) कर लेता हूँ तीनों लौंडियाँ सामने एक सफ में खड़ी थीं। बादशाह जब इंतिख़ाब के लिए उठा तो पहली बोली। وَكَذَالِكَ جَعَلْنَا كُمْ اُمَّةً وَّ سَطًا لِّتَكُوْنُوْ اشُهَدَ آءَ علَے النَّاس पहली ने जब यह आयत पढ़ी। तो दूसरी जो दोनों के वस्त में खड़ी थी बोली।

وَالسَّابِقُوْنَ الاَ وَلُوْنَ مِنَ الْمهَا جِرِيْنَ والاَ نْصَار

तीसरी जो सबसे आख़िरी खड़ी थी। उसने हस्बे ज़ेल आयत पढ़ डाली।

وَلِلاَ خِرَ ةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاَوْلٰى

मामून रशीद तीनों पर बहुत खुश हुआ और तीनों को ख़रीद लिया। (माहे तैबा जुलाई १९५२)

सबक़

पहले दौर की लौंडियाँ भी क़ुरआन पाक से शग़फ़ (शौक़) रखती थीं और आजकल की यह "आज़ाद औरतें" क़ुरआन पाक के नाम से भी वाक़िफ़ नहीं। हाँ यह बात बात में फ़िल्मी गानों के शे'र पढ़ने में ताक़ हैं। हमें चाहिए कि हम भी क़ुरआन पाक से लगाव रखें और बजाए गानों के क़ुरआनी आयात याद रखें।

छोड़ फ़िल्मी गानों और नग़मात को
याद कर क़ुरआन की आयात को

❖❖❖

हिकायत नम्बर (96)

एक हसीन लौंडी

एक निहायत हसीन लौंडी हम्माम (बाथरूम) खाना से निकली। तो एक जवान उसे देखकर उस पर फ़रेफ़्ता (आशिक़) हो गया और उसके सामने आकर यह आयत पढ़ डाली। ज़ैय्यन्नाहा लिन्नाज़िरीन्ना यानी हमने उसे देखने वालों के लिए ज़ीनत दी।"

उस लौंडी ने इस आयत के जवाब में फ़ौरन यह आयत पढ़ी।

وَحَفِظْنَا هَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيْمٍ

यानी हमने हर मर्द व शैतान से उसकी हिफ़ाज़त की वह जवान फिर बोला और यह आयत पढ़ी।

نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَ تَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا

यानी हम सिर्फ़ यह चाहते हैं कि उस से खाएँ और हमारे दिलों को आराम हो।"

लौंडी ने उसका जवाब इस आयत से दिया।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ

यानी हरगिज़ भलाई न पाओगे। यहाँ तक कि खर्च करो। उसमें से जो तुम दोस्त रखते हो।"

जवान ने उसका जवाब यूं दिया।

وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا

यानी जिन लोगों को वह चीज न मिले, जिससे निकाह करें (तो वह क्या करें) लौंडी ने फ़ौरन जवाब दिया।

اولئك عنها مبعدون यानी वह उससे दूर रहेंगे।

बिला आख़िर जवान ने तंग आकर कहा।

لعنة الله عليك "तुझ पर अल्लाह की लानत।"

लौंडी ने यह आयत् पढ़ दी।

للذكر مثل حظ الانثيين

यानी (तुझ) मर्द को दो दो औरतों के हिस्सा के बराबर (लानत) है।

उसके बाद वह जवान मुँह की खाकर ख़ामूश हो गया। और ज़लील व रुसवा होकर चला गया। (टू टू अकशरा)

सबक़

देखा आपने! यह हैं पहले ज़माने की बातें और आजकल? लीजिए यह भी सुन लीजिए। आजकल की लड़की कहती है। हमारी गली आना।

और लड़का जवाब देता है।

अच्छा जी!

अस्तग़फ़िरुल्लाह अल–अज़ीम! यह ज़ुबान जिससे हमें अल्लाह व रसूल का नाम लेना था। और कुरआन व हदीस को पढ़ना था। उससे हमने क्या काम लेना शुरू कर दिया? क्या यह ज़ुबान इसलिए अता हुई है कि उससे फ़िल्मी गाने गाओ। और गालियाँ बको और गन्दे गीत गाओ? तौबा! तौबा! ज़बान तो क़ालल्लाहु व क़ालर्रसूल के ज़िक्र व विर्द के लिए है।

ऐ मुसलमान औरतो! इस ज़ुबान से नेक बातों के सिवा गन्दे और फ़ुहश गीत गाना और गालियाँ बकना ऐसे ही है जैसे दूध के बर्तन में पेशाब कर देना। तो यह औरतें जिनकी ज़ुबानों पर विवाह शादियों में इस क़िस्म के गन्दे गीत जारी रहते हैं। ग़ौर कर लें कि वह दूध के बर्तन को किस तरह नापाक कर डालती हैं।

जो हैं अपने रब से डरने वालियाँ
वह कभी देती नहीं हैं गालियाँ

हिकायत नम्बर (97)

एक फल बेचने वाली

बग़दाद के बाज़ार में एक दुकान में फूल मेवे और परिन्दों का तला हुआ गोश्त बिक रहा था। और दुकान पर एक परी चेहरा औरत बैठी थी। यह मंज़र देखकर एक अदीब ने यह आयात पढ़ना शुरू कर दीं।

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ وَحُوْرٌ عِيْنٌ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ

उस औरत ने यह सुनकर जवाब दिया।

جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

यानी यह सब कुछ आमाल का बदला है। यानी क़ीमत दो और ले लो।

(किताबुल-अज़किया, स० ४२६)

सबक़

पहले ज़माना में छोटों बड़ों सबको कुरआन याद था। और आजकल छोटों बड़ों सबको फिल्मी गाने और ग़ज़लें याद हैं।

वहाँ सीने में कुरआन था यहाँ सीनों में गाने हैं।

❖❖❖

हिकायत नम्बर (98)

मक्का

जाहिज़ का ब्यान है कि मैंने बग़दाद के बाज़ारे नख़ासा में एक लौंडी को देखा जिसकी बोली दी जा रही थी। उसके रुख़सार पर एक तिल था तो मैंने उसे बुलाया और उससे बात–चीत शुरू की मैंने उससे नाम पूछा। तो बोली मेरा नाम मक्का है। तो मैंने कहा। अल्लाहु अक्बर। हज क़रीब हो गया। तू मुझे इजाज़त देती है कि मैं हजरे असवद को बोसा दूँ? उसने कहा मुझ से अलग रहो। क्या तुमने अल्लाह तआला का यह इर्शाद नहीं सुना।

लम तकूनू बालिग़ीहे। इल्ला बेशक़्क़िल–अंफुसे। तुम उस तक नहीं पहुँच सकते। मगर अपने नुफ़ूसों को मशक़्क़त में डालने से।

(किताबुल-अज़किया, स० ४२६)

सबक़

पहले ज़माना की छोटी बड़ी हर औरत दानिशवर थी। और सही मानों

में वह दाना औरतें थीं। लेकिन आजकल जो औरत यूरोप की नंगी तहज़ीब की नक़ल उतारे। इंग्लिश में गालियाँ बके। उसे दानिशवर और दाना कहा जाता है। हम यह कहते हैं कि ख़ुदा ऐसी दानाई से बचाए क्योंकि।

गरोली ई अस्त लानत बरोली

❖❖❖

हिकायत नम्बर (99)

औरतें

उतबी ने ज़िक्र किया कि एक शाइर का औरतों पर गुज़र हुआ और उसको उनकी कुछ अजीब सी शान मालूम हुई तो उसने कहना शुरू कर दिया कि –

إِنَّ النِّسَاءَ شَيَاطِيْنَ خُلِقْنَ لَنَا
نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّ الشَّيَاطِيْن

यानी औरतें हमारे लिए शैतान पैदा की गई हैं। हम शयातीन के शर से अल्लाह की पनाह माँगते हैं। उन औरतों में से एक ने उसको जवाब दिया कि –

إِنَّ النِّسَاءَ رَيَاحِيْن خُلِقْنَ لَكُمْ
وَكُلُّكُمْ تَشْتَهُوْا شَمَّ الرِّيَاحِيْن

यानी औरतें तुम्हारे लिए गुल्दस्ता पैदा की गई हैं और तुम सब ही फूलों के सूंघने की ख़्वाहिश रखते हो।

(किताबुल-अज़किया, अल-इमाम इब्ने जौज़ी स० ४३५)

सबक़

औरतें मर्द के लिए वाक़ई गुलदस्ता हैं। बशर्तेकि उनमें रंगे हया हो। बू-ए-वफ़ा हो। और अगर उनमें यह रंग व बू नहीं और वह गुलदान में नज़र न आएँ तो फिर वह वाक़ई बक़ौल उतबी शैतान हैं और ऐसी मादर पिदर आज़ाद और उरियाँ व बे-हिजाब औरतों से हम अल्लाह की पनाह माँगते हैं।

शर्म से महरूम जिस औरत की हो जाए निगाह
उसके शर से मांगिएगा अपने अल्लाह से पनाह

❖❖❖

हिकायत नम्बर (100)

एक कनीज़

असमई ने ब्यान किया कि मैं हारून रशीद के पास बैठा था कि एक शख़्स एक कनीज़ (लौंडी) को साथ लेकर आया ताकि उसे फ़रोख़्त (बेचे) करे। हारून रशीद ने उसे ग़ौर से देखा और फिर कहा। अपनी कनीज़ वापस ले जा। अगर उससे मुँह पर छाइयाँ न होतीं और नाक दबी हुई न होती तो मैं उसे खरीद लेता तो वह शख़्स उसको वापस ले जाने लगा। जब वह कनीज़ पर्दे के क़रीब पहुँच गई तो उसने कहा। अमीरुल-मोमिनीन! मुझे अपने पास वापस बुला लीजिए। मैं आपको दो बैत सुनाना चाहती हूँ जो इसी वक़्त मौज़ूं हो गए हैं। हारून रशीद ने कहा। सुनाओ। तो उसने फिल-बदीह शे'र कह कर पढ़े।

مَا سَلَمَ الظَّبِيُّ عَلٰے حُسْنِهٖ كَلَّا وَلَا الْبَدْرُ الَّذِىْ يُو مَفْ
اَمَّا لظَّبِىُّ فِيْهِ خنسٌ بَيِّنٌ! وَالْبَدْرُ فِيْهِ كَلَفٌ يُعْرِفُ

अब तो हिरनी भी अपने हुस्न पर सालिम न रही और न चाँद बच सका जिसकी तारीफ की जाती है क्योंकि हिरनी में नाक बैठी होना खुली बात है और चाँद में जो छाइयाँ हैं वह भी साफ नज़र आती हैं।

उसकी इस बलाग़त पर हारून रशीद हैरान रह गया और उसे ख़रीद लिया।

(किताबुल-अज़्किया, इमाम इब्ने जौज़ी स० ४२८)

सबक़

कितना आली दिमाग़ था पहले ज़माना की कनीज़ों का भी कि फिल-बदीह दो शे'र कहकर बादशाह को हैरान कर दिया। और कितना पस्त दिमाग़ है आजकल की औरतों का कि लड़ाई में फिल-बदीह गालियाँ गढ़ कर मुहल्ला भर को हैरान कर देती हैं। वह औरतें और यह औरतें?

दिमाग़ उनका आली कलाम उनका आली!
और इनकी जुबान पर है दिन रात गाली
पसन्द उनको दानाई का पास करना!
और इनको है मरग़ूब बकवास करना

❖❖❖

हिकायत नम्बर (101)

ज़ैबुन्निसा मख़्फ़ी

ईरान के एक शहज़ादा ने मिसरा कहां कि "दर अब्लक़ कसे कम दीदा मौजूद"

यानी "ऐसा मोती जो कुछ सियाह हो और कुछ सफ़ेद किसी ने कम देखा होगा।" मतलब यह कि ऐसा दो रंगा मोती कहीं मौजूद नहीं।

इस मिसरा पर दूसरा मिसरा मौज़ूं न हो सका। उसने कई शोरा से कहा। मगर किसी से इस मिसरा पर मिसरा न कहा जा सका। आख़िर उसने देहली के बादशाह को लिखा कि इस मिसरा का दूसरा मिसरा मौज़ूं कराके भेज दीजिए। दिल्ली के शोरा भी मौज़ूं न कर सके मगर ज़ैबुन्निसा एक दिन सुरमा लगा रही थी। इत्तिफ़ाक़न आँसू टपक पड़े तो दूसरा मिसरा आँसू देख कर मौज़ूं कर दिया कि –

दर अब्लक़ कसे कम दीदा मौजूद
मगर अश्क बुतान सुर्मा आलूद

यानी कुछ सियाह कुछ सफ़ेद रंग का मोती किसी ने कम देखा होगा मगर हाँ महबूब की सुरमगी आँख से टपका हुआ आँसू एक ऐसा मोती है जिसमें यह दोनों रंग नज़र आते हैं। यही वह दो रंगा मोती है।

बादशाह ने यह शे'र ईरान भेज दिया। वहाँ से ख़त आया कि उस शायर को यहाँ भेज दो। उस जवाब में ज़ैबुन्निसा ने यह शे'र लिखा।

दर सुख़न मख़फ़ी मनम चूं बूए गुल दर बर्ग गुल
हर कि दीदन मेल वारद दर सुख़न बीनद मुरा

मख़्फ़ी ज़ैबुन्निसा का तख़ल्लुस है। उसने लिखा कि जिस तरह फूल की ख़ुश्बू फूल के पत्ते में मख़्फ़ी है। इसी तरह मैं अपने कलाम के अन्दर मख़्फ़ी हूँ। जिसे मेरे देखने की ख़्वाहिश हो वह मेरा कलाम पढ़ ले।

(यादे माज़ी स० २६)

सबक़

ज़ैबुन्निसा जो अल्लाह की एक मख़्लूक़ है। जब उसे कोई ग़ैर आँख नहीं देख सकती तो अल्लाह तआला जो ख़ालिक़े कुल है। उसे कौन देख

सकता है? और जिस तरह ज़ैबुन्निसा के दीदार के तलब को यह कहा गया कि उसे देखने के लिए उसका कलाम पढ़ो। बिला-तशबीह दीदारे हक़ के तालिब के लिए भी लाज़िम है कि वह उसका कलाम पाक कुरआन मजीद पढ़े। इसलिए कि इस कलामे हक़ में हक़ के जलवे मौजूद हैं।

चीस्त कुरआन ऐ कलामे हक़ शनास
रूनुमाए रब नास् आमद बेही नास

यानी कुरआन की तिलावत दीदारे हक़ का ज़रिआ है। लिहाज़ा कुरआन पढ़िए।

❖❖❖

हिकायत नम्बर (102)

तलाक़ का इख़्तियार

एक शख़्स ने जो हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु की औलाद में से था अपनी बीवी से कह दिया कि "तेरे अपने बारे में मैं तुझको इख़्तियार देता हूँ।"........इस तरह औरत को तलाक़ का इख़्तियार हासिल हो गया। उसके बाद वह शख़्स पछताया तो बीवी ने उससे कहा। देखिए आपके हाथ में यह इख़्तियार बीस बरस से था।

आपने उसकी अच्छी तरह हिफ़ाज़त की और उसको बरक़रार रखा तो मैं दिन की एक घड़ी भी हरगिज़ उसकी हिफ़ाज़त न कर सकूँगी। जबकि वह मेरे हाथ पहुँच गया है। अब मैं उसको आप ही को वापस करती हूँ। उसकी गुफ़्तगू ने उस शख़्स को हैरत में डाल दिया। और उसको तलाक़ नहीं दी। (किताबुल-अज़किया, स०४३४)

सबक़

मर्द में कुव्वते बर्दाश्त व तहम्मुल (सब्र) औरत से ज़्यादा है इसलिए तलाक़ का इख़्तियार शरीअत ने मर्द को दिया है। अगर यह इख़्तियार औरत को मिलता तो शादी के दूसरे रोज़ ही बीवी मियां को तलाक़ दे देती। ऊपर की हिकायत में जिस नेक औरत का ज़िक्र है। ऐसी औरत शाज़ व नादिर होती है वरना औरतों में कुव्वते बर्दाश्त व तहम्मुल बहुत कम

है बिल-ख़ुसूस मार्डन औरतें का कोई मामूली सा भी बहाना तलाश कर लेती हैं। चुनांचे ऐसी ही एक मार्डन औरत अदालत में पहुँची और कहा जज साहब मैं अपने शौहर से तलाक़ लेना चाहती हूँ।

जज ने पूछा। मगर क्यों? बात क्या हुई?

औरत बोली आज उसने मेरे प्यारे डाग (कुत्ते) का घर आकर मुँह नहीं चूमा।

मार्डन औरत है आज़ादी में तलाक़
चाहती है कि मियां दे दे तलाक़

❖❖❖

हिकायत नम्बर (103)

लम्बी औरत

जाहिज़ कहते हैं। हम चन्द अहबाब खाने को बैठे थे। हमने एक बहुत लम्बे क़द की औरत देखी। मैंने उसको छेड़ने के इरादे से कहा।" उतर आता कि हमारे साथ खाना खाए।" गोया उसका जिस्म एक लम्बी सीढ़ी है जिस पर कोई औरत चढ़ी हुई है।

उसने जवाब दिया। कि "तू ही बुलन्द हो जा ऐ असफल दरजा के शख़्स यहाँ तक कि दुनिया को देख ले।" (किताबुल-अज़किया, स० ४२८)

सबक़

किसी की शक्ल व सूरत पर मज़ाक़ नहीं उड़ाना चाहिए बाज़ औक़ात मज़ाक़ उड़ाने वाले को यह मज़ाक़ महंगा पड़ता है और उसे ला जवाब होना पड़ता है। लम्बी औरत के लम्बे क़द पर मज़ाक़ करने वाले को जो जवाब मिला वह इस हक़ीक़त पर शाहिद है कि ख़ुदा की बनाई हुई चीज़ों पर मज़ाक़ उड़ाना असफ़ल दरजा के शख़्स का काम होता है जो बुलन्द दरजा के लोग हैं वह अल्लाह की बनाई हुई जिस चीज़ को भी देखें तो यूं पूकार उठते हैं।

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا

❖❖❖

हिकायत नम्बर (104)

दो औरतों की गवाही

एक काज़ी साहब का मसलक यह था कि जब उनको गवाहों पर शक होता तो उनको अलग-अलग कर देते थे ताकि एक की शहादत दूसरा न सुन सके। तो एक मरतबा एक ऐसे मामला में जिसमें औरतों की गवाही ज़रूरी होती है उनके सामने एक मर्द और दो औरतें गवाही के लिए पेश हुई। तो उन्होंने हस्बे आदत दोनों औरतों को अलग करना चाहा तो उनमें से एक औरत ने काज़ी साहब से कहा कि आप से ख़ता हुई क्योंकि हक़ तआला का इर्शाद है। फ़तुज़क्किरू इहदा हुमल–उख़रा ताकि एक दूसरी को याद दिलाए। जब आपने अलग–अलग कर दिया तो वह मक़सद ही फ़ौत (ख़त्म) हो गया। जो शरीअत में मतलूब था। तो काज़ी साहब रुक गए।

(किताबुल-अज़किया, स० ४२३)

सबक़

मुसलमान औरतों को दीनी मालूमात होनी चाहिए। पहले ज़माना की औरतें दीनी मालूमात रखती थीं। क़ुरआन पाक की आयात और उनके मक़ासिद भी उनको याद थे। लेकिन अफ़सोस कि आजकल की मार्डन औरतों को एकटरसों की वज़ा क़ता (पहनावा) और मग़्रिब की अदाएँ तो ख़ूब याद हैं मगर दीनी बातों का कुछ पता नहीं हत्ता कि उन्हें अपने मख़्सूस (ख़ास) मसाइल का भी कुछ इल्म नहीं। सुर्ख़ी पाउडर का तो बड़ा एहतमाम है लेकिन क़्यामे क़्यामत के रोज़ सुर्ख़ुरूई (कामयाबी) का कुछ ख़्याल नहीं। ऐ मुसलमान औरतो!

आक़िबत में सुख़ुरुई के लिए
दीन की बातों को भी अपनाइए
किस क़दर दाना थीं पहली औरतें
याद थीं क़ुरआं की उनको आयतें

ऐ मुसलमान औरतो! दाना (जानकार) बनो! तुम भी अपने दीन की शैदा बनो!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (105)

निराली तदबीर

एक शख़्स साहिबे सरवत (दौलत मन्दी) व दौलत अहवाज़ (जगह का नाम) में रहता था। उसकी एक बीवी भी थी। एक मरतबा वह बसरा गया। तो वहाँ एक दूसरी औरत से भी निकाह कर लिया। जिसका अहवाज़ वाली पहली बीवी को कोई इल्म (पता) न था। उसने अपना यह मामूल बना लिया कि साल में एक या दो दफा इस दूसरी बीवी के पास बसरा जाता था। और उस बसरा वाली बीवी का चचा उस शख़्स से ख़त व किताबत किया करता था। इत्तिफ़ाक़ ऐसा हुआ कि बसरा वाली बीवी के चचा का एक ख़त अहवाज़ वाली बीवी के हाथ लग गया। जिससे हक़ीक़ते हाल का इल्म हो गया। तो उसने यह तदबीर की कि अपने एक रिश्तादार से जो बसरा में था, इस मज़मून का ख़त लिखवाकर शौहर के नाम भेजवाया कि आपकी बीवी का इंतिक़ाल हो गया है। यहाँ पहुँचए। जब यह ख़त अहवाज़ में उसको मिला तो उसने पढ़ कर सफर की तैयारी शुरू कर दी। फिर अहवाज़ वाली बीवी ने कहा कि मैं देखती हूँ कि आपका दिल कहीं और लगा हुआ है और मेरा ख़्याल है कि बसरा में कोई और बीवी आपाकी मौजूद है तो उसने कहा मआज़ल्लाह! औरत ने कहा मैं इतना कहने से मुतमइन नहीं हो सकती बग़ैर क़सम के। आप यह हलफ़ करें कि मेरे सिवा जो भी आपकी बीवी हो ग़ायब हो या हाज़िर हो उस पर तलाक़ हो। तो उसने यह समझते हुए कि उसका इंतिक़ाल हो ही चुका है। यह हलफ़ कर लिया। फिर उसकी अहवाज़ वाली बीवी ने कहा। अब आपको सफर की जरूरत नहीं रही। अब वह औरत आपसे अलग हो चुकी। और वह ज़िन्दा है।

(किताबुल-अज़किया, स० ४३८)

सबक़

औरत पढ़ी लिखी हो या अन पढ़। जब किसी हिकमत व तदबीर पर उतर आए तो मर्दों को भी हैरान कर देती है। यह अन पढ़ होकर भी बहुत कुछ जानती है और अगर दाव फरेब पर उतर आए तो बड़े दाना मर्दों को भी चारों शाने चित गिरा देती है और मर्द बेचारे हैरान रह जाते हैं कि यह क्या हुआ। इसी लिए अकबर इलाहाबादी कह गए हैं और ख़ूब

कह गए हैं कि –

क्या बताऊँ क्या करेंगी इल्म पढ़ कर बीवियाँ
बीवियाँ शौहर बनेंगी और शौहर बीवियाँ

फिर कहा।

उनके फ़िक्र व काम से बचना अभी दुशवार है
और आफत ढाएँगी साइंस पढ़ कर बीवियाँ

❖❖❖

हिकायत नम्बर (106)

एक अक़लमन्द बुढ़िया

अबू-जाफर समीरी ब्यान करते हैं कि हमारे शहर में एक बहुत नेक बुढ़िया रहती थी जो बकसरत रोज़े रखती थी और बहुत नमाज़ पढ़ती रहती थी और उसका एक बेटा था जो सर्राफ़ (सुनार) था और वह शराब और खेल में मुनहमिक (लगा) रहता था। दिन में तो वह दुकान में मसरूफ़ रहता और शाम को घर आकर दिरहम व दीनारों की थैली अपनी वालिदा के पास रखवा देता और चला जाता। और रात भर शराब खानों में रहता। एक चोर ने उसकी थैली उड़ाने की ठान ली और उसके पीछे-पीछे चलता रहा। और इस तरह घर में दाख़िल हो गया कि उसे ख़बर न हो सकी और छुप गया और उस शख़्स ने थैली अपनी मां के सिपुर्द करके अपनी राह ली और माँ घर में तनहा रह गई। उस मकान में एक ऐसा कमरा था जिसकी दीवारें मज़बूत और दरवाज़ा लोहे का था। वह अपनी क़ीमती अशिया उस कमरे में रखती थी और थैली भी। चुनांचे थैली उसने उसी कमरे के दरवाज़े के पीछे रख दी और वहीं बैठ गई और अपने सामने इफ़तार का सामान रख लिया। चोर ने सोचा कि अब वह उसको ताला लगाएगी और सो जाएगी। तो मैं दरवाज़ा अलग करके थैली ले लूँगा। जब वह रोज़ा इफ़तार कर चुकी तो नमाज़ पढ़ने को खड़ी हो गई और नमाज़ लम्बी हो गई और आधी रात गुज़र गई और चोर हैरान हो गया और डरने लगा कि सुबह न हो जाए। अब वह घर में फिरा। वहाँ उसको एक नई लुंगी मिल गई और कुछ खुशबू

तो उसने वह लुंगी बांधी और खुशबू को लगाया और सीढ़ी से उतरना शुरू किया और बहुत मोटी आवाज़ बना कर आवाज़ निकालना शुरू की ताकि बुढ़िया घबरा जाए लेकिन बुढ़िया दिलेर थी समझ गई कि यह चोर है। तो बुढ़िया ने काँपती हुई आवाज़ बना कर पूछा। यह कौन है? तो चोर ने जवाब दिया कि मैं जिब्रील हूँ। रब्बुल-आलमीन का भेजा हुआ आया हूँ। उसने मुझे तेरे बेटे के पास भेजा है। वह फासिक़ और शराबी है ताकि मैं उसे नसीहत करूं। और उसके साथ ऐसा मामला करूं जिससे वह अपने गुनाहों से बाज़ आ जाए तो बुढ़िया ने यह ज़ाहिर किया कि घबराहट से उस पर ग़शी तारी हो गई है और उसने यह कहना शुरू किया कि ऐ जिब्रील! मैं तुझसे दरख़्वास्त करती हूँ कि उसके साथ नर्मी करना क्योंकि वह मेरा इकलौता बेटा है। तो चोर ने कहा। मैं उसके क़त्ल करने को नहीं भेजा गया हूँ। बुढ़िया ने पूछा। फिर किस लिए भेजे गए हो। कहा उसने कि उसकी थैली ले लूं और उसके दिल को रंज पहुँचाऊं। फिर जब वह तौबा कर ले तो थैली उसे वापस कर दूँ। बुढ़िया ने कहा। अच्छा जिब्रील अपना काम करो। और जो कुछ तुझे हुक्म दिया गया है उसकी तामील कर। तो उसने कहा। तू कमरे के दरवाज़े से हट जा। वह हट गई और उसने दरवाज़ा खोल दिया और अन्दर दाख़िल हो गया ताकि थैली और क़ीमती सामान ले जाए। और उनकी गठरी बनाने में मशग़ूल हो गया। तो बुढ़िया ने आहिस्ता आहिस्ता जाकर दरवाज़ा बन्द कर लिया। और जंज़ीर को कुंडे में डाल दिया और ताला लाकर उसे मुक़फ़्फ़ल (तालाबन्द) भी कर दिया। अब तो चोर को मौत नज़र आने लगी और बाहर निकलने के लिए कोई हीला सोचने लगा मगर कोई सूरत नज़र न आई फिर बोला। ऐ बुढ़िया! दरवाज़ा खोल। ताकि बाहर निकलूं क्योंकि तुम्हारा बेटा नसीहत कुबूल कर चुका है तो बुढ़िया ने कहा। ऐ जिब्रील! मुझे डर है कि मैं किवाड़ खोलूं तो तेरे नूर के मुलाहिज़ा से मेरी बीनाई न जाती रहे तो उसने कहा। मैं अपने नूर को बुझा दूँगा। ताकि तेरी आँखें ज़ाए न हों तो बुढ़िया ने कहा। ऐ जिब्रील। तेरे लिए इसमें क्या मुश्किल है कि तू छत से निकल जाए या अपने पर से दीवार को फाड़ कर चला जाए और मुझे यह तकलीफ न दे कि मैं निगाह को बर्बाद कर डालूं। अब चोर ने महसूस किया कि बुढ़िया दिलेर है। अब उसने नर्मी और ख़ुशामद शुरू की और तौबा करने लगा तो बुढ़िया ने कहा। यह बातें छोड़। अब निकलने की कोई तरकीब नहीं। जब

तक दिन न हो जाए और नमाज़ पढ़ने खड़ी हो गई और वह उससे सवाल करता रहा। यहाँ तक कि सूरज निकल आया और उसका बेटा भी वापस आ गया। माँ ने सारा वाक़िया बेटे को सुनाया। वह कोतवाल पुलिस को बुला लिया। उसने दरवाज़ा खोल कर चोर को बांध लिया।

(किताबुल-अज़किया इब्ने अल-इमाम जौज़ी स० २८७)

सबक़

ख़ुदा तआला की इबादत व याद से रूहानियत बढ़ती और दिलेरी पैदा होती है। अक़्लमन्द बुढ़िया ख़ुदा याद थी। उसने बुढ़ापे में एक शातिर चोर का मुक़ाबला किया और अपनी हुस्ने तदबीर से उसे पकड़वा दिया। बरअक्स उसके आजकल की मार्डन औरतें चूहे से भी डरती हैं और डर कर चीख़ भी मारती हैं तो इंग्लिश लेहजे में। ख़ुदा से डरने वाला किसी से नहीं डरता। और ख़ुदा से न डरने वाला हर किसी से डरता है। इसलिए हमें अपने दिल में ख़ुदा का डर और उसकी याद पैदा करनी चाहिए। यह भी मालूम हुआ कि जिस तरह एक चोर दिरहम व दीनार की थैली चुराने के लिए जिब्रील बन गया और कहने लगा कि मैं ख़ुदा का भेजा हुआ आया हूँ और शराबी बेटे की इसलाह के लिए आया हूँ। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद कई चोर हमारे ईमान की थैली चुराने के लिए "नबी" बन गए। और कहने लगे कि हम लोगों की इसलाह के लिए ख़ुदा की तरफ से भेजे हुए आए हैं। ऐसे ख़ुद साख़्ता नबियों के फ़रेब में "अल्लाह वाले" नहीं आते और वह अपने ईमान की थैली को भी बचा लेते हैं और ख़ुदसाख़्ता नबियों के पोल भी खोल कर रख देते हैं और उन्हें शरई पुलिस के हवाले करके बांध देते हैं और यूं कहते हैं।

ख़ुदा महफ़ूज़ रखे हर बला से
ख़ुसूसन आज कल के अंबिया से

❖❖❖

हिकायत नम्बर (107)

एक अक़्लमन्द लड़की

एक शख़्स शन नामी अरब के बड़े दानिशमन्दों में से था। उसने क़सम खाई थी कि सफर में ही अपना वक़्त गुज़ारता हूँगा जब तक मुझे कोई औरत अपनी जैसी मिले और उससे मैं निकाह कर लूँ। मतलब यह कि जब तक मैं किसी अक़्लमन्द औरत से निकाह न कर लूँगा उस वक़्त तक मैं सफर ही में रहूँगा।

एक मरतबा वह सफर में था कि उसकी मुलाक़ात एक ऐसे शख़्स से हुई जो उसी बस्ती में जा रहा था। जहाँ पहुँचने का शन ने इरादा किया था। तो यह उसका साथी हो गया। जब यह दोनों रवाना हुए तो उससे शन ने कहा। तुम मुझे उठा कर ले चलोगे या मैं तुम्हें उठाऊँ तो उसके साथी ने कहा "जाहिल आदमी" एक सवार दूसरे सवार को कैसे उठा सकता है?" फिर दोनों चल रहे थे तो उन्होंने एक खेत को देखा। जो पका हुआ खड़ा था। तो शन ने कहा। क्या तुमको इस बात की ख़बर है कि यह खेत खाया जा चुका या नहीं? उसने कहा ऐ जाहिल! क्या तू देखता नहीं कि यह खड़ा है।" फिर दोनों का गुज़र एक जनाज़ा पर हुआ तो शन ने कहा। तुम्हें ख़बर है। साहब जनाज़ा ज़िन्दा है या मुर्दा? उसने कहा।" मैंने तुझसे ज़्यादा जाहिल कोई नहीं देखा। क्या तेरा यह ख़्याल है कि लोग ज़िन्दा ही को दफन करने जा रहे हैं। फिर वह शख़्स शन को अपने घर पर ले गया और उस शख़्स की एक बेटी थी जिसका नाम तबक़ा था। उस शख़्स ने अपनी बेटी को शन का सारा क़िस्सा सुनाया और कहा यह बड़ा जाहिल आदमी है। तबक़ा ने अपने बाप से यह सारा क़िस्सा सुनकर कहा। ऐ मेरे बाप! वह तो बड़ा दाना (जानकार) आदमी है। उसका यह क़ौल कि "तुम मुझे उठाओगे या मैं तुम्हें उठाऊं? इस ख़्याल से था कि तुम मुझे कोई बात सुनाओगे या मैं तुम्हें सुनाऊं ताकि हम अपना रास्ता तफरीह के साथ पूरा कर लें।" और उसका यह कहना कि "यह खेत खाया चुकाया नहीं" उसका मक़सद यह दरयाफ़्त करना था कि खेत वालों ने उसे फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत ख़र्च कर ली या नहीं?" और मैय्यत के बारे में उसका पूछना कि यह ज़िन्दा है या मुर्दा? उससे उसका मक़सद यह था कि आया उसने

अपने पीछे कोई ऐसा छोड़ा भी है जो उसके नाम को ज़िन्दा रख सके या नहीं?

यह शख़्स अपनी बेटी से यह बातें सुन कर शन के पास आया। और अपनी बेटी की तमाम बातें उसको सुनाईं। तो शन ने उसी से निकाह का पैग़ाम दिया और उसके साथ उसका निकाह हो गया।

(किताबुल-अज़किया, इमाम इब्ने जौज़ी, स०४३६)

सबक़

हर कलाम का एक ज़ाहिर होता है और एक बातिन जो समझदार और अक़्लमन्द हैं वह कलाम की तह तक पहुँचते हैं। सिर्फ़ ज़ाहिर को लेना और बातिन की तरफ तवज्जुह न देना अक़्लमन्दों का काम नहीं। क़ुरआन व हदीस के कई इर्शादात पर अह्ले ज़ाहिर ने सिर्फ़ ज़ाहिर को देख कर एतराज़ जड़ दिए मसलन आरियों के रिशी दयानन्द ने और मुनकेरीने हदीस के इमाम अब्दुल्लाह चकड़ालवी ने क़ुरआन और हदीस के अलफ़ाज़ को लेकर जाहिलाना एतराज़ कर दिए और कहा। कि यह बातें (मआज़ल्लाह) ग़लत हैं। हालाँकि उनके एतराज़ात बजाए ख़ुद ग़लत हैं क्योंकि इर्शादात के मक़ासिद व मतालिब तक उनकी नज़र पहुँची ही नहीं। क़ुरआन व हदीस के इर्शादात के मक़ासिद पर इमामाने दीन की नज़र पहुँची और उन्होंने हमें बताया और समझाया कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम के इर्शादात का मक़्सद और उनके कलाम की यह मुराद है। पस हमें उन इमामाने दीन का गुलाम बन कर ख़ुदा और रसूल के इर्शादात को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

दीन की जिनको समझ अल्लाह ने दी
ऐसे अल्लाह वालों की कर पैरवी

हिकायत नम्बर (108)

एक हिसाब दाँ बुढ़िया

एक बुढ़िया ने एक बनिए से कहा कि मैं चाहती हूँ कि अपना कुछ रुपया तिजारत में लगाऊँ। मगर इस बारे में मुझे ज़रा भी तजरबा नहीं। अगर तुम मुझे अपने तजरबा से फायदा पहुँचा सको तो बड़ी मेहरबानी होगी।

बनिए ने जवाब दिया कि तिजारत का बुनियादी उसूल यह है कि अगर असल रक़म न ली जाए तो हर छे: माह के बाद दो गुनी हो जाती है। बुढ़िया ने पूछा। तुम्हारी तिजारत इस क़िस्म की है?

बनिए ने जवाब दिया। वाक़ई मेरा कारोबार इसी क़िस्म का है कि मैं जो रुपया लगाता हूँ। वह शशमाही (छ: महीने) के बाद दो गुना हो जाता है। यही वजह है कि मैंने थोड़े अरसा में तीन मकान बनाए और दो लड़कियों का विवाह किया और मेरा बाप जो क़र्ज़ छोड़ कर मरा था। वह भी सब बेबाक़ कर दिया है। यह सुनकर बुढ़िया ने अपने दुपट्टा के आंचल से एक अधनी खोली और बनिए के हाथ में देकर बोली तो तुम यह मेरी अधनी अपनी तिजारत में लगा लेना। जब मैं आऊँगी अपना हिसाब करके जो कुछ निकलता होगा ले लूँगी।

बुढ़िया की यह बात सुनकर बनिया हैरान हुआ मगर रहम दिल आदमी था। उसने बुढ़िया का दिल तोड़ना मुनासिब न समझा और उसकी अधनी अपने हिसाब में जमा कर ली। बारा साल गुज़र गए। बनिया बुढ़िया की अधनी का वाक़या क़रीब-क़रीब भूल गया था। यकायक बुढ़िया ने आकर कहा। हिसाब कर दो! बनिया हक्का बक्का रह गया। उसने बहुत याद किया। मगर याद न आया कि उस बुढ़िया को क्या देना है। जब उसने सारी कहानी सुनाई। तब बनिया मान गया कि मैंने अपने कारोबार में तेरी अधनी लगा रखी है और मैंने तुझसे इक़रार किया था कि तेरी अधनी हर शशमाही के बाद दो गुनी होती जाएगी। बुढ़िया ने कहा। भई मेरा हिसाब कर दे। इतनी उमर हो गई है। कौन जाने कब दम निकल जाए। बनिए ने दो रुपए निकाल कर बुढ़िया के हवाले किए और कहा ले जा यह तेरी अधनी है। बुढ़िया ने शोर मचा दिया। कि अरे बनिए कुछ ख़ुदा का खौफ़ कर। क्यों ज़ुल्म पर कमर बांधी है जो मुझ ग़रीब औरत का रुपया दबाना चाहता है।

यह सुनकर कि क्या बात है? सब दुकानदार जमा हो गए और बोले। क्यों क्या बात है? बुढ़िया ने सारा वाक़या उनके सामने ब्यान कर दिया। और कहा कि यह मेरा हिसाब नहीं करता और मुझे सिर्फ़ दो रुपये देकर टालता है मगर मैं चाहती हूँ कि मेरा पाई-पाई का हिसाब हो और जो कुछ उसके ज़िम्मा निकले। पूरे का पूरा दिलाया जाए।

एक दुकानदार ने बनिए से कहा। बुढ़िया तो ठीक कहती है तू हिसाब क्यों नहीं करता। बनिए ने कहा तू ही क़लम दवात लेकर बैठ जा और हिसाब कर दे। दुकानदार बोला।

बारा साल की चौबीस शशमाहियां होती हैं। इसलिए इस बुढ़िया तो अधनी चौबीस दफा दुगनी हो जाएगी। बुढ़िया ने कहा तेरा बेटा ज़िन्दा रहे। यही तो मैं चाहती हूँ। बस अब बैठ कर हिसाब कर दो। हिसाब होने लगा। बुढ़िया की अधनी बारा साल की शशमाहियों में इस तरह बढ़ती गई।

पहली शशमाही में	एक आना	दूसरी शशमाही में	दो आने
तीसरी शशमाही में	चार आना	चौथी शशमाही में	आठ आने
पाँचवीं .शमाही में	एक रुपया	छठी शशमाही में	दो रुपए
सातवीं शशमाही में	चार रुपए	आठवीं शशमाही में	आठ रुपए
नवीं शशमाही में	सोला रुपए	दसवीं शशमाही में	बत्तीस रुपए
ग्यारहवीं शशमाही में	64 रुपए	बारहवीं शशमाही में	128 रुपए
तेरहवीं शशमाही में	256 रुपए	चौदहवीं शशमाही में	512 रुपए
पन्द्रहवीं शशमाही में	1024 रुपए	सोलहवीं शशमाही में	2048 रुपए
सत्तरहवीं शशमाही में	4096 रुपए	अट्ठारहवीं शशमाही में	8192 रुपए
उन्नीसवीं शशमाही में	16384 रुपए	बीसवीं शशमाही में	32768 रुपए
इक्कीसवीं शशमाही में	65536 रुपए	बाईसवीं शशमाही में	131072 रु०
तेईसवीं शशमाही में	262144 रुपए	चौबीसवीं शशमाही में	524288 रुपए

पस बुढ़िया को एक अधनी के बदले में पांच लाख चौबीस हज़ार दो सौ अठासी रुपए मिले।

(माहे तैबा नवम्बर १६६० ई०)

सबक़

इल्म के बड़े फायदे हैं। बुढ़िया ने अपने इल्मे हिसाब की बदौलत एक अधनी के बदले लाखों रुपए हासिल कर लिए। यह भी मालूम हुआ कि हर काम करते वक़्त अंजाम की तरफ नज़र ज़रूर रखनी चाहिए। वरना नुक़्सान का ख़तरा है। बनिए ने अपने ही उसूल के मुताबिक़ अधनी लेते वक़्त अंजाम की तरफ नज़र न की जिसका नतीजा यह निकला कि उसे लाखों का नुक़सान हुआ।

यह तो दुनिया की बात है और है भी ग़ैर यक़ीनी। लेकिन एक तिजारत आख़िरत की भी है जिसकी ख़बर ख़ुदा तआला ने दी है और आख़िरत की तिजारत यक़ीनी और सच्ची है। ख़ुदा तआला फरमाता है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِىْ كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ وَاللهُ يُضَاعِفُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَاللهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ

उनकी कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उस दाना की तरह है जिसने उगाईं सात बालें। हर बाल में सौ दाने और अल्लाह उससे भी ज़्यादा बढ़ाए जिसके लिए चाहे और अल्लाह उस्अत (फ़ैलाव) वाला, इल्म वाला है।" (प. ३ अ. ४)

यानी राहे ख़ुदा में खर्च करने से अल्लाह तआला हमारे इस ख़र्च को इस तरह बढ़ा देता है। कि जिस तरह ज़मीन में गंदुम का एक दाना बोने से उस एक दाने से सात बालें उगती हैं और हर बाल में सौ-सौ दाने होते हैं गोया एक दाना बढ़कर सात सौ दाने बन जाते हैं। ख़ुदा तआला का यह महज़ फ़ज़्ल व करम है कि हमारे एक मामूली ख़र्च को बढ़ा कर सात सौ गुना अज्र अता फरमा देता है और फिर सात सौ पर ही मुंहसिर नहीं बल्कि ख़ुदा फरमाता है कि मैं जिसके लिए चाहूं उससे भी ज़्यादा अज्र बढ़ा दूँ। पस मुसलमानों को अपना माल इस तिजारत में ज़रूर लगाना चाहिए दुनिया की तिजारतों में नुक़सान का भी ख़तरा है मगर उस तिजारते आख़िरत में यक़ीनी नफ़ा ही नफ़ा है और नफ़ा सात सौ गुना ज़्यादा बल्कि ख़ुदा चाहे तो उससे भी और ज़्यादा।

राहे हक़ में ख़र्च गर कुछ कीजिए
अज्र उसका हक़ से बेहद लीजिए

❖❖❖

सातवाँ बाब

चालाक औरतें

हिकायत नम्बर (109)

एक चालाक औरत की क़सम

बनी इसराईल के यहाँ एक पहाड़ था जिसे वह बड़ी अज़मत वाला समझते थे। और उसकी बड़ी ताज़ीम व तौक़ीर (इज़्ज़त) करते थे। और अगर किसी बात का फ़ैसला करते वक़्त क़सम खाने की बात आती तो उस पहाड़ पर चढ़ कर क़सम खाते थे। जो उस पहाड़ पर जाकर क़सम खा लेता उसे वह सच्चा समझ लेते थे। उस शहर में एक औरत बड़ी ख़ूबसूरत थी। जिसका एक नौजवान से नाजायज़ तअल्लुक़ पैदा हो गया। औरत ने उसे अपने मकान में बुला-बुला कर मिलना शुरू कर दिया। ख़ाविन्द (शौहर) को शुबह पैदा हो गया और उसे कहा कि मुझे शुबह है कि मेरी ग़ैर हाज़िरी में कोई तुम्हारे पास आता है। औरत ने इंकार किया तो ख़ाविन्द (शौहर) ने कहा। अगर तू सच्ची है तो पहाड़ पर चल कर क़सम खा ले कि तुम्हारा किसी से नाजायज़ तअल्लुक़ नहीं है औरत ने कहा। हां मैं कल पहाड़ पर चल कर क़सम खाने को तैयार हूँ। ख़ाविन्द (शौहर) बाहर गया तो वह अपने आशना (जानने वाले) को बुला कर कहने लगी कि कल तुम पहाड़ के नीचे एक गधा लेकर खड़े रहना। मैं और मेरा ख़ाविन्द (शौहर) पहाड़ पर चढ़ने के लिए वहाँ से गुज़रेंगे और मैं ख़ाविन्द (शौहर) से कहूँगी कि पहाड़ पर चढ़ते हुए मैं थक जाऊँगी। इस बहाने तुम्हारा गधा किराया पर लेकर मैं उस पर सवार होकर पहाड़ पर चढ़ूँगी। तुम गधे वाले का भेस बदल कर वहाँ मौजूद रहना और गधे पर मुझे सवार करके मेरे साथ-साथ चलना। चुनाँचे दूसरे रोज़ जब मियाँ बीवी पहाड़ पर चढ़ने के लिए घर से निकले और चलते-चलते पहाड़ के पास पहुँचे तो वहाँ उसका आशना गधे वाले के भेस में गधा लिए खड़ा था। औरत ने शौहर से कहा। चलते-चलते मेरे पाँव में छाले पड़ गए हैं मुझे यह गधा किराया पर सवारी के लिए ले दो। मुझसे तो अब एक क़दम भी चला नहीं जाता। ख़ाविन्द ने गधे वाले से किराया मुक़र्रर किया और बीवी को गधे पर सवार करके तीनों

पहाड़ पर चढ़ने लगे। जब वह जगह आई जहाँ लोग क़समें खाते थे। तो उस मक्कार औरत ने अपने आपको गधे से नीचे गिरा दिया। और उस गिरने में अपनी रानें वग़ैरा क़ाबिले सतर बदन भी नंगा कर दिया। और ऐसी सूरत पैदा कर दिखाई कि ख़ाविन्द ने यही समझा कि गधे से इत्तिफ़ाक़न गिर गई है और गिरते हुए इत्तिफ़ाक़न नंगी हो गई है। झट उठी। और अपना लिबास दुरुस्त करके पहाड़ की उस क़सम वाली जगह पर खड़ी होकर कहने लगी मैं क़सम खाती हूँ कि मेरे नंगे बदन को आज तक तुम्हारे सिवा बजुज़ इस गधे वाले के और किसी ने नहीं देखा। खाविन्द मुतमइन हो गया। क्योंकि उसने यह समझा कि इस गधे वाले ने उसे गधे से गिरते हुए उसका नंगा बदन इत्तिफ़ाक़न देखा है।

(नुज़हतुल-मजालिस बाबुल-इमामत स०६, जि. २ व हयातुल-हैवान, स० २०८, जि.१)

सबक़

औरत जब मकर व फरेब पर आ जाए तो शैतान के भी कान कतर लेती है। और मर्द को बेवकूफ़ बना डालती है। यह तरक़्क़ी का ज़माना है। आजकल की मार्डन औरत काफी तरक़्क़ी कर चुकी है। पुरानी मक्कार औरत ने अपने आशना को गधे वाला बना दिया था और आंजकल की मग़्रिबज़दा औरतों ने शौहर को गधे बना दिया है। जहाँ चाहें उसे हांक कर ले जाएं मैंने लिखा है।

मौलवी तो अपने घर में हाकिम व मख़्दूम है
और अप टू डेट शौहर बंन्द-ए-बेदाम है

पहले ज़माने का शौहर तो अपनी औरत को किसी ग़ैर से मिलने पर गुस्सा में आ गया था और आजकल का तरक़्क़ी याफ़्ता मार्डन शौहर अपनी वाइफ़ का ख़ुद ग़ैरों से तआरुफ़ कराता और उनसे अपनी वाइफ़ का हाथ मिलवाता है मैंने लिखा है : दीनदार और बा-हिजाब औरत अपने शौहर से बुलन्द अख़लाक़ मिस्टर और बड़ा रौशन ख़्याल अपनी बीवी को मिला कर ग़ैर से मसरूर है की ताबे होती है और बे-हिजाब आज़ाद औरत का शौहर उसका ताबे होता है। यही वजह है कि बुर्क़ा पोश औरत का ख़ाविन्द आगे-आगे चलता है और उसकी बुर्क़ा पोश औरत उसके पीछे-पीछे चलती है और बे-हिजाब औरत आगे-आगे और उसका शौहर उसके पीछे-पीछे चलता है। मैंने लिखा है।

ज़मीन व आसमां का फ़र्क़ है मुल्ला व मुल्हिद में
कि वह शौहर है बीवी का तो यह बीवी का नौकर है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (110)

एक बदमाश औरत की चालाकी

एक नेक मर्द बड़ा ग़ैरतमन्द आदमी था। और उसकी बीवी बेहद ख़ूबसूरत थी लेकिन थी बड़ी बदमाश। एक दफा मर्द को सफर पेश आया उसके मुतअल्लेक़ीन में तो कोई ऐसा भरोसे के क़ाबिल आदमी न था। मगर एक परिन्द जानवर जो निहायत फसीह (साफ़) ज़ुबान में उससे बातें किया करता था। और उसका बड़ा ख़ैर ख़्वाह और रफ़ीक़ (दोस्त) था। चलते वक़्त उसने उससे कहा कि मेरे बाद जो कुछ, इस मेरी बीवी से ज़ुहूर में आए। उसकी ख़बर मुझे देना। परिन्दे ने कहा। बहुत अच्छा। मैं ख़्याल रखूंगा। जब वह सफर में चला गया तो औरत ने अपने आशना को पैग़ाम भेजा। और उसने खाली मौक़ा देखकर हर रोज़ आमद व रफ़्त (आना-जाना) शुरू की और जानवर उसकी सब हरकतें देखता रहा। जब वह नेक मर्द सफर से वापस आया तो जानवर ने सारा वाक़या उसको सुना दिया। वह यह सुनकर सख़्त ग़ुस्सा में आ गया। और औरत को ख़ूब पीटा। औरत जान गई कि इस राज़ का इफ़शा (ज़ाहिर) सब यह उस जानवर का काम है। उसने यह चाल चली कि एक दिन लौंडी को हुक्म दिया कि वह कोठे की छत पर चक्की ले जाकर आटा पीसे और जानवर के पिंजरे पर एक बोरिया डाल दी। जब रात हुई तो बोरिए पर पानी छिड़क दिया। और एक क़लई दार शीशा लेकर चिराग़ की रोशनी में चमकाने लगी जिसकी चमकीली शुआएं पिंजरे और दीवारों पर पड़ने लगीं जानवर ने पानी के नन्हें-नन्हें क़तरों को जो बोरिए से टपक रहे थे। मीना और चक्की की आवाज़ को कड़क और शीशा की शुआओं (किनारों) को बिजली समझा। जब सुबह हुई तो उसने अपने मालिक से कहा कि आज रात भर मीना बरसता रहा। बिजली कड़कती रही और बादल गरजते रहे। आपकी यह रात कैसी गुज़री? मालिक ने कहा। बे-वक़ूफ़ इस गर्मी के मौसम में बारिश कहाँ? उसकी औरत ने कहा। देख लिया आपने इस जानवर का झूठ? इसी तरह उसने जो कुछ मेरे मुतअल्लिक़ भी बताया था सब झूठ था। ख़ाविन्द ने बीवी से सुलह कर ली और राज़ी हो गया और जानवर की तरफ ग़ज़बनाक निगाहों से देखकर कहा। तुमने मुझसे झूठ क्यों बोला था। इसी ग़ुस्सा में उसने जानवर को बेच डाला। (नुज़हतुल-मजालिस, स०६, जि.२)

सबक़

औरत अगर मकर व फरेब पर आमादा हो जाए तो एक फनकार नज़र आती है और मर्द पर ग़ालिब आ जाती है। जानवर के ज़रिए जिस तरह उसने मर्द को बे-वक़ूफ़ बनाया। यह उसका एक ज़नाना आर्ट था।

यह भी मालूम हुआ कि मग़्रिबी तहज़ीब के मार्डन मुफस्सिरे क़ुरआन की गरजदार तक़रीरों को जो ऐलाने हक़ समझते हैं और किसी की मुहब्बत के मुद्दई बन कर जो टिसवे (आंसू) बहाते हैं। और उन्हें जो लोग सच्चे आँसू समझते हैं और तहज़ीबे नौ के अंधेरे को जो नई रौशनी समझते हैं। वह जानवर हैं। जिस तरह इस फंकार औरत ने चक्की की गरज को बादल की गर्ज। बोरिए के क़तरों को बारिश के क़तरे और शीशे की शुआएँ को बिजली की चमक बनाकर नेक मर्द को धोखा में डाल दिया। इसी तरह बाज़ लोग बुतों के हक़ में नाज़िल शुदा आयत को अंबिया व औलिया पर चिस्पां करके सहाबा को बुरी नज़र से देखने वाली मरीज़ आँखों से बहने वाले पानी को मुहब्बत के आँसू बना कर और सुर्ख़ी व पौडर से रुख़सारों की चमक पैदा करके उसको असली हुस्न व जमाल बता कर मुसलमानों को धोखा में डाल देते हैं।

जो मुसलमां औरतें हैं पाक बाज़
ऐसी धोखा बाज़ी से रहती हैं बाज़

❖❖❖

हिकायत नम्बर (111)

एक फरेबी औरत

चन्द ताजिरों ने ब्यान किया कि हम मुख़्तलिफ़ (कई) शहरों से आकर मिस्र की जामे अमर बिनुल-आस में जमा हो जाते थे और बातें किया करते थे। एक दिन बैठे हम बातें कर रहे थे कि हमारी नज़र एक औरत पर पड़ी जो हमारे क़रीब एक सुतून (खम्भे) के नीचे बैठी थी। एक शख़्स ने जो बग़दाद के ताजिरों में से था। उस औरत से कहा क्या बात है। उसने कहा मैं एक ला-वारिस औरत हूँ। मेरा शौहर दस बरस से मफ़्क़ूदुल-ख़बर (लापता) है। मुझे उसका कुछ भी हाल मालूम नहीं हुआ। मैं क़ाज़ी साहब

के यहाँ पहुँची कि वह मेरा निकाह कर दें मगर उन्होंने रोक दिया है मेरे शौहर ने कोई सामान नहीं छोड़ा। जिससे बसर औक़ात कर सकूँ मैं किसी अजनबी आदमी की तलाश में हूँ जो मेरी इमदाद के लिए गवाही दे दे। और उसके साथ यह भी कि वाक़ई मेरा शौहर मर गया या उसने मुझे तलाक़ दे दी ताकि मैं निकाह कर सकूं। या वह शख़्स यह कह दे कि मैं उसका शौहर हूँ और फिर वह मुझे क़ाज़ी के सामने तलाक़ दे दे ताकि मैं इद्दत का ज़माना गुज़ार कर निकाह कर लूं। तो उस शख़्स ने उससे कहा कि तू मुझे एक दीनार दे दे तो मैं तेरे साथ क़ाज़ी के पास जाकर कह दूँगा कि मैं तेरा शौहर हूँ और तुझे तलाक़ दे दूँगा। यह सुनकर वह औरत रोने लगी और कहा ख़ुदा की क़सम! इससे ज़्यादा मेरे पास नहीं और चार रुबाइयां निकालीं (दिरहम का चौथाई हिस्सा) तो उस शख़्स ने वही उससे ले लीं और उस औरत के साथ क़ाज़ी के यहाँ चला गया और देर तक हम से नहीं मिला। अगले दिन उससे हमारी मुलाक़ात हुई। हमने उससे कहा तुम कहाँ रहे। इतनी देर के बाद आज मिले हो। तो उसने कहा छोड़ो भाई मैं एक ऐसी बात में फंस गया जिसका ज़िक्र भी रुसवाई है हमने कहा हमें बताओ। उसने ब्यान किया कि मैं इस औरत के साथ क़ाज़ी के यहाँ चला गया और देर तक हमसे नहीं मिला। अगले दिन उससे हमारी मुलाक़ात हुई। हमने उससे कहा तुम कहाँ रहे। इतनी देर के बाद आज मिले हो। तो उसने कहा छोड़ो भाई मैं एक ऐसी बात में फंस गया जिसका ज़िक्र भी रुसवाई है हमने कहा हमें बताओ। उसने ब्यान किया कि मैं इस औरत के साथ क़ाज़ी के यहाँ पहुँचा तो उसने मुझ पर ज़ौजियत का दावा किया मैंने उसके ब्यान की तस्दीक़ कर दी तो उससे क़ाज़ी ने कहा कि क्या तू उससे इलाहदगी (अलग) चाहती है? उसने कहा। नहीं वल्लाह! उसके ज़िम्मे मेरा मुहर है और दस साल तक ख़रचा मुझे इसका हक़ है तो मुझसे क़ाज़ी ने कहा कि उसका यह सारा हक़ अदा कर। और फिर तुझे इख़्तियार है उसे तलाक़ दे या न दे। तो मेरा यह हाल हो गया कि मैं मुतहैय्यर (हैरान) हो गया और यह हिम्मत न कर सका कि असल वाक़या ब्यान कर सकूं और उसके ब्यान की तसदीक़ न करूं। अब क़ाज़ी ने यह इक़दाम किया कि मुझे कोड़े वाले के सिपुर्द कर दिया। बिल-आख़िर दस दीनारों पर बाहमी तसफ़िया हुआ जो उसने मुझसे वसूल किए और वह चारों रुबाइयां जो उसने मुझे दी थीं। वह वकला और क़ाज़ी के अहलकारों को देने में ख़र्च हो गईं और उतनी ही अपने पास से ख़र्च

हुई। हमने उसका मज़ाक़ उड़ाया वह शर्मिन्दा होकर मिस्र ही से चला गया।
(किताबुल-अज़किया अल-इमाम इब्ने जौज़ी, स०४५६)

सबक़

यह दुनिया उस फरेबी औरत की मानिन्द है। बड़ी मिसकीन सूरत में आकर इंसान को फुसलाती है। और कुछ लालच देकर उसे अपने साथ मिला लेती है जो इंसान उसके धोखे में फंस जाए। वह फिर उसी ताजिर की तरह अपना सब कुछ लुटा कर तबाह व बर्बाद हो जाता है और किसी को मुँह दिखाने के क़ाबिल भी नहीं रहता। इसीलिए आला-हज़रत ने लिखा है :

शहद दिखलाए ज़हर पिलाए क़ातिल डाइन शौहर कश
किस मुरदार पे तू ललचाया दुनिया देखी भाली है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (112)

एक बदकार औरत

एक बदकार औरत से किसी सादा लौह शख़्स का निकाह हो गया। वह औरत छेः माह से पहले ही उम्मीद से थी चुनांचे निकाह के बाद तीन महीने गुज़रने पाए तो बच्चा पैदा हो गया। सादा लौह शौहर बड़ा ख़ुश हुआ कि अल्लाह ने बड़ी अच्छी बीवी दी। जिसके बाइस मुझ पर अल्लाह ने बड़ी जल्दी करम फरमा दिया और मुझे फटाफट अब्बा बना दिया। बाज़ार में निकला तो लोग मज़ाक़ करने लगे। वह बहुत घबराया कि लोग मुबारकबादी की जगह मज़ाक़ करने लगे हैं। और लोगों से पूछने लगा कि तुम्हारे मज़ाक़ की वजह क्या है? सबने कहा कि भले आदमी! बच्चा तो ख़ालिस हरामी है तुम ख़्वाह मख़्वाह उसके अब्बा बन रहे हो। उसने पूछा कि बच्चा हरामी कैसे हो गया? लोगों ने बताया। इसलिए कि वह तीन महीने के बाद ही पैदा हो गया है। अगर तुम्हारा होता तो पूरे नौ माह के बाद पैदा होता वह सादा लौह लोगों की यह बात सुनकर ग़ुस्सा में घर आया। और अपनी बीवी से कहने लगा। कि तुमने यह क्या ग़ज़ब किया कि छः माह पहले ही बच्चा

जन दिया। बच्चा तो पूरे नौ माह के बाद पैदा होता है। लोगों में तुमने मेरी नाक काट डाली। चालाक औरत बोली। आप भी बड़े भोले हैं ख़्वाह मख़्वाह लोगों की बातों में आ गए हैं मैंने पूरे नौ माह के बाद ही बच्चा जना है। यक़ीन न आए तो हिसाब कर लें बताइए। आपको मुझसे निकाह किए हुए कितना अरसा गुज़रा? उसने कहा। तीन माह। बोली और मुझे आपसे निकाह किए हुए कितना अरसा गुज़रा? बोला तीन माह। बोली और बच्चा कितने माह के बाद पैदा हुआ। बोला तीन माह के बाद। कहने लगी। तो तीन माह आपके। तीन माह मेरे और तीन माह बच्चे के। पूरे नौ माह हो गए। फिर एतराज़ कैसा? सादा लौह शौहर मुतमइन हो गया और कहने लगा बिल्कुल ठीक है। लोगों का क्या है? वह जल कर ऐसा कह रहे हैं।

(माहे तैबा, सितम्बर १९५६ ई०)

सबक़

इस हिकायत के बाद एक लतीफ़ा भी सुन लीजिए। शादी के सिर्फ़ पाँच माह बाद ही बीवी ने बच्चा पेश कर दिया। शौहर ने इहतिजाज करते हुए कहा। मेरे ख़्याल में यह क़ब्ल अज़ वक़्त है।" बीवी बोली।" दरासल हमारी शादी ही बाद अज़ वक़्त हुई है।" एक और लतीफ़ा भी सुनिए। अदालत में एक बेवा मेम साहिबा आईं। और कहा मेरे तीन बच्चे हैं। एक बारा साल का एक आठ साल का और एक दो साल का। जज ने पूछा। और आपके शौहर को मरे हुए कितने दिन गुज़रे हैं? कहने लगी। चौदा साल। जज ने कहा फिर बारा साल का बच्चा तो मान लिया। कि आप ही का है मगर यह आठ और दो साल के बच्चे कहाँ से आ गए? बोली। जनाब मरा मेरा शौहर है। मैं तो ज़िन्दा हूँ।" यह है उन मार्डन औरतों का क़िरदार। और मार्डन शौहरों का उन पर एतबार। औरतों को यूरोप ने जिस क़िस्म की उरयानी फह्हाशी और बे-हिजाबी दी है। उस आज़ादी का नतीजा इसके सिवा और क्या निकल सकता है। मग़्रिबी तालीम ने औरत को औरत रहने ही नहीं दिया। अव्वल तो यह अनपढ़ होकर भी काफी होशियार होती हैं। फिर उन्हें अगर मग़्रिबी तालीम मिल जाए। तो समझ लीजिए। गोया सांप को पर लग गए। अकबर इलाहाबादी ने ख़ूब लिखा है कि उनके फ़िक्र व काम से बचना अभी दुशवार है कि –

उनके फ़िक्र व काम से बचना अभी दुशवार है
और आफत ढाएंगी साइंस पढ़ कर बीबियाँ

क्या बताऊं क्या करेंगी इल्म पढ़ कर बीबियाँ
बीबियाँ शौहर बनेंगी और शौहर बीबियाँ

उस औरत की तावील देखिए कि किस तरह उसने तीन-तीन और तीन महीने मिला कर नौ बना दिए। यह भी आजकल की तरक़्क़ी का एक करिशमा है कि पहले ज़माना में जो सफर महीना भर में तय होता था। अब वह एक दिन में तय हो जाता है। बच्चे की पैदाइश का सफर भी इस दौर तरक़्क़ी में कम हो गया है। नौ महीने का सफर तीन माह में।

नौ माह का सफर हुआ सह माह में तमाम
यह आजकल की बीबियाँ भी हैं गोया तेज़ गाम

मोलवी दुश्मन हज़रात को यह तेज़ गाम बीबियाँ मुबारक हों जो नमाज़ रोज़े पर्दे और शर्म व हया के स्टेशनों पर रुकती ही नहीं। अगर रुकेंगी भी तो उरयां आबाद जंकशन पर या शराब नगर जैसे स्टेशनों पर। यह भी मालूम हुआ कि आजकल के गुस्ताख़ाने रसूल अपनी गुस्ताख़ियों को इसी बदकार औरत की सी तावीलें करके इस्लामी साबित करना चाहते हैं और सादा लौह मुसलमान को अपनी चालाकियों का शिकार कर लेते हैं और सादा लौह मुसलमान अपने ही दोस्तों के ख़िलाफ़ और तावील करने वाले के हामी बन जाते हैं हालाँकि।

बड़े पाक बाज़ और बड़े पाक तीनत
जनाब आपको कुछ हमीं जानते हैं!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (113)

एक चालाक चोर औरत

लनदन की एक चालाक चोर औरत का आर्ट मुलाहिज़ा फरमाइए ख़बर आई कि कुछ दिनों से रेल के मुसाफिरों के सूटकेस गुम होने लगे। पुलिस ने बड़ी कोशिश की मगर चोर हाथ न आया। पुलिस हैरान थी कि सूटकेस उठाता हुआ कोई नज़र भी नहीं आ सका और सूटकेस गुम होने रुके भी

नहीं। यह कौन है जो इस सफाई से अपना काम कर रहा है हत्ता कि एक दिन यह अप-टू-डेट चोर पकड़ी गई और उसकी सफाई का राज़ आशकारा हो गया। उस चालाक औरत ने एक ऐसा सूटकेस तैयार कर रखा था जिसके तले चन्द इस्पिरिंगें कुछ इस हिकमत से लगाई गई थीं कि जब उस सूटकेस को किसी दूसरे उससे छोटे सूटकेस पर रखा जाता था तो वह अपने बोझ के साथ खुद-ब-ख़ुद नीचे बैठना शुरू हो जाता था। उसका तला अन्दर की जानिब घुसता जाता और नीचे वाले सूटकेस को अपने अन्दर लाता जाता था। हत्ता कि थोड़ी देर में उसका सूटकेस नीचे फ़र्श के साथ लग जाता और नीचे वाला सूटकेस उसके सूटकेस का लुक़्मा बन कर ग़ाइब हो जाता था। यह चोर अपने उसी सूटकेस को हाथ में लिए गाड़ी पर सवार होती और मुनासिब सूटकेस के ऊपर उसे रख कर इत्मीनान से बैठ जाती और अगले स्टेशन पर उतर जाती थी। इसी चाल से सैंकड़ों सूटकेस उसने उड़ाए। (माहे तैबा अगस्त १९५७ ई०)

सबक़

कहाँ इस्लामी तहज़ीब व तालीम कि किसी की गिरी हुई चीज़ भी मत उठाओ और कहाँ यह हरामी तहज़ीब व तालीम कि ऐसे-ऐसे सूटकेस तैयार करो जो दूसरों के हज़ारों माल वाले सूटकेस हड़प कर जाएँ मोलवी ज़फर अली ने ख़ूब लिखा है।

तहज़ीबे नौ के मुंह पे वह थप्पड़ रसीद कर
जो उस हरामज़ादी का हुलिया बिगाड़ दे

हमारा मार्डन तबक़ा यूरोप की तरक़्क़ी और वहाँ की तरक़्क़ी याफ़्ता औरतों की तारीफ़ में ज़मीन व आसमान के क़लाबे मिला देता है। वह देखे कि यह यूरोप की और उसकी औरतों की तरक़्क़ी। हमारा कोई यूरोप का दिलदादा वहां से मेम शादी कर लाता है तो मेम के सूटकेस में वह ऐसा ग़ाइब हो जाता है कि माँ-बाप बेचारे हैरान व परेशान रह जाते हैं कि वह हमारा बेटा जो यूरोप गया था वह हमारे हाथों से छिन कर ग़ाइब कहाँ हो गया। यानी फिर वह माँ-बाप का नहीं रहता। अपनी मेम ही में ग़ाइब हो जाता है।

आजकल की मार्डन औरतों के हाथों में जो पर्स रहते हैं। यह पर्स भी ऐसा कमाल रखते हैं कि शौहर बे-चारे की कमाई और बटुवा उसी पर्स में ग़ाइब हो जाता है।

उस चालाक चोर औरत का यह सूटकेस किसी मोलवी दुशमन गद्दार के पेट का मुक़ाबला नहीं कर सकता। इस दौर में कई ऐसे फनकार भी मौजूद हैं। जो अपने इस पेट से सूटकेस का काम लेकर हज़ारों लाखों का ग़बन कर जाते हैं और न सिर्फ़ माल बल्कि छोटे मोटे ग़रीबों को भी निगल जाते हैं और डकार तक नहीं लेते। यह लोग अपनी हाथ की सफाई से अपना काम भी किए जा रहे हैं और हाथ भी नहीं आते। मगर ताबके? यहाँ नहीं तो वहाँ एक दिन तो ज़रूर यह चोर भी पकड़े ही जाएंगे। कहते हैं एक बड़ा मोटा साधू नंग धड़ंग लेटा था और पेट उसका किसी गुंबद की तरह आसमान से बातें कर रहा था। एक मसख़रे ने उसके पेट पर हाथ रख कर पूछा। महाराज इसके अन्दर क्या है? साधू ने ग़ुस्से में आकर जवाब दिया। उसके अन्दर गोंह है! मसख़रे ने पूछा। मगर महाराज! सिर्फ़ आप ही का पाया सारे शहर का?

बिल्कुल इसी तरह इन ग़द्दाराने वतन का पेट देखिए तो यह कहना पड़ता है कि सारी क़ौम का माल उसी एक पेट में जमा है और यह पेट अच्छा ख़ासा चलता फिरता "बैतुल-माल" है। ऐसे लोग अपने आपको "ख़ादिमाने वतन" भी कहते हैं। हालांकि होते यह "ख़ादिमाने बतन" हैं।

उभर कर पेट लीडर का सुनाता है ज़माने को!
कि चन्दा क़ौम का सारे का सारा मेरे अन्दर है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (114)

उल्लू

एक चालाक औरत एक दुकानदार के पास आई और कहने लगी। भाई साहब! मैं अपनी बेटी की शादी करने वाली हूँ और हमारी बेरादरी में रिवाज है कि लड़की के जहेज़ में एक अदद उल्लू भी दिया जाता है। तुम दुकानदार हो। ख़्याल रखना कोई उल्लू बेचने आए तो चाहे कितना महँगा क्यों न मिले। ख़रीद लेना। मुझे उल्लू की शदीद ज़रूरत है मैं तुमसे सौ रुपया तक भी ख़रीद लूंगी। दुकानदार ने दिल में सोचा। उल्लू ज़्यादा से

ज़्यादा दो चार रुपया में मिल जाएगा और मैं सौ रुपया में बेच दूँ तो सरासर नफ़ा ही नफ़ा है।

चुनांचे उसने कहा। मैं तलाश में रहूँगा।

दूसरे रोज़ उसी औरत ने अपने भाई को ख़ुद ही एक उल्लू देकर उस बाज़ार में भेज दिया। जहां उस दुकानदार की दुकान थी और उसे समझा दिया कि दुकानदार उल्लू ख़रीदना चाहे तो पचास रुपए से कम न बेचना चुनांचे मक्कार औरत का मक्कार भाई उल्लू लेकर उस बाज़ार से गुज़रा। दुकानदार ने जो उसे देखा तो उसे आवाज़ देकर बुलाया। और कहा। उल्लू बेचते हो? उसने कहा। हां! दुकानदार ने क़ीमत पूछी तो उसने अस्सी रुपए बताई। दुकानदार ने कहा। होश करो। उल्लू की अस्सी रुपए क़ीमत! ज़्यादा से ज़्यादा दो चार का होगा उसने कहा। नहीं साहब! मैं तो उसे अस्सी पर ही दूंगा और अगर आपको लेना ही है तो दस कम कर दूंगा। दुकानदार ने ज़ोर दिया तो वह सत्तर और सत्तर से साठ और फिर पचास तक आ गया। दुकानदार की नज़र में सौ रुपया था। उसने सोचा। कि चलो पचास पर ही ले लो। पचास फिर भी बच जाएंगे। चुनांचे उसने नक़द पचास देकर उल्लू ख़रीद लिया और बड़ा ख़ुश हुआ कि उल्लू जल्दी मिल गया। दो रोज़ के बाद वही औरत दुकान के सामने से गुज़री तो दुकानदार ने आवाज़ दी बहन जी उल्लू ले जाओ औरत ने ग़ुस्से में आकर कहा बदमाश यह क्या कहा तूने एक शरीफ़ औरत को! घर में कोई नहीं। उल्लू दे जाकर अपने घर किसी को। लोग जमा हो गए कि क्या मामला है। कहने लगी। न जान न पहचान। मैं यहाँ से गुज़र रही थी कि मुझे कहता है उल्लू ले जा। उसकी ऐसी तैसी। यह क्या लफ़्ज़ कहा है उसने मुझे सब लोग दुकानदार पर लअन तअन करने लगे। वह बोला यह ख़ुद ही कहती थी कि मुझे उल्लू दरकार है। मुझे अपनी लड़की के जहेज़ में देना है। सबने कहा। बेवकूफ़! यह भी कोई मानने वाली बात है कि उल्लू जहेज़ में दिया जाए। तुम बदमाश हो। जो राह चलती औरतों को छेड़ते हो। दुकानदार बेचारे ने पच्चास का नुक़सान भी कर लिया और बे-इज़्ज़त भी ख़ूब हुआ।

सबक़

कुरआन पाक में आता है :

كَمِثْلِ الشَّيْطَانِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّىْ بَرِئٌ مِّنْكَ اِنِّىْ اَخَافُ اللهَ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ

यानी शैतान इंसान से कहता है कि कुफ़्र कर और जब इंसान कुफ़्र कर लेता है तो फिर उससे कहता है मैं तुमसे बरी हूँ। मैं तो अल्लाह से जो रब्बुल-आलमीन है डरता हूँ।"

देखा आपने इस चालाक औरत की तरह शैतान पहले इंसान को बहकाता है और उसे ख़िलाफ़े शरा हरकत पर आमादा करता है और बे-वकूफ़ इंसान ऐश के लालच में शैतान के दाव में आकर शरीअत के ख़िलाफ़ हरकतें करने लगता है और शैतान जब देखता है कि मेरा मतलब हल हो गया। तो फिर कहता है कि मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं। जो कुछ तुमने किया खुद किया। मैं तुम्हारे कामों से बरी हूँ। तुम जानो तुम्हारा काम। मुसलमानो! होश करो! और शैतान से बचो!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (115)

फराड

डॉ० अर्शद दिमाग़ी अमराज़ (बीमारी) के माहिर समझे जाते हैं। एक दिन अपने मतब (दवाखाना) में मरीज़ों को देख रहे थे कि एक फ़ैशन ऐबल ख़ातून जो किसी ऊँचे खानदान की चश्म व चिराग़ मालूम होती थी मतब (दवाखाना) में दाख़िल हुई और ख़ामोशी से बेंच पर बैठ गई। बारी आने पर वह दर्दनाक लेहजा में डॉ० से कहने लगी कि उसका शौहर तक़रीबन दो हफ़्ते से दिमाग़ी आरज़ा में मुब्तला है और हर वक़्त रुपये पैसों का हिसाब करता रहता है। लिहाज़ा आप मेरे साथ चल कर मेरे शौहर को देख लें।

डॉ० अर्शद सुबह के वक़्त किसी भी मरीज़ को देखने घर नहीं जाते थे। लिहाज़ा उन्होंने माज़रत (माफ़ी) तलब की और कहा कि आप अपने ख़ाविन्द को यहीं ले आएं। उस पर ख़ातून ने बड़े मासूमाना लेहजे में इल्तिजा की कि आप अपनी कार और ड्राइवर को मेरे हमराह कर दें ताकि जल्दी में उसे यहाँ ला सकूँ। डॉ० इंकार न कर सका लिहाज़ा ड्राइवर को बुला कर ख़ातून के हमराह कर दिया।

थोड़ी देर बाद ख़ातून एक लाग़र से मर्द के साथ कार से बाहर निकली और उस शख़्स को मरीज़ों की क़तार में बिठा कर खुद मतब (दवाखाना)

से बाहर चली गई थोड़ी देर के बाद जब डॉ० उस आदमी के पास पहुँचा तो वह जल्दी से खड़ा हो गया और कहने लगा। "डॉ० साहब जल्दी से सात हज़ार रुपया दे दें मुझे और भी बहुत काम करने हैं।"

डॉ० साहब को आरज़ा का इल्म था ही लिहाज़ा उन्होंने सवाल किया। "आपको कितनी मुद्दत हुई इस आर्ज़ा में मुब्तला हुए।"

यह सुनते ही वह साहब उठ खड़े हुए और बोले।" जनाब मैं कोई मरीज़ नहीं हूँ बल्कि आफ़ताब ज्वेलर्ज़ का मुंशी हूँ और आपसे इन ज़ेवरात के रुपये लेने आया हूँ जो आपकी बीवी ने ख़रीदे थे।"

यह सुनकर डॉ० सन्नाटे में आ गया। कैसे ज़ेवरात। कैसी बीवी। क्या बक रहे हो।"

उन साहब ने मज़ीद वज़ाहत फरमाई। डॉ० साहब अभी आपके ड्राइवर के हमराह कार में हमारी दुकान पर आई थी। सात हज़ार रुपए के ज़ेवरात ख़रीदे और अदायगी के लिए वह दुकान से मुझे यहाँ ले आई ताकि आपसे चेक ले सकूँ।"

इतना सुनना था कि उनके होश उड़ गए। डॉ० साहब बुरी तरह मुलव्विस थे। लिहाज़ा अदायगी करनी पड़ी। (माहनामा आदाबे अर्ज़ १६७२ ई०)

सबक़

यह है मार्डन औरत का किरदार कि एक तरफ जौहरी को लूटा और दूसरी तरफ डॉ० को इसी तरह यह औरत जहाँ पहुँची। दुनिया भी लूटी और दीन भी। इसलिए दीन व दुनिया बचाने के लिए ऐसी औरत से बचना ही बेहतर। शैतान भी इस औरत की तरह मुसलमान को धोखा देकर उसका दीन भी बर्बाद कर देता है और उसकी दुनिया भी। इसलिए मुसलमानों को शैतान के मकर व फ़रेब से भी होशियार रहना चाहिए ताकि वह अपने दीन व दुनिया को बचा सकें।

❖❖❖

हिकायत नम्बर (116)

लखनऊ के स्टेशन पर

एक सोलह सत्तरह साला लड़की बड़े रेलवे स्टेशन पर घबराई हुई घूम रही थी एक नौजवान उसके हुस्न व शबाब को बहुत लालच भरी नज़रों से देख रहा था। लड़की ने उसकी आंखों को ताड़ लिया लेकिन सर झुका कर चुप चाप बैठ गई और रोने लगी। नौजवान ने पास जाकर पूछा। "क्या बात है?"

लड़की ने जवाब दिया। "मैं किसी शरीफ़ घर में रात गुज़ारना चाहती हूँ।"

नौजवान ने पूछा। "क्यों?"

लड़की बोली : "मैं सफर कर रही थी। सारा सामान चोरी हो गया। घर तार दिया है। यक़ीन है कि कल तक पैसे आ जाएंगे लेकिन समझ में नहीं आता कि आज क्या करूं?

नौजवान को उस पर बहुत तरस आया और कहा। "मैं आपको एक जगह ठहरा सकता हूँ।"

लड़की ने दरयाफ़्त किया। "कहाँ।"

नौजवान ने बताया। "एक होटल में।"

लड़की कहने लगी कि "मैं होटल में अकेली नहीं ठहर सकती कोई औरत होनी चाहिए।"

नौजवान बोला। "औरत तो मुम्किन नहीं। अलबत्ता अलबत्ता!!"

लड़की........."अलबत्ता क्या?"

नौजवान बोला........अलबत्ता मैं........ख़ुद........बस अपना भाई समझए। लड़की ने साफ इंकार कर दिया और कहा। कोई और सूरत सोचिए हम आप रात भर अगर स्टेशन पर रहें तो कैसा है?

नौजवान ने मंज़ूर कर लिया और वह उस लड़की के साथ ग्यारह बजे रात तक रहा। आख़िर जब उसे बहुत नींद आने लगी। तो वह उसके साथ होटल चलने पर तैयार हो गई।

नौजवान इस कामयाबी पर बहुत ख़ुश हुआ।

दोनों होटल के एक कमरे में पहुँचे। और रात के तीन बजे लड़की ने उठ कर रोना शुरू कर दिया और कहने लगी। तुम मुझे धोखा देकर और इग़वा करके यहाँ लाए हो। मैं अभी होटल के मनेजर को ख़बर करती हूँ

और पुलिस को बुलाती हूँ।

कामयाब नौजवान के छक्के छूट गए। वह खुशामद करने लगा कि ग़लती हो गई। माफ कर दो।

लड़की ने कहा "अच्छा रेल का किराया और सफर खर्च दे दो ताकि मैं इसी वक़्त ४ बजे की ट्रेन से चली जाऊँ।

लड़की ने नौजवान के पास जो कुछ भी था, नक़द, क़लम, घड़ी, सोने के बटन। सब ले लिए और अकेली ही स्टेशन की तरफ रवाना हो गई।

सबक़

मुसलमान को قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ के कुरआनी इर्शाद के मुताबिक़ अपनी नज़रें नीची रखनी चाहिए। वरना इस नज़र बाज़ी के सबब दीन तो बर्बाद होता ही है। दुनिया से भी हाथ धोने पड़ते हैं। यह नौजवान अगर इस बे-हिजाब लड़की को न देखता तो उसके जाल में न फंसता। मगर आवारा लड़की की जानिब अपनी निगाहों को भी आवारा करके यह नौजवान अपना दीन व दुनिया बर्बाद कर बैठा।

कर अमल कुरआन के इर्शाद पर
रख हमेशा अपनी तू नीची नज़र

❖❖❖

हिकायत नम्बर (117)

बद-चलन औरत की चालाकी

ख़ाविन्द अचानक घर आ गया और उसकी बद-चलन बीवी ने अपने आशना को दरवाज़े के पीछे खड़ा कर दिया और अपने ख़ाविन्द को पास बिठा लिया और कहा।

सुना आपने पड़ोसन का कारनामा?
ख़ाविन्द! नहीं तो! सुनाओ क्या बात है?

बीवी : वह अपने अशना से मह्व ऐश थी कि अचानक उसका खाविन्द घर आ गया। उस औरत ने अपने आशना को दरवाज़े के पीछे छुपा कर खड़ा कर दिया और खाविन्द को अपने पास बिठा कर उसे बातों में लगा

लिया और फिर देखिए ना! उसकी आँखों पर यूँ........इसी तरह हाथ रख कर अपने आशना को इशारा किया कि लो अब जल्दी से निकल जाओ। चुनांचे उसने इसी तरह हाथ रखे रखा और उसका आशना रफ़ू चक्कर हो गया।

इतने में वाक़ई उस बद-चलन बीवी का आशना बाहर जा चुका था।

सबक़

اِنَّ كَيۡدَكُنَّ عَظِيۡمٌ के मुताबिक़ औरत जब अपने मकर व फ़रेब पर उतर आए तो शैतान के भी कान कतर लेती है।

बद-चलन औरत बड़ी बे-बाक है
किस क़दर अय्यार है चालाक है!

❖❖❖

नवाँ बाब

माडर्न औरतें

तहज़ीब हाज़िरुल-अमां

एक औरत की लिखी हुई यह क़ाबिले क़द्र नज़्म रोज़ाना जंग रावल-पिंडी से नक़ल करके मैंने नाज़रीन माहे तैबा की दिलचस्पी के लिए माहे तैबा जनवरी १९६२ ई० में शाए की थी और उसके साथ ही दूसरे सफ़हः पर इसी तरज़ की एक नज़्म पंजाबी ज़ुबान में मैंने ख़ुद लिख कर शाए की। यह दोनों नज़्में बड़ी मक़्बूल हुईं। आज इन माडर्न औरतों की हिकायात से क़ब्ल उन दोनों नज़्मों को इस किताब में शाए कर रहा हूँ ताकि उन औरतों का पहले थोड़ा बहुत तआरुफ़ हो जाए।

लोगो सदाए आम है ग़ैरत का यह नीलाम है
तहज़ीब का पैग़ाम है! हर मर्द अब गुलफ़ाम है
निकलीं घरों से बीबियाँ तहज़ीब हाज़िरुल-अमां
अपने बदन से जंग है सब अपना जामा तंग है
मश्रिक़ की जो नरसिंग है मग़्रिब भी उस पर दंग है
चुप हैं ज़मीन व आसमां तहज़ीब हाज़िरुल-अमां
कपड़ों में भी उरयां बदन इस्किन कलर के पैरहन!
हैं औरतों के ज़ेब तन बाप और भाई सब मगन
उनमें हमीयत अब कहाँ तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
बेटी के थे बुवाए फ़्रेंड अम्मी के भी आए फ़्रेंड
अंटी ने बनवाए फ़्रेंड घर पर हैं सब छाए फ़्रेंड
प्यारी सहेली तू कहां तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
नज़रों से दें पैग़ाम जो बाहर रहें हर शाम जो
ग़ैरों के आएँ काम जो हँस-हँस पिलाएं जाम जो
यह हैं बहू और बेटियां! तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
डैडी पड़े हैं बार में अम्मी खड़ी बाज़ार में

दिल किस का है घर वार में बच्चे मिले बे-ग़ार में!
बे-मंज़िलों के कारवाँ तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
यह औरतें कठ पुतलियाँ हैं मर्द जिनकी डोरियाँ!
खुद बाप भाई या मियाँ कह दें जहां नाचें वहाँ
देखे तमाशा इक जहाँ तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
कहने को भी ईमां नहीं ताक़ों में भी क़ुरआं नहीं
सब कुछ तो है इंसां नहीं इस दर्द का दरमां नहीं
यह नाव है बेबादबां तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!

पंजाबी विच

माहे तैबा में आज कल और माडर्न मसनवी के ज़ेरे उनवान मज़ाहिया नज़में मैं खुद लिखता हूँ और अपना मज़ाही नाम मैंने हाजी हक़-हक़ रख कर इस नाम से बहुत सी उर्दू और पंजाबी नज़में लिख डालीं। तहज़ीब हाज़िरुल-अमां" यह उर्दू नज़म पढ़ कर मैंने उसी रंग में यह पंजाबी नज़म लिख डाली थी जो उर्दू नज़म के साथ ही माहे तैबा में शाए हुई थी। आज इस किताब में भी यह दोनों नज़में शाए की जा रही हैं। उर्दू नज़म तो आप पढ़ चुके लीजिए अब पंजाबी नज़म भी पढ़िए।

आजकल कुछ ऐसा हाल ऐ लोकाँ दी उलटी चाल ऐ
शर्म व हया दाकाल ऐ पर्दा तय हन जंजाल ऐ
फ़ैशन ने कीता नंगियां तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
सुर्ख़ी लगावन वालियाँ सैकल चलावन वालियां
तय गाने गावन वालियां सीटी वजावन वालियां
ऐह कुड़ियां नीं आजकल दियाँ तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
मज़हब नों हत्थों सट लिया इल्हाद नौ फिर झट लिया
बन्दा मिले मुंह वट लिया कुत्ते दा मुंह पर चट लिया
प्यारे ने कुत्ते कुत्तियां तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
बनके विलायती सांग टर कढ़ के तूं डंगी मांग टर
अकड़ दी फड़ के डांग टर लके कबूतर वांग टर
ऐह हीन फ़ैशन दे निशां तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!

औरत दी हन तशहीर ऐ हर थां ऐदी तसवीर ऐ
मजलिस दी हन ऐ मीर ऐ मरदाँ दी हन ऐह पीर ऐ
बन गई ज़मीन हन आसमां तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
औरत तरक़्क़ी कर गई बन हन ओह स्पीकर गई
खाविन्दनों घर विच धर गई तय करन खुद लेक्चर गई
हन बांग देदियाँ ककड़ियाँ तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
मुंडे भी सुर्ख़ी लावंदे बन सरत जाली आवंदे
ओह नाज़ ने दिखलावंदे कुड़ियाँ नों भी शरमावंदे
भेड़ो भी बन गए बकरियाँ तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
सक कुछ तो हक़-हक़ कह गया कहीं फ़र्क़ बाक़ी रह गया!
हक़ जित के बाज़ी ले गया बातिल दा भड्डा बह गया
जीवनदार हैं ओ सोहनियां तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!

❖❖❖

माडर्न मसनवी

यह अश्आर भी मेरे लिखे हुए हैं। माडर्न औरतों के तआरुफ़ के लिए यह भी पढ़ लीजिए।

हैं ज़माने की अजब नी-रंगियाँ
थीं जो मस्तूरात अब हैं नंगियाँ
आज कल ऐसी तरक़्क़ी हो गई!
मुर्ग़ की हमदोश मुर्ग़ी हो गई
उससे अंडों की तवक़्क़ु अब कहाँ
मुर्ग़ की मानिन्द देती है अज़ाँ!
दौरे हाज़िर के अजब अतवार हैं!
मर्द बे-बस औरतें मुख़्तार हैं!
थी जो बीवी अब वह शौहर बन गई
जनवरी गोया दिसम्बर बन गई!
हो गई है ख़ैर से लड़की ट्रेंड
साथ अपने ले के फिरती है फ़्रेंड

इश्क़ को अब तो बड़ा आराम है
हुस्न की जबकि नुमाइश आम है
हुस्न चूंकि अब पसे पर्दा नहीं!
इसलिए अब इश्क़ भी रुसवा नहीं
सुर्ख़ी व पौडर का है सारा यह खेल
कि परी रू बन के निकली है चुड़ैल
निकली इक बुढ़िया भी करके गाल लाल
आ गया बासी कढ़ी में भी उबाल
सुर्ख़ तलवे सुर्ख़ नाख़ुन सुर्ख़ लब
डेंजर्स ही डेंजर्स हैं अज़ब सब
अल-अमां तहज़ीब हाज़िरुल-अमां!
बन गई हैं लेडियाँ अब टेडियाँ
औरतें मर्दों पे हैं अब हाकिमात
फाइलातुन फाइलातुन फाइलात

❖❖❖

जंग में जंग

1961 ई० में अख़बार जँग रावलपिंडी के सफ़हात पर मर्दों और औरतों के दरम्यान एक क़लमी जँग छिड़ी थी जिसमें मर्दों और औरतों ने एक दूसरे पर बड़े-बड़े ज़हरीले तीर बरसाए। मर्दों ने जो कुछ लिखा-लिखा ही था। औरतों ने तो हद ही कर दी और ऐसी बेबाकी व आवाज़ी के साथ मर्दों को मुख़ातब किया कि तौबा ही भली। मैंने उन दिनों अख़बारे जँग के मुतअद्दिद शुमारों से मुख़्तलिफ़ इक़्तिबासात नक़ल करके जँग में जँग के उनवान से एक मज़मून लिखा था जो माहे तैबा में शाए हुआ और मक़बूल हुआ। पिछली तीन नज़्मों से माडर्न औरतों का कुछ थोड़ा बहुत तआरुफ़ हासिल होने के बाद उनके मज़ीद तआरुफ़ के लिए यह मज़मून भी पढ़ लीजिए। उसके बाद फिर हिकायात का सिलसिला शुरू होगा।

आजकल अख़बारे जंग रावलपिंडी में मुरासिलात (ख़त) के सफ़ा पर

फ़ेशन ऐबुल मर्दों और औरतों में क़लमी जँग जारी है मर्द कह रहा है कि औरत बड़ी आज़ाद हो गई है। चाइना शर्ट और स्कर्ट जैसे नीम बरहना (आधी नंगी) और चुस्त लिबास पहनती है और यह बड़ी बे-हयाई की बात है। औरत जवाब देती है कि फ़ैशन का मुख़ालिफ़ ख़ुद बे-हया है और मर्द कौन से बा-यज़ीद हैं? टेडी पतलून और रंगदार बूशर्टें और फरंगियों का लिबास पहनना और गिरीबान खोल कर बाज़ार में घूमना उन्होंने भी तो इख़्तियार कर लिया है। इस सिलसिला में दोनों तरफ से कुछ ऐसी तू-तू मैं-मैं हो रही है। कि अल-अमान वल-हफ़ीज़। और बाज़ औरतों ने मर्दों को वह जली कटी सुनाई हैं कि तौबा ही भली। अल-हम्दुलिल्लाह! "मौलवी" और उसके हम-मसलक पुराने ख़्याल के मर्द और औरतें इस जँग में शरीक नहीं और यह जँग उनकी है भी नहीं। यह जँग फ़ेशन की पैदावार है और दोनों तरफ फ़ेशन ही है फ़ेशन का हमला फ़ेशन पर ही है। यह सिलसिला कई दिनों से जारी है। हर रोज़ सफ़ा मुरासिलात पर यह जँग लड़ी जा रही है और फ़ेशन ऐबुल औरतें मर्दों के मुक़ाबला में डट चुकी हैं और कह रही हैं कि यह मर्द अपनी हरकतों से बाज़ आ जाएं। अब वह ज़माने गए जब मर्द औरतों पर नाजायज़ धोंस जमाया करते थे। अब उन मर्दों को मालूम होना चाहिए कि पाकिस्तान बन चुका है और ज़माना बहुत तरक़्क़ी कर चुका है। अब हम आज़ाद हैं। अब कोई मर्द हमारी आर्ज़ुओं पर हावी नहीं हो सकता हमारी मर्ज़ी हम चाइना शर्ट पहनें या स्कर्ट साड़ी बांधें या बिलाउज़। फिर उसके बाद मुल्क की सारी औरतों को मर्दों के मुक़ाबला में डट जाने की और मर्दों को पिछाड़ने की हस्बे ज़ेल मुजाहिदाना तलक़ीन की गई है कि

"मेरी बहनो! इस क़िस्म के जाहिल और बद-गुफ़्तार आदमीयों के कहने में न आना। और ऐसे आदमीयों को मुँह तोड़ जवाब देना क्योंकि यह अपनी हरकतों से उस वक़्त बाज़ आएंगे जब उनको मुक्कों का जवाब मुक्कों से और लातों का जवाब लातों से दिया जाएगा।

(अख़बारे जँग २० मई १९६१ ई० जमशेद बेगम)

हम इस जँग का पूरा-पूरा नक़्शा तो महदूद सफ़हात में पेश नहीं कर सकते हां इसके बाज़ वार पेश किए जा रहे हैं। पढ़िए और इबरत हासिल कीजिए कि इस शरई आज़ादी व बे-हिजाबी और नई तहज़ीब ने औरत को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है और फ़ैशन ऐबुल मर्द ने अपने हाथों औरत को मग़्रिबी आज़ादी

देकर अपने लिए किस क़द्र मुसीबत व ज़िल्लत मोल ले ली है।

अख़बारे जँग में किसी अलीम सिद्दीक़ी बर तो ने इतना लिख दिया कि औरतों को चाइना शर्ट वग़ैरा क़िस्म के नीम बरहना लिबास नहीं पहनना चाहिए और फ़ैशन की रू में नहीं बहना चाहिए।" इस पर रज़िया सुलताना कराची ने जो गुलफ़शानी फरमाई वह हस्बे ज़ेल है।

"फ़ैशन के मुख़ालिफ़ बे-हया से"

"अलीम सिद्दीक़ी बरतरी का मुरासला नज़र से गुज़रा। बरतर साहब का मुरासला पढ़ कर बहुत गुस्सा आया कि अलीम साहब हर जगह अपनी बरतरी दिखाने पर आमादा रहते हैं। आप औरत के लिबास पर तनक़ीद क्यों करते हैं? अगर औरतें चाइना शर्ट पहनती हैं तो आपका क्या नुक़सान है। क्या मर्द टाई पैंट नहीं पहनते। चाइना शर्ट पहनने में मुझे तो कोई बे-हयाई नज़र नहीं आती। तसवीर घरों में आप औरतों के दिल सोज़ अकसों को क्यों देखते हैं जब मर्द ऐसे अक्स हाए दिल सोज़ देखने पसन्द करते हैं तो औरतें क्यों न उनकी नुमाइश करें अगर आप मुस्कुरा कर बात करने को फ़ैशन गरदानते हैं तो यह आपकी बे-अक़्ली है। क्या औरत रो कर बात करे अगर औरतें फ़ैशन के लिए सीनमा देखती हैं तो मर्द किस क़द्र के लिए देखते हैं। औरतों का नीम उरियाँ डान्स देखने मर्द कलबों में जाते हैं? अलीम साहब! क्या आपको मा'लूम नहीं कि तरक़्क़ी याफ़्ता ममालिक में औरत को कितनी आज़ादी हासिल है। जब पाकिस्तानी औरत हर शोबा में दूसरे ममालिक की औरतों की तरह मर्दों के दोश बदोश काम करती है तो फ़ैशन में क्यों पीछे रहे। अगर औरत बुरक़ा ओढ़े तो वह मर्दों के दोश बदोश काम नहीं कर सकती। बरतर साहब के दिमाग़ से अभी तक दक़यानूसी और पुराने ख़्यालात नहीं निकले आपके ख़्याल में औरत को चार दीवारी में मुक़ैय्यद (क़ैद) रखना चाहिए जैसा कि दौरे जिहालत में होता था। औरतों का क्या ज़िक्र मर्द भी तो अपनी बीवियों के चोरी छुपे दूसरी औरतों से मिलते हैं। उनके साथ होटलों में चाय पीते हैं और सीनमा देखने जाते हैं।

(रज़िया सुलताना कराची जँग ७ मई १९६१ ई०)

यूं तो सारा मुरासला ही एक ताज़ियाना इबरत है लेकिन ख़त कशीदा इबारत तो "दोश बदोश" चलाने वाले तहज़ीबे नौ के हर मदहोश के लिए दवा-ए-होश लिए हुए है।

उसके बाद फ़ैशन ऐबुल औरतों ने मर्दों के मुक़ाबला में बाक़ायदा एक

महाज़ खोल दिया और मुख़्तलिफ़ औरतों ने मर्दों पर ऐसे-ऐसे तीर बरसाने शुरू कर दिए कि मर्दों को लेने के भी फ़ैशन गिनवाने शुरू कर दिए। बहुत से मर्दों ने शरीअत की पनाह में आने ही में ख़ैर समझी और "मोलवी" का सा दर्स देना शुरू कर दिया। मगर यह दर्स अब जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत" वाला मामला बन गया है चुनांचे रज़िया सुलताना ने मर्दों को बे-हया लिखा। तो उस ज़हरीले तीर के जवाब में मर्दों का जवाब मुलाहिज़ा फरमाइए।

नाचीज़ के ख़्याल में औरत की शर्म सिर्फ़ पर्दा और चार दीवारी में महफ़ूज़ है। और जो ख़्वातीन उससे इंकारी हैं। वह दुख़्तराने इस्लाम नहीं। (शुजा अहमद)

कितने शर्म की बात है कि एक औरत जो मर्द की ग़ुलाम है वह मर्दों के मुँह पर एक ऐसा थप्पड़ रसीद कर गई जो हमेशा याद रहेगा। ऐ औरतो! मर्द तुम्हारा मजाज़ी खुदा है। अगर सजदा खुदा के सिवा किसी और को जाइज़ होता तो सबसे पहले तुम्हें अपने मर्दों को सजदा करने का हुक्म होता।

(नज़ीर अहमद मिर्ज़ा जँग २६ मई १९६१ ई०)

फ़ैशन के मुँह से यह मोलवियाना वाइज़ सुनने के बाद औरत वह औरत जो इसके अज़्म से मैदान में निकली है कि यह मर्द अपनी हरकतों से उस वक़्त बाज़ आएंगे जब उनको मुक्कों का जवाब मुक्कों से और लातों का जवाब लातों से दिया जाएगा।" यूं गोया हुई कि –

मैं पूछती हूँ। आख़िर हर बहस की तान मज़हब पर क्यों टूटती है जब मुबाहिसीन के पास कुछ नहीं होता झट क़ुरआन का सहारा ले लेते हैं। यह कहना कि औरत का मुक़ाम मज़हब ने चार दीवारी ख़ाविन्द की इताअत और चूल्हा चक्की में बनाया है तो इस तरह औरत का दिमाग़ परागन्दा हो रहा है कि यह कैसा मज़हब है जहाँ औरत का कोई मुक़ाम नहीं। मिस गुल मुल्क जँग यकुम जून १९६१ ई०) पाकिस्तान बन चुका है और ज़माना बहुत तरक़्क़ी कर चुका है। अब हम आज़ाद हैं। अब कोई मर्द हमारी आरज़ुओं पर हावी नहीं हो सकता। हमारी मर्ज़ी है। हम फ़ैशन करें न करें।

(हमीदा बेगम ३० मई १९६१ ई०)

उसके जवाब में मर्द बोला।

पाकिस्तान का आईन औरतों को यह हरगिज़ इजाज़त नहीं देता कि औरत नीम उरियाँ लिबास पहन कर सीनमा, थेटर, सड़कों और बाज़ारों में घूमे औरत मिस्ल आग और मर्द मिस्ल मक्खन के है मक्खन का आग के

सामने पिघलना एक नेचुरल ख़ासियत है। आग का काम बावर्ची खाना में खाना पकाना और डाइनिंग रूम में गर्मी पहुँचाना है। अगर आग को गली कूचों सड़कों और बाज़ारों में फैलने की इजाज़त दे दी जाए तो मक्खन नालियों में बह जाएगा और सूसाइटी जल कर राख हो जाएगी।

(गुलाम अब्बास, जँग २६ मई १९६१ ई०)

औरत बोली।

शख़्सी आज़ादी की बिना पर हर एक अपनी मर्ज़ी का मालिक है। अगर कोई नीम उरियाँ लिबास पहन कर बाज़ार में आ जाए तो उसके ज़मीर पर मुंहसिर है। उसका ज़मीर उसे इस फे'ल की इजाज़त देता है। आख़िर आपको क्या ज़रूरत पड़ी है उस तरफ निगाह करने की। आप अपनी बे-चैन निगाहें न रोक सकें तो इल्ज़ाम औरतों पर।

(मिस गुल मलिक। जँग यकुम जून)

मर्द बोला।

इस्लाम ने हमें इस मसनूई बनाव सिंगार की इजाज़त नहीं दी कुदरती हुस्न बदरजहा बेहतर है। आज़ादी मस्तूरात (औरत) का हक़ है मगर आज़ादी मुनासिब हद तक हो। जिसमें फ़ैशन और बे-हयाई को दख़ल न हो।

(नूर इलाही। जँग यकुम जून)

औरत बोली।

फ़ैशन में औरत का साथ मर्द भी तो निबाह रहे। दिलीप की लुट, राज की हरकतें, लड़कियों के पीछे गिरीबान खोल कर घूमना। प्रिंटेड और नगदार बू शर्टें। स्ट्रेप वाले जूते और आख़िर सुबह ही सुबह यह मुंह खुरचने की क्या ज़रूरत है। औरत ने बाल कटवाए तो सौ-सौ एतराज़ और जो खुद दाढ़ी मोंछ सफा चट, मैक-अप से मुज़ेय्यन चेहरा रंगदार बू-शर्ट। क्या औरत बनने की कोशिश नहीं? बाल काटने में पहल मर्द ने की। उसने अपना चेहरा खुरचा, तो उन औरतों ने जिनके बालों में नुक़्स था मसलन गंजा पन या बाल छोटे होना। तो उन्होंने ....पर्दा पोशी के लिए बाल कटवा दिए। अपने लांबे-लांबे बालों पर कोई हिम्मत वाली औरत कैंची नहीं रख सकती मगर यह आपके चेहरों को किस दीमक ने चाट लिया।

दाढ़ी खुदा का नूर है बेशक मगर जनाब
फ़ैशन के इंतिज़ाम सफाई को क्या करूं!

(मिस गुल मलिक। जँग यकुम जून)

"मोलवी" भी अगरचे मर्द है और उसे मर्दों ही की हिमायत करनी चाहिए मगर इस इक़्तिबास में "मौलवी" की हिमायत मिस गुल मलिक साहिबा ही के लिए है इसलिए मिस साहिबा ने यह चन्द बातें तो वाक़ई "मर्दे मैदान" बन कर लिखी हैं अच्छा अब आगे चलिए।

मर्द बोला।

चाइना शर्ट या तंग लिबास पहन कर औरत जाज़िबे नज़र तो ज़रूर हो जाएगी मगर शर्म व हया की पुतली नहीं बन सकती। वह कलब में डांस करके एक अच्छी रक़्क़ासा (नाचने वाली) तो बन सकती है लेकिन राबिआ बसरी नहीं बन सकती। (इफ़्तिख़ार वली। जँग यकुम जून)

इफ़्तिख़ार वली साहब ने बिल्कुल दुरुस्त फरमाया लेकिन इसके जवाब में औरत की भी सुन लीजिए। औरत बोली।

कि यह जो टेडी पतलून है उसकी बजाए अगर आप पतलून न पहनें और सिर्फ़ क़मीस पहन कर बाज़ार में चले आएँ तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता टेड पतलून को बाज़ार में आप अपने उस हिस्सा की नुमाइश करते हैं जिसे कुदरत ने हर हालत में ढाँपने को कहा है हालाँकि अफ़्रीक़ा और वहशी क़बाइल के अफराद अपने उन पोशीदा मुक़ामात को पत्तों से ढाँपने की कोशिश करते हैं। (मिस मुमताज़। जँग यकुम जून)

मर्द बोला।

खुदा तआला ने मर्द व औरत में फ़र्क़ रखा है। आप मर्द के बराबर नहीं हो सकतीं। (चिराग़दीन। जँग यकुम जून)

औरत बोली।

औरत के बग़ैर मर्द नाकारा है मगर मर्द के बग़ैर औरत जनम देवी ही रहती है। यसू मसीह की माँ हज़रत मरयम का क़िस्सा सब जानते हैं कि मरयम ने मर्द के बच्चे को जन्म दिया। आज तक किसी मर्द ने किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया। इसलिए मर्द को अपनी हार मान लेनी चाहिए।

(मिस गुल मलिक। जँग यकुम जून)

मिस साहिबा का यह इक़्तिबास भी वाक़ई ला जवाब जन्म है। ऐसे इक़्तिबास को भी जन्म मर्द जन्म नहीं दे सकता। यह अलग बात है कि खुद मरयम रज़िअल्लाहु अन्हा एक मर्द ही की साहबज़ादी थीं और सिर्फ़ यसू मसीह अलैहिस्सलाम की ही नहीं बल्कि सारे इंसानों की माँ हज़रत

हव्वा रज़िअल्लाहु अन्हा को किसी औरत ने जन्म नहीं दिया।

इसमें कोई शक नहीं कि हज़रत मरयम रज़िअल्लाहु अन्हा के हाँ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बग़ैर बाप के पैदा हुए और यह अल्लाह की बेशुमार कुदरतों में से एक कुदरत का मुज़ाहरा था मगर इसका यह माना नहीं कि हस्पताल में लावारिस बच्चे को जन्म देने वाली कोई औरत खुदा तआला की नेक और बा-इसमत बन्दी पर अपने आपको क़्यास करने लगे।

चे निसबत खाक रा बा आलम पाक

हाँ तो। मर्द बोला।

यह औरतें सुर्ख़ी पौडर से अपने आपको आरास्ता करके छाती का उभार दिखाती फिरें और सर के बालों के दो नांग दाएँ बाएँ कंधों से लटका कर सामने आएं। इस सूरत में मर्द बेचारा भी मजबूर होकर रह जाएगा। (मुहम्मद यूसुफ़। जँग ४ जून)

औरत बोली।

आपको क्या ज़रूरत पड़ी है इस तरफ निगाह करने की। आप अपनी बे-चैन निगाहें न रोक सकें तो इल्ज़ाम औरतों पर। (मिस गुल मलिक)

मर्द का मीठा जवाब सुनिए।

आज कल ख़ूबानियों के टोकरे जा बजा देख कर ख़रीदने को और खाने को जी चाहता है लेकिन। आज से एक माह पेशतर जब उनका मौसम न था तो उनके खरीदने का और न ही खाने का ख़्याल पैदा होता है। यही हाल औरत का है। अगर औरतें शर्म व हया का लेबादा ओढ़ें और बे-हयाई का मुज़ाहरा न करें तो उनकी तरफ किसी मर्द का ख़्याल मुशतइल न होगा। (मुहम्मद यूसुफ़। जँग ४ जून)

औरत अपना एहसान जताती है हम जो कुछ भी करती हैं मर्दों को खुश करने के लिए ताकि उन मर्दों की थकावट दूर हो हमने मर्दों को डांस देखा या रूखी थकावट दूर हो गई। मुहब्बत भरा गाना सुना दिया जिस्म हलका हो गया। (जमशेद बेगम, जँग २० मई)

मर्द का पुर-लुत्फ़ जवाब सुनिए।

वाह क्या कहने आपके। यह नाच गाना भी कोई बादाम रौग़न की मालिश है कि डांस दिखा दिया तो थकावट दूर हो गई और गाना सुना दिया तो जिस्म हलका हो गया। (असरारुल-हक़। जँग ४ जून)

यह जंग बड़ी तवील है। अब हम औरतों के एक ज़हरीले तीर की

निशानदेही करके मज़मून ख़त्म करते हैं। एक मर्द ने चाइना शर्ट पहनने वाली औरत को कुरबानी वाला जानवर लिख दिया औरतों ने जवाब दिया कि –

अगर औरत कुरबानी का जानवर है तो मर्द की टाई और म्यूनिस्पलटी से हासिल किए गए पालतू कुत्ते के पट्टे में क्या फ़र्क़ है। एक ही चीज़ के दो मुख़्तलिफ़ नाम हैं। अलफ़ाज़ का हेर फेर है।

(मिस गुल मलिक, जंग यकुम जून १६६१ ई०)

क्यों साहब! कुछ मज़ा आया आज़ादी-ए-निसवाँ का। और मोलवियों पर यह गुस्सा झाड़ने का कि यह मोलवी उन औरतों को पर्दे में रहने की तल्क़ीन करते हैं। और औरतों को मर्दों के दोश-ब-दोश चलने की राह में रोड़ा क्यों अटकाते हैं इस फौज की सिपेह सालार जमशेद बेगम साहिबा की इस तलक़ीन पर कि उन मर्दों को मुक्कों का जवाब मुक्कों से और लातों का जवाब लातों से दो। फौज ने सौ फ़ीसद अमल करके दिखा दिया।

इस जंग में जहाँ इन आज़ादी पसन्द औरतों की बेबाकियाँ शोख़ियाँ क़ाबिले सद रंज व मलाल हैं। वहाँ उन मर्दों के इल्ज़ामी जवाब भी क़ाबिले ग़ौर हैं। और फ़ैशन ऐबुल मर्दों के पास दर हक़ीक़त इन इल्ज़ामात का कोई जवाब नहीं।

❖❖❖

हिकायत नम्बर (118)

माँ की मुहब्बत

मोलवी मुहम्मद हुसैन आज़ाद ने उर्दू की पहली किताब लिखी जो आज से तीस बत्तीस साल पहले तक मदरसों में पढ़ाई जाती रही। उसका पहला सबक़ यूं था।

माँ बच्चे को गोद में लिए बैठी है। बाप हुक्क़ा पी रहा है और देख-देख कर होश होता है। बच्चा आँखें खोले पड़ा है। अंगूठा चूस रहा है। माँ मुहब्बत भरी निगाहों से बच्चे का मुँह तक रही है और प्यार से कहती है। मेरी जान! वह दिन कब आएगा। जब कमा कर लाएगा। आप खाएगा। हमें खिलाएगा। सेहरा बांधेगा। दुलहन बियाह लाएगा। बच्चा मुस्कुराता है। तो मां का दिल बाग़-बाग़ हो जाता है। जब नन्हा सा होंठ निकाल कर रोनी

सूरत बनाता है तो बे-चैन हो जाती है। सामने झूला लटक रहा है। सुलाना होता है तो उसमें लिटा देती है। रात को अपने साथ सुलाती है। जाग उठता है तो झट चौंक पड़ती है। कच्ची नींद से रोने लगता है तो आधी रात तक यह बेचारी मामता की मारी बैठी रहती है। सुबह जब बच्चे की आँख खुलती है। तो आप भी उठ बैठती है। दिन चढ़े मुँह धुलाती है और कहती है क्या चाँद सा मुखड़ा निकल आया। वाह! वाह!

सबक़

यह माँ पुराने ज़माने की माँ थी और उस ज़माने की माँ थी जिस ज़माने में बच्चे बच्चा गाड़ी या आया की गोद के बजाए माँ की गोद में होते थे और बाप सिग्रेट या पाइप नहीं बल्कि हुक़्क़ा पिया करता था। अब ज़माना बदल गया। माहौल तब्दील हो गया। अब हम इर्द गिर्द वह चीज़ें नहीं देखते जो मोलवी मुहम्मद हुसैन आज़ाद को अपने ज़माना में नज़र आती थीं। इसलिए अब अगर कोई "माँ की मुहब्बत" के उनवान से कोई सबक़ सीखे तो इस माडर्न दौर के मुताबिक़ उसकी सूरत यह होगी।

आया बच्चे को गोद लिए बैठी है। बाप इंआमी मुअम्मा हल कर रहा है। और देख-देख कर ख़ुश होता है कि इंआम आए तो बच्चा गाड़ी ख़रीदी जाएगी। बच्चा आंखें खोले पड़ा है। चूसनी चूस रहा है। माँ काजल भरी आँखों से और मसनूई पलकों के नीचे से उसके मुँह को तक रही है और प्यार से कहती है। मेरी जान! वह दिन कब आएगा। जब तू बेलेक मार्किट करेगा, रोड पर मट लाएगा, कोठी अलाट कराएगा, रिशवत का माल ख़ुद खाएगा। हमें खिलाएगा, वोटों का सेहरा बांधेगा, मिम्बरी बियाह लाएगा बच्चा मुस्कुराता है तो माँ का दिल गोल बाग़ हो जाता है। जब नन्हा सा होंठ निकाल कर रोनी सूरत बनाने लगता है तो डाइनिंग रूम में चली जाती है सामने रेडियो सेट धरा है। बहलाना होता है तो दीहाती प्रोग्राम लगा देती है।

वह माँ और थी और यह माँ और है

वह दौर और था यह नया दौर है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (119)

उस्तानियों का मुबल्लिग़ इल्म

रावलपिंडी के ज़नाना मिडिल स्कूलों के लिए दरख़्वास्तें तलब की गईं तो इस सिलसिले में चन्द दरख़्वास्तें आईं। उनमें से दस उम्मीदवारों को तहरीरी इंटरविव के लिए बुलाया गया और उनसे हस्बे ज़ेल सवालात का जवाब माँगा।

१ इस्लाम के पाँच रुक्न क्या हैं?

२ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम का उर्दू तरजमा कीजिए?

३ हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदा माजिदा और वालिद माजिद का नाम लिखिए?

४ तसबीह में सौ दाने क्यों होते हैं?

५ पाँच बड़े-बड़े इस्लामी ममालिक के नाम लिखिए?

६ आपके पसन्दीदा तीन एक्टर कौन से हैं?

दसों उम्मीदवारों ने सिर्फ़ आख़िरी सवाल का तसल्ली बख़्श जवाब दिया और अपनी पसन्द के तीन एक्टरों के नाम लिखे और पहले किसी सवाल का भी तसल्ली बख़्श जवाब न दिया।

(कोहिस्तान १६ मार्च १६६३ ई०)

सबक़

इन बरा-ए-नाम मुसलमान माडर्न उस्तानियों ने अपने दीन से मुतअल्लिक़ सवालात का कोई सही जवाब न दिया। सही जवाब अगर दिया तो फ़िल्मी सवाल का। इसी से अन्दाज़ा लगा लीजिए कि फ़िल्मी शौक़ ने हमारे दीन व दुनिया को किस तरह बर्बाद कर डाला है किस क़द्र अफ़सोस का मक़ाम है कि फ़िल्मी एक्टरों की बातें याद हैं। बिस्मिल्लाह का तरजमा तक याद नहीं। मौजूदा दौर ग़फ़लत में न सिर्फ़ यह कि औरतों ही को मुसलमान मर्दों को भी अपनी दीनी बातें याद नहीं। आजकल के किसी तालीम याफ़्ता से डरावन की थेवरी, चरचल का नसब नामा। स्टॉलन की हिस्टरी हिटलर का अफ़साना पूछ कर देखिए तो फर फर सुना देगा। और अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादाते आलिया सहाब-ए-किराम

अलैहिमुर्रिज़वान की सवानेह हयात और बुज़ुर्गाने दीन के फरमूदात को पूछिए तो बग़लें झांकने लगेगा।

एक लतीफ़ा भी सुन लीजिए। ट्रेन में सफर करते हुए एक मोलवी साहब वजू के लिए पानी तलाश करने लगे तो एक जन्टिलमैन ने कहा। मोलवी साहब पानी मुश्किल है। आप वह कर लीजिए मोलवी साहब ने कहा। वह क्या? जन्टिलमैन बोला। अजी वही जो पानी न मिले तो किया जाता है। मोलवी साहब ने कहा। वाह साहब! वाह! मुसलमान होकर तुम्हें नाम याद नहीं। ज़रा सोच कर बताओ। वह क्या? जन्टिलमैन ने दिमाग़ पर ज़ोर देते हुए कहा। हाँ-हाँ याद आ गया। मतनजन-मतनजन। अस्तग़फ़िरुल्लाह! देखा आपने? तयम्मुम की जगह मतनजन।

साहीवाल के जामिया फ़रीदिया के एक सालाना जलस-ए-दस्तार बन्दी में मेरी तक़रीर से क़ब्ल एक "अफ़सर" साहब की तक़रीर थी। उन्होंने अपनी तक़रीर में उलमा-ए-किराम के मुतअल्लिक़ ब्यान किया कि उन्हें जुग़राफिया नहीं आता। साइंस नहीं आती। उन्हें किसी मुल्क के महल्ले वक़ू का इल्म नहीं वग़ैरा-वग़ैरा। उनके बाद मैंने अपनी तक़रीर में कहा कि हमें अगर साइंस व जुग़राफ़िया नहीं आता तो हमारे उन मुसलेहीन को नमाज़ नहीं आती। कुरआन नहीं आता और उन्हें किसी दीनी मसला का इल्म नहीं। बिल-फ़र्ज़ हमें अगर सांइस व जुग़राफ़िया नहीं आता तो उनसे हमारी तो दुनिया ख़राब हुई और जिन्हें नमाज़ नहीं आती, कुरआन नहीं आता, उनकी आख़िरत बर्बाद हुई। क़्यामत को किसी मुल्क के महल्ले वक़ू का सवाल नहीं होगा। नमाज़ व रोज़े और दीन के मुतअल्लिक़ सवाल होगा।

पाकिस्तान के वज़ीरे आज़म जनाब लियाक़त अली खान साहब के इंतिक़ाल पर जब बाज़ लोगों ने अपने-अपने शहरों में उनकी ग़ायबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी तो कोटली के चन्द जन्टिलमैन मेरे पास भी आए और कहा। मोलवी साहब आप भी ग़ायबाना जनाज़ा पढ़ाएं मैंने उनसे कहा कि हनफ़ी मज़हब में ग़ायबाना जनाज़ा जाइज़ नहीं।

उन्होंने इसरार किया तो मैंने कहा। अच्छा पहले आप सब मुझे जनाज़ा में पढ़ने की दुआ सुनाएं ताकि पता चले कि आप जनाज़ा में क्या पढ़ेंगे। अब वह खिसयाने होकर बोले। वह तो आप पढ़ेंगे। मैंने कहा। हाँ मैं भी पढूँगा और आपको भी पढ़ना होगी। तो बोले फिर रहने दीजिए। देखा आपने यह है माडर्न मुसलमानों का हाल कि दीनी बातों का कुछ इल्म नहीं।

हाँ फ़िल्मी लाइन के हर गोशा का इल्म है। अगर इसी का नाम तालीम है तो फिर सच्ची बात तो यह है कि आजकल इस तालीम याफ़्ता अफ़राद से पुराने ज़माना के जाहिल अच्छे जिन्हें फिल्म विलिम का तो कुछ इल्म नहीं। हाँ खुदा और रसूल की बातें उन्हें ज़रूर याद हैं।

न नमाज़ है न रोज़ा न ज़कात है न हज है!!
फिर उसकी क्या खुशी कोई डिप्टी है कोई जज है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (120)

एम ए की दो तालिबात

देहली के एक मुक़ामी कालेज की एम ए की दो तालिबात एक ग़ैर मुल्की नौजवान को लड़कियों का लिबास पहना कर अपने साथ होस्टल के कमरा में ले गईं चौकीदार को उन्होंने यह चकमा दिया कि यह तीसरी लड़की उनकी मेहमान है और चौकीदार को शाम के अंधेरे में यह शुबह भी नहीं हुअ.. कि उनके साथ ज़नाना लिबास में लड़की नहीं लड़का है। कई रात उन लड़कियों के बन्द कमरे में हंसी मज़ाक़ और छेड़ छाड़ का हंगामा होता रहा। शुरू शुरू में मुल्हिक़ा कमरों में रहने वाली लड़कियों को शुबह भी न हुआ कि साथ वाले बन्द कमरे में क्या मामला है। मगर जब लड़कियों की आवाज़ों के साथ मर्दाना आवाज़ भी सुनाई देने लगी तो बिल्कुल साथ वाले कमरे में जमा होकर कुछ लड़कियों ने मेज़ पर कुर्सी-कुर्सी पर स्टूल रखा। और इस तरह रौशनदान से झाँक कर अन्दर का अख़लाक़ सोज़ मंज़र देख लिया। इस इंकिशाफ़ पर हॉस्टल की लड़कियों ने चुपके से उन दोनों लड़कियों के कमरे को बाहर से बन्द कर दिया। और होस्टल के मुंतज़ेमीन को इत्तिला दे दी। जब दरवाज़ा खोला गया तो लड़कियों ने जल्दी से लड़के को अपने कपड़ों की अलमारी में छुपा दिया मगर भांडा फूट कर रहा। बादे अज़ां तहक़ीक़ात के बाद एम. ए. की उन दो तालिबात को जो बड़े ही शरीफ़ और मुअज़्ज़ज़ घरानों की सपुत्रियाँ हैं। कॉलेज से निकाल दिया गया। (कोहिस्तान १६ अप्रैल ६२, ई० माहे तैबा मई ६२ ई०)

सबक़

नई तहज़ीब ने बे-हिजाबी, मर्द व ज़न के आज़ादाना इख़्तिलात (मेल-जोल) और मख़लूत (मिला-जुला) तालीम का जो रुजहान पैदा कर दिया है उनका भयानक नतीजा एम. ए. की दो तालिबात के किरदार का सा नतीजा ही निकल सकता है। दीनी तालीम तो ग़ैर मुहरिमों की तरफ देखने की भी इजाज़त नहीं देती लेकिन यह माडर्न तालीम ग़ैर मुहरिमों से इख़्तिलात व ख़लवत के लिए ऐसे ऐसे बहाने व फन भी सिखाती है जिनकी बदौलत ग़ैर मुहरिमों से बन्द कमरों में छेड़ छाड़ हो सके। यह भी मालूम हुआ कि जिस तरह उन चालाक लड़कियों ने चौकीदार को चकमा देने के लिए लड़के को लड़कियों का लिबास पहना कर उसे लड़की बताया था। हालाँकि वह लड़का था। इसी तरह आजकल के चालाक माडर्न अफ़राद हराम चीज़ों को अपनाने के लिए मुसलमानों को चकमा देने की ख़ातिर उनके नाम हलाल चीज़ों के से रख कर उसे हलाल बताने लगते हैं हालाँकि वह होता हराम ही है जैसे कि यह लोग "सूद" को हलाल करने के लिए उसका नाम "मनाफ़े" रख देते हैं। हालाँकि वह होता सूद ही है। सुव्वर का नाम दुंबा रख देने से सुव्वर दुंबा नहीं बन जाता बल्कि वह सुव्वर का ही सुव्वर रहता है। यह भी मालूम हुआ कि जिस तरह कॉलेज की दो तालिबात को उनके ख़िलाफ़ अख़्लाक़ी फ़े'ल की बिना पर कॉलेज से निकाल दिया गया और निकालने वालों से यह नहीं कहा गया कि आपका यह इख़राज आपकी तंग नज़री है इसी तरह इस्लामी कॉलेज में दाख़िल मुसलमान से अगर कोई ख़िलाफ़े ईमानी क़ौल व फ़े'ल सादिर हो जाए तो उलमा को यह हक़ हासिल है कि उसे दायर-ए-इस्लाम से ख़ारिज बताएं और उलमा को यह हरगिज़ नहीं कहा जा सकेगा कि यह फ़तवा आपकी तंग नज़री है। मैंने लिखा है।

न क्यों बे दीन को इस्लाम से खारिज करे मुल्ला
उतारे बे-टिकट को रेल से है फ़र्ज़ टी टी का

यह भी मालूम हुआ कि औरतों के लिए दीनी तालीम ज़रूरी है। और इस दुनियवी तालीम के नताइज तो इसी क़िस्म के होंगे जैसा कि आप पढ़ चुके। इसीलिए अकबर इलाहाबादी ने अपनी रुबाई में लिखा है। और ख़ूब लिखा है कि –

आज वह हंसते हैं मेरे जुब्बा व शल्वार पर!!!
एक दिन उनको फलक बंधवाए धोती तो सही

अपनी स्कूली बहू पर नाज़ है उनको बहुत!
कैम्प में नाचे किसी दिन उनकी पोती तो सही

मख़्लूत तालीम का एक लतीफ़ा भी सुन लीजिए। एक बड़ी बी शाम के वक़्त बच्चा गाड़ी में एक बच्चे को सैर करा रही थी। इत्तिफ़ाक़ से बच्चा रोने लगा। उसे चमकारते हुए कहने लगीं।

सो जा डिगरी! तुम्हें दूध घर जा कर मिलेगा।

किसी ने हैरानगी से पूछा। मोहतरमा! बच्चे का नाम तो बड़ा अजब है? बड़ी बी बोली। इसमें हैरान होने की क्या बात है मैंने अपनी लड़की को लड़के लड़कियों के मुशतरेका (मिला-जुला) कॉलेज में दाख़िल कराया था और यही वह डिग्री है जो वहाँ से वह लेकर आई है।

हो न लड़कों लड़कियों का इख़्तिलात
एहतियात ऐ मर्द मोमिन! एहतियात

❖❖❖

हिकायत नम्बर (121)

लेक्चरार और हेड मिसट्रेस

देहली के एक साहब ने माडर्न औरत से शादी कर ली। औरत शिमला में हेड मिसट्रेस थी और मियाँ देहली में लेक्चरार। शादी के बाद शिमला व देहली के दरम्यान दोनों का ट्रेफ़िक जारी हो गया। एक इतवार को बीवी शिमला से देहली की गाड़ी पर बैठ गई और मियाँ देहली से शिमला की गाड़ी पर बैठ गए। अंबाला जंक्शन पर दोनों का अचानक "मेल" हो गया। मियाँ ने झिझकते हुए कहा। मेडम! माफ़ करना। यूँ लगता है। "आप मेरी बीवी हैं" और मेडम बोली। "शक तो मुझे भी पड़ता है कि "आप मेरे मियाँ हैं।" मियाँ ने कहा तो आओ शक का फायदा उठाते हुए दोनों मियाँ बीवी बन जाएं चुनांचे दोनों ने इतवार की छुट्टी अम्बाला जंक्शन पर ही......... गुज़ारी और रात को दोनों वापस अपने-अपने घर की तरफ रवाना हो गए। उन दोनों का एक बच्चा भी था। जो एक स्कूल के होस्टल में ही रहता था और अपने माँ-बाप की मुहब्बत हासिल करने कभी शिमला चला जाता और कभी देहली

और कभी कभार तीनों इकट्ठे हो जाते तो एक दम उदास हो जाते।

(बहवाला भारती अख़बार सियासत माहे तैबा मार्च १९६१ ई०)

सबक़

खुदा तआला फरमाता है।

خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّ رَحْمَةً

(प. : २१, अ. ६)

(खुदा ने) तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाए कि उनसे सुकून पाओ और तुम्हारे आपस में मुहब्बत और रहमत रखी।"

खुदा तआला ने तो मियाँ बीवी का जोड़ा इसलिए बनाया ताकि उन्हें एक दूसरे से सुकून मिले और उनकी आपस में मुहब्बत हो लेकिन इस माडर्न दौर में मियाँ बीवी दोनों ही को सुकून नहीं। मियाँ शिमले भाग रहा है और बीवी देहली। और आपस में मुहब्बत का यह आलम है कि मियाँ को बीवी की और बीवी को मियाँ की पहचान नहीं। उन दोनों को ही आपस के रिश्ते का शक है बच्चा अलग होस्टल में बे-चैन है। कभी कभार इकट्ठे हो भी गए तो एक दूसरे से बेगांगी के आलम में इसीलिए एक दम उदास भी हो गए इस बराए नाम रिश्ता के बावजूद तीनों का घर अलग-अलग। तीनों की मंज़िल अलग-अलग और तीनों के ख़्याल अलग-अलग। फरमाइए। इस माडर्नियत को अपनाने से चैन व सुकून बर्बाद हुआ या नहीं? पुराने दौर में बीवी को "घर वाली" कहा जाता था। यानी जो घर पर ही रहे ऐसी बीवी से सुकून भी मिलता है और मुहब्बत भी और जो घर वाली न हो बल्कि स्कूल वाली हो तो उससे सुकून की बजाए भाग दौड़ और मुहब्बत की बजाए किसी जंक्शन पर मेल मिलता है।

और आजकल की तरक़्क़ी का तो यह आलम है कि यूरोप में किसी "जंक्शन" पर जाने की भी ज़रूरत नहीं रही। सिर्फ़ एक "इंजेक्शन" ही से बच्चा हासिल कर लिया जाता है।

आपको चैन व सुकूं गर चाहिए
माडर्न माहौल मत अपनाइए!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (122)

पेट्रोल और आग

एक फ़ैशन ऐबुल अप-टू-डेट लड़की मुँह पर पौडर मले लब पर सुर्ख़ी लगाए साड़ी पहने और पूरी हश्र सामानियों के साथ कलकत्ता की एक बा-रौनक़ सड़क पर कुछ इस अंदाज़ से जा रही थी कि बक़ौल अकबर इलाहाबादी।

दिलकशी नाज़ में ऐसी कि सितारे रुक जाएं
सर कशी चाल में ऐसी कि गवर्नर झुक जाएं

यह लड़की जा रही थी कि सामने से एक नौजवान नमूदार हुआ जब यह लड़की उस नौजवान के क़रीब पहुँची तो उस नौजवान ने उस लड़की को पकड़ लिया और तहज़ीबे नौ (नई) का मुज़ाहरा शुरू कर दिया। नौजवान की इस जुरअत व बेबाकी पर फ़ैशन की पुतली घबराई। और नौजवान को झिड़कने लगी और उसके बाद उससे पीछा छुड़ा कर घर पहुँची। वह एक अमीर बाप की बेटी थी। उसने अदालत में उस नौजवान के ख़िलाफ़ दावा दायर कर दिया। जज जो ईसाई था। उसने नौजवान को अदालत में तलब करके उससे पूछा कि तुमने यह हरकत क्यों की? नौजवान ने जवाब दिया कि जनाब! आप मुझसे क्या पूछ रहे हैं कि मैंने ऐसा क्यों किया? मैं बड़ा हैरान हूँ कि आप मुझसे पूछ रहे हैं कि मैंने ऐसा क्यों किया? देखिए जनाब! पेट्रोल के नज़दीक अगर आग आ जाए तो पेट्रोल की फ़ितरत है कि वह भड़क उठे और जल उठे। आग जब भी पेट्रोल के नज़दीक आएगी। पेट्रोल लाज़िमन जलेगा। यही वजह है कि पेट्रोल टैंकों पर लिखा होता है कि यहाँ सिग्रेट पीना मना है और आग इस जगह से दूर रहे अब अगर आग चूल्हे से निकल कर खुद-ब-ख़ुद चल कर पेट्रोल पम्प के नज़दीक आ जाए और पेट्रोल भड़क और जल उठे तो क्या आप पेट्रोल पम्प से पूछेंगे कि ऐ पेट्रोल बताओ तुम क्यों भड़क उठे? पेट्रोल से ऐसा सवाल ला यानी होगा। सवाल तो आग से होगा कि तुम चूल्हे से निकल कर पेट्रोल के पास क्यों आई और क्यों पेट्रोल को भड़क उठने का मौक़ा दिया? जनाब आली! इसी तरह मर्द की यह फ़ितरत है कि औरत अगर बन ठन कर मर्द के क़रीब आएगी तो मर्द का ख़्वाह मख़्वाह उसकी

तरफ मैलान होगा और उसके जज़्बात भड़क उठेंगे। आप मुझसे न पूछिए। उस लड़की से पूछिए कि यह बन संवर कर घर से क्यों निकली और क्यों एक ऐसी शाहराह आम से गुज़री जहाँ सैंकड़ों पेट्रोल सिफ़त मर्दों के भड़क उठने का ख़तरा था। यह शोल-ए-आतिश जब मेरे नज़दीक आया तो फ़ितरतन मेरे जज़्बात में हिजान (जोश) पैदा हुआ और मैं भड़क उठा। और नतीजा वही निकला जो निकल सकता था। अब इस हाल में–

कोई पूछे तो मैंने क्या ख़ता की!

आप खुद ही इंसाफ़ फरमाएं कि मुजरिम कौन है? जज के समझ में यह बात आ गई और उसने फ़ैसला लिखा जो अख़बारात में इस तरह आया कि नौजवान को बा-इज़्ज़त बरी किया जाता है और लड़की को एक साल के लिए उस पर्दे में रहने की सज़ा देता हूँ जिसका हुक्म हज़रत मुहम्मद साहब (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दिया है।

(माहे तैबा जुलाई १९५२ ई०)

सबक़

आग का मुक़ाम चूल्हा है। यह चूल्हे से निकली तो हज़ार ख़तरे दर पेश आए। इस्लाम ने औरत का मुक़ाम घर बताया है चुनांचे इर्शाद है।

व क़रना फ़ी ब्यूतिकुन्ना। औरत घर से निकली तो ख़तरात पेश आए। समझिए पेट्रोल पम्प के नज़दीक तो एक सिग्रेट तक पीने की इजाज़त नहीं लेकिन इस दौरे आज़ादी में एक-एक मर्द के चारों तरफ आतिशें पर खोले घूम रहे हैं और जहाँ देखो आग पेट्रोल के साथ-साथ है। दफ़्तरों में, क्लब में घर में। सिनेमा नाच घर पार्टियों और असम्बलियों में ग़र्ज़ कि हर जगह यह आग पेट्रोल का पीछा कर रही है और पेट्रोल से हाथ तक मिलाने को तैयार है। फिर इस आलम में पेट्रोल के भड़कने जलने और ग़लत नताइज निकलने के सिवा और क्या हो सकता है।

इधर जो पर्दा न हो सकेगा उधर भी तक़वा न हो सकेगा

यह भी मालूम हुआ कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जुमला अहकामे फ़ितरत के मुताबिक़ हैं। जिसका इक़रार ग़ैर मुस्लिमों को भी करना पड़ा। और आफ़ियत इसी में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहकाम पर अमल किया जाए।

दोनों आलम का तुझे मतलूब गर आराम है!
उनका दामन थाम ले जिनका मुहम्मद नाम है
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हिकायत नम्बर (123)

एक अप-टू-डेट औरत का हश्र

गुज़िश्ता दिनों लाहौर की सबसे बड़ी बारौनक़ और ख़ूबसूरत तरीन सड़क माल रोड पर एक ऐसा रूह फरसा मंज़र देखने में आया जिसे याद करके सर निदामत (शर्म) से झुक जाता है। यह एक हसीन शाम का वाक़या है। माल रोड के उस हिस्सा पर जो बेडन रोड, माल रोड के चौक से चिड़ंग किरास को जाता है। लोगों का एक बहुत बड़ा गिरोह तालियाँ बजाता हुआ जा रहा था। जैसे किसी मेले पर जा रहा हो। और हुजूम के आगे एक अप-टू-डेट खातून दोपट्टा में अपना मुँह छुपाए और नज़रें नीची किए जा रही थी। उनके साथ दो मर्द थे जिन्होंने एक सियाह फाम नौजवान को जो मैले कुचैले कपड़ों में मल्बूस था। पकड़ा हुआ था। सिविल लाइंज़ के थाना तक हुजूम की तादाद में इज़ाफ़ा होता गया। तालियों का शोर भी बढ़ता गया और इस ख़ातून की नज़रें और ज़मीन में गड़ती गईं। इस हुजूम में वह एक ऐसी मुजरिमा मालूम हो रही थी जिसने गोया एक बड़े गुनाह का इर्तिकाब किया हो। यार लोग भी उस पर तरह-तरह के आवाज़ें कस रहे थे।

थाना में इस ख़ातून ने बड़ी शस्ता (साफ़) अंग्रेज़ी में पुलिस को बताया कि वह शादी शुदा है और वह लाहौर के एक मुअज़्ज़ज़ घराने से तअल्लुक़ रखती है उस सियाह फाम नौजवान ने मज़ाक़ किया था जिस पर पुलिस को इत्तिला दे दी गई। वह उन्हें और उस नौजवान को लेकर थाना की तरफ चल पड़े। रास्ता में लोग तमाशा देखने के लिए साथ हो लिए और शाम का पूरी तरह लुत्फ़ उठाने के लिए उन्होंने वाक़या के बारे में मालूमात हासिल किए बग़ैर मज़कूरा ख़ातून के साथ यह ना शाइस्ता मज़ाक़ किया और खुदा जाने किस ख़ुशी में तालियाँ बजाईं। ख़ातून के बक़ौल एक सुईड बूटेड साहब बोले "यार यह इस नौजवान से फंसी क्यों नहीं।" दूसरे साहब ने जवाब दिया।" कोई आप ऐसा अप-टू-डेट पढ़ा लिखा जवान होता फंस जाती इस ग़रीब से क्या फंसती।

रुंधी हुई आवाज़ में मज़कूरा ख़ातून ने (जिनका नाम मैंने जान बूझ कर नहीं लिखा) पुलिस को बताया। "मुझे इस नौजवान से कोई शिकायत नहीं। ऐसे लोगों की कमी नहीं। मैं तो सिपाहियों को इस वाक़या की इत्तिला

देकर उसे तंबीह करना चाहती थी। मुझे अफ़सोस तो अपने उन भाईयों पर है जिन्होंने बग़ैर किसी वजह के अपनी बहन का मज़ाक़ उड़ाया। और उसका तमाशा बनाया।" (नवा-ए-वक़्त ४ जुलाई १९६५ ई०)

सबक़

इस ख़ातून से ऐसा सुलूक वाक़ई ग़ैर इस्लामी और ग़ैर शरीफ़ाना है। यह वाक़या पढ़ कर हमें बेहद रंज हुआ। और साथ ही साथ यह अफ़सोस भी हुआ कि अफ़सोस हमारा यह शस्ता अंग्रेज़ी बोल लेने वाला अप-टू-डेट तबक़ा अपने दीन, मज़हब से आशना न हुआ। ऐ काश यह तबक़ा अपनी किताब पर अमल पैरा होता तो यह बुरे दिन देखने नसीब न होते शस्ता अंग्रेज़ी बोलिए मगर क़ुरआन पाक की हस्बे ज़ेल हिदायात पर भी अमल पैरा रहिए। फिर देखिए इस क़िस्म के ग़ैर शरीफ़ाना और अख़्लाक़ सोज़ वाक़यात का सद्दे बाब होता है या नहीं।

قُلْ لِلْمُؤْمِنٰتِ یَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِھِنَّ وَیَحْفَظْنَ فُرُوْجَھُنَّ وَلَا یُبْدِیْنَ زِیْنَتَھُنَّ اِلَّا مَا ظَھَرَ مِنْھَا

और मुसलमान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाव न दिखाएं मगर जितना खुद ही ज़ाहिर है।" وَلَا یُبْدِیْنَ اِلَّا لِبُعُوْلَتِھِنَّ اَوْ اٰبَآئِھِنَّ الآء

और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप पर।" अलख़ یُدْنِیْنَ عَلَیْھِنَّ مِنْ جَلَا بِیْبِھِنَّ ذٰلِكَ اَدْنٰی اَنْ یُّعْرَفْنَ فَلَا یُؤْذَیْنَ
(प. २२ अ. १५)

यानी मुसलमान औरतें अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने मुँह पर डाले रहें। यह इससे नज़दीक तर है कि उनकी पहचान हो तो वह सताई न जाएं।"

क़ुरआन पाक की औरतों के मुतअल्लिक़ इन हिदायात को पढ़िए और सोचिए कि बे-हिजाबाना और शौख़ चश्मी से बाहर निकलने वाली "अप-टू-डेट" औरतें सताई न जाएंगी तो और क्या होगा। मज़कूरा बाला ख़बर को दोबारा पढ़िए और देखिए उसमें यह दर्ज है कि इस हुजूम में "अप-टू-डेट ख़ातून" दोपट्टा में अपना मुँह छुपाए और नज़रें नीचे किए जा रही थी और हुजूम बढ़ने के साथ-साथ उस ख़ातून की नज़रें और भी ज़मीन में गड़ती गईं।"

मालूम हुआ कि दोपट्टा में मुँह छुपाना और नज़रें नीची रखना औरत की

फ़ितरी चीज़ें हैं और इस्लाम औरत को अपना हक़ संभालने की दावत देता है। मगर अफ़सोस कि आजकल इस्लाम की इस ख़ैर ख़्वाही से बेनियाज़ रह कर और मौजूदा ग़ैर फ़ितरी आज़ादी को अपना कर औरत हज़ारहा ज़िल्लतों को दावत दे रही है।

नज़र नीची रखने का जहाँ औरत के लिए हुक्म है वहाँ मर्द के लिए भी यही हुक्म है कि यग़ुज़्ज़ू मिन अब्सारेहिम यानी मर्द भी अपनी नज़रें नीची रखें।

तो खातून मज़कूरा का ला युब्दीना ज़ीनतहुन्ना यग़ज़ुज़ना मिन अबसारेहिन्ना। पर अमल न करते हुए बिला हिजाब घर से निकलना और हुजूम का यग़ुज़्ज़ू मिन अब्सारेहिम पर अमल न करते हुए ख़ातून के पीछे लग कर आवाज़ें कसना। यह दो अख़लाक़ सोज़ चीज़ें मिल मिला कर उस रंजीदा हादसा पर मुंतज हुई अगर कुरआन पाक पर मर्द और औरतों का अमल हो तो ऐसे वाक़यात कभी न हों।

वह मुअज़्ज़ज़ थे ज़माने में मुसलमां होकर
और हम ख़्वार हुए तारिके कुरआं होकर

❖❖❖

हिकायत नम्बर (124)

चार अफ़राद की इक्लौती महबूबा

रावलपिंडी की अदालत में एक औरत पेश हुई जो अपने शौहर के ख़िलाफ़ ब्यान देने आई थी। उसने कहा कि मेरे चार आशिक़ हैं जिनके नाम नज़ीर, रफ़ीक़, बाबू और सादिक़ हैं। यह चारों मेरे सच्चे आशिक़ हैं। इनमें से कोई एक मिल जाए तो मैं उसके साथ चली जाऊँगी लेकिन मेरा शौहर मेरे क़ाबिल नहीं है। मेरे चारों आशिक़ मुझे अच्छे लगते हैं। मौक़ा पाकर मैं चारों के साथ एक-एक मरतबा फरार हो चुकी हूँ और अब भी उन्हीं में से एक के साथ जाना चाहती हूँ। क्योंकि मेरा प्यार सबके साथ यक्सां है। (जँग रावलपिंडी २ जुलाई १९६३ ई०)

सबक़

माडर्न तहज़ीब के करिशमों में से एक करिशमा यह आवाज़ भी है कि मर्द अगर चार औरतों का शौहर बन सकता है तो औरत चार मर्दों की बीवी क्यों नहीं बन सकती? चुनांचे एक औरत कहती है।

मुंह फटे यह मर्द नालायक़ खुदा की इन पे मार
हक़ हमारा एक का और उनके हक़ में चार चार
हाँ हमारे वासते भी यह रियायत क्यों न हो
चार शौहर की हमें भी तो इजाज़त क्यों न हो

आइली क़वानीन के निफ़ाज़ के ज़माना में कराची में एक औरत ने साफ ऐलान कर दिया था कि मर्द अगर चार बिवियाँ कर सकता है तो हम भी चार-चार शौहर करेंगी इस पर कराची के "नमकदान" ने अपनी यकुम ता १५ अगस्त १९६२ ई० की इशाअत में "मुनाजाते सरवरी" के नाम से एक नज़्म शाए की थी जिसका एक हिस्सा हस्बे ज़ेल है। ऐ मेरे ख़ुदा!

दवाए दिल व रूहे बीमार दे
नज़र को नया ज़ौक़े दीदार दे
खुदाया न अब कर तू इनकार दे
वह शौहर न हो जो दिल आज़ार दे
न कर बुख़्ल मौला मुझे चार दे
तेरी ज़ात है अकबरी सरवरी
मेरी बार क्यों देर इतनी करी

इस क़िस्म की आवाज़ के साथ अब इस क़िस्म के हादसे भी होने लगे हैं। चुनांचे रावलपिंडी की उस औरत ने इस आवाज़ को अमली जामा पहना कर दिखा दिया और दाद दीजिए इस इंसाफ पसन्द औरत को कि फरार होने में उसने अद्‌ल व इंसाफ़ से काम लेकर चारों के साथ एक-एक मरतबा फरार होकर किसी को शिकायत का मौक़ा नहीं दिया और प्यार भी उसका चारों से यक्सां है मगर चूंकि अभी इब्तिदा है और दिल भी "ज़नाना" और कमज़ोर है। इसलिए फ़िलहाल यही ऐलान है कि किसी एक के साथ जाना चाहती हूँ हालांकि इंसाफ़ का तक़ाज़ा यह है कि चारों के साथ जाए। मर्द के दोश बदोश चलना है। फिर यह क्या कि किसी एक साथ जाना चाहती हूँ।" मर्द की अगर चार हों तो वह चारों ही को घर लाना चाहता है। न यह कि वह किसी एक को घर लाने का ऐलान करे।

मर्दों के दोश बदोश चलने वालियों को दिल भी मर्दों का सा पैदा करना चाहिए।

मर्द को खुदा तआला ने हाकिम पैदा फरमाया है। हकम एक ही होता है। रिआया में कसरत हो सकती है मगर यह नहीं हो सकता कि रिआया

का फ़र्द एक हो और हाकिम मुतअद्दिद (कई) हों या यूं समझ लीजिए कि हाथ के पंजा में अंगूठा एक और उंगलियाँ चार होती हैं मगर माडर्न दौर चाहता है कि अब पंजा ऐसा हो। जिसकी उंगली एक हो और अंगूठे चार। मैंने लिखा है।

कुर्सी-ए-दफतर पे औरत को बिठाना आजकल!
यूं समझाए जैसे सर पर बांधना शलवार का
एक अंगूठा है उसके साथ हैं चार उंगलियां
इस तरह इक मर्द हो सकता है शौहर चार का!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (125)

एक औरत और 9 शादियाँ

पेरिस की एक औरत मेडम व नेडरी ने अपने ख़ाविन्द से तलाक़ लेकर किसी दूसरे से शादी कर ली। फिर उससे भी तलाक़ लेकर तीसरे से शादी कर ली। फिर उस तीसरे से भी निभ न सकी। उससे भी तलाक़ लेकर चौथे से भी और फिर चौथे से तलाक़ लेकर पाँचवें से छठे। छठे से सातवें से। सातवें से आठवें और आठवें से फिर नवें ख़ाविन्द से शादी कर ली। मेडम व नेडरी का निबाह नवें ख़ाविन्द से भी न हो सका। और उसने नवें ख़ाविन्द से भी तलाक़ ले ली। यके बाद दीगरे 9 ख़ाविन्दों से तलाक़ें हासिल करने के बाद उसने फिर अपने पहले ख़ाविन्द के साथ जिससे अलाहिदा हुए उसे बीस साल हो चुके हैं शादी करने के लिए दरख़्वास्त दे दी। उस पहले ख़ाविन्द से तलाक़ उसने तबीअतों के इख़्तिलाफ़ की बिना पर ली थी। यके बाद दीगरे 9 शादियाँ करने के बाद उसने महसूस किया कि उसने पहले ख़ाविन्द से तलाक़ लेकर ग़लती की थी। चुनांचे उसने मंज़ूरी हासिल करके अपने पहले ख़ाविन्द से फिर शादी कर ली और ब्यान यह दिया कि हमारी पहली शादी इस लिए नाकाम हुई थी कि हमें तजरबा नहीं था। मैंने अपने ख़ाविन्द से तलाक़ हासिल करने के बाद उसकी ख़ूबियों को महसूस करना शुरू किया। (यूरोप की ख़बर, माहे तैबा मार्च १९६५ ई०)

सबक़

इस्लाम में तलाक़ बड़ी नापसन्दीदा चीज़ है। वह नहीं चाहता कि मियाँ बीवी में तफ़रीक़ (अलग) पैदा हो लेकिन यूरोप में तलाक़ एक मामूली बात

है और मामूली-मामूली बातों पर तलाक़ दे दी और ले ली जाती है। यूरोप की अदालतों में रोज़ाना सैंकड़ों की तादाद में तलाकें हासिल की जाती हैं और बड़ी-बड़ी अजीब बातों की बिना पर। चुनांचे एक लतीफ़ा है कि यूरोप की एक अदालत में एक मेम साहिबा पहुँचीं और बोलीं जज साहब! मेरा शौहर मेरा मुतालबा पूरा नहीं करता लिहाज़ा मुझे तलाक़ दिलाई जाए। जज ने पूछा तुम्हारा मुतालबा क्या है?

वह बोली। मेरा मुतालबा यह है कि वह जब दफ़्तर से आया करे तो मेरा, मेरी बहन, मेरी अम्मी और मेरी बिल्ली का मुँह चूमा करे मगर वह मेरा और मेरी बहन का मुँह तो चूम लेता है लेकिन अम्मी और बिल्ली का मुँह नहीं चूमता। जहाँ इस क़िस्म का मुआशरा हो वहाँ अगर मेडम वेनडरी जैसी औरत यके बाद दीगरे 9 शादियाँ करने के बाद फिर पहले खाविन्द से शादी कर ले तो कोई तअज्जुब की बातं नहीं।

बाज़ बिसयार खोर दो चार रोटियाँ और सालन की पलेट ख़त्म कर लेने के बाद यूं कहते हैं कि भई! यह तो हमने अभी नमक मिर्च ही चखा था। खाना तो हम अब खाएंगे। कुछ इसी तरह मेडियम व नेडरी ने भी बीस साल तक नमक मिर्च ही चखा था। शादी तो वह अब करेंगी।"

यूंही एक दूसरे बिसयार ख़ोर का क़िस्सा है कि वह किसी के हाँ मेहमान ठेहरा तो मेज़बान ने उसकी बिसयार खोरी के पेशे नज़र उसके सामने बीस रोटियाँ रखीं। जब वह खा गया तो मेज़बान ने पूछा और लाऊँ? तो बोला भई ज़्यादा तक्ल्लुफ़ न करो जितनी लाए थे उनसे आधी ले आओ। मेज़बान दस रोटियाँ और ले आया। वह दस भी खा गया तो मेज़बान ने पूछा। और? बोला जितनी अब लाए थे उनसे आधी और ले आओ। वह पाँच रोटियाँ और ले आया वह पाँच भी खा गया मेज़बान ने फिर पूछा और? तो बोला अच्छा इनसे आधी और ले आओ। वह दो रोटियाँ और ले आया वह दो भी खा गया और फिर कहा। इनसे आधी और सही। मेज़बान एक रोटी और ले आया। वह भी ख़त्म हो गई तो मेज़बान ने फिर पूछा। अब फरमाइए? क्या इरादा है? कहने लगा। मेरा ख़्याल है जहाँ से इब्तिदा हुई थी फिर वहीं से शुरू कर दूँ। यानी फिर वही बीस रोटियाँ ले आओ। मेडियम व नेडरी ने भी कुछ ऐसा ही हिसाब रखा है। कि ६ खाविन्दों का मरहला तय कर लेने के बाद अब फिर वहीं से शुरू हुई हैं जहाँ से इब्तिदा हुई थी।

है और मामूली-मामूली बातों पर तलाक़ दे दी और ले ली जाती है। यूरोप की अदालतों में रोज़ाना सैंकड़ों की तादाद में तलाकें हासिल की जाती हैं और बड़ी-बड़ी अजीब बातों की बिना पर। चुनांचे एक लतीफ़ा है कि यूरोप की एक अदालत में एक मेम साहिबा पहुँचीं और बोलीं जज साहब! मेरा शौहर मेरा मुतालबा पूरा नहीं करता लिहाज़ा मुझे तलाक़ दिलाई जाए। जज ने पूछा तुम्हारा मुतालबा क्या है?

वह बोली। मेरा मुतालबा यह है कि वह जब दफ़्तर से आया करे तो मेरा, मेरी बहन, मेरी अम्मी और मेरी बिल्ली का मुँह चूमा करे मगर वह मेरा और मेरी बहन का मुँह तो चूम लेता है लेकिन अम्मी और बिल्ली का मुँह नहीं चूमता। जहाँ इस क़िस्म का मुआशरा हो वहाँ अगर मेडम वेनडरी जैसी औरत यके बाद दीगरे 9 शादियाँ करने के बाद फिर पहले खाविन्द से शादी कर ले तो कोई तअज्जुब की बात नहीं।

बाज़ बिसयार खोर दो चार रोटियाँ और सालन की पलेट ख़त्म कर लेने के बाद यूं कहते हैं कि भई! यह तो हमने अभी नमक मिर्च ही चखा था। खाना तो हम अब खाएंगे। कुछ इसी तरह मेडियम व नेडरी ने भी बीस साल तक नमक मिर्च ही चखा था। शादी तो वह अब करेंगी।"

यूंही एक दूसरे बिसयार ख़ोर का क़िस्सा है कि वह किसी के हाँ मेहमान ठेहरा तो मेज़बान ने उसकी बिसयार खोरी के पेशे नज़र उसके सामने बीस रोटियाँ रखीं। जब वह खा गया तो मेज़बान ने पूछा और लाऊँ? तो बोला भई ज़्यादा तक्ल्लुफ़ न करो जितनी लाए थे उनसे आधी ले आओ। मेज़बान दस रोटियाँ और ले आया। वह दस भी खा गया तो मेज़बान ने पूछा। और? बोला जितनी अब लाए थे उनसे आधी और ले आओ। वह पाँच रोटियाँ और ले आया वह पाँच भी खा गया मेज़बान ने फिर पूछा और? तो बोला अच्छा इनसे आधी और ले आओ। वह दो रोटियाँ और ले आया वह दो भी खा गया और फिर कहा। इनसे आधी और सही। मेज़बान एक रोटी और ले आया। वह भी ख़त्म हो गई तो मेज़बान ने फिर पूछा। अब फरमाइए? क्या इरादा है? कहने लगा। मेरा ख़्याल है जहाँ से इब्तिदा हुई थी फिर वहीं से शुरू कर दूँ। यानी फिर वही बीस रोटियाँ ले आओ। मेडियम व नेडरी ने भी कुछ ऐसा ही हिसाब रखा है। कि ६ खाविन्दों का मरहला तय कर लेने के बाद अब फिर वहीं से शुरू हुई हैं जहाँ से इब्तिदा हुई थी।

मैडम व नेडरी का यह पहला खाविन्द बड़ा ख़ुश नसीब है कि बीस साल की तजरबाकार बीवी मिल गई मगर खुद यह पहला खाविन्द भी बीस साल में काफी तजरबाकार हो गया होगा क्योंकि अगर मेम साहब बीस साल तक बेकार नहीं बैठीं तो साहब बहादुर भी हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रहें होंगे बल्कि इतने अरसा में दोनों ही बेहतरीन तजरबाकार बन गए होंगे।

देखिए मग़्रिब की यह आज़ादियाँ
एक औरत और नौ-नौ शादियाँ

❖❖❖

हिकायत नम्बर (126)

मिसेज़ बन मानुस

न्यूयार्क के एक खाते पीते घराने की एक अमरीकी औरत ने तालीम हासिल करने के बाद डारोन की थेवरी का (कि इंसान पहले बन्दर था जो तरक़्क़ी करते-करते इंसान बन गया है) मुताला किया और उसे शौक़ पैदा हुआ कि वह इस थेवरी को अमली सूरत में देखे चुनांचे वह अफ़्रीक़ा गई और वहाँ उसने कई क़िस्म के बन्दर और बन मानुस देखे और फिर वहाँ से वापस होने के बाद उसने ऐलान किया कि –

"जहाँ तक जिस्म की बनावट का तअल्लुक़ है। इंसान और बन्दर के जिस्म में फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है। कि इंसान बातें करता है और हँसता है लेकिन बन्दर में बातें करने की ताक़त नहीं है। मैं बन्दर को इंसान बनाने की कोशिश करूंगी। इस मक़सद के लिए मैं अफ़्रीक़ा से बहुत बड़ा बन-मानुस लाई हूँ। उससे बाक़ायदा शादी करूँगी और यह देखूँगी कि इस बन-मानुस से मेरी कोई औलाद पैदा हो सकती है या नहीं। अगर हो सकती है तो किस क़िस्म की होगी। यह सब बातें तजरबा के तौर पर मैं देखूँगी। यह मेरी ज़िन्दगी का एक कड़ा इम्तेहान है।

(अख़बारे जँग १० अक्तूबर १९६३ ई०)

सबक़

यह माडर्न औरत बन्दर को तो इंसान क्या बनाएगी। बन्दर मारका थेवरी पढ़कर खुद ही बन्दर बन गई और "मिसेज़ बन मानुस" बनने के लिए बन मानुस से शादी करने की फ़िक्र में पड़ गई। उस माडर्न औरत की इस हरकत पर जो इंसान है वह हंसेगा भी और बातें भी करेगा मगर यह औरत

खुद अपनी इस हरकत पर न हंसेगी और न कोई बात करेगी क्योंकि हंसना और बात करना तो इंसान का काम है और यह औरत तो "मिसेज़ बन मानुस" बनने वाली है। और इरादा यह कि मैं बन्दर को इंसान बनाऊँगी। मगर हुआ यह कि अपने शौहर "नामदार" नहीं बल्कि शौहर "दमदार" की सोहबत में रहकर खुद ही बन्दरिया बन जाने को तैयार हो गई यह है माडर्न तहज़ीब और उसे अपनाने वाली औरत। यह हक़ीक़त है कि इस्लाम ने इंसान को इंसान बनाया है। जिसमें इस्लाम की जिस क़दर ज़्यादा पाबन्दी होगी उसी क़दर उसमें इंसानियत बढ़ेगी जो जितना भी इस्लाम से दूर होता चला गया। उतना ही वह हैवान बनता चला जाएगा। माडर्न माहौल में देखिए। औरतें बेहिजाब फिरती हैं और मर्द खड़े-खड़े पेशाब करते हैं और यह बे-हिजाब फिरना और खड़े-खड़े पेशाब करना इंसानों का काम नहीं बल्कि जानवरों का काम है। कोई गाय, भैंस, गधी, घोड़ी और बन्दरिया आपको बुरक़ा पहने और पर्दा करते हुए नज़र न आएगी। सब बे-हिजाब फिरती नज़र आएंगी। और कोई बैल, साँड, गधा, घोड़ा और बन्दर आपको बैठ कर पेशाब करते हुए नज़र न आएगा सब खड़े-खड़े पेशाब करते नज़र आएँगे। इस्लाम ने यह दर्स दिया है कि औरतें पर्दा करें और मर्द पेशाब बैठ कर करें। गोया इंसानियत का दर्स अगर दिया है तो इस्लाम ने। और माडर्न माहौल तो "बन्दर पन" सिखाता है और इंसान से बन्दर बनाता है। डारवन की थेवरी के मुताबिक़ तो बन्दर तरक़्क़ी करते हुए इंसान बन गया था मगर डारवन माहौल इंसान को बन्दर बना डालता है। यह कलबों में नाचना पराए माल को उचक लेना और ग़ैरों की नक़ल उतारना यह सब कुछ बन्दरपन नहीं तो और क्या है? इसीलिए मैंने लिखा है।

करम से डारवन के और अमरीका की हिम्मत से
तरक़्क़ी पा रहा है आज बन्दर देखते जाओ
मुरीद डारवन का नाच घर में नाच होता है
नचाता है उसे इंग्लिश क़लन्दर देखते जाओ

❖❖❖

हिकायत नम्बर (127)

फिल्म बीन और सिग्रेट नोश औरतें

अख़बारे जँग रावलपिंडी में एक साहब लिखते हैं कि मुझे अपने दोस्त

एक्साइज़ इंस्पेक्टर के साथ एक मक़ामी सीनमा में जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। क़ारेईन के लिए यह इंकिशाफ़ खाली अज़ दिलचस्पी न होगा कि ज़नाना शो में तक़रीबन सभी औरतें पूरी आज़ादी से सिग्रेट नोशी कर रही थीं मैं अपने दोस्त के साथ आफ़िस से बुकिंग की तरफ जा रहा था कि बरामदा में खड़ी एक औ॰त और उसके पाँच साला बच्चे के मकालमों ने चौंका दिया। बच्चा मुँह बिसोरे इस तरह बड़बड़ाया।

मम्मी! मैं पकौड़ियाँ खाऊँगा।"

माँ ने बच्चे से कहा केपिसटन के दो सिग्रेट ले आ। पकौड़ियों का नाम लिया तो कचालू बना दूँगी। माँ के इस लब व लेहजा को बच्चा ताड़ गया। वह अपनी ख़्वाहिश को दबाता हुआ सिग्रेट ख़रीद लाया और माँ सिग्रेट जला जला क लम्बे लम्बे कश भर रही थी। बच्चा मुतवातिर पकौड़ी फ़रोश को घूर रहा था।

हाल में हाज़रीन मस्तूरात चीख़ व पुकार में मुब्तला थीं। बच्चों का रोना धोना इंतिहा को पहुँचा हुआ था। हाल में मौजूदा निन्नानवे फ़ीसद मस्तूरात बिला किसी रोक टोक के सिग्रेट नोशी कर रही थीं। धुवाँ दरवाज़ों से बाहर बादल ब॰ कर खारिज हो रहा था। रौशनियाँ गुल हो चुकी थीं फिल्म शुरू हो गया था लेकिन अंधेरे में बैठी मस्तूरात बराबर सिग्रेट नोशी फरमा रही थीं। दूर गेट से यूं मालूम होता था जैसे अन्दर हाल में नन्हें नन्हें जुगनू हों और टिमटिमा रहे हों। (माहे तैबा नवम्बर १९६१ ई०)

सबक़

तारीख़े इस्लाम में है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और अबू-उबैदा रज़िअल्लाहु अन्हुमा की ज़ेरे क़यादत रूमियों के साथ एक जँग में रूमियों ने मकर व फ़रेब के साथ हज़रत खौला और दीगर चन्द मुसलमान औरतों को असीर (क़ैद) कर लिया और उन्हें एक खेमा में पहुँचा दिया गया। हज़रत खौला ने सब औरतों को इकट्ठा करके उनमें हस्बे ज़ेल तक़रीर की।

ऐ अमूसाने हमीर अव तुब्बा! और ऐ अमालिक़ा की बाक़ियात सालिहात क्या तुम चाहती हो कि रूम के वहशी दरिन्दे तुमको अपनी हवा व हवस का निशाना बना लें और क्या तुम्हें यह पसन्द है कि तुम अपनी बक़िया उमरें अग़यार (ग़ैरों) की ख़िदमत गुज़ारी में सर्फ़ करके फ़ातेहीने अरब पर कलंक का टीका लगा दो। कहाँ गई तुम्हारी वह हमीयत व शुजाअत जिसका चर्चा महाफ़िले अरब के लिए बाइसे सर बलन्दी था। मेरे नज़दीक

अग़यार के हाथों ज़िल्लत उठाने से कहीं ज़्यादा बेहतर है कि हम सबके सब खुदा की राह में हक़ीर जानों का हदिया पेश कर दें और अपनी क़ौम को हमेशा की बदनामी से महफ़ूज़ कर लें। अगरचे हम निहत्ती हैं लेकिन अल्लाह की मदद हमारे साथ है ख़ेमा की चौबें उखाड़ कर एक दम उन नामर्दों पर हमला कर दो हम फतहयाब हों या अल्लाह की राह में शहीद।"

यह सुनते ही तमाम औरतों ने ख़ेमों की चौबें उखाड़ कर यकबारगी हमला कर दिया हज़रत ख़ौला ने एक रूमी के सर पर इस ज़ोर से चौब मारी कि वह बेहोश होकर गिरा और कुछ देर के बाद वासिले जहन्नम हो गया। रूमी यह मंज़र देख कर बदहवास हो गये और उनके अफसर ने हुक्म दिया कि उनको घेरे में ले लो। मुवर्रिख़ीन लिखते हैं कि जब भी कोई सवार आगे बढ़ता औरतें भूखी शेरनियों की तरह उस पर टूट पड़तीं। और उसकी तका बोटी कर देतीं इतने में हज़रत ख़ालिद अपने हमराहियों के साथ उन असीर औरतों की जुसतजू में आ पहुँचे। रूमी उन्हें देखकर भाग उठे। उन औरतों ने तीस काफ़िरों को वासिले जहन्नम किया।

यह था हमारे माज़ी का एक मुख़्तसर सा नमूना। और हमारे हाल का नमूना वह है जो ऊपर की हिकायत में आपने पढ़ा। कहाँ वह मुजाहिदात व सरफ़रोश औरतें और कहाँ यह माडरात व सिग्रेट नोश औरतें? उनके सीनों में "इल्म" की तड़प थी और इनके सीनों में "फ़िल्म" की तड़प है उनके हाथों में चौब इनके हाथों में सिग्रेट। वह मैदाने क़िताल में और यह सीनमा हाल में। ख़ूब लिखा है। शाइर ने कहा कि –

वह माएं घर की दीवारों की रौनक़
न यह माएं जो बाज़ारों की रौनक़

वह माएं नमाज़ी व ग़ाज़ी पैदा करती थीं और यह माएं हिप्पी व टेडी पैदा करती हैं। उनके हाथों में मुसल्ला और उनके हाथों में गेंद बल्ला।

वह माएं पैदा करती थीं नमाज़ी
यह माएं पैदा करती हैं तो टेडी
वह माएं जिनके हाथों में मुसल्ला
और इनके हाथों में है गेंद बल्ला
रही उन माओं के मुँह पर तो चादर
और इन माओं के मुँह पर सुर्ख़ी पौडर

❖❖❖

हिकायत नम्बर (128)

टी पार्टी में

किसी बड़े होटल में टी पार्टी थी जिसमें सबकी सब औरतें शरीक थीं। एक बोली मुसर्रत नज़ीर अच्छी अदाकारा है दूसरी बोली नहीं नीलो उससे अच्छी है। मअन यह दोनों एक दूसरे से लड़ पड़ीं। एक ने दूसरी की चोटी को पकड़ा तो दूसरी ने उसके मुँह पर "नाज़ुक" घूँसा रसीद कर दिया। दोनों के "मैक अप" बिगड़ गए।

आँखों से काजल बह निकले "नाक" हौलनाक बन गए। नागाह एक फोटो ग्राफर ने केमरा फिट किया ताकि उनके फोटो उतारे। उस पर दोनों दोशीज़ाओं ने लड़ाई छोड़ दी और केमरा मैन से कहा......प्लीज़! ज़रा ठहरिए। दोनों ने हैंड बैग खोले। शीशे निकाले। तिब्बत सुनो। इत्र काजल लगा कर दोबारा "मैक अप" करके एक ने मुसर्रत नज़ीर का पोज़ बनाया तो दूसरी ने नीलो का। फिर बड़े अंदाज़ से केमरा मैन से बोलीं।

"डियर अब हमारा फोटो उतार सकते हैं।" (माहे तैबा सितम्बर १९६३ ई०)

सबक़

कहाँ वह उसव-ए-मादर शब्बीर को अपनाने वाली पाकबाज़ बेबियाँ और कहाँ यह ऐक्टरसों की चाहने वाली फ़ैशन की तितलियाँ और नाज़ व अंदाज़ की पुतलियाँ। फ़िल्म की इन शौक़ीन माडर्न औरतों ने फ़िल्म देख-देख कर लड़ना झगड़ना ही सीखा। चुनांचे होटल में उन्होंने "लड़ाई से भर पूर डरामा" शुरू कर दिया। और लड़ाई का पार्ट इस ख़ूबी से अदा किया कि मुसर्रत नज़ीर और नीलो से भी बढ़ गईं।

मुसलमान औरत के लिए तो यह ज़रूरी है कि वह उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा और खातूने जन्नत हज़रत फातमा और दीगर नेक और पाकबाज़ बीबियों के नक़्शे क़दम पर चले। न यह कि एक्टर्सों का पोज़ बनाने लगे। अपने माँ-बाप खाविन्द और बच्चों से वफ़ादारी करे न यह कि "मैक अप" करके अदाकारी करे। शर्म व हया की सुर्ख़ी और इफ़्फ़त व पाकबाज़ी के पौडर से अपने आपको मुज़ैयन करे न यह कि बाज़ारी सुर्ख़ी व पौडर से अपने आपको मुज़ैयन करे न यह कि बाज़ारी सुर्ख़ी व पौडर से अपने मसनूई हुस्न की नुमाइश करे। शर्म व हया और पाकबाज़ी व इफ़्फ़त के सुर्ख़ी पौडर से जो हुस्न पैदा होता है वह हश्र तक क़ायम रहता है और बाज़ारी सुर्ख़ी व पौडर से पैदा करदा माडर्न हुस्न लड़ पड़ने से ज़ाइल, पसीना आ जाए तो ग़ायब रूमाल से मुँह पोंछे तो रफ़ू चक्कर हो

जाता है। पहले ज़माना के मर्द औरतों में असली और हक़ीक़ी हुस्न था और आजकल सुर्ख़ी मार्का नक़ली हुस्न है। इस मिलावट के ज़माना में हुस्न भी मिलावट है। मैंने लिखा है।

सुर्ख़ी पौडर से बनावट देखिए
हुस्न में भी अब मिलावट देखिए

❖ ❖ ❖

हिकायत नम्बर (129)

गुमनाम ख़त

एक रेस्तूरान में दो सहेलियाँ बैठी थीं। खाने पीने की चीज़ें आईं तो खाते-खाते पहली ने दूसरी से कहा। क्या बात है। तुमने कुछ खाया नहीं। क्या कोई तक्लीफ़ है?

दूसरी बोली। क्या बताऊँ मुझे एक धमकी का खत मिला है कि तुमने अगर मेरे शौहर से मिलना जुलना तर्क न किया तो क़त्ल कर दूँगी।" बस उसी वक़्त से मेरी भूख मर गई है।

पहली ने कहा : तो तुम मिलना जुलना छोड़ दो। यह कौन सी बड़ी बात है।

दूसरी बोली : मगर यह मुश्किल है कि यह ख़त गुमनाम था। पता नहीं किस शौहर की बीवी ने लिखा है। (माहे तैबा)

सबक़

माडर्न औरत न सिर्फ़ यह कि दीन व मज़हब के अलमबरदारों ही को परेशान करती है बल्कि वह ख़ुद अपनी ही दूसरी बहनों के लिए भी मुसीबत बन जाती है हत्ता कि उसकी बेंहनें ही उसे गुमनाम ख़त लिखने पर मजबूर हो जाती हैं। सच्ची मुसलमान औरत का मरकज़ मह्र व वफ़ा सिर्फ़ उसका शौहर होता है। यह नहीं कि उसकी मुहब्बत के कई मराकिज़ हों लेकिन इस माडर्न माहौल की बदौलत औरत का मरकज़ एक नहीं रहता बल्कि उसके मुतअद्दिद मराकिज़ बन जाते हैं और फिर मज़ीद ज़ुल्म यह कि शादी से क़ब्ल ही यह मार्डनियत इख़्तियार कर ली जाती है। एक लतीफ़ा भी पढ़ लीजिए। लड़के ने पूछा : क्या तुम मुझसे मुहब्बत करती हो ?

माडर्न लड़की : यक़ीनन मजीद!

लड़के ने हैरान होकर कहा। "मजीद?" मेरा नाम तो "करीम" है।

माडर्न लड़की : ओह! ग़लती हुई। मैं आज सनीचर समझे बैठी थी। समझे आप? "करीम" से भी आशनाई और मजीद से भी दोस्ती। मजीद से

मिलने का वादा सनीचर के रोज़ का था लेकिन किसी दूसरे दिन को सनीचर समझ कर उसे ग़लतफ़हमी हो गई कि यह मजीद है। अगर सिर्फ़ मजीद व करीम दो ही होते तो ग़लतफ़हमी न होती। मुम्किन है वहाँ हफ़्ता भर के दिनों के हिसाब से मजीद व करीम के अलावा और भी "यज़ीद व लईम" हों।

"वज़ीरे चुनां शहर यारे चुनां" के मुताबिक़ माडर्न औरतों के लिए जो माडर्न मर्द हैं वह भी कुछ इसी कुम्मास के हैं चुनांचे दूसरा लतीफ़ा पढ़िए।

एक सहेली : देखो यह ख़ूबसूरत अंगूठी मेरी उंगली में कितनी फिट है। यह मुझे नसीम ने बतौर तोहफ़ा दी है।

दूसरी सहेली : यह मेरी उंगली में क़दरे तंग थी। चलो अच्छा हुआ। तुम्हारी उंगली में फिट आ गई। "गोया नसीम साहब "बादे सबा बनकर हर तरफ चल रहे हैं। यहाँ भी मैं और वहाँ भी। यह है माडर्न औरतों और मर्दों का किरदार गोया।

इक जगह रहते नहीं आशिक़ बदनाम कहीं
दिन कहीं रात कहीं सुबह कहीं शाम कहीं

हिकायत नम्बर (130)

अपने दोस्तों के साथ

लन्दन के एक सीनमा हाल में मनेजर ने ऐलान किया कि एक लेडी अपने किसी दोस्त के हमराह खेल देखने आई है। उसके शौहर को शिकायत है लिहाज़ा पाँच मिनट के लिए बत्तियाँ गुल की जाती हैं ताकि वह लेडी ख़ामोशी के साथ घर चली जाए।

यह कहकर मनेजर ने बत्तियाँ गुल कर दीं और पाँच मिनट के बाद बत्तियाँ फिर रौशन कर दीं तो देखा कि सारा हाल लेडियों से खाली हो चुका था।

(माहे तैबा)

सबक़

नेक औरत अपने शौहर की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कभी घर के बाहर नहीं निकलती लेकिन माडर्न माहौल हमें यूरोप की लेडियों के नक़्शे क़दम पर चलने का दर्स देता है। उन लेडियों के नक़्शे क़दम पर जो अपने शौहरों के मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अपने-अपने दोस्तों के साथ सीनमा हाल में पहुँच जाती हैं। सीनमा के मनेजर ने सिर्फ़ एक लेडी के लिए बत्तियाँ गुल की थीं मगर

पता बाद में चला कि हाल में जितनी भी लेडियाँ थीं सभी अपने शौहरों को छोड़ कर अपने-अपने दोस्तों के साथ सीनमा पहुँची हुई थीं। उन मग़रेबी लेडियों के नक़्शे क़दम पर चलने वाली हमारे मुल्क की माडर्न औरतें भी इसी राह पर चल निकली हैं। मैंने लिखा है।

हो गई है ख़ैर से लड़की ट्रेंड!
साथ अपने लेकर फिरती है फ़्रेंड

❖❖❖

हिकायत नम्बर (131)

औरतें या जानवर

एक साहब ने बस में चन्द खातूनों को देखा जिनके बढ़े हुए नाख़ुनों से उतरी हुई सुर्ख़ी ने उनके निगाहों को पुकारा और उनकी तबीअत में मतली पैदा हो गई। उन साहब ने उन खातूनों से पूछा कि नाख़ुन बढ़ाने की वजह क्या है? एक साहिबा बोलीं कि –

बढ़े हुए नाख़ुन इस बात की निशानदेही करते हैं कि हम अमीर तबक़ा से तअल्लुक़ रखती हैं। और हमने कभी अपने हाथों से काम नहीं किया।

दूसरी बोली कि : इससे ख़ूबसूरती बढ़ जाती है।

तीसरी बोली कि : इससे चुग़ताई आर्ट को तक़्वियत पहुँचती है।

(नवा-ए-वक़्त ५ जनवरी १९६१ ई०, माहे तैबा मार्च १९६१ ई०)

सबक़

नाख़ुन तरशवाना अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत है और औरत को अपने सर के बाल कटवाना नाजायज़ व गुनाह है मगर एक औरत का लतीफ़ा मशहूर है कि वह नहर में नहाते हुए बह गई तो उसका शौहर बीवी की नअश (लाश) की तलाश में निकला। तो बजाए उसके नहर का पानी जिस तरफ बह कर जा रहा था उस तरफ जाता और बीवी की नअश तलाश करता वह ऊपर की जानिब यानी जिस तरफ से आ रहा था उस तरफ चल दिया और बीवी की नअश तलाश करने लगा। किसी ने उससे कहा। मियाँ! तुम्हें नअश की तलाश अगर करनी है तो जिस तरफ पानी बह कर जा रहा है उधर जाओ। यह उलटी जानिब क्यों जा रहे हो। वह बोला। भई! बात तो तुम्हारी दुरुस्त है। मगर तुम्हें क्या ख़बर कि मेरी बीवी काम उलटा करती थी। मैंने उसे जो भी कहा उसने हमेशा उसका

उलटा ही किया। बिना बरीं मुझे यक़ीन है कि उसकी नअश भी उलटी जानिब बह कर गई है। आजकल की माडर्न औरत भी उसी औरत की तरह है कि जिस चीज़ को कटवाना था उसे बढ़ा लिया और जिसे बढ़ाना था उसे कटवा लिया यानी नाखुन बढ़ा लिए और सर के बाल कटवा दिए।

एक शाइर ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया है कि –

इंसाँ न बन सका कभी इंसाँ तेरे बग़ैर

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गुलामी ही इंसानियत है जो हुज़ूर के इर्शादात पर आमिल नहीं वह इंसान नहीं। देख लीजिए। बढ़े हुए बड़े-बड़े नाखुन इंसानों के होते हैं या जानवरों के? यूरोप ने अपने परस्तारों को जानवर बनाकर रख दिया। इसमें शक नहीं कि जानवर के लिए बड़े और बढ़े हुए नाखुन ख़ूबसूरती का बाइस हैं उनके बढ़े हुए नाख़ुन से ख़ूबसूरती में इज़ाफ़ा करने वाली माडर्न औरतों को इसका भी इंतिज़ाम करना चाहिए ताकि ख़ूबसूरती अधूरी न रहे।

आदमीयत पूरी तरह गुम भी कर
नाखुनों के साथ पैदा दम भी कर

❖❖❖

हिकायत नम्बर (132)

लड़की या लड़का?

एक साहब किसी दुकान में दाख़िल हुए तो वहाँ एक लड़की को देखा जिसके छोटे-छोटे बाल बिल्कुल लड़कों की तरह कटे हुए थे। उन साहब ने अपने पास खड़े हुए एक शख़्स से पूछा।

क्यों जनाब! यह लड़की है या लड़का?

उसने जवाब दिया। यह लड़की है और मेरी बेटी है।

उन साहब ने कहा। माफ़ फ़रमाइएगा। मुझे पता नहीं था कि आप उसके बाप हैं। उसने जवाब दिया। मैं उसका बाप नहीं हूँ बल्कि माँ हूँ।

(माहे तैबा जुलाई १९६२ ई०)

सबक़

गोया माँ बेटी दोनों ही माडर्न थीं और कुछ पता नहीं चलता था कि यह माँ बेटी हैं या बाप बेटी। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसी औरतों पर लानत फ़रमाई है जो मर्दों का सा रूप इख़्तियार करें और

ऐसे मर्दों पर भी जो औरतों का सा रूप इख़्तियार करें मगर इस माडर्न दौर ने लड़कियों को लड़के और लड़कों को लड़कियाँ बना डाला। मैंने लिखा है।

अल-अमां तहज़ीब हाज़िरुल-अमां
लड़कियाँ लड़के हैं लड़के लड़कियाँ

पुराने दौर में मियाँ बीवी का जोड़ा जाते हुए पता चल जाता था कि यह मियाँ है और यह बीवी मगर इस माडर्न दौर में पता ही नहीं चलता कि लेडी कौन सी है और "लेडा" कौनसा? दोनों ही की शक्ल एक सी नज़र आती है।

एक लतीफ़ा भी पढ़ लीजिए।

एक नाच घर में एक डांसर ने कमाल का डांस किया। कुर्सी पर बैठे हुए एक शख़्स ने दाद देते हुए कहा। "वाह रही लड़की! कमाल कर दिया तूने।"

दूसरा शख़्स : (जो साथ ही बैठा था) अरे वह तो मेरा बेटा है।"

पहला शख़्स : मिस साहिबा! माफ़ कीजिए।

दूसरा शख़्स : अरे मैं तो उस लड़के का बाप हूँ।"

देखा आपने। ऊपर की हिकायत में "माँ बेटी" दोनों की शक्लें लड़कों की सी थीं और इस लतीफ़ा में "बाप बेटे" दोनों की शक्लें लड़कियों की सी थीं। औरतें मर्द नज़र आती हैं और मर्द औरतें।

ख़ुदा तआला ने मुर्ग़ी के मुक़ाबला में मुर्ग़ को कलग़ी दी और औरत के मुक़ाबला में मर्द को दाढ़ी मगर हमने आज तक न देखा न सुना कि कोई मुर्ग़ अपनी कलग़ी को नोच या नोचवा रहा हो। और उसे उतरवा रहा हो। लेकिन आह! इस माडर्न दौर ने मर्द के चेहरे से दाढ़ी ग़ायब कर दी। इधर मर्द के चेहरे से दाढ़ी ग़ायब और उधर औरत के सर से बाल ग़ायब। मैंने लिखा है।

मियाँ की दाढ़ी और बीवी की चोटी हो गई ग़ायब
दिखाया आ के यूरोप ने तमाशा ऐसा फ़ैशन का!
नज़र आती है सूरत मर्द की अब औरतों जैसी
है हुलिया गाड़ियों का सा नए अमरीकी इंजन का!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (133)

दो चोटियाँ

जयपुर (इंडिया) पोल बाज़ार में एक औरत जिसने दो चोटियाँ बना रखी थीं हाथ में मूलियाँ लिए जा रही थी। पीछे से एक आवारा गाय ने मूलियों पर अपना मुँह मारा जिससे औरत की दो चोटियाँ भी मूलियों के साथ ही मुँह में आ गईं। गाय भाग खड़ी हुई। नतीजा के तौर पर औरत भी गाय के साथ घसिटते चली गई। राह चलते लोगों की इमदाद से उन चोटियों को गाय के मुँह से आज़ाद कराया गया।

(जँग रावलपिंडी माहे तैबा नवम्बर १९६० ई०)

सबक़

औरत एक और चोटियाँ दो। चोटी कहीं की। गाय अगर बाज़ार में फिरती हुई आवारा कहलाई तो दो चोटियों की बाज़ार में नुमाइश करने वाली क्या हुई? यह तो आवारा पर आवारा का हमला है। गाय को अगर आवारगी से बचने के लिए अपनी खूंटी पर टिकना ज़रूरी है तो औरत को भी अपने घर क़रार पकड़ना ज़रूरी है। मूलियों को देखिए। खेत से निकल कर बाज़ार में आईं तो बिकने लगीं यूँही जो चोटियाँ बाज़ार में आईं वह भी मूलियाँ ही हैं और गाय की यह ग़लतफ़हमी नहीं बल्कि उसकी नज़र में यह भी मूलियाँ ही थीं। उस औरत को इस वाक़या से इबरत हासिल करना चाहिए कि चोटियाँ मूलियों की तरह बाज़ार में आईं तो गाय की मुँह में गईं। इसी तरह जो औरत आवारा औरतों की तरह बाज़ार में निकलेगी वह भी किसी वक़्त किसी तहज़ीबे नौ के भेड़िए के मुँह का लुक़मा बन सकती है।

लाहौर के चिड़िया घर का एक वाक़या अख़बार में पढ़ा था। वह भी पढ़ लीजिए।

एक माडर्न लड़की अपने सर के बाल सर के ऊपर ऊँट के कोहान की मानिन्द बनाए हुए नंगे सर चिड़िया घर की सैर को आई। एक पिंजरे के पास खड़ी हुई तो अचानक दो बगुले उड़ते हुए आए और उन्होंने उसके सर के इर्द गिर्द चक्कर लगाना और चीखना शुरू कर दिया। और उसके सर पर झपटने लगे।

दरासल बगुलों ने उसके सर पर अपना घोंसिला समझ लिया। वह भागी तो उन्होंने समझा कि हमारा घोंसिला ले जा रही है। आख़िर लड़की

ने एक कमरे में घुस कर अपना सर बचाया। मैंने लिखा है।

माडर्न लड़की का देखा हौसिला
सर पर लेकर फिर रही है घोंसिला

❖❖❖

हिकायत नम्बर (134)

टामी

एक औरत बैठे हुए कह रही थी।

"मैं उसे भूलना चाहती हूँ। हाँ मैं उसे भूल चुकी हूँ नहीं नहीं! वह मुझे कभी नहीं भूल सकता। वह मुझे भूल चुका है नहीं नहीं! हम दोनों एक दूसरे को नहीं भूल सकते। कितना प्यारा था वह कितने प्यारे प्यारे और ख़ूबसूरत बाल थे उसके ....बिल्कुल हीरो लगता था हीरो.......पता नहीं कहाँ चला गया?.......शायद लौट आए। उसकी सहेली ने यह बातें सुनकर पूछा। क्या तुम्हारा मंगेतर?

औरत ने जवाब दिया। अरे नहीं? वही हमारा टॉमी कुत्ता कई दिन से ला पता है। कितना प्यारा था वह। (माहे तैबा)

सबक़

इंसानियत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ग़ुलामी का नाम है। जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ग़ुलाम नहीं वह इंसान नहीं। और जो इंसाना नहीं उसे इंसानियत का क्या पता? ऐसे बराए नाम इंसान, इंसानों से नहीं कुत्तों से प्यार करते हैं। मैंने लिखा है।

क़द्रे इंसानियत की क्या जानें!
वह जो कुत्तों से प्यार करते हैं!
कुत्ता लख़्ते जिगर है साहब का!
उससे बोस व कनार करते हैं!

और एक दूसरी नज़्म में लिखा है।

हैं दौरे इंसानियत से आजकल फ़ैशन के मतवाले
अदूव इंसाँ के और कुत्तों के मुंह चूमने वाले

माडर्न मर्द इंसान से नफ़रत और कुत्ते से मुहब्बत रखता है। इंसान को अपनी कार के तले कुचलना और कुत्ते को अपने साथ फ़्रन्ट सीट पर

बिठाता है और माडर्न बीवी शौहर से ज़्यादा कुत्ते से मुहब्बत रखती है। चुनांचे एक लतीफ़ा पढ़िए।

कुत्ते बेचने वाला : आप यह कुत्ता ज़रूर ख़रीद लें। बड़ी आला नस्ल का है तीन सौ रुपया को बहुत सस्ता है।

माडर्न औरत : मुझे पसन्द तो है लेकिन मेरा शौहर मोतरिज़ होगा।

कुत्ते बेचने वाला : जनाब आप शौहर से न डरें। आपको शौहर और भी मिल सकते हैं लेकिन ऐसा कुत्ता फिर नहीं मिलेगा।

यह है माडर्न माहौल कि कुत्ता शौहर से भी ज़्यादा अज़ीज़। मैंने लिखा है।

डार्लिंग कह कर लगे मुंह चूमने वह प्यार से
आशिक़ो तुमसे तो अच्छा यार काबिल डाग है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (135)

माडर्न माँ की माडर्न बेटी

बेगम सलीम की कोठी की घन्टी बजी। बेगम सलीम ख़ुद बाहर निकली तो देखा। एक नौजवान खड़ा है।

पूछा : फरमाइए क्या काम है ?

नौजवान बोला। मुझे मिस सफ़ीया से मिलना है।"

बेगम सलीम : आपकी तारीफ ?

नौजवान : मुझे नसीम कहते हैं और मैं मिस सफ़ीया का दोस्त हूँ।

बेगम सलीम : (नौजवान से हाथ मिलाते हुए) बहुत ख़ूब! बहुत ख़ूब! और मुसकुराते हुए। मैं बेगम सलीम हूँ सफ़ीया की मम्मी। सफ़ीया अपने किसी नए दोस्त के साथ पिक्चर देखने गई है।"

नौजवान : (हैरान होकर) नए दोस्त के साथ? अच्छा तो मुझे इजाज़त दीजिए। बेगम सलीम!

बेगम सलीम : ओह! ऐसी भी क्या जल्दी है। आइए अन्दर तशरीफ़ लाइए। थोड़ा वक़्त ही गुज़र जाएगा। मैं भी अकेली बोर हो रही हूँ।

(माहे तैबा अगस्त १९६३ ई०)

सबक़

माँ की गोद बच्चे के लिए गहवार-ए-तालीम है। माँ के ख़्यालात का

असर बच्चे पर ज़रूर पड़ता है। माँ को अगर नमाज़ व रोज़ा और तिलावते कुरआन की आदत हो गई तो बच्चा भी नमाज़ी और कुरआन ख़्वाँ होगा। और माँ अगर माडर्न होगी तो बच्चा भी माडर्न ही होगा। हज़रत बाबा शकर गंज फ़रीद अलैहिर्रहमा हर दुआ में अपनी माँ को ज़रूर याद रखते और उसके लिए दुआ करते। किसी ने वजह पूछी तो फरमाया। मुझे जो यह मक़ाम हासिल हुआ यह मेरी माँ की दुआओं का नतीजा है। मेरी माँ तहज्जुद के वक़्त नफ़िल पढ़ने को उठती तो इस नूरानी वक़्त में बावज़ू होकर मुझे दूध पिलाया करती थी और मेरे लिए दुआएं माँगती थी। आज मेरा मक़ाम इसी नूरानी वक़्त के दूध और दुआ का नतीजा है। बरअक्स इसके आजकल की माडर्न माँ बच्चे को अपना दूध नहीं बल्कि बोतल का दूध पिलाती है और वह भी पिक्चर हाउस में। फिर ऐसा बच्चा "माडर्न" क्यों न हो।

तिफ़्ल में ताक़त हो क्या माँ-बाप के अतवार की
दूध तो डब्बे का है तालीम है सरकार की

इस्लाम शर्म व हया और ग़ैरत का दर्स देता है लेकिन यूरोप बे-हयाई व बे-ग़ैरती सिखाता है चुनांचे यूरोप का एक लतीफ़ा है कि लंदन में एक आफ़ीसर तीन महीने के दौरे के बाद जब अपने घर आया तो आते ही अपनी बीवी से पूछा।

कहो प्यारी! क्या हाल है?

बीवी ने जल भुन कर कहा "जी रही हूँ।"

आफ़ीसर ने हैरत से पूछा क्यों क्या हुआ?

बीवी बोली : होता क्या। तुम्हारे जाने के बाद एक महीने तक तो तुम्हारा दोस्त आता रहा। बाक़ी दो महीने बड़े बे-कैफ़ तनहाई में गुज़रे।" अफ़सोस कि आजकल इन माडर्न औरतों ने इस्लामी दर्स भुला कर यूरोप की बे-हयाई को अपना लिया। बेगम सलीम! अगर इस बे-हयाई को न अपनाती तो उसकी बेटी भी हर रोज़ नए दोस्त न बनाती। मगर माडर्न माँ की बेटी भी माडर्न साबित हुई इस माडर्न माहौल ने न सिर्फ़ माँ बेटी बल्कि पूरे कुंबे को माडर्न बना डाला है। मैंने लिखा है।

मियाँ बीवी बहू बेटी कल्ब में हैं सभी रक़्साँ
नई तहज़ीब की बरकत से घर का घर मुहज़्ज़ब है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (136)

फोटो ग्राफ़र की दुकान पर

एक माडर्न औरत अपना फोटो खिंचवाने फोटो ग्राफ़र की दुकान पर गई फोटो ग्राफर ने उसे कुर्सी पर बिठाया और फोटो खींचने के लिए तैयार हुआ औरत का रुख़ दुरुस्त करने के लिए फोटो ग्राफर ने औरत की ठोढ़ी और गाल को हाथ लगा कर दाएं तरफ मोड़ते हुए कहा। हां! अब ठीक है औरत गुस्सा में आकर बोली। तुमने मेरी ठोढ़ी और गाल को हाथ क्यों लगाया तुम वैसे भी ज़ुबान से कह सकते थे।

फोटो ग्राफ़र घबरा गया। और हकलाते हुए बोला...........लेकिन मोहतरमा!

औरत ने बात काटते हुए कहा। मोहतरमा वहतरमा कुछ नहीं। अब तुम वैसे ही ठोढ़ी और गाल को हाथ लगा कर बाएं तरफ कर दो। वरना वरना। मैं बुरी तरह पेश आऊँगी। (माहे तैबा अक्तूबर १९६१ ई०)

सबक़

ऐसी तहज़ीब से खुदा समझे जिसने औरत को औरत न रहने दिया। औरत का माना ही छुपाने की चीज़ था मगर नई तहज़ीब ने उसे बाहर निकाला उछाला और फोटो ग्राफ़रों की दुकान में ला डाला और जो औरत शर्म व हया इफ़्फ़त व इसमत का गहवारा थी वह आज आवारा है। एक वह दौर था कि औरत का साया देखना मुश्किल व दुशवार और अब यह दौर है कि नज़र उठे तो सामने ठोढ़ी व रुख़सार। उस दौर में गुनाह से फरार। और इस दौर में गुनाह पर इसरार। मैंने लिखा है।

औरत उसको कहते हैं जो सत्र व हिजाब में रहती हो
रहने दिया है औरत को कब औरत इस उरयानी ने

❖❖❖

हिकायत नम्बर (137)

एक औरत दो पागल

एक पागल खाने में नफ़सियात के कुछ तालिबे इल्म गए तो उन्होंने देखा कि एक फुरक़तज़दा (जुदाई) नौजवान रबड़ की गुड़िया को सीने से

चिमटाए बैठा है और रो-रो कर कह रहा है। रूबी! रूबी!! वापस आ जाओ। मेरी प्यारी मेरी दुनिया तुम बिन अंधेरी है।

तालिबे इल्मों पर इस अलमनाक (दुख भरे) मंज़र का गहरा असर पड़ा। उन्होंने डॉ० से इस दुखी नौजवान की कहानी पूछी तो डॉ० ने ब्यान किया कि इस नौजवान को एक औरत रूबी से बड़ी मुहब्बत थी। वह भी इसके मुहब्बत का दम भरती थी। दोनों में शादी के वादे हो चुके थे लेकिन उस औरत ने इससे बेवफ़ाई की और इसे छोड़ कर किसी और नौजवान से शादी कर ली। इस हादसा ने उसका दिमाग़ फ़ेल कर दिया है और वह उस वक़्त से आज तक कभी रोता है कभी आहें भरता है। यह अलमनाक कहानी सुनकर तालिबे इल्मों का गिरोह आगे चल दिया। दो चार कमरे गुज़रने के बाद उन्हें एक और नौजवान कोठरी में बन्द नज़र आया जो दीवारों से सर टकराता था।

गिरीबान फाड़ता था और मुँह से झाग उठाए कहता था।

"दफ़ा हो जाओ। दूर हो जाओ मेरी ज़िन्दगी से। लानत हो तुम पर डॉ० ने उस कोठरी के आगे रुक कर तालिबे इल्मों से कहा और यह है वह नौजवान जिसने रूबी से शादी की थी।

(माहे तैबा नवम्बर १९६३ ई०)

सबक़

एक शे'र पढ़ा था।

जले फुरक़त में हम और वस्ल में परवान-ए-महफ़िल
कोई नज़दीक जल जाता है कोई दूर जलता है!

यह हिकायत पढ़ कर इस शे'र की तसदीक़ हो गई। माडर्न औरत जिस से खो गई वह भी पागल और जिसकी वह हो गई वह भी पागल। ऐसी औरत से बुअ्द भी बुरा और उसका कुर्ब भी बुरा। न उसकी दोस्ती अच्छी न उसकी दुश्मनी अच्छी। इस्लामी तहज़ीब को छोड़ कर जो लोग मग़रेबी तहज़ीब को अपनाने के लिए दीवाने हो रहे हैं। उनकी दीवानगी में क्या शक है। मुसलमान औरतों को "राबेआ" बनना चाहिए "रूबी" नहीं बनना चाहिए। इस्लामी माहौल में रह कर इंसान इत्मीनान पाता है और माडर्न माहौल पागल खाने की राह दिखाता है। लिहाज़ा जिसे इत्मीनान पाना है वह सच्चा मुसलमान बन जाए। वरना माडर्न माहौल की "रूबी" रुलाती ही रहेगी।

मेरे इस्लाम में तो ख़ूबियां हैं
नई तहज़ीब में बस रूबियाँ हैं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (138)

औरत की उंगली

एक बस का हादसा पेश आ गया। मुतअद्दिद (कई) सवारियाँ ज़ख़्मी हो गईं। एक औरत की उंगली कट गई। उसने इतना शोर मचाया कि आसमान सर पर उठा लिया किसी ने पूछा कि दूसरे तुझसे ज़्यादा ज़ख़्मी हुए हैं लेकिन तू सबसे ज़्यादा क्यों शोर मचा रही है तो उसने निहायत संजीदगी से जवाब दिया कि मुझे जितना ग़म है किसी को न होगा क्योंकि मैं इसी उंगली से अपने ख़ाविन्द को नचाया करती थी।

(माहे तैबा जनवरी १९६१ ई०)

सबक़

इस्लाम ने तो मर्द को औरत पर ग़ालिब रखा था मगर तहज़ीबे नौ ने मर्द को मग़लूब करके औरत का ग़ुलाम बना दिया। मैंने लिखा है।

मर्द हाकिम था कभी औरत पे लेकिन आजकल
बीवी घर की मालिका है और मियाँ मज़दूर है

आजकल मार्डर्न मर्द ने डारोन की थेवरी को अपना कर बन्दर को अपना बाप बनाया और ख़ुद इब्ने बन्दर बना। उसका नतीजा यह निकला कि बीवी ने उसे उंगली पर नचाना शुरू कर दिया। वह मिस्टर जो घर से बाहर ग़रीबों पर रोब जमाता उलमा पर बरसता और बुज़ुर्गों पर हँसता है वह जब घर में दाख़िल होता है तो अपनी बीवी के इशारों पर नाचता है। मैंने लिखा है।

जनाब डारोन के मोतक़िद फिरते नज़र आए
यह नज़्ज़ारा है बन्दर रोड बाज़ारे कराची का!
उधर वाइफ़ ने डाँटा और उधर मिस्टर का दम निकला
तमाशा देखिए कोठी में चूहे और बिल्ली का!

खुदा के फ़ज़्ल से मोलवी अपने अल्लाह व रसूल का गुलाम बन कर इस अज़ाब से महफ़ूज़ है और वह अपने बीवी का शौहर है। नौकर नहीं मैंने लिखा है –

कोई इस दौर में है मोलवी और कोई मिस्टर है
कोई बीवी का शौहर है कोई बीवी का नौकर है
हुए मातहत के मातहत ऐसा इंक़लाब आया
मियाँ है दफ़्तरी दफ़्तर में और बीवी मनेजर हैं

❖❖❖

हिकायत नम्बर (139)

मंगनी की अंगूठी वापस

पेटर बर्ग इंग्लिस्तान की एक नौजवान लड़की की मंगनी हुई। लड़के ने उसे अंगूठी पहनाई। एक रोज़ लड़के को पता चला कि उसकी मंगेतर शारेअ आम पर बरहना (नंगे) हालत में एक तालाब में नहाएगी। लड़के ने इस बात पर एतराज़ किया। लड़की जिसका नाम मिस वास्टन है ने कहा कि मुझे एक फ़िल्म में नहाने का पार्ट अदा करना है। अगर तुम्हें मेरे बरहना हालत में नहाने पर एतराज़ है तो मैं बारीक लिबास ज़ेबतन कर लेती हूँ लेकिन लड़का इस बात पर भी राज़ी न हुआ तो मिस वास्टन ने मंगनी की अंगूठी वापस कर दी और मंगनी तोड़ डाली। उधर मिस वास्टन के मंगेतर मैक टू मिलन ने कहा है कि मिस वास्टन दिन-ब-दिन आवारा होती जा रही है लेकिन इस मरतबा तो उसने हद ही कर दी।

(जँग माहे तैबा जुलाई १९६३ ई०)

सबक़

इस्लाम की नज़र में औरत सरापा "औरत" है यानी छुपाने की चीज़। उसका बरहना सर और बरहना मुँह की हालत में शारे आम पर निकलना इस्लाम को गवारा नहीं। "मोलवी" जो इस्लाम का अलमबरदार है वह तहज़ीबे नौ की इस बे-हिजाबी व बे-हयाई पर मोतरिज़ है। इस बिना पर तहज़ीबे नौ ने "मोलवी" से अपना तअल्लुक़ तोड़ रखा है और मोलवी का यह कहना है कि तहज़ीबे नौ दिन-ब-दिन आवारा होती जा रही है लेकिन पाकिस्तान बनने के बाद तो उसने हद ही कर दी।

आफ़ियत जिस शख़्स को मंज़ूर हो
वह नई तहज़ीब से बस दूर हो

❖❖❖

हिकायत नम्बर (140)

माँ

दीनियात के मुअल्लिम (टीचर) माँ की मुहब्बत पर लेकचर दे रहे थे। "दुनिया में हमेशा रहने वाला रिश्ता अगर कोई है तो वह माँ का है। माँ जो गोश्त के लोथड़े को परवान चढ़ाती। अपना ख़ून पिला कर परवरिश करती। खुद तक्लीफ़ बर्दाश्त करती है मगर औलाद को सुख पहुँचाती है। याद रखों दुनिया में हर चीज़ मिल सकती है मगर माँ और उसकी मुहब्बत का बदल नहीं मिल सकता। औलाद पर कैसा ही बुरा वक़्त क्यों न आ जाए माँ कभी साथ नहीं छोड़ेगी।"

उस्ताद ने रुक कर क्लास में बैठे हुए बच्चों का जायज़ा लिया। देखा तो एक लड़का सबसे पिछली क़तार में बैठा हुआ बड़े मज़े से अख़बार पढ़ रहा था। उसताद साहब उसके क़रीब गए। और बोले बद-बख़्त! मैं दुनिया की मुक़द्दस तरीन हसती की मुहब्बत और ख़ुसूसियात ब्यान कर रहा हूँ। और जनाब बैठे अख़बार पढ़ रहे हैं।

लड़के ने डरते-डरते कहा। "मास्टर साहब! मैं तो फ़ौरन एक ख़बर पढ़ रहा था।"

"कैसी ख़बर?" उस्ताद ने पूछा।

लड़के ने बुलन्द आवाज़ से ख़बर पढ़ी।

चार बच्चों की मां बच्चों को सोता छोड़ कर अपने आशना के साथ फरार हो गई। (माहे तैबा मार्च १९६२ ई०)

सबक़

वह पहले ज़माना की माँ थी जो औलाद के लिए नेमत थी और जो बच्चों से मुहब्बत करती थी। माडर्न माँ में बच्चों की मुहब्बत कहाँ? वह आज यहाँ कल वहाँ। उसे "मैकअप" ही से फ़ुरसत नहीं। फिर बच्चों की निगहदाश्त (देखभाल) कैसे करे। उसके बच्चों के लिए "आया" और दूध के लिए "बोतल" ऐसे माहौल में न माँ को बच्चों से मुहब्बत हो सकती है और न बच्चों के दिलों में माँ का वक़ार पैदा हो सकता है। यह बातें तो सही

मानों में "मुसलमान" बन कर पैदा हो सकती हैं। मगर आह! आजकल।

न माँ बाप ही में मुहब्बत रही
दिलों में न बच्चों के इज़्ज़त रही

❖❖❖

हिकायत नम्बर (141)

ख़तरा

एक गर्ल्ज़ स्कूल की लड़कियाँ कपड़े का एक कारखाना देखने गईं। कारखाने के जिस हाल में मशीनें चल रही थीं। उसमें दाख़िल होने से पहले कारखाने के मनेजर ने लड़कियों को हिदायत की कि –

बुरक़ा पोश और ढीले ढाले लिबास वाली लड़कियाँ मशीनों से बच कर निकलें और बिला-हिजाब, चुस्त लिबास वाली लड़कियाँ मज़्दूरों से बच कर चलें। (माहे तैबा)

सबक़

इस्लाम ने औरत को ख़तरात से बचाने के लिए पर्दे में रहने का हुक्म दिया है। पाव भर गोश्त को काग़ज़ में लपेट कर फिर उस पर दस्तरख़्वान लिपटा जाता है। फिर उसे आसतीन के नीचे छुपाया जाता है। गोया पाव भर गोश्त को चील और कौवों के ख़तरा से बचाने के लिए कई पर्दों में रखा जाता है तो यह दो-दो मन के चलते फिरते गोश्त यानी औरतें क्या बे-पर्दा ही रखी जाएंगी? इस्लाम ने उन्हें भी बाज़ारी चील और कौवों के ख़तरा से बचाने के लिए पर्दा में रखने का हुक्म दिया है लेकिन अफ़सोस कि इस ख़तरा को ब-ख़ुशी अपनाया जा रहा है जिसके नतीजे में आए दिन इग़वा की ख़बरें पढ़ने में आती हैं। मैंने लिखा है।

इश्क़ को अब तो बड़ा आराम है
हुस्न की जबकि नुमाइश आम है

❖❖❖

हिकायत नम्बर (142)

बीवी की मतलूबा अशिया

एक बीवी अपनी मतलूबा अशिया की (ख़्वाहिश की चीज़) ख़रीदारी के

लिए मियाँ को साथ लेकर आराइश की दुकान पर पहुँची। बीवी अपनी मतलूबा अशिया की फेहरिस्त लिखाने लगी। नाखुन पालिश २ अदद। टालकम पौडर एक अदद। कटी केवरा पौडर एक अदद। इविनिंग इन पेरिस हियर ऑयल एक अदद। लिपिस्टिक २ अदद। एक हल्की सुर्ख़ एक गहरी सुर्ख़। इतर हिना सोला रुपया तोला वाला। एक तोला। सुर्ख़ी मुख़्तलिफ़ शेड। २ अदद, रूमाल एक दर्जन, हियर पेन चार दर्जन। जुराबें रेशमी २ अदद, सुर्ख़ पर्स बड़ा साइज़ एक अदद। कटी केवरा, सूप चार अदद, तिब्बत इस्नो २ अदद, सुर्मा एक तोला, मियाँ ने हैरान होकर और पीछे मुड़ते हुए कहा। तुम बक़िया फ़ेहरिस्त बनाओ मैं ज़रा घड़ी बेच आऊँ।

(माहे तैबा)

सबक़

इस्लाम ने फ़ुज़ूल ख़र्ची की इजाज़त नहीं दी। क़ुरआन पाक ने फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालों को शैतान के भाई क़रार दिया है लकिन माडर्न माहौल हमें फ़ुज़ूल ख़र्ची पर मजबूर करता है। इसीलिए माडर्न औरत के हाथों उसका शौहर बहुत तंग रहता है। चुनांचे एक लतीफ़ा सुनिए।

ए.. साहब ने अपने दोस्त से पूछा। क्या आपकी बीवी आपको रुपये के मामला में तंग करती है?

उसने जवाब दिया : बीवी ख़ुद तो नहीं। हाँ जिन दुकानदारों से वह अपने फ़ैशन का सामान ख़ुद उधार ले आती है वह दुकानदार मुझे तंग करते हैं।"

पस ऐ मुसलमान औरतो! सच्ची मुसलमान बनो। माडर्न न बनो और ख़र्च करने में एहतियात से काम लो ताकि दीन भी बचा लो और अपना घर भी बना लो।

है मुसलमाँ औरतों का यह कमाल!
ख़र्च करते वक़्त रखें एतदाल

❖❖❖

हिकायत नम्बर (143)

गोशमाली

एक माडर्न बीवी ने अपने शौहर से कहा। देखिए! एक दो रोज़ तक मेरे कानों के लिए ज़ेवर बनवा दीजिए। मेरे खाली कान अच्छे नहीं लगते।

शौहर ने कहा मगर ज़ेवर पहनने से क्या फ़ायदा? यह बेजा ख़र्च है।

बीवी बोली : ख़ुदा ने हमको कान इसीलिए दिए हैं कि ज़ेवर पहनें। शौहर ने हँस कर कहा। तो फिर हमको कान किस लिए दिए हैं?

मांडर्न बीवी ने जवाब दिया। वह इसलिए कि हमारी सुनो। और न सुनो तो "गोश........माली।"

सबक़

आजकल इन माडर्न अफ़राद ने ख़ुदा की राह में ख़र्च करने में दरेग़ किया। कुरबानी के दिन आए तो कुरबानी के जानवरों पर ख़र्च को बेजा बताया जुलूस मीलाद शरीफ़ के दिन आए तो जुलूस पर ख़र्च को बेजा बताया। महफ़िले मीलाद और मजलिसे ग्यारहवीं शरीफ़ के ख़र्च को बेजा बताया। ख़ुदा ताआला ने ऐसे अफ़राद को इस दुनिया में भी सज़ा देने के लिए उन्हें ऐसी बीवियाँ दीं जिन्होंने बजा ख़र्च के मुख़ालिफ़ीन से बेजा ख़र्च कराने शुरू कर दिए। और यह बेचारे बेजा ख़र्च करने के बजाए बेजा ख़र्च करने पर मजबूर हो गए। अगर नहीं करते तो गोशमाली।

औरतों की आजकल तहज़ीब आली देखिए
शौहरों की कर रही हैं गोशमाली देखिए

❖❖❖

हिकायत नम्बर (144)

इंगलिश में

एक ग्रेजुऐट नानी से उसकी पोती ने कहा "नानी जान! आप हवाई जहाज़ पर बैठते हुए क्यों डरती हैं? नानी ने जवाब दिया। बेटी उमर के लिहाज़ से डरती हूँ कि कहीं मेरी लाइफ़ का बल्ब फ़्यूज़ न हो जाए यानी ज़िन्दगी का चिराग़ गुल न हो जाए। ग्रेजुऐट नानी ने इस जुमले को इंगलिश में अदा किया। (माहे तैबा)

सबक़

माडर्न मर्दों की तरह माडर्न औरतें भी बात करते वक़्त ज़्यादा तर इंग्लिश अलफ़ाज़ इस्तेमाल करती हैं। माडर्न माँ बच्चे को अब्बा कहना नहीं सिखाती बल्कि उसे बताती है वह तुम्हारे "डैडी" हैं और अपने लिए उसे मम्मी का लफ़्ज़ याद कराती है और ख़ाला के लिए आन्टी और "ख़ालू" के लिए शायद "आन्टा" मुँह पाकिस्तानी और मुँह के अन्दर ज़ुबान अंग्रेज़ी।

गोया पाकिस्तानी बर्तन और अन्दर शराब। सच्ची मुसलमान औरत की ज़ुबान पर अल्लाह और उसके रसूल का नाम रहता है। वह इस क़िस्म के तकल्लुफ़ और तसन्नो (बनावट) से दूर रहती है मैंने लिखा है।

है अँग्रेज़ी से कुछ ऐसी लगावट
कभी "यस" नो" कभी कहने लगे वट"
मुसलमां हैं मगर यूरोप ज़दा हैं
यह ऐसा घी है जिसमें है मिलावट

❖❖❖

हिकायत नम्बर (145)

वाइफ़ या?

एक साहब अपनी माडर्न बीवी के साथ जा रहे थे। बीवी ने बड़ा भड़कीला लिबास पहन रखा था और सुर्ख़ी पौडर मुँह पर थोपे हुए नंगे सर जा रही थी। किसी ने देख कर "साहब" से पूछा क्यों जनाब! यह जो आपके साथ जा रही है क्या कोई तवायफ़ है?

"साहब" बोले। डीम फूल! क्या बकता है? यह तो हमारा "वाइफ़" है।

(माहे तैबा)

सबक़

औरत को पर्दे में रहना चाहिए। इसी में उसकी इज़्ज़त है और अगर उसने "वाइफ़" कहलाने के शौक़ में यूरोप के तौर तरीक़े अपना लिए तो उन मग़रिबी तौर तरीक़ों की "तवायफ़" बना कर रख देगी।

जो बीवी थी अब बढ़ कर "वाइफ़" बनी
बढ़ी और कुछ तो तवायफ़ बनी

❖❖❖

हिकायत नम्बर (146)

माडर्न माँ

पिछले दिनों क़ाहेरा में फ़िल्म की नुमाइश हो रही थी। कमसिनों के लिए उसे ममनूअ़ (मना) क़रार दे दिया गया। जब एक माँ जिसके साथ उसका तीन साला बच्चा था। हाल में दाख़िल होने लगी तो बच्चे को रोक लिया गया और माँ से कहा गया कि बच्चा हाल में दाख़िल नहीं हो सकेगा।

उसे घर पहुँचा दीजिए। लेकिन माँ बच्चे को वहीं छोड़ कर अन्दर दाख़िल हो गई। फ़िल्म शुरू होने वाली थी और उसके पास वक़्त नहीं था कि वह बच्चे को घर पहुँचा सकती। (माहे तैबा मार्च १९६७)

सबक़

वह पहला ज़माना था जब माँ बच्चों पर जान देती थी। अब तो माडर्न माँ बच्चों से जान छुड़ाती है। पहली माएँ बच्चे अगर कुरबान करती थीं तो ख़ुदा की राह में और यह माएँ बच्चों को छोड़ती हैं फ़िल्म की चाह में।

माडर्न अम्माँ ने हैराँ कर दिया
फ़िल्म पर बच्चे को क़ुरबाँ कर दिया

आजकल फ़िल्म बीनी का शौक़ इस क़दर ज़्यादा है कि तौबा ही भली। चुनांचे इस शौक़ के मुतअल्लिक़ भी दो शे'र पढ़ लीजिए।

काट सकता हूँ मैं दिन और रात बे आब व तआम
चाय पी सकता हूँ मैं सारी उम्र चीनी के बग़ैर
बरहमन नाराज़ हो या शैख़ साहब जाएं रूठ
ज़िन्दगी मुश्किल है अब तो फ़िल्म बीनी के बग़ैर

❖❖❖

हिकायत नम्बर (147)

पुराना शौहर

एक बेगम अपने शौहर से कहने लगी।

मैं इस कोठी कार जवाहरात और रेशमी मल्बूसात से बाज़ आई। शौहर ने कहा। अल्हम्दुलिल्लाह! कि अब तुम गोशा नशीनी की तरफ माइल हो रही हो।

बेगम ने जवाब दिया नहीं! दरासल मैं अब पुरानी चीज़ों से उकता गई हूँ और यह तमाम चीज़ें अब नई ख़रीदनी पड़ेंगी। (माहे तैबा)

सबक़

पुराने ज़माने की औरत अपने शौहर से कहा करती थी। ख़ुदा मुझे आपके हाथों में उठाए यानी उम्र भर मैं आपकी हो कर रहूँ और आप ही की होकर मरूँ मगर अब?

माडर्न बीवी को इक ही हाल में कब कल मिले
चाहती है कि मुझे शौहर न्यू मॉडल मिले!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (148)

डंडा

डेरह इस्माईल खाँ की एक नवाही बस्ती की एक औरत ने अपने शौहर से कहा कि ईद के मौक़ा पर मुझे चूड़ियों का तोहफ़ा चाहिए। शौहर उसकी फरमाइश पूरी न कर सका। जिस वजह से ईद के मौक़ा पर बीवी ने चूड़ियों का तोहफ़ा न देने पर अपने शौहर को डंडे मार-मार कर ज़ख़्मी कर दिया। (जँग माहे तैबा मई १९६८ ई०)

सबक़

आजकल मर्द हाकिम नहीं रहा महकूम हो गया है यह तो दीन व मज़हब का करम था जिसने मर्द को बरतरी अता फरमाई थी मगर माडर्न माहौल में कुछ ऐसा अंधेर मच गया है कि मर्द की बरतरी नज़र ही नहीं आती और मर्द बरतर की बजाए बहालत अबतर नज़र आने लगा है। आजकल के माडर्न मर्द का यह अपना कुसूर है कि उसने औरत की मादर पिदर आज़ादी के लिए सर तोड़ कोशिश की। मज़मून लिखे। तक़रीरें कीं। उलमा पर बरसा। पस जबकि माडर्न मर्द ने ख़ुद ही औरत को बे-हिजाब करने की ठान ली तो फिर औरत को डंडा पकड़ने में भी हिजाब क्यों हो? शरीअत ने औरत को पर्दे का जो तोहफ़ा दिया था। मर्द ने औरत से जब वह तोहफ़ा छीन लिया तो उसका क्या हक़ है कि वह ईद पर औरत को चूड़ियों का तोहफ़ा पेश न करे और अगर यह तोहफ़ा पेश न करने की जुरअत करे तो इसका क्या हक़ है कि वह डंडे न खाए। ऐसे ही एक मर्द ने कहा था।

यारो मुझको निकालो इस घर से
मुझको बीवी उदास रखती है
ताकि सरज़द न मुझसे ग़लती हो
डंडा हर वक़्त पास रखती है

उलटे ज़माना की हर बात उलटी। पहले ज़माना में चिराग़ तले अंधेरा। मगर अब बिजली के बल्ब तले रौशनी और ऊपर अंधेरा। इसी तरह पहले ज़माना में मर्द ग़ालिब लेकिन अब मर्द मग़लूब और औरत ग़ालिब। मैंने लिखा है।

मर्द को किसने घटाया और ज़नाना कर दिया!
किसने लड़की को बढ़ाया और लड़का कर दिया
मर्द का सब दबदबा और रुअब अब जाता रहा
किस क़दर फ़ैशन ने उसका हाल पतला कर दिया

❖❖❖

हिकायत नम्बर (149)

बस में

न्यूयार्क में एक लेडी ने अपने पहलूठी के बच्चे को एक बस में जन्म दिया। उसने कहा मैं खुद भी बस में पैदा हुई थी। इसलिए मेरी ख़्वाहिश थी कि मेरा पहला बच्चा भी बस में पैदा हो। इस मक़्सद के लिए मुझे चार पाँच घन्टे तक शदीद दर्द व कर्ब के आलम में बसों में घूमना पड़ा।

(माहे तैबा 1967 ई०)

सबक़

जो औरत शर्म व हया के "बस" में न रहे वह बच्चे को अगर "बस" मैं जन्म दे तो क्या तअज्जुब है? यह है वह तहज़ीब जो हमारे मुल्क की माडर्न औरतों के दिलों में "बस" रही है। अगर अब भी उनकी आँखें न खुलीं तो उनका "बस" अल्लाह ही हाफ़िज़।

आह! औरत क्या थी क्या बनने लगी
अब तो बच्चे बस में वह जनने लगी

❖❖❖

हिकायत नम्बर (150)

नंगी औरतें

मेडरिड के साहली इलाक़ा अस्सीन में २७ उरियाँ नहाने वाली लड़कियों और पुलिस में ज़बरदस्त झिड़प हुई। फ़्रांस के एक राहिब ने जो ख़ुद भी उरियाँ तौर पर साहिले समुन्द्र पर टेहल रहा था उसने औरतों की तरफ से पुलिस से लड़ाई की तमाम लड़कियाँ उस राहिब के साथ एक बस के ज़रिया साहिल पर पहुँचीं। जूंही बस साहिल के क़रीब पहुँची। तमाम औरतें नंगी हालत में बस से निकल कर पानी में कूद पड़ीं। पुलिस वालों ने उन औरतों को कपड़े पहनने का हुक्म दिया उन्होंने हुक्म न माना। उस दौरान यह लड़कियाँ "हम फ़्रांस के वासी हैं" का नारा लगाती रहीं।" नौजवान पादरी उन लड़कियों की तरफ से सिपाहियों से तकरार करता रहा।

(जंग 13 अगस्त 1968 ई०)

सबक़

इस्लाम ने इंसान को इंसानियत अता फरमाई है। इस्लामी अहकाम पर अमल नहीं तो इंसानियत भी नहीं। बरअक्स उसके माडर्न माहौल ने "हैवानियत" पैदा की है चुनांचे खड़े होकर पेशाब करना, पलीदी से न बचना, बे-हिजाब व उरियाँ फिरना, यह सब आदतें जानवरों की हैं जो माडर्न तहज़ीब में पाई जाती हैं। थोड़ा बहुत फ़र्क़ लिबास का था। जानवरों के जिस्मों पर लिबास बिल्कुल नहीं होता और माडर्न तहज़ीब के अफराद पर थोड़ा बहुत लिबास होता है लेकिन फ़्रांस के बासियों ने उससे भी निजात हासिल करके माडर्न अफराद को यह दर्स दिया है कि सिर्फ़ मुँह ही के हिजाब से आज़ाद होना जुज़वी आज़ादी है मुकम्मल आज़ादी यह है कि सारा जिस्म ही बे-हिजाब हो हिजाब आए तो देखने वालों को।

हमारे मुल्क की माडर्न औरतों का नंगे मुँह और नंगे सर बाहर निकलना भी इस्लाम की नज़र में उरियाँ पन है। इसलिए कि औरत का माना ही छुपाने की चीज़ है और औरत सरापा औरत है।

करो लफ़्ज़े औरत पे गर ग़ौर तुम
तो मालूम कर लोगे फ़िल-फ़ौर तुम
कि औरत है शर्म व हया का मक़ाम
नुमाइश हो उसकी बुरा है यह काम
है औरत का मस्तूर रहना ही ठीक
है औरत को मस्तूर कहना ही ठीक
अगर इज़्ज़ते नफ़्स मलहूज़ है!
तो वह अपने घर ही में महफ़ूज़ है

बावजूद इसके "माडर्न औरत" औरत कहला कर नंगे मुँह और नंगे सर कल्बों, थेटरों और बाज़ारों में नज़र आने लगी। उलमा-ए-किराम ने उन्हें टोका तो उन्होंने उलमा से झिड़प मोल ले ली और फ़्रांस के नंगे राहिब की तरह उन माडर्न औरतों को भी माडर्न मर्द अपना हिमायती मिल गया और उन बे-हिजाब औरतों की तरफ से उलमा-ए-किराम से लड़ने लगा। उलमा ने उन बे-हिजाब औरतों से पर्दा करने का हुक्म दिया तो उन्होंने हुक्म न माना और "हम मर्दों के बराबर" हैं का नारा लगाने लगीं और माडर्न मर्द उन औरतों की तरफ से उलमा से तकरार करता रहा।

फ़्रांस के उरियानी पसन्दों ने फ़्रांस की पूलिस का कहा न माना और हमारे मुल्क के उरियानी पसन्दों ने उलमा-ए-किराम का कहा न माना और

हिजाब व लिबास को बोझ समझ लिया सच है।

टट्टू पे जिस तरह से हो ताज़ी की ज़ीन बोझ
है मुल्हिदों पे यूंही मुहम्मद का दीन बोझ

❖❖❖

हिकायत नम्बर (151)

झगड़ालू बीवियाँ

सिडनी के एक मशहूर आलिमे नफ़्सियात और नुजूमी डॉ० लाज़ंस ने कहा कि दुनिया में पागल पन की सबसे बड़ी वजह झगड़ालू बीवियाँ हैं। किसी ने इस हक़ीक़त की तफ़सील चाही तो डॉ० साहब ने बताया कि अड़तालीस फ़ीसद पागल मर्द अपनी झगड़ालू बीवियों की वजह से पागल हुए हैं क्योंकि यह मर्द हस्सास होते हैं। इसलिए वह न तो अपनी बीवियों को ज़द व कोब करते हैं और न ही झिड़कते हैं जिसका लाज़मी असर ज़हनी परेशानियों की सूरत में उन पर पड़ता है। फिर उन्होंने अपने इस दावे के सुबूत में कहा कि यही वजह है कि मर्दों की निसबत औरतें कम पागल होती हैं। उन्होंने ख़दशा ज़ाहिर किया कि आइंदा बीस साल के अन्दर चालीस फ़ीसद हस्सास शौहर अपनी बीवियों के हाथों पागल हो जाएंगे। (जंग माहे तैबा जुलाई १९६३ ई०)

सबक़

दीन व मज़हब औरत को अपने शौहर का अदब व एहतराम सिखाता है और माडर्न तहज़ीब औरत को अपने शौहर से लड़ना झगड़ना सिखाती है बल्कि इससे भी ज़्यादा। चुनांचे एक लतीफ़ा सुनिए।

एक बार पुलिस स्टेशन का टेलीफ़ोन बहुत ज़ोर से बजने लगा। इंस्पेक्टर ने टेलीफोन उठाया। आवाज़ आई। हेलो! हेलो! मैं फरहत बिल्डिंग से बोल रहा हूँ। यहाँ सातवीं मंज़िल पर एक औरत अपने शौहर को पीट रही है। पुलिस भेज कर उस बेचारे को बचाइए।

इंस्पेक्टर ने जवाब दिया। बेहतर जनाब! अभी भेजता हूँ। आप कौन हैं? आवाज़ आई। उस औरत का मज़लूम शौहर और कौन?

लखनऊ की भी एक ख़बर पढ़ लीजिए।

लखनऊ मक़ामी जेलखाना में जो औरतें नज़र बन्द हैं उन में से २७

फ़ीसद अपने शौहरों के क़त्ल की ज़िम्मेदार हैं। (कोहिस्तान)

पस ऐ भाइयो! अगर पागलपन, पिटने और मरने से बचना है। तो मियाँ बीवी दोनों मुसलमान बन जाओ और माडर्न फ़िज़ा से बचो।"

तलबगार हो तुम जो आराम के
तो बन के रहो दीने इस्लाम के

❖❖❖

हिकायत नम्बर (152)

"औरतें अंडे सेने लगीं"

यह उनवान रोज़नामा हुर्रियत कराची का है। हुर्रियत ने अपनी 26 अप्रैल 1969 ई० की इशाअत में इस उनवान से न्यूयार्क की हस्बे ज़ेल ख़बर शाए की है।

जज़ीरा कोने के एक तफ़रीही पार्क के मालिक ने मुर्ग़ी के अंडे सेने के लिए डेढ सौ उम्मीदवार ख़्वातीन में से एक कुंवारी लड़की को मुंतख़ब किया है। उस लड़की के नीचे उतने ही अंडे रखे जाएंगे जितने कि एक मुर्ग़ी के नीचे रखे जाते हैं। वह चौबीस घन्टे अंडों पर बैठी रहेगी। उसके लिए कुर्सी इस तरह बनाई गई है कि उसकी पुश्त झुकाई जा सकती है चुनांचे वह सोते हुए भी अंडे सेती रहेगी। पार्क के मालिक को यक़ीन है कि लड़की ज़्यादा नहीं तो दो चार बच्चे निकालने में ज़रूर कामयाब हो जाएगी। उसे इस ख़िदमत के मुआवज़ा में तीन हज़ार एक सौ डालर मिलेंगे। पार्क के मालिक ने अख़बार में जब इश्तिहार दिया तो उसे पन्द्रह सौ दरख़्वास्तें मिलीं तो वह हैरान रह गया। उसने सिर्फ़ १३० लड़कियों को इंटरविव के लिए तलब किया और उनमें एक हसीन लड़की को मुंतख़ब कर लिया। अब उस लड़की को देखने के लिए बेशुमार लोग तफ़रीही पार्क में आएंगे अंडों से बच्चे निकलने में इक्कीस दिन लगते हैं औरत के जिस्म में मुर्ग़ी के जिस्म के मुक़ाबले में हरारत कम होती है चुनांचे उसे बच्चे निकालने में ज़्यादा दिन लगेंगे जज़ीरा कोने की यह लड़की बच्चों की पैदाइश और मामता की तारीख़ में नए बाब का इज़ाफ़ा करेगी। आगे–आगे देखिए होता है क्या। (माहे तैबा जुलाई 1969 ई०)

सबक़

अफ़सोस इस नई तहज़ीब ने इंसान को किस तरह जानवर बना डाला

है। प्राइमरी स्कूलों में अगर किसी बच्चे को सज़ा देना मंज़ूर हो तो मास्टर जी उसे मुर्ग़ा बना देते हैं। कुछ इसी तरह मग़रिबी स्कूल की औरत को शायद यह सज़ा मिली है कि उसे मुर्ग़ी बना दिया गया है। माडर्न औरतें पर्दा से भागी थीं। कुदरत ने उन्हें मुर्ग़ियों के दरबा में बन्द कर दिया। अच्छा हुआ अगर यह रसम चल निकली तो पर्दा में न सही। यह औरतें "दरबा" में रहेंगी।

इस तहज़ीबे उरियाँ से ख़ुदा बचाए। ज़ालिम ने पहले तो बदन से लिबास उतरवाया और औरत को नंगा कर दिया और अब उसने उसका जामा इंसानियत भी उतार दिया है और इंसान से उसे मुर्ग़ी बना डाला। वह ज़माना गया जब आप यह सुना करते थे कि लड़की पर्दे में बैठ कर कपड़े सी रही है। अब यूं है कि लड़की दरबे में बैठी अंडे सेय रही है।

ज़माना तरक़्क़ी पसन्द है। एक मरहला पर पहुँच कर तरक़्क़ी पसन्द अफराद आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं। बहुत मुम्किन है कि मग़्रिबी तहज़ीब लड़कियों के अंडे सेने पर ही इक्तिफ़ा न करे और आगे बढ़ने की कोशिश करे और कुछ दिनों के बाद यूरोप के कोई साहब इश्तिहार दे दें कि उन्हें किसी ऐसी लड़की की ज़रूरत है जो ख़ुद अंडे दे। इस सूरत में यूरोप के अंडा खोर अफ़राद को बड़ी मुश्किल पेश आएगी कि अंडा तोड़ते वक़्त क्या ख़बर अंडे से कोई "साहब बहादुर" ही निकल आए।

बाज़ मुर्ग़ियाँ ऐसी भी होती हैं जो अंडे पी जाती हैं यानी वह अंडे सेती नहीं पीती हैं चुनांचे यूरोप ही की एक ताज़ा ख़बर यह भी है कि बरतानिया में हर रोज़ सौ नाजाइज़ हमल गिराए जाते हैं।

(कोहिस्तान 2 मई 1966 ई०)

तो ऐसी मुर्ग़ियों को अगर अंडों पर बिठाया गया तो मुश्तहिर साहब को बजाए फायदा के नुक़्सान होगा। जो मुर्ग़ियाँ ख़ुद अपने अंडों को सलामत नहीं छोड़तीं। वह ग़ैर के अंडों को कब छोड़ेंगी? और क्यों न तोड़ें फोड़ेंगी? दरासल मज़कूरा बाला ताज़ा ख़बर भी मग़्रिबी तहज़ीब का एक गन्दा अंडा है। ख़बर ताज़ा है मगर अंडा गन्दा है और इक़बाल ने इसीलिए लिखा था कि –

उठा कर फेंक दो बाहर गली में
नई तहज़ीब के अंडे हैं गन्दे

हिकायत नम्बर (153)

नाचने वाली के अंडे

लन्दन की मशहूर रक्क़ासा (नाचने वाली) पाला पीरी अपना अजीब व ग़रीब रक़्स दिखाने के लिए "शुतुर मुर्ग़" बनकर स्टेज पर आई और नाचने लगी। तमाशाईयों ने देखा कि पाला पीरी रक़्स कर रही है और उसकी दुम से अंडे गिर रहे हैं देखने वालों को यही मालूम हुआ जैसे रक्क़ासा ने अंडा दिया है हालाँकि वह नक़ली अंडे थे जो उसने दुम के परों में छुपा रखे थे।

(आफ़ाक़ लाहौर 28 दिसम्बर 1960 ई० माहनामा माहे तैबा फरवरी 1961ई०)

सबक़

यह ख़बर पढ़कर हम हैरान हैं और सोच रहे हैं कि यूरोप तरक़्क़ी करते-करते कहाँ से कहाँ पहुँच गया है। हमारी तो मुर्ग़ियाँ भी अंडे नहीं देतीं और यूरोप की औरतें भी अंडे देने लगी हैं। सब जानते हैं कि हमारे मुल्क की मुर्ग़ियाँ महीने में कुछ रोज़ नाग़ा करती हैं लेकिन विलायती मुर्ग़ियाँ नाग़ा नहीं करतीं और कई-कई महीने बिला-नाग़ा अंडे देती रहती हैं। हम हैरान थे कि विलायती मुर्ग़ियाँ अंडे देने में इतनी दिलेर क्यों वाक़े हुई हैं मगर अब पता चला कि विलायती मुर्ग़ियाँ तो एक तरफ विलायती औरतें भी अंडे दे सकती हैं।

तहज़ीबे नौ और तरक़्क़ी का यह क्या उमदा करिशमा है कि एक तरफ तो वह चाँद की तरफ उड़ती हुई दिखाई देती है और दूसरी तरफ ज़मीन में अंडे देती है तो यह उड़ना और अंडे देना माडर्न अफ़राद को मुबारक हो। यह उन्हीं का हौसला है। और "मौलवी" क़िस्म का मुसलमान बेचारा तो बड़ा ही सुस्त। रिजअत पसन्द और दक़्यानूसी है कि न उड़ सकता है और न अंडे दे सकता है और बजाए इसके कि यूरोप की इस गोरी बेज़ावी तहज़ीब की मदह सराई करे। उलटा उसके मुतअल्लिक़ इक़बाल का यह शे'र पढ़ता है कि –

उठा कर फैंक दो बाहर गली में
नई तहज़ीब के अंडे हैं गन्दे

ख़बर में अंडों को नक़ली बताया गया है मगर घबराने की बात नहीं। इसलिए कि यूरोप जिस काम को शुरू करता है उसे पाय-ए-तकमील तक पहुँचा देता है उम्मीद है कि यह कोशिश भी कामयाब होगी और नक़ल

मुताबिक़ असल हो कर रहेगी और एक वक़्त ऐसा भी आ जाएगा जबकि यह माडर्न औरतें असली अंडे भी देने लगेंगी।

ख़बर में "शुतुर मुर्ग़" बनने का ज़िक्र है और शुतुर मुर्ग़ की तरकीब बिल्कुल "माडर्न मुस्लिम" की तरकीब जैसी है। शुतुर मुर्ग़ के मुतअल्लिक़ मशहूर है कि उसे अगर कहा जाए कि तुम "शुतुर" हो तो बोझ उठाओ तो कहता है कि मैं तो "मुर्ग़" हूँ और अगर कहा जाए कि मुर्ग़ हो तो उड़ कर दिखाओ तो कहता है। मैं तो शुतुर हूँ। इसी तरह "माडर्न मुस्लिम" से अगर कहा जाए कि तुम "मुस्लिम" हो तो मस्जिद में आओ। नमाज़ पढ़ो। और अल्लाह अल्लाह करो तो कहता है कि मैं तो "माडर्न" हूँ। और अगर वोटों के ज़माना में वोटरों के पास वोट लेने को आओ और उससे कहा जाए कि तुम तो "माडर्न" हो। फिर मुसलमान वोटरों के पास क्यों आए तो कहता है कि मैं तो मुसलमान हूँ।

"शुतुर मुर्ग़" शक्ल व सूरत डील डोल में "शुतुर" है मगर अंडे देने में "मुर्ग़" है। यूंही "माडर्न मुस्लिम" नाम और मुसलमानों के हाँ पैदा होने में मुस्लिम है। मगर उरियानी व फ़हहाशी और इलहाद के अंडे देने में माडर्न है।

बन खुदा का ग़ैर का हरगिज़ न बन
बन मुसलमान और मत बन माडर्न

❖❖❖

हिकायत नम्बर (154)

अपने शौहर की शौहर

एक मरतबा जापान में मर्दों से पूछा गया कि आप अपने मर्द होने पर ख़ुश हैं या ना ख़ुश? तो बावन फ़ीसद मर्दों ने जवाब दिया कि हम अपने मर्द होने पर नाख़ुश हैं। हम औरत होते तो अच्छा होता और अब यह ख़्वाहिश है कि हम दूसरे जन्म में औरत बन कर आएं क्योंकि शादी के बाद मर्दों को अपनी तंख़्वाह पर कोई हक़ नहीं रहता और उनकी जेब मुकम्मल तौर पर औरतों के कंट्रोल में चली जाती है।

(कोहिस्तान 13 अप्रैल 1963 ई०)

सबक़

जेब तो दरकिनार खुद साहिबे जेब औरत की जेब में होता है और औरत जिस तरह चाहे साहिबे जेब को इस्तेमाल कर सकती है। नई तहज़ीब का

अफ़सोसनाक पहलू मुलाहिज़ा फरमाइए कि मर्द अपने मर्द होने पर पछताने लगे हैं और चाहते हैं कि हम औरतें बन जाएं। इसलिए कि इस माडर्न माहौल में मर्द ख़ादिम और औरत मख़दूमा है। मर्द की मजाल नहीं कि वह अपनी मख़दूमा की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई हरकत करे। चुनांचे एक लतीफ़ा सुनिए।

एक माडर्न बीवी ने अपने शौहर से पूछा कि अगर खुदा नख़्वास्ता घर में चोर आ जाएं तो तुम क्या करोगे? शौहर बोला। वही करूंगा जो वह कहेंगे। इसलिए कि अब तक इस घर में मुझे अपनी मर्ज़ी से तो कुछ करना नसीब नहीं हुआ।

इसी तरह एक साहब घर पहुँचे तो उनकी बेगम साहिबा उनसे झगड़ने लगीं यह तंग आकर बोले। इलाही! या तो मुझे दुनिया से उठा ले या ... इतना कहने ही पाए थे कि बेगम साहिबा ने आंखें निकाल कर डाँट कर कहा। या......? वह बोले या भी मुझी को उठा ले।

देखा आपने किस क़दर तंग ज़िन्दगी है। फिर क्यों न ऐसे मर्द औरतें बन जाने की तमन्ना करें। पुराने दौर का मुसलमान अपने अल्लाह का हज़ार बार शुक्र करता है कि वह मर्द है और मर्द ही रहेगा। उसके दिल में कभी यह ख़्याल तक नहीं आया कि उसे औरत बन जाना चाहिए और आए भी कैसे जबकि कुरआन का यह इर्शाद कि अर्रिजालु क़ौव्वामूना अलन्निसाइ उसके पेशे नज़र है वह जापान है और यह कुरआन है वहाँ नई तहज़ीब है और पुराने मुसलमान के यहाँ पुरानी तहज़ीब है पुरानी तहज़ीब में औरत अपने शौहर का अदब व एहतराम मल्हूज़ रखती है और शौहर को शौहर समझती है और नई तहज़ीब में मसावात (बराबरी) के ज़अम में औरत अपने आपको शौहर के बराबर बल्कि अब तो शौहर से बढ़कर समझती है और अपने आपको शौहर की बीवी नहीं शौहर की शौहर समझती है और शौहर बेचारा इस हाल में मुब्तला होकर अपने आपको बीवी की बीवी समझने लगेगा और तमन्ना करने लगा है कि बराए नाम मर्द व शौहर बन कर रहने से क्या फाइदा। इससे तो यही बेहतर है कि सच मुच ही बीवी बन जाऊँ मैंने लिखा है।

नई तहज़ीब का नक़्शा अयाँ है
मियाँ बीवी है और बीवी मियाँ है

हिकायत नम्बर (155)

दूसरी शादी

हमारे मुल्क के साबिक़ वज़ीरे आज़म मुहम्मद अली बूगरा ने दूसरी शादी की तो हमारे रौशन दिमाग़ माडर्न तबक़ा ने उसे बहुत बुरा मनाया। उस ज़माना के लंदन के सफ़ीर जनाब मुहम्मद इकरामुल्लाह साहब ने एक दिलचस्प लतीफ़ा सुनाया आपने कहा जिन दिनों मुहम्मद अली बूगरा ने दूसरी शादी की तो एक पार्टी में एक बहुत बड़ी पोज़ीशन के मालिक अंग्रेज़ ने कहा। तुम्हारा वज़ीरे आज़म बहुत अहमक़ है। उसे दूसरी शादी करने की क्या ज़रूरत थी। अगर लड़की पसन्द आ गई थी तो उसे दाश्ता बना लिया होता। हमारे मुल्क में तो ऐसा ही करते हैं।

(नवा–ए–वक़्त 3 मई 1956 ई०)

और १३ जून में "यह मग़्रिब है" के उनवान से यह लिखा है कि "मग़्रिब में एक मर्द का बयक वक़्त दो चार औरतों से तअल्लुक़ और एक औरत का दो चार मर्दों से तअल्लुक़ क़ाइम रखना आम बात है।

सबक़

यह है यूरोप का किरदार कि खाविन्द एक बीवी के अलावा दूसरी शादी तो नहीं कर सकता लेकिन दाश्ताएँ जितनी चाहे रख सकता है और फिर दाश्ताओं की तहदीद भी नहीं। चार से ज़्यादा भी हो सकती हैं। और फिर यह कि इख़्तियार सिर्फ़ मर्द ही को हासिल नहीं बल्कि औरत को भी यह हक़ हासिल है कि वह एक शौहर रख कर जितने चाहे "दाश्ते" रख सकती है। मक़ामे ग़ौर है कि इस क़िस्म की बदमाशी व अय्याशी के अलमबरदार अगर इस्लाम के एक जाइज़ और फ़ितरी और मुसतहसन इजाज़त नामे पर मज़ाक़ उड़ाएं तो उलटा चोर कोतवाल को डांटे के मिस्दाक़ यह लोग हुए या नहीं। इस्लाम ने फ़ितरी ख़्वाहिशात का लिहाज़ फ़रमा कर अख़लाक़ व पाकीज़गी को मलहूज़ रखते हुए मर्द को चार बीवियों तक की इजाज़त दे दी और चारों से मुसावियाना बर्ताव और अद्ल व इंसाफ़ करने का भी दर्स दिया मगर यूरोप की क्या अच्छी दाश्ता नवाज़ तहज़ीब है कि मंकूहा बीवी के साथ दूसरी औरतों को दाश्ता बना कर ज़लील व कमीना स्टेज पर उन्हें बिठा कर उनकी इज़्ज़त को बट्टा लगाया और वाह रे यूरोपियन तहज़ीब कि मग़्रिबी लेडियों ने भी दाश्ता बनने को बर्दाश्त कर लिया और

दाश्ता बनने से दिल बर्दाश्ता नहीं हुई। गोया मुसलमान रोटी खाएं तो सिर्फ़ एक और यह मग़्रिबी जिंसी भूखे डबल रोटी भी खाएं और दिन में मुतअद्दिद बार नाश्ता भी करते रहें और फिर यह कि जो इस्लाम की पाकीज़ा इजाज़त के मुताबिक़ दूसरी शादी करे वह अहमक़ और जो दो तीन चार नहीं ज़्यादा भी औरतों को दाश्ता बना ले और हरामी औलाद पैदा करे वह दाना और तरक़्क़ी पज़ीर। एक मोलवी साहब से एक ईसाई ने पूछा कि मौलवी साहब! अगर एक मर्द चार बीवियाँ कर सकता है तो एक बीवी चार मर्द क्यों नहीं कर सकती? मौलवी साहब ने जवाब दिया पादरी साहब! एक बाप के चार बेटे हो सकते हैं तो एक बेटे के चार बाप क्यों नहीं हो सकते। पादरी बोला। यह दूसरी बात है। मौलवी साहब ने कहा। तो यह तीसरी बात है।

अक़्ल से भी पूछ लीजिए कि एक बाप के चार बीवियों से जो बच्चे पैदा होंगे यक़ीनन वह उसी बाप के होंगे लेकिन अगर बीवी का एक बच्चा चार मर्दों से पैदा हो जाए तो वह किस बाप का बेटा होगा? और उस बेटे की चार बापों पर तक़्सीम कैसे हो सकेगी? यह अक़्ल व हिकमत की बातें तो मअल्लिमे आज़म सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिखाई हैं। इन बे-वकूफ़ अक़्लमन्दों को इन हक़ाइक़ की क्या ख़बर?

मग़्रिबी लेडियों की देखा देखी एक नाम की मुसलमान बेगम ने भी एक भरे जलसा में ऐलान कर दिया था कि अगर मर्द चार बीवियाँ रख सकता है तो हम भी चार-चार मर्दों से शादी करेंगी। इस पर मैंने माहे तैबा में लिखा था कि हर हाथ का पंजा देख लीजिए। अंगूठा एक होता है और उंगलियाँ चार मगर ऐसा पंजा कभी न देखा न सुना जिसकी उंगली एक हो और अंगूठे चार। मैंने लिखा था।

एक अंगूठा है उसके साथ हैं चार उंगलियाँ
इस तरह इक मर्द हो सकता है शौहर चार का!

❖❖❖

हिकायत नम्बर (156)

बारेश औरत

रोहड़ी (सिंध) में एक गदागर औरत है जिसके चेहरे पर तीन इंच लम्बी दाढ़ी है और मोंछें भी हैं। लोग उस औरत को दूर-दूर से बड़ी हैरत के साथ देखने आते हैं। (अख़बारी ख़बर माहे तैबा फरवरी 1953 ई०)

सबक़

लोगों की इस हैरत पर हैरत है कि एक औरत के चेहरे पर अगर दाढ़ी नज़र आई तो क्या हुआ जबकि इस ज़माना में हज़ारों लाखों मर्दों के चेहरों पर दाढ़ी नज़र नहीं आती जिस तरह एक औरत के चेहरे पर दाढ़ी का नज़र आना एक अनोखी बात है बिल्कुल इसी तरह एक मर्द के चेहरे का दाढ़ी से खाली होना एक निराली बात है। तो जब इस उलटे ज़माने में इस क़िस्म के मर्द हैरत अफ़ज़ा नहीं तो फिर एक बारेश औरत पर हैरत कैसी?

लोग इस बारेश औरत को देख कर हैरान इसी लिए हो रहे हैं ना! कि जो चीज़ मर्दों में हुआ करती है वह इस ज़माने की औरत में पाई जाती है। तो फिर नई तहज़ीब के परवुरदा औरतों को असम्बलियों में जाते, दफ़्तरों में धक्के खाते, पोलो खेलते, बे-हिजाब फिरते और मजमओं में घिरते देखकर हैरान क्यों नहीं होते? जबकि यह सारी चीज़ें भी सिन्फ़े नाज़ुक के लिए नहीं बल्कि यह भी मर्दों के लिए मौज़ूँ हैं और अगर यह सब चीज़ें औरतों में गवारा हैं तो फिर अब साथ ही साथ एक दाढ़ी भी सही। इसमें हैरान होने या घबराने की क्या बात है?

❖❖❖

हिकायत नम्बर (157)

रंडी का गाना

किसी मजलिस में एक रंडी का गाना हो रहा था। काफी लोग जमा थे तबले और सारंगी की गत पर रंडी बार-बार यह मिसरा दोहरा रही थी।

खुदा जाने कि क़िसमत में हमारी क्या लिखा होगा।

एक मसखरा शाइर भी वहाँ मौजूद था। जब रंडी ने उसकी तरफ मुतवज्जेह होकर इस मिसरा को दोहराया।

खुदा जाने कि क़िस्मत में हमारी क्या लिखा होगा।

मसख़रा शाइर बोल उठा।

गले में तौक़ लानत का सवारी को गधा होगा

(माहे तैबा जुलाई 1952 ई०)

सबक़

बे–हिजाब बे–हया और बे–शर्म औरत जब ग़ैर मुहरिमों के मजमा में

नाचती और गाती है तो वह अपनी आक़िबत बर्बाद कर लेती है और बक़ौल इस शाइर के वाक़ई क़यामत के रोज़ उसके गले में तौक़े लानत पड़ेगा लिहाज़ा औरत को ऐसी बुरी हरकात से बचना चाहिए और उसे बा-हिजाब व बा-हया बनकर अपनी आक़िबत संवारनी चाहिए।

जो औरत है बे-शर्म और बे-हिजाब
है क़िस्मत में उसकी यक़ीनन अज़ाब

❖❖❖

हिकायत नम्बर (158)

बीबियाँ शौहर बनेंगी

माहनामा चाँद लाहौर मई 1961 ई० में एक कार्टून शाए हुआ जिसमें खाविन्द साड़ी बांधे खड़ा है और बीवी पतलून पहने खड़ी है। रात का वक़्त है और बीवी खाविन्द को घर रहने की ताकीद करके बाहर जा रही है और खाविन्द मिन्नत के साथ कह रहा है।

"रात को जल्दी घर आ जाया करो मुझे तन्हाई में डर लगता है।"

सबक़

अकबर इलाहाबादी पहले ही लिख गए हैं।

क्या बताऊँ क्या करेंगी इल्म पढ़ कर बीबियाँ
बीबियाँ शौहर बनेंगी और शौहर बीबियाँ

❖❖ ख़त्म शुद ❖



ISBN 01-89201-30-7
9780189201306

RAZVI KITAB GHAR
423, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph:.011-23264524 Mobile. 9350505879

Rs.140/-